

मुद्रक और प्रकाशक
पीरमयी ब्राह्मणानी बैरागी
नवजीवन मुद्रणालय अहमदाबाद-१४

सर्वाधिकार नवजीवन प्रकाशन संस्थानके अर्पित

पहली आवृत्ति २

प्रकाशकका निवेदन

गांधी-साहित्यके पाठक भी मनुबहन गांधीको बुनकी पहले प्रकाशित हो चुकी नीचेकी पुस्तकों द्वारा जानते हैं

१ बापू — मेरी मां (हिन्दी पुस्तकालय मण्डली और अंग्रेजीमें)

२ कलकत्तेका चमत्कार (हिन्दी पुस्तकालयमें)

श्री मनुबहन गांधी श्री चमत्कारका दावीकी पुत्री हैं। श्री चमत्कारका गांधी गांधीजीके काकाके कहते हैं। कुछ बरत पहले वे कलकत्तेमें अपना धंधा करते थे। बादमें वे मीपट्टम आकर रहे और आनन्द महाशय रहते हैं। श्री मनुबहन आनन्द बुनकीके पास रहती हैं। वे कलकत्ते १९४२ में गांधीजीके पास गयीं तबसे लेकर १९४५ में अपने पिताजीके पास मद्रास रहने आईं तब तककी डायरी जिस पुस्तकमें थी नहीं है।

बुपर बताया हुआ पुस्तकों पर पाठक जानते होंगे कि श्री मनुबहनने गांधीजीके साथ अपने निवास-शालमें जो डायरी रखी थी कुछ परसे से ही पुस्तकें तैयार की गयी हैं। वह डायरी व गांधीजीके साथ रहते हुये रोज लिखती थी और गांधीजीको बता देती थी। जिससे यह माना जा सकता है कि बुनकी भी गयी वस्तु स्वयं गांधीजीकी लिखी हुयी तो नहीं है लेकिन बुने के आश्रयान्त बेज बरूर गये हैं।
कलकत्तेका चमत्कार नामक पुस्तकमें जिस बात पर प्रकाश डाला गया है जिसलिसे वहाँ कुछ विषयमें व्यास बढ़ाया बकरी नहीं है।

यह नहीं पुस्तक १९४२ से १९४५ के बीचके बरसेके संबंध रखती है। और, विसा कि जिसका नाम सूचित करता है बुनकीमें

लेखिकाको वा और बापूके साथ रहनेका सोनाम्य मित्रा । मुस बीच मुर्दे
 जो तालीम मिली मुसका विभ विद्यमें येस किया गया है । यह नाम
 मुर्देने अपनी कामरीके तारीखवार बुद्धरपोको गृहमावृद्ध करके किया
 है । जिसमिजे विद्यमें लेखिकाकी कुछ बर्षोंकी आत्मकथाके साथ गांधीजी-
 के मुन बर्षोंके काव्योंका कुछ इतिहास भी मिलता है । डॉ मुधील
 लय्यरने आवालां महर्म्म गांधीजीकी गजरकरके विभ बर्षोंका इतिहास
 अपनी आर्यक शैलीमें बापूकी कायवास-कहानी नामक पुस्तकमें
 किया है । प्रस्तुत पुस्तक जोड़े विभ पहलूसे मुसमें मुन्नेखगीव बुद्धि
 करती है । लेकिन जिसका आस पहलू है गांधीजी द्वारा लेखिकाको
 बी हुमी तालीम । जिसमें विज्ञान रस लेनेबासे पाठकोको गांधीजी
 जेक विज्ञानके रूपमें नाम करते विज्ञानी रहे । लेकिन ये किसी स्तूतके
 विज्ञानकी तरह काम नहीं करते बल्कि अपना घर बचानबासे जेक
 पिता या पाठककी तरह काम करते हैं । और मुस कामके धरिये
 बापूकी और बूरे सब लोगोको विज्ञान देते हुवे और खुद डेते हुवे
 विज्ञानी रहे हैं । बापूको स्तूतमें ही नहीं — घरमें माता-पिता और
 साथमें रहनेबासे माजी-बंबुओके सम्पर्कसे तथा मुनके काव्योंमें
 अवासक्ति सहकार वा मदद करनेसे भी विज्ञान और तालीम मिलती है ।
 और जिस तरह मिलनबाला शिक्षण असरकारक होता है । यह शिक्षण बैसा
 ही होना बैसा बापूका घर और मुसमें रहनेबासे मनुष्य होने । ये
 सब जिस तरह कामकाज करते हुवे बैसा ही बापूको सहज विज्ञान
 मिलेगा । मुससे बापूको अपने-आप ही तालीम और संस्कार मिलेंगे ।
 मुसमें जितना जाइत मान होया मुतना ही वह विज्ञान बन्ना
 होया । और आपत भावकी जितनी कमी होनी मुतनी मुसमें विचार
 बुद्धिकी कमी रहेगी । फिर भी मुसका स्वामाधिक प्रभाव तो बापूक
 पर पड़ेगा ही । जिस तरह गांधीजीकी शिक्षण-वृद्धिमें अवस्थित और
 विचार-भूट गृहजीवनका मुख्य स्थान है । जिसे स्तूतका शिक्षण कहा
 जाता है वह मुसका जेक अद बनता है । जिसमिजे पाठक देखेंगे कि

गांधीजीकी नजरकेवके समयके कुटुम्बीजनोंमें से ही कुछ लोग लेखिकाको पढानेका समय निकालते हैं और मुसका नियमित टाइम-टेबल भी होता है। गांधीजीने दिशाका वर्ष चारिष्यकी शिक्षा किया है। जिस वर्षका शिक्षण बालकको देना हो वो किस तरह काम करना चाहिये जिसका मसूना जिस पुस्तकमें देखनेको मिलता है। और वही जिसका मुख्य रस है। जिसमिजे वह पुस्तक छोटे-बड़े स्वी-मुरप सबको रसप्रद मान्य होगी।

जिसमें वा और बापुका भी बंक बिरल चित्र पाठकोंको मिलता है। मुसका वर्धन करना सम्भव नहीं है। वह जैसा है कि पृथ्वी जीवनका वह वृष्टान्त हमारे देखने को हमेशा याद रहेंगे और मुसके हमेशा प्रेरणा पाठे रहेंगे।

पी मनुबहनकी बोक और पुस्तक जेनकी जान रे भी हम बचासंभव बल्की ही हिन्दी पाठकोंके सामने रखनेकी बाधा करती है। जिसमें गांधीजीकी मौजालकीकी बर्मयाभाते सम्बन्ध रखनेवाली जानकारी भी पनी है।

२२	मेरी परीक्षा	११६
२३	बरसा-झाड़कीका मुत्सव	१२
२४	श्री बर्बनाठ	१२७
२५	जेडमें मुक्ताकालें	१३५
२६	सरकारका बयान	१४२
२७	बाके मंथिम दिन	१४८
२८	बाका मयसान	१६२
२९	बल्लेष्टि	१६९
३	सुनापन	१७२
३१	सरकारका झूठ	१७६
३२	वेवेकको पत्र	१८२
३३	बीर झूठ	१८७
३४	प्रजापती बहनका उवाचला	१९१
३५	बापूजीकी बीमारी	१९३
३६	झूटकारा	१९५
३७	पर्यकुटीमें	१९८
३८	बाम्बजीमें	२
३९	बरसा — बहिषास प्रतीक	२ ५
४	बुनक्ये शिक्षा	२ ९
४१	किरसे सेवाप्राप्त	२१५
४२	बापूजी बहिषा	२१९
४३	बापूजीके कुछ पत्र	२२४

वा और वापूकी शीतल छायामें

शीतल छायामें

१९४२ के मजी मासमें बापूजी अण्डव-कोव निकट्ठा करन बम्बयी आवे थे । बापूजी मुझे अपने पास मानको ललचा रहूँ थे और अन्तमें बापूजीके चार बहनोंमें छे कोजी ती मैबिका बनी मिस बाकवय में जानेको संयाग हो गयी । मने मजीकी छुट्टिमें तकके छिन्न ही जाना मजूर किया और कटापीछे बम्बयी गयी । बम्बयीसे २३ मजीकी बापूजीके साथ मैबाप्रामके निजे रवाना हुयी ।

हम दूसरे दिन मगमग ११॥ बजे छेबाप्राम पहुच । बापूजी मेरा कंवा पकड़कर पहले सींचे मुठे बाके पाग ही ले गये । और मुनकी छरछ पकेरकर बासे बहल करने को तुम्हारे निज अक लडकी माया हूँ । अब मिसे अण्ठी छरछ पकड़कर रगता छानि भाग न सके ।

अपुरोसल छर्र बाज बज में अपनी डायरीम पढ़ती हूँ तब बीसा कमठा हूँ मालो बापूजे अक अक सन्दकी मुठी समय मविप्यबाजी कर बी बी । ये निजे दो महीनकी छट्टिया बिताने ही छेबाप्राम गयी थी परतु पूबजके किनी पुण्यके प्रतापने बा और बापू बोनाकी अठिम छेबा करनेबा सीमाप्य मुझ मिला ।

बा मुझे अपने कमरेम ले गयी । मेरा सामान मुदन ही ध्यब स्थित रलबाबा । प्रेमपुषं एब्दीम मुझे बहा बगी अब तुझे भूज लपी होपी मिमनिजे बहसे गहा ल । परतु तू फॉब बहलनी हूँ एह मुझे पमाद नहीं । तेरी मुग्ग ११-१४ बपकी ता अबप्य होगी ? छेरे पाग बाङनी नहीं होपी । ले यह मेरी माटी बहन ले बादमें म तुम बोङनी कड हुयी । यी बहकर अपनी पुनी हुयी नाही मेरे हाथ पर रख ही । ये छग करके निज हस्तीबस्ती हो गयी कि बा भिजनी बही (प्रतिपठामें) हूँ अजनी नाही जे अजरम बीमे पहन जगती हूँ ? परतु मेरी परेतामीको लममजर से बोनी निजम मकोच क्यों करती हूँ ?

कह फिर कुछ बापगी तो मैं पहन लंगी। फिर भी बा भीर बापूजीका कपड़ा हमारे भिन्ने तो प्रसादी ही हो सकता है। मुझे पहना कैसे बा सकता है? हमारों मोव बुनकी प्रधादीको यादवारके तीर पर रखते हैं। बुनके बजान में अब पहनूँ तो कोधी पाप तो नहीं समेगा न? अबे जैसे विचार भी मनमें आये। फिर भी मैं हिम्मतके साथ बिल्कार नहीं कर सकी और मने गहा कर साड़ी पहन ली।

मुझे बुन समय साड़ी पहननेकी आवत ही नहीं थी। अिसिभिने पहनना नहीं आया। परंतु बाक साथ अेक और बहन रहती थी बुनहोंने मुझे ठीक वरमें पहना थी। बाको मानो खूब सतोप हुआ। वे बोली

हां अब मुझ तू बकर अच्छी समती है! अितनी बड़ी १४ सालकी लड़कीको कही फॉक अच्छा लगता है? परंतु आजकल विदेशी शैलनने बांधीली तरह सब बगह अपना बसण फैला दिया है।”

बा मने मोवमक भिन्ने ले यकी। जानेमें बुनका हुआ साम रोपी मकनन रही और बुन बा। आमममें जानेकी बंटी ११ बने होनी थी अिसिभिने खानबाली में अकेली ही रह यकी थी। बुनका हुआ साम बुनमें भी कबूरा मुहमें रखते ही मिचली जाने लयती थी। बा मरी विविकी समय यकी। बुनका अेनारसीका बत बा अिनदित्र सूरज (जमीरुद) का साथ बनाया बा। बुनमें मे मुझ जोड़ाता दिया। परंतु वह डर तो पा ही कि अिन तरह नियमके विच्छ साथ छात्रनी भीर बापूजीको पठा अेकेता तो वे मुझे क्या कहेंगे? पिताजी और मेरी बहनें अेरेण मुझ अिन बातकी बलना बगत रहते थे कि माघनके आदेम और नियम जी तोड़ना है बुनके जैसे बुरे हाल होने ह। अिनदित्र में पहनेन ही नाबजान रहना चाहनी थी। बा वेण अितरा देनडर मेरे मनकी बाग मनन यकी। बाकी आरके दिन गा मे बादन पीरे बीरे अम्मान ही आयता ता मैं खुद ही मुझे नहीं बुनी।

अस लिखाएन बा बापूजीके वरमें यकी। बुनमें वह यकी कि खुद बन यकी होपी अिनदित्र कुछ देन तो लेना। योड़ी देनमें वे आया। वे मारी नहीं अिनदित्र बुनहनक तीर पर बहन लगी

तो बाबू बटेमें बापू बनीं। परंतु मुझे नहीं भुठाया। बाबूका मौसम का बिसमिन्ने हमारे किन्ने स्वयं रसोमीबरसे मान लाकर पानीमें सिपो रखे। कुछ समय रामदास काकाका काका भी बाके पास ही था। हम तीनोंका बाने नास्ता दिया। मैं झिन्कार कर रही थी परंतु बाके साथ रहनबाकी बहनने मुझे बाके स्वभावका परिचय देकर कहा

बा जाने या पहननेकी कोमी चीजें हैं ठक रणि हो या न हो बकर से लेनी चाहिये। बाको सिन्धानेमें बड़ा मानद और संतोष होता है। बिसमिन्ने नहीं लोपी तो वे नापज होंगी। बिसमिन्ने मेने भी नास्ता किया।

द्विधनेमें अक्षवार आ पये। बाको अक्षवार सुनाने। फिर बाने डाक सिन्धानेकी। द्विधनेमें तीन बज पये बिसमिन्ने ब चरखा चलाने बेठी।

चरखा हानमें सेते केते बाने कहा "तू चरखा नहीं लायी?" मुझे बड़ी घमं आयी। मेने ना तो कह दिया परंतु कुछ समय बेसा कना कि बाके पास चरखेके बिना बाकी कैसे रहूँ? मनमें यह डर था कि चरखा नहीं लायी बिसमिन्ने बा नापज होंगी। परंतु बुद्धिंत बनने प्रथमय घन्नोंमें चरखेका मीठा उत्पन्न समझाया बिस चरख कैसे काम चलेया? हमें रोज कातना ही चाहिये। तुझे रोज कपड़े पहनने पडते हैं। बिननी ही बात नहीं है कि हम कपड़े घरीरकी सज्जा बहनकी पहनत हैं परंतु ठंड और गरमीमें कपड़े हमारे घरीरकी रखा भी करते हैं और हमारे किन्ने बहुत बाबन्धक ह। बिननीरिन्ने तू ठंड करवायेगा महा ठंड रिना मुझे कपड़े पेनीमें रखकर लायी है। बड़ी भी जाने बहन कपड़ोंकी पंटी के जानेकी बाबत हमें जाने बन जाने पडी हुयी है। बेसी ही आज्ञा यदि भारतके लीनीको चरखा चलानकी यह बापू भी बापूजीका बितना ही काम लेयीसे बन जाय। यह के अरना हुनग चरखा तुझे देनी ह। अब बिन पर बातना।

बिन प्रार बाने बाडेके पद्रीम मुझे चरखा उत्पन्न समझा दिया थी बिन बापूका मान बना दिया कि बापूके चरखाको केन प्रदान करनेकी मुझे बीनर बिननी बुलट बावना है। कोमी बाब पटे बापूका बं बान और बाके मुन हुन कपड़ोंकी ठंड करन लनी। बारी

तीस्र बुद्धि मेरे फॉक पर पड़ी। तुरंत ही मुझे कहन लगी बेटा! बरा फॉक तो दिखा। मे बच्चे नहीं रहने चाहिये। मानूम होता है तुझे कपड़े बनाने नहीं आता। कराचीमें तो नीकर पोत होने न? हम चाप जब तेरे बराबर थीं तब तो हमारी छापी हो चुकी थी। मा-बाप नीकर रखकर आजकलकी कड़कियोंको पंगु बना बैठे हैं। का मे मिटाई बिचमें बहुत साबुनका काम नहीं। हाथसे खूब मसलना चाहिये। तू रोज कपड़े बोककर मुझे बठाया कर। दो तीन दिनमें सब ठीक हो जायगा। मे सब बातें महा बधिक सीखनी होंगी। पढ़ना भी जाना चाहिये और प्रत्येक काम भी जाना चाहिये।

बापूजी मुझ बाके पास छोड़ गये थे तबसे मे बुनके पास मची नहीं थी। शामको खानेकी बटीके समय (पांच बजे) बापूजीको खानेके बिचने जाने जबरबस्ती मुझ मेका। (बापूजी बीनों समय सामूहिक मायनाखमें खाने जाते थे।)

बापूजीके पास गयी तो मे बोक बरे, यह कड़कीसे मेकबम स्त्री कब बन गयी? आज यह साड़ी क्यों पहनी है? यह तो बाकी मानूम होती है। खूब अपनाको समाल सके बिचनी भी शक्ति मुझमें नहीं है फिर अपरसे बिचना मार क्यों खाए रही है? क्या तेरे पास फॉक नहीं है? न हो तो दिखावा दू।

मेने कहा बापूजी मीठीबाको फॉक पसन्द नहीं है! मुझीने मुझे साड़ी पहननेके बिचने कहा और अपनी साड़ी थी। मेने मुझसे ही साड़ी पहनी है। बिच तरह बातें करते करते इन बराबरे तक पहुँचे। बा बाहर जाती तो बापूजीने बात छोड़ी बिच बेचारीको साड़ी किस बिचने पहनायी है? मने ही यह १५ बर्षकी हो परतु मे तो बिच ११-१२ बर्षकी ही मानता हूँ। बिसे बाबाबीस बीड़ने खेकनेका मीका मिशना चाहिये। यह अपनी साड़ी थी भी नहीं तकती। मुझे पता होता तो मुझ ही निकलवा देता।

बा बापूजी पर नाटाज होकर वाली मे फॉक तो हरपिब नहीं पहनने दूगी। कड़कियोंके बारेमें मे बधिक जानती हूँ। साड़ी आजके ही बिचने है, कलसे बीड़नी दे दूगी। कड़कीकी मेरे पास रखा

है, ती मुझे वैसे पसन्द होगा वही पहनाऊंगी। हाँ भिखकी भिखी
 कौंक ही पहननेकी हो ती भिख पर मेरी बरा भी बबरबस्ती नहीं है।”
 जब मैं धर्मसंकेतमें पड़ गयी। भिखकी मानूँ? बाकी या बापुकी?
 अन्तमें मेने कहा मेरे पास कौमी उ कौंक है मुझे पहन बापु
 बारमें नमे नहीं सिलबाऊंगी। और भिख बातको बीनीमे मुत्माहणे
 मान लिया। जाने भिख पर बरा भी आपत्ति नहीं की।

भिख प्रकार २४ मयी १९४२ के दिनसे मुझे भिख दोनों महान
 आत्मशौकी घौतल छायामें स्थायी रूपसे रहनेका सौभाग्य प्राप्त
 हुआ। यह दिनस जीवतमें सदाके लिये बनिष्ठ हो गया। और आज
 मागो यह स्वप्नक्त् बन गया है। जब यह विचार करती हूँ तो लपटा
 है कि क्या है यह सपने मे या बीनी-आपत्ती महान आत्मशौकी?

या मेरी पढ़ाई आन-पान बनेरा इरनेक बातका स्थान रखती
 थी। और मेरे दिन भी बाकी सेवा करनेमें खेल्ने-पढ़नेमें
 और आत्ममजीवन जीनेके आनन्दमें सुखपूर्वक व्यतीत होने लगे।

२

पहला पाठ

मेरे आनके बाब मेरे छात्र रहनबाकी बहन बीमार हो गयी। मुझे
 सख्त दुखार माने लगा। भिखिखे बाकी सारी सेवा मेरे हाथमें जा
 गयी। जाने कुछ बहनकी खाट आग्रहपूर्वक अपने ही कमरेमें रखवायी।
 कुछ बहनका दुखार कम बरकर स्थिता हो जाता है मुझे जाने
 पीने स्पंज अतिमा मिट्टीकी पट्टियाँ बगेरा उमाग सेवाकुसुपाका
 प्यान या बड़े प्रेमसे रखती। मुझे बहनको बरखेकी आवाज
 अच्छी नहीं लगती थी भिखिखे या पासबाकी छोटीसी कोठरीमें काटती
 थी। बीमारोंमें दूसरेकी कड़कीकी भिखनी देखबाब खेद माकी
 तरह भिखनी ही स्थिया कर सकती है।

जैसा मेने पहले लिखा है जाने मुझे पढ़ानेकी व्यवस्था भग
 छात्रीमाजीको दीप दी। मुझे पास मेरा अग्रणी बुधराती बीच-पणित

भूमिति संस्कृत विधिहास भूगोल बसेराका सम्पन्न नियमित रूपसे
 करता था। बंकरवार जाने मुझाया कि कमी कमी बिसकी परीक्षा भी
 लेते रहिये। जिसदिने अंग्रेजीकी पांचवी कक्षाकी पढाई करनाभी
 हम दो तीन छहदियोंकी परीक्षा लेनका मनसाहीमासीन निर्णय किया।
 बाकी तो जिसकी जानकारी थी ही। परंतु जिस दिन परीक्षा थी
 उसी दिन सवाप्रान्न काप्रेस बकिंग कमेटीकी बैठक होनेके कारण
 मेहमान आने हुन थे। और घानकी रोटी बनानी थी। बहनें कुछ
 समय बोड़ी थीं। भरी परीक्षा घानके छ बज घाब थी। जिसदिने
 मैं चार बज इतरी पहनकि साब रीटिया बकनसे जिम्मे मीनतालयमें
 गयी। कमी पाब सात रीटिया ही बकी थी कि बा आयी। मेरे हाथसे
 बेलन के किया और मुझ मीन बुकहना देन कभी क्या ठेरे बजाय मुझे
 परीक्षामें बिठायेगी? बचारी पढनेमें भूय गभी जान पड़ती है वो यहाँ
 आकर बैठ पडी है। बादन मोतीका नाशक होनी एव बहान बजाय
 जायसे कि म तो रीटी बकन पडी थी। तुम मुझमें पूछना चाहिये
 या कि रीटी बकने जाऊ? मैं शकमरके सिद्ध स्पष्ट रह पडी।
 मैंने कहा परंतु साहे चार बज पत्र व और जिनन बकिंग जानवाले
 होनेके कारण मुझ बुलाया गया जिसदिने मैं था गयी। मैंने अपनी
 पढाई पूरी कर ली है। आप महा रीटी बकेंगी तो बक जायगी।
 मैं बोड़ी थी बेलकर कमी कमी जाभूगी।

जिनता-सा बडी हिम्मत करके मैं बोली तो सही परंतु बाबा
 बबाब मुनकर खुस्ती पछनायी।

हा मैं तुम लडके-लडकियोंको — पढाईके शौरेणको — बूब
 जानती हू। वो हो वह व कि भिन्न तरह नू पढनेसे बच निकलना
 चाहती है। या यहन और सीपी पढन बैठ जा। कभी बचमालीमे
 वह हैनो हू कि बूब कठिन गवान पूछना। और फिर यदि कोई
 नम्बर लायी तो नू ठेरी जानती हू।

मैं कुछ बोले बिना चुपचाप चली आयी। वा जिसकी जिम्मे
 दारी मेरी भुगरी संभाषण अन्न गरीरवा हाकि बहुचाकर भी
 राती थी।

मेरी जाँचे बियड़ पड़ी थी। चरमा बा परंतु में जगाती न थी। बाको मासूम नहीं बा कि मेरी जाँचे बियड़ी हुयी है।

बाके कमरेमें अके ठाक है। मुसम मुंमुमका अ बनाया हुआ है। बाब भी सेबाधामसे वह भीबूह ह। वही बा सुबह छाम भीका बिबा बजाती भाबा फरती नीठा पढ़ती और अके हो फूल बजाती। वह अ मिटन क्या तो बाने मुझे फिरसे बना देतको कहा। मैं अ बनाया परंतु बरा नीचेकी पाब ठीक नहीं बनी। मुसका मुझे तो कौभी बास पठा नहीं बाबा। परंतु बाकी कला-वारणी बाबाोंने तुरंत देल किया। मुझेने मुससे कहा मनु दूरसे देख तो अ की नीचेकी पाब बरा बेडीक लमती है। मैं दूरसे देखनेका प्रयत्न किया परंतु बिबाजी र्हे तब न? कुछ समय कुछ मुसर देना बाहिये बिसकिजे मे बिलता ही बोली कि अभी ठीक कर देती हूँ। बा बाहर बरामदेमें बनी गयी। बिस बीच मैं चरमा क्याकर देल किया। बाके कमरेमें अके जानी है। बाने मुसमें से मुस चरमा लमाते देख किया। मुसी बाब अन्तर जानी क्यों तुझे भी चरमा लमता ह? तो क्यातो क्यों नहीं? बाबे कदाबद बिगाड़ती है क्या? बाबमें रामदासकी मुसी बेता हाक होगा। बाबसे चरमा नहीं क्याया तो मे अपना कुछ भी काम तुझे नहीं करने हुंसी। याव रचना बापुजीसे कह हुंगी। और तुसे भी दोनदूरको परमीमे तीन सठरोंका रस निकालकर पी लेना है। मुसीको बिससे बडा काम हुआ बा। (मुसी बधात् मुमिना— रामदास काकाकी बडी लडकी।)

मुझे लम्पता भी नहीं थी कि बा बिस तरह मेरी बोनी पकड़ लयी। परंतु कुछ दिन बाने मुझे चरमा न जगाया बिबा होता तो बाबब आब मे बिलकुल लयी हो जाती। लबबा जाँचे अरंत कमजोर तो हो ही जाती।

मेरी अके कुटेब थी। बाने बैठती तो कमी पाकीका छोटा न करती थी। बिसका कारण वह भी बा कि हम बार पाब कड़किबा बाब जान बैठती और बरंत मलनेम रगर्ग होती कि कील लखी जल मिटी है। मुझे बरंत मलनेका अम्पास कम बा बिसकिजे मे कससे कम बरंतोंका

मुपमास करती। पानी केकर न बैठनस अके मिलास कम मठना पड़वा। यह भी मनकी अके थोटी ठी भी ही। फिर भी मुझे याद है कि मेरी अके मुसकमान छहेकी ओहरा बहुमके पास मुससे दुपुन बर्तन होते ठी भी यह मुज भिस स्वर्षामें हरा देती। यह बुस्य बा भी कमी बार देखनी भी। और मुहू भी हमारी भिस स्वर्षामें मजा भासा बा।

मिन्ही दिनों अके बार बाधममें प्रार्थनाके बाद मुझे बिचरुने काट लिया। मुसकी मघह्य पीड़ा २४ बंटे ठी रहनी ही है। रोज बाका बिस्तर, खाने-पीनबा प्रबंध तथा अन्य कुछ सेवा में करती थी। बाके कमरेमें भिन दिनों में अकेकी ही थी। बाज प्रमस मेरे छिर पर हाय फेर। प्रार्थनाके बादे हमारे रोजके बाधममें हम सब कइकियां मिलकर अन्वाखरीबा खेल खसती या बाके पास बैठकर कापी ठाई (वीनका प्रभाव नामक मुखरानी पुस्तकके लेखक प्रमुबाम गांधीकी माना) मजन गाठी खरती मामी बाकी कमर बजाठी और खरती मौनी (बाधमके अरवस्थापक चिमलभालभाभी शाहकी पत्नी) दुर्गामौली (बहारेबमाजी देनाजीकी पत्नी) और गौमली काकी (पी बिजोरभालभाभी मघरबाकाकी पत्नी) खाने-पीनसे निपट खुदन बर बाके पास जाकर बैठनी थीं। भिन प्रचार खाटे समय बाधमबा कुटम्ब बिचरुल करना बा। अिसबिजे अउ खनका बिचरु बाटनस हमारे गाम भय ही गया। अउ बापुजी खेलेके जिजे भायें सब मेरे पास आवे। बाज कहा "बनिब न बचारी कइकी गेल छी थी भिनमें भिम बिचरुने बा" लिना।

बाधममें या बापुजी तथा हम मइकिया प्रार्थनामयन पर नेनमें मुझे बाबाखे नीने गांठे बा। बा बहूण देर तक मेरे बाज बैसि छी। हमरे शिन भी कोकी बाज न हा मना। राउ बाकी बाजी न परीगनी थी अिनक बजाम बा मेरी बाजी परीमहर गीभी और पानीबा लाग बरबर मुने दिया। हमया लाग बरबर गान बैठनी ठेरी बाण्ड गही है यह बाज मुने बहना रोज भुन जाती ह। अिन नाचबानीगे नू केरे जिजे लाग बरबर एनी है, बनी नाचबानी मुझे अान बायम एनी बाहिय।

वह ठीक नहीं कि बाबा काम तो अच्छी तरह कर दे और अपना चाहे बिध तरह करनेकी छूट रहे। जैसे बादमी कमी जाये नहीं बढ़ते। खाने-खाते किसी समय पानी पीनेकी जरूरत पड़ जाये तब या तो तुमसे पूछे हारों बुठना पड़े अथवा बूधरेस मापनेकी नौबत आवे। ठीरे मनमें अगर यह खयाल हो कि बेसा करनेसे अंक लोटा कम मसना पड़ना तो यह बड़े आह्वयका चिन्ह माना जायना। अब बाबसे रोम पानी भरकर खाने बैठना।

बा छोटी छोटी बातें कितनी सूक्ष्मता और संक्षेपम समजा सबती थीं जिसका मुझे यह प्रत्यक्ष पाठ मिला।

३

बा और बापूकी बिबामी

१९४२ का ब्रह्मसमी महीना बहुत स्मरणीय बन गया। रोम अल बादीम प्रसन्न मुतावा आता बा कि बापू स्वभाव करने बा आमरण बनमान ? सारी बाबकीन बापूकी बुद्धिमार्में ही होनी थी। बा बाहनों तो जिन सब मनाह-मयाविरीन मुक्तक मौजूद रहने पर कीजी अंतराज न करना। परन्तु मेने देखा कि वे कमी धानगी सनाह-मयाविरीन मुक्तककी जिज्ञासा नहीं रखती थी। बा यह सम्बन्ध मूक ही गयी थी कि बापू पर गलीके मान बुद्धता ज्यादा अधिरार है। कारण बापू सबके बापू और बाह भी बापू बन गये थे। और बा भी सबकी बा और बापूकी थी बा बन गयी थी। त्रिनिद्विद्व बरि आम जनता अणुबादीम सम्मेलन मान देती थी ता बादी भी अणुबादी सम्मेलन मानना चाहिये।

त्रिनिद्विद्व बादी जिय भारी हयबनकी बहुत बिल्ला रानी थी। हयबनबापू न बापूरा अणुबादी मान हीहयन बने आर नाभर देन मन बाबो पड़कर मुताया। बाब देन बड़ी आनुरता थीर नाबपानीमे मुता। परन्तु नाबब अणु देने मुतानेमे लगीन नहीं हुआ त्रिनिद्व अणुबादी हयब बा देन बरि बादी पड़ा। (हरियनबापू के

केस भी बा पहलेसे मही पड़ती थीं जब वे प्रति सप्ताह छपते मुझके बाद ही नियमित पड़ती थीं।) पढ़कर कहने लगी “जमी तक बापूजीने बिलनी कड़ाबी नहीं दिखायी थी। जिसलिये जब या तो सरकार यह बखार बन्द कर देनी या कोमी मुसल-मुसल पकर होगी। दिन दिनों खुरखेर बहुत (बादाबायी गौरोजीकी पीची) भी बही थी। वे रोष बाके कमरेमें बहनोंकी समा करती और बसम यह बताती थी कि यदि बापूजी कड़ाबी छेड़ें तो बहनोंकी क्या करना चाहिये।

अन्तमें बयस्तका महीना जाया। बापूजीको कांग्रेस महासमितिकी बैठकके लिये २ तारीखको बम्बयी जाना था। बाका जाना तब मही हो रहा था क्योंकि मुनका स्वास्थ्य कमजोर था और बापूजी मानते थे कि सरकार जिस बार मुझे हरीगिर नहीं पकड़ेगी। बापूजीन बाको समझाया तुम मही रहो। सरकार मुझे नहीं पकड़गी। सरकार बिलनी पामक बोड़े ही है?

परन्तु बा बिन तरह माननेवाली नहीं थी। मुझीन बापूजीको बुलार दिया मुझे क्यों नहीं ले जाते? मैं बापकी बाकाकी जानती हूँ। जिस बार क्या सरकार बापकी पकड़े बिना रहेगी? बाप बिलना कड़ा लिखते हैं? मैं पकर चलूगी। जहाँ बाप बहाँ मैं।

बापू ब्रेक टावर भी नहीं बोले। तो फिर हो जाओ तैयार।” और हुबा भी जमा ही। बापूजीन स्वय प्रस्ताव रखे भाषण दिये। फिर भी मुनका अनुमान पकन निकला। और केवल समाचारपत्रो परले किया हुबा बाई बाबा अनुमान बिलकुल सही निकला और सबको पक जाना पड़ा।

बाने मुझ तैयारी करनकी बहा। मानी बाकी नारे प्रविष्यवा पना ही बिन तरह वे मुझ प्रत्येक छोटी-बड़ी चीज बार करके बगानी थी और कहीं बा भव गिराहाम रहा बापन जाना है? बने पूजा “मोरीबा मैं भा बन्? वे बोको बेटो तुम मे जाना तो मुझे बगठा करनेवा परन्तु तेरे निब बापूजीके बहनी तो मेरा जाना भी दर

बायेपा। फिर वहाँ प्रजा है जिसकिसे मुझे कोभी विपन्न नहीं होगी।” (प्रभावतीबहल श्री अमप्रकाशजीकी पत्नी)।

मेने बाकी पेटी बमायी। पेटीमें साड़ियाँ रखाते रखाते वे बोलीं यह साड़ी मुझे राजकुमारीने कात कर बी है जिसकिसे बिछ नकर रख। वह बेचारी बहुत खुश होगी। बामें हुसरोंको खुश करनेके लिये महान् गुण थे। अक काल किनारकी साड़ी बापूके घुठकी थी वह मेरे हाथमें रखकर गपूवद कंटोये बोली बेटा सायब हम पकड़े बामें और आत्मम भी बख्त कर किया जान तो मेरी बिछ साड़ीको संभाळ कर रखना। जबसे यह साड़ी बुनकर लाम्बी तबसे मेने अपने मनमें निश्चय कर किया है कि मरते समय बापूकी यही साड़ी भीड़ूंगी। यही मेरी अक अंतिम बिच्छा है। बिछे तू पूरी करना। यह बात तुझे ही कहती हूँ और किसीसे नहीं कहूँ। मुझे जो कुछ के जाना हो भस्के के बामें परन्तु बिछ साड़ीकी रक्षाकी जिम्मेदारी तुझ पर है।

हुमा भी यही। आत्मम बख्त तो नहीं हुमा परन्तु जब किपीर कालमात्री मद्यकबाकाको पकड़ने रातमें पुक्तिष्ठ लाम्बी तब अन्तीकी पूरी संका थी। परन्तु वह साड़ी क्यों ही डा बीर बापू पकड़े बसे मेने बजायबाडी बर्बामें भंज दी। बीर मेरे आगाछाँ महलमें जानके बाद वह साड़ी बहा मयबा थी। वहाँ अपने ही हाथों बाकी जोड़ायी। बुनकी बिछनी-सी अंतिम बिच्छा में पूरी कर सकी यह मेरे पुष्पके बल तो नहीं परन्तु बड़े-बूढ़ीके पुष्प और आसीबंदिके बल पर ही हुमा। बाम बिच्छा मुझे अपार सन्तोष है। साड़ीकी बात परसे जान पड़ता है कि बाम पतिमक्ति — बापू-मक्ति किछनी लूची किछनी भय्य थी।

० तारीखकी स्टेशन पर जाते जाते मुझे बार बार लम्बी बातेँ बान मनमात्री बीका बीया नियमित जलाना। हम पकड़े बामें तो कराभी बली जाना। घरीरकी बर्बाँ तरह नंजाल रखना। मेरे कमरेमें अकेलापन लभे तो बुगकि यह सोने जाना। मुझे अच्छी तरह नाम्ना मिलना रहे बिछके लिये आजनाम्यके व्यवस्थापक श्री इन्दरबापूकी लभ बातेँ समझायी।

जिस चीज को कहने वाले जिसे अपना नामकी समझीन जानगी बनाकर भेजी । बाको जिन मूंग बगारकी बनी समझीन चीजोंका चीक तो था । क्विन् जून कहनेको किबनाया तुम आत्मके सब नियम जानती हो । फिर यह चीज क्यों भेजी ? मुझे खानी हो तो यहाँ कौन मना करता ह ? परन्तु जिस प्रकार बाहरकी चीजें में बा ही कैसे सकता हूँ ? बापूके सामन भी कसी खोर ठहरेगी ?

जाने जून अपनी के टकड़ा करवाकर जतिम समय सबकी पालिसीमें रखाया थिय । जूनन अरु टकड़ा भी नहीं खाया । जिस प्रकार बा बापूके सारे नियम बहुत ही समझ-बूझकर पाकती थी । मुझे कीबनमें वे जके जाने-बनजान बापूके पीछे लिचती रही हों परन्तु जून नियमोंके समझन बाकके बाब ता जिन हूब तक जूनका पालन करती थी । चाहती थी जून अपनी को अपने कमरेमें रखवाकर बुसरे दिन रास्तीम जानके किबन के जाती । परन्तु बा कभी पापका पोषण कर सकती थी ? तब तो बा बा न बन सकती होती ।

बा और बापूने सामसम बड गंभीर बातवचनम विद्या थी । बाबक जून बिरे हुआ थे । राजनतिक बाबक तो थे ही माथ ही ये बुरती बाबक भी थे । दिन बड़ा नीरम लग रहा था । या तो पूरा सुमंजसाप आनन्दमर होता हूँ बा बरमान ही अच्छी लगती हूँ । परन्तु यह तो न बरमान थी न घुप । मुझ लगता हूँ कि हमन जो पकून देखा जाता हूँ जून पर मेरा बिरबाम जिन बटनाके बाब अधिक बैठ गया । बाके मुझे यही पद्य निकल रहे थ तब कहा आत्मम आता हूँ ? मुझ नहीं लगता कि अब फिरसे न आत्ममची देगुदी ।

और बाब सेवाप्राप्त आत्मम कीकर फिर कभी देना ही नहीं । जूनकी आगिनी विद्यायी आगिनी ही साबिन हुजी ।

गिरफ्तारी

बापूजी और बा जिस दिन बय मुस दिन आश्रममें सूना-सूना करने लगा । किसीका कहीं भी ही नहीं लगता था । किसीके जिन्ने मानो कोबी काम-बंभा ही नहीं रह गया था । दूसरे दिन में बाका कमरा साफ किया । सब सामान पासकी कोठरीमें भरकर बहा ताजा ढपा दिया और कुजी वामनके व्यवस्थापक विमलदास काकाको धीप बी ।

सभीकी नजर बम्बजीके समाचारों पर लगी हुई थी । मैंने आश्रममें जानेके बाद आश्रमके निवमानुसार सब तक पाखाना-सफाई नहीं की थी क्योंकि पूज्य बाकी ऐशामें सबेरेका समय बछा जाता था । परन्तु बा और बापूजीके बले जानके बाद मुझ भी यह आनन्द मुठालेकी सिद्धा हुआ । पूज्य बापूजीके आश्रममें पाखाना-सफाई करना भी बीबनका एक अनूष्य आनन्द बा और आज भी है । जिस कामस बीबनके निर्माणमें किटना अनूष्य काम होता है यह तो अनुभव करनेवालेको ही पता चलता है । मुझ पत्नीसे बड़ी बिन होती थी । कभी किसीको के करते देखती थी मुझे तो होते होती परन्तु मुझे सुरस के हो जाती । मैंने यह बिन मिठानके बिच ही आन-बूतकर पाखाना-सफाईकी मांग की और मेरी सारी बिन मुझे बाद ही मिटी । मुझे समता है कि ने यह पहले ब्रिडनी ही बिन करनेवाली होती तो बा और बापूजीके पास टिक ही नहीं सफ्टी थी । परन्तु बेक सप्ताह पाखानकी बास्तियां अठानसे मुझ बहुत सान हुआ । ८ अगस्त मेरी सफाईकी अंतिम दिन था । सबको यह बिरबाम था कि बा और बापूजी कक अवरस आनने । ब्रिगमिज्र वाभागा सटाजीम तिपटकर मैंने बापूजीका कमरा साफ किया बरामदही और भी दिया और पूज्य बाकी सब बीजे ब्यौकी ली बना था । परन्तु बीबनको लोकाकी कौन समझ सकता है ?

९ तारीखको सुबह ८३ बजे सब गठालेकि पकड़ छिये जानेके समाचार आवे । हम यत्रात्रबाईठ टलीकोन द्वारा सब समाचार सीध मित्रा करने थे ।

यह खबर संवाप्रामके आसपास बामुबगस सब बनह फेल गयी । आसपासके बैहातके लोग आवे । सब क्रिश्चोरमाल काकाके यहाँ भिन्न-दृष्टे हुए और सबने रोठे हिस्से प्रार्थना की । बापूजीका प्यारा गीत बज्जब बन गायो गया । संवाप्रामके मनुष्य ठो गया पेड़ फल फल भी मानो बिना हाकर, बिना हिंसेबुले बडबडु सड़ बे । सूर्य मपवान भी शोक अनुभव करते हो भिन्न प्रकार बाहलोमें छिये मय बे । क्रिश्चोरमाल काकान बम्बनी टेलीकोन करनेकी सड़ी कोछिस की सब लड़ी मुस्किमध लाभिन मिनी । और मुसमें भी भिठनी ही खबर मिनी कि महापैष काका यीमती सरोबिनी नायबु और मीराबहन बापूके साथ हैं ।

और बा ? बासे पुछिसने कहा बापूजीके साथ जाना हो तो आप जा सकती हैं । परन्तु बा तो बहाबुर थी । मुझे सरकारकी बेसी मेहरबानी कहा बरबास्त हीती ? मुहोंमें बिन्कार कर दिया । घामको बहनोंकी समाका प्रबन्ध करवाया और मुसमें देनका सम्बेस सुरन्त तैयार कराया । वह सम्बेस भिन्न प्रकार का

बहनोंकी पुण्य कस्तूरबाका सम्बेस

महात्माजी तो आपकी बहुत कुछ कह चुके हैं । कब मुहोंन बाजी बंटे तक काप्रेस महासमितिके भजन हरबके बुझ्यार प्रकट किये । मुससे अधिक और कुछ कहनेका हो ही गया संकटा है ?

अब तो मुनके आबेसों पर बमल करला है । अब बहनोंको अपना एक दिखाना है । सभी जातिबोधी बहनों मिलकर जिस लड़ाजीको सुसोमिठ करे । छाय और बहिंसका मार्ग न छोड़ें ।

बिदला हाबुस बम्बनी

ता १-८-४२

कस्तूरबा बाजी

बैसी थीं बा। वे कोसी पड़ी-छिपी नहीं थी फिर भी छोटा-सा भीर प्रभावीत्यादक संकेत मुन्होंने सिखाया।

परन्तु सरकारकी क्या भावी या वह बाधे डर गयी कुछ भी हो लेकिन भिठना तो सही है कि मुझमें बाकी कुछ सत्रामें जानेका कष्ट नहीं किया। सत्रामें जानेके बजाय मुन्हें सीधे मोटरमें बिठाकर आर्बर रोड चलनें ही संभवे। बाके साथ डॉक्टर सुधीलाबहन भी थी। कुछ समय मुन्हें वहाँ रखनेके बाद दोनोंकी बापूजीके पास ले गये। बा आर्बर रोड बेलमें भीर बहाधि पूजा गयी कुछ समयकी मुनकी मानसिक स्थिति कैसी थी वे बापूजीके पास पहुँची तब क्या हुआ वह सब हाथ जानने कामक है। डॉ सुधीलाबहन बाके साथ भी कुछ बतका मुन्होंने हमारी बा * नामक पुस्तकमें सुन्दर वर्णन किया है वह बहुत लोग जानते होंगे। फिर भी ऊपरके संदर्भमें मुझका जोड़ासा भाग यहाँ दे ई, तो अनुचित नहीं होना।

आर्बर रोड बेलमें

टा १ - ८-४२

रातके करीब दो बजे कुछ आवाज सुनकर मैं जूठ बैठी। देखा तो बा पाखानस भा रही थी। मुझे रातमें पतले रस्त होना लगे थे। मेरे मुठनसे पहले वे कभी बार पाखाने जा चुकी थीं। मैंने मुठकर बाकी मध्य की भीर मुझे बिस्तरमें मुकाबा। दूसरे दिन जब डॉक्टर आये तब मैं बीमारीकी बिना पर बाके जिन्ने साथ सुराफकी मात्र की। विश्व कमरेमें हमें रखा गया बा मुसकी हवा भितनी खराब थी कि अन्दर बैठे ही छिरम बर्ब होने क्यता बा। मेडनकी भी बैसा क्ता भिसिज्में मुझने हमसे कहा कि हम मुझके कमरेमें जाकर बैठे। लेकिन बाकी जल्दी ही पाखाना जानक जिन्ने मुठना पड़ा। बार-बार बहाधे जाना जाना बाकी छिस्त्रिके बाहर बा भिसिज्में इन बापस अपने कमरेमें जा गयी। बाग भापह करके मूख बाहर मँजा। लेकिन मैं जोड़ी धेर बाध

* तबबाबत प्रकाशन मंत्रि, कीमत २- - ।

ही अन्दर खड़ी पड़ी। बुनी समय ब्रेक और बहन हमारे कमरेमें लामबी बनीं। वह तीन-चार छोट बच्चोंको छोड़कर भाबी थीं। जाने बुर प्रमत्त बुनका सब हाल पूछा। बाके मन पर व्यक्तिगत बुनक और चिन्ताका बोझ नहीं था। बुन्हें एो बन्ध डूठरी ही चिन्ता रुवा रही थी— क्या बापूजी हिन्दुस्तानका बुनक दूर करनेमें सफल हो सकेंगे? स्टेसन न बाहर हमें बंके बेटिम कममें बैठाया गया। मुझे नीब आ रही थी पर भा मल्लभासि जाय रही थी। स्टेशन पर हमेंघाका ठरू कोपोंछा भाना-जाता मीड-मइबधा और घोरगुल बापी था। बा ध्यानपूर्वक सब कुछ देख रही थीं। एकदमके वे शोक मुठीं "सुमासा देख यह दुनिया तो जैसे बक रहा है जैसे कुछ हुआ ही न हो! बापूजीको स्वराज्य कैसे मिलवा? बुनकी भावाजमें भितनी कहना भरी वो कि सुनकर मेरी भाबीं उबड़ना भाजीं।

भापाजी महकमें प्रवेश

वा ११-८-४२

"मुबह करीब छठ बज गाड़ी बक छोटसे स्टेसन पर आई। ब्रेक पुकिम बठसर हमें लिबाने भाया था। बाको सारी रात बस्त भाते रहे वे भितसे वे बिलकुल कमजोर हो पड़ी थी। स्टेसन पर बुनके सिमे कुरसी तैयार रबीं बनीं थीं मपर बुन्होंने कुरसी पर बंठलसे भिन्कार लिमा। बाका स्वभाव ही था कि बन्ध तक घरीर बक रुके बुसे चलना हुधरे पर बुनका बोझ न डालना। वे बककर ही बाहर भायी। बाहर मीटर तैयार थी। करीब भासे बंटमें मीटर भाबाधा महकके फटक पर पांणी। पहरेधारोंने ब्रेक बधा फटक लोला। कुछ दूर जान पर ब्रेक तारक्य बरबाधा बुका। मीटर पोचमें बाकर आई हो पड़ी। बा मेरा सहाय केकर परे-बरे न किया बड़ी। बरामदेम कुछ कंबी साइ लगा रहे न। हमने बुनक पूछा बापूजीका कमरा कौनसा है? " ब्रेकने बधाव बिधा "अलीरका। बा मेरे छहारे पीरे-बरे बककर बापूजीके कमरेमें पांणी। बापू ब्रेक बुंची गरी पर बंठे वे। पेंसिल हाचने केकर वे ध्यानपूर्वक बोबी केन मुबार रहे वे। महाबेचभाबी

पास खड़े थे। कुछ चर्चा चल रही थी। हम जब मुनके विछकुल नजरोंक पहुँच यहीं तब महादेवमामीने हमें देखा। वे बहुत खुश हुए। लेकिन बापुकी स्वीकिया थोड़ी चढ़ यमी। मुझे लगा क्या वा दुर्बलताके कारण मेरा नियोग बसहा छयनकी बजहस तो यहाँ मेरे पीछ-पीछ नहीं चला आओ? यह अन्ता कर्तव्य तो नहीं भूल यमी? बापुवाने ठाके स्वरमें पूछा — तुने यहाँ आनेकी भिच्छा प्रयट की थी या मुन मौगीने कुछ पकड़ा? बा भेक लयके जिमे चुप रही। वे कुछ समझ ही न पाओ कि बापु क्या पूछ रहे ह। मने जबाब दिया — नहीं बापुकी बिरपदार होकर आमी ह। अब बा समझी कि बापु क्या पूछ रहे ह। सोरी — नहीं नहीं मेने फोडी मात्र नहीं की थी। खुशीन हमें पकड़ा है। बाकी छाटमें मुसाकर मेने मुनक छिमे बबाका मुस्ता किया। मकर बाके रस्त तो बापुकोके दर्शनसे और मनका बीस हसका हो जानस अपने भाप बन्द हो मय थे। बबाकी सिर्फ बेक ही लुराक मुन्हे बी यमी। दूसरी लुराक देनेकी जरूरत ही नहीं पड़ी। सायर बक भी न देते तो भी काम चल जाता।

५

महादेव काकाका अवसान

जमी भेक छप्ताह भी पूरा नहीं हुआ था कि भेक अकस्मित घात आघात मया। यह जितना भयकर था उससे सबन्धित जानकीको बीस बसहा कुछ हुआ कि बाब ८ बरदके बाद भी यह ठामा ही भासूम होता है। मिमो बर्मकी मानी हुमी कर्तव्यीं पुब और जाने हुमे ठवा मनवाने कोबीके — जिन्होंने मुनका केवल नाम ही मुसा होना और बितने लो केवल मुनकी केसनीकी ही जानते होने — उनके हृदयी पर छपनवामा यह यहरा बाब पूस्य महादेव काकाके अवसानका था। किनीको स्वप्नमें भी जबाब नहीं था कि पहाड़ पीसे महादेव काका बित ठरह बेकाबेक बने जायने। बजाजबाड़ीके बबलेठे फोन आया रैडियो पर समाचार आया है कि महादेवमामी मुजर

गये। जिस पर कसे बिदबाम किया जाय ? दुर्गा मीमीकी कौन बहन जाय ? बादमें बुभुय फोन आया कि कर्नल मन्गरीक राम बाठे बनने करते ही मुन्हें बनकर आ पसे और बही सहाई मित्र सा गये। पुग्ग महादेव काकाकी मृत्युका वरज बिच गुर्गालाबहनने इमारी बा नामक पुस्तकम पौचा है। मुस्तन मे बोड़ा-सा भाग पहा देती हू

सनिवार, १५-८-४२

हमेगाकी तरह बापू मुबहू ७॥ बज्र चुनन निकसे। महादेवमात्री भी मुम दिन चुनन लाये। आठ बज्र सब साथ लौट जाय। बापूजी माक्तिप कटने गये और महादेवमात्री अपन काममें रुक गये। बा पत्ता चलने नहीं आती। मुम दिन जेलोके बिम्पेवटर बनरम कर्नल नहारी आनवास बे। कौरो जोग बरामदेमें बही फर्निमि मध्यत्री कर रहे प। बा थीमनी सरोजिनी नायडूके कमरेम थी। बाई देग्ग कर्नल मन्गरीकी मीटर आती। बापूको और मुझे छोकर बाकी सब साथ थीमनी नायडूके कमरेम चुनने जाने कर रहे प। मे बापूजीकी माक्तिप कर रही थी। बीच बीचम महादेवमात्री बनीरक हुमनकी आवाज आनी रहता थी। अचानक आवाज बन्द हा गयी। तिमोन मुझे पुगारा। मे मवत्री कर्नल मन्गरीम बिम्बने मित्रे बुझाया होवा। बिननेम बा एह दोही धारी और बोरी गुर्गाला उरही चल महादेवको टिग आयी है। म बोड़ी नहीं। महादेवमात्री महाप्रयागकी नैवारीमें बे। नारी बर थी। हृदयकी पनि बन्द थी। माम चल रही थी। गरीज बेठा जा रहा था।

मेम बापूजीकी बुझाया। बे थी ममसे कि वरज घन्गीमे मित्रम मित्रे ही बुझा जा रहा है। तिमिने जवन बहा महादेवकी लशयव टीक करी है। तिमिम बापूजी पर बगना बैग हो कि महादेव मात्री हदनाके मित्रे जानकी नैवारी बन रहे ह। बापू महादेवमात्रीकी लटियाके नाम आकर गड़ हूवे और महादेव महादेव पुकारन लये। बा बजन लगी महादेव महादेव। बापूजी धार है। महादेव बापूजी बलाते ह। पर महादेवमात्री ला प्रम दिन दिर्माता भी बराबर देवबाने

नहीं थे। पीरे-पीरे मुमकी छाँच भी बन्द हो गयी। बाके छिन्ने भिन्न बय्याबातको छहना सबसे कठिन था। वे बड़ी हिम्मतके साथ प्रार्थना बयैरामें सामिल हुयी। मगर आनुबोंकी घारा तो मबंङ बहती ही रही। मुमकी आँसोके सामने सारी दुनिया बूम-सी रही थी।

आखिर जब सबको बरुानेके छिन्ने नीचे ले बये तो बा भी बापहपुर्रक नीचे आयी। बनी मुममें सीढ़ियाँ बड़ने अतरनेकी ताकत नहीं आयी थी। मगर वे अपने महादेवको पहुँचाने भी न आर्य यह कैस हो सकता था? बाकी कमजोर हास्यको बैजठ ह्य यह बाह्ये वे कि वे दाहनिया न बैखें तो मम्का हो। लेकिन बा बड़नेवाली नहीं थी। बिठाये बाड़ी दूर मुमकी कुरती रबीं गयी। या सारे समय हाथ जोड़कर यही पुकारती रहीं महादेव तू जहाँ आय बहाँ मुसी रहना। और बीच बीचमें पूछ जुठती महादेव क्यों गया? मे क्यों नहीं गयी? भीरवरका यह कैसा स्याम है? सबको जभाकर ह्य सब बर लौटे। घानके पाच बज बुके वे। बरमें पूरा सप्ताटा था। कौन किछ सत्त्वमा बिता?

बाको लया करता कि ब्राह्मणकी मृत्यु तो मारी अपसङ्ग है। बापु बह्ये हा सरकारके छिन्ने। पर बाके मनसे यह संका मिटी नहीं। कुछ विगो बाद वे फिर कहने लगी मुसीला यह ब्रह्महत्याका पाप तो हमारे सिर ही रुना न? बापुजीने सझाजी छेयी महादेव बेस्म आया और यहाँ लुसकी मृत्यु हुयी। यह पाप तो हमारे ही मत्वे बड़ा न?

आगरा महकका यह कैसा मबानक दूब होगा बिठकी बल्पना अपरके बरुब बर्चन परस भी बाता घावर कठिन है। ये बरमा लनानी बिठ ल्ये महादेव बाबा मुसे तथा मिनी कह्ये थे। कोबी भी बाग होली तो बहने यह मेरी पासतू मिनी है। रिनी बल महादेव काका भाजन कर रहे हो कोबी मन्गी चीज बनानी बड़ी हा और मे जा पड़ू तो बह्ये पासतू मिनी ता मेरी बाजीम मे ही लाययी। यह कुछ भी डोस-फोड़ करके मुमम नहीं बबायेगी। बिनवा बरं यह कि बुरी बिहितवादी तरह

झूठा जूबन न मचाया जाय जबरि झूठा थापह न करया जाय । परन्तु कोमी पसन्दकी चीज हो तो सँ भी तरह का की जाय । म कहती कि खा तो मु, परन्तु बापूजीकी जिजाबत चाहिये न ? (बापममें बापमके रनोडेके सिवाय बिनके बरोंमें बहुत निजी रनोड़ होठे बहा बापमके रनोडेमें खानेबासने वाली चीज नहीं खा सकते, बसा नियम बा ।) बिनसिजे महादेव काका हंसकर हाथ पकड़कर यह कहते हुमे मुझ जबरदस्ती बिठा लेते मगर तू तो मिनी है न ? तेरे बिजे अरबाह है । मे बापुस कह बुगा कि कही भी मिनी (बिस्की)के बिजे बैसा नियम नहीं मुता । सिर्फ आपके बापममें ही मुता ह । जिस तरह झूठ भी नहीं बाध और सब भी नहीं । बैसा करो बा कुंजरो बा तो पीहण्य भगशानने भी मिखाया है और धर्मराज बुबिठिर भी तो बोले बे न । जिस तरह मजाक करक कमी कमी मुझमें स्वार ही रह जाय बिनती भी चीज तो भी बिसाये बिना जान न देन बे । और फिर बापुसे छियाठ भी नहीं बे । बापुने भी हमसे हसते यह बेटे ब — अमी बात कही भी नहीं मुनी कि मिनी (बिस्की)की भी सारे नियम पाकने पड़ें । बापु कहत मद बिनता ही है कि यह दो पीरोबाकी है और यह चार पीरोबाकी होगी है । लेकिन महादेव काकाका बिमाग क्या कम बा ? बापुके सामने ही मुझसे कहते तो तुम दो हाथो और दो पीरोसे चलकर जाना चाहिये जिससे मे भी सच्चा और बापु भी सच्चे । बापु मुझसे कहते देख तो सही महादेव तुम जिकानके सिजे जानबर बना रहा है । जिस प्रकार कभी बार मजाक जसठा । महादेव काका बितने ही नाममें क्यो न हा हम बालक यदि बुनक पास कुछ बात करने जाते तो बे कभी हमसे सीधी तरह बात न करत । या तो हमारे बाल पकड़ते या बाल पकड़त । कुछ नहीं तो सीठी जपन ती मागते ही । जैसे प्रजल ब । आजिरी बार गेबापामस जब मुन्होंने बिबा की तब म अह प्रबाम करने मबी । मझे अपने पास बिठाकर बहा अच्छा मिनी अब तो क्या पता हम फिर कभी बिलमे या नहीं बिसगे । भाषी कभी कभी मनुष्यके मुझे मलय बात कहनबानी है । मन रोत रोते बहा मार जेठ जायेंगे न ? मे भी जानूगी । अरे तू ता छँतीती

लड़की है तुझे कौन ले जायदा ? मगर जल्ममें मिलियां (विरिक्त्यां) बहुत होती ह। मनमें तू भी बक बड़ जायगी। जुनके अंतिम सख्त सदाके लिये अतिम बन गये। मुन्होंने जानसे पहले मुझसे नीचेका प्रजन गवाया बा। मुझे वह भजन बहुत ही पसन्द बा। मत कराबीम सीखा बा। मुझसे बे बार बार यह भजन गवाते बे। बापुजीका भी यह बहुत प्रिय बा।

बाके न बाके सठाबे हो मानबी
 न सेजे बिसामो
 ने झुसजे बेकहा बाये
 हो मानबी ! न सेजे बिसामो !
 तारे मुस्तबधाना मारम मुलामना
 तारे बुडारवाना जीवन ब्यामना
 हिम्मत न हारजे तू क्याये
 हो मानबी ! न सेजे बिसामो !
 जीवनने पंच बत्ता ताप बाक जागजे
 बबती बिटम्बना सहता तूं बाकजे
 सहता मुंकट बे बचाये
 हो मानबी ! न सेजे बिसामो !
 बाजे बटाबी तुज आपरानो टेकरो
 भागे भागे तुजे बनबाबघां खेतरो
 लटे लटे बे बचां छे
 हो मानबी ! न सेजे बिसामो !
 झांखा बबतभा बेकको प्रकासजे
 बाजे अंवार तेने बेकको बिदारजे
 छोले बा बायकु ह्वाये
 हो मानबी ! न सेजे बिसामो !

मेरे विषामो न क्याये हे मानवी देवे विषामो
तारी हैया बरगडेने छाये हा मानवी देव विषामो *

यह पीठ कुछ बहुत ही प्रिय था। कुन्हीं माता भिन्न प्रकारक पीलाको जीवनम अन्त कर ही अपना जीवन सार्क किया था। और भिन्न अन्तिम कहींके तो माता के पीठी-जामठी मूर्ति ही बन गय थे —

मेरे विषामो न क्याये हे मानवी देवे विषामो
तारी हैया बरगडेने छाये हो मानवी देव विषामो

पक्षीस पक्षीस बर्य तक बापूजीकी अन्त देवा की न रात देव न दिन देवा न ठड देवी न पूष देव और जीवनके अन्तिम एक तक बापूजीका काम करत-करत बापूजीम ही अपन प्रार्थको समा कर हृदयकी बुझकी छायामें ही कुन्हींने विषाम किया। कौन जान शाब्द निर्मात्र अग्रेज भविष्यवाचके कामें मुझम यह पीठ क्याया हो? अग्रे यह पीठ क्याय नहीं था। और अनी कुमवा स्वर भी नहीं

* हे मानव नू बके वा न बके कभी विषाम न लेना और अकेले हाथों लडते रहना। हे मानव विषाम न लेना। तुमो बुगदमें शासनबाक भाव लय करने ह। और बरग जीवनका अन्त करना है। नू नहीं य विष्मल न शरमा हे मानव विषाम न लेना। जीवन एक पर बनन हुमे तुम पूष और बजाबट लगवी। कर्नी हुमी कर्नाभिया और विष्मलनाको करते-करते नू बन जायगा। हे मानव अिन माते मकताता बहादुरीम कर लेना अरिभ विषाम न लेना। अपनी मुर्तिबाका पराह कापने हूअ बन जाया। अकेले काम दिन अंतिम पीठ हाय। अगममे कर्नी कसेया ना वे अय ठरे होंगे। हे मानव विषाम न लेना। अि पृथिक जगतम अकेले अपना प्रयाग पैगना। जो अकेला मानव काय अय अरुन जीवन कसे जाना। अके पर जीवन काट ही जाय अरिभ हे मानव विषाम न लेना। नहीं भी विषाम न लेना। हे मानव बुधरीह। विषाम देना। हे मानव नू अरुन हृदयकी बुझकी छायाम करवा विषाम देना।

बैठा था। परंतु जिसे जीवनमंत्र मान लिया हो कुछ स्वरकी क्या परबाह ?

मुझसे कहा मुझे छटपट ब्रेक कायम पर यह गीत सुतार दे। मने ब्रेक कागज पर लिख दिया। अर्जुने यह कायम अपने कुरतेके भागके बेबमें सजाकर रख लिया और उसके लिख संवाधाम आधम छोड़ दिया।

जैसा असह्य बाबात करने पर मी बापूजी खेलेक बाबनके कारण महादेव काकाके प्रिय पुत्र भाटाबनमाजीको और मुनकी माता (बुर्बाहन) को वो सब मी आरवागमक न सिद्ध सकें यह कैसे छह हो सकता है। अर्जुने कह दिया तो मुझे किसीको भी पत्र नहीं लिखना है। मैं सच्चा कुदुम्ब केक गांधी-कुदुम्ब ही नहीं है। जैसे सकुचित पारिवारिक जीवनमें जीना तो मैंने कमीका छोड़ दिया है। और तबस बापूके साथ रहनेवाले छात्रोंने वेकसे अपने किसी भी सबकीको पत्र नहीं लिखा।

हमारे संवाधमें जैसे मजेदार पौराणिक किस्से प्रचलित हैं कि किसी भी १२ कसबीकाके अनुप्यक बलिदान दिया जाय तो बहुत काम सकल हो जाता है। जात करके बेनिर्वाके विषयमें तो जैसा कहा ही जाता है। क्या महादेव काकाके विषयमें मी जैसा ही हुआ ? भारतकी स्वतंत्रताकी लड़ाईमें प्रसिद्ध अप्रसिद्ध बितने ही सेवकीका बलिदान दिया गया है परंतु जैसे हाथीके पैरमें सभी समा जाते हैं जैसे ही जिस ब्रेक महान आत्मके बलिदानसे ही तो अन्तमें स्वतंत्रता बेबीको प्रसन्न न होना पडा हो ? क्या किसीके १५ मनस्तकी यह हमारी बितने बपीकी गुलामीकी खंभीरे ठोकर आजी ? कहीं अर्जुने कभी तारीखको भारत माताको गुलामीसे मुक्त करके अपने पाप छो नहीं बीने ? कुछ भी हो बहुत विचार करने पर जैसा महामुठ हुमे बिना नहीं रहना कि जिसमें कौमी न कौमी बीस्वरीय संकेत बकर होगा। संवाधाममें हम सबने मुनका भाइ-विषय मुनके लिवाच-स्वाध पर कताजी और प्रार्थना तथा गीता गठमें बिताया जो अर्जुने बहुत प्रिय था।

सेवाग्राममें धरपकड़

सेवाग्राम २२-८-४२

पू महादेव काकाकी मृत्युक सोरका सप्ताह ब्रेक बर्ष बितना लम्बा बनकर बड़ी मुदिकछले बीता और अगस्तका तीसरा सप्ताह का पतुचा।

बह भी कमी परीक्षाका सप्ताह था। सबको बतहूप बुन्धमें जो बोझ बहुत आश्वासन मिल रहा था बह भी शायद मगबालको अच्छा नहीं लम्बा होमा जबदा कमी तक परीक्षा बाकी रहू कमी होगी। क्योंकि कमी तक आधम दुर्गाबहन और शारामनमाभी जिनसे आश्वासन प्राप्त कर रहे थे अर्हू भी सरकारन छीन किबा कुन्हे जेल्में बिठा दिना।

२ अगस्तको पू बापूजी का और महादेव काकाने बम्बयी जानेके सिन्ने आधम छोड़ा। ८ तारीखको अनिदिष्ट अवधिक सिन्ने सबने आधम छोड़ा पू महादेव काका अपन प्रिय सेवाग्रामको सबाके सिन्ने छोडकर गये और बुन्धमें सान्त्वना देनवाक किशोरलाल काकाने २२ तारीखकी रातको अनिदिष्ट समक सिन्ने सेवाग्राम छोड़ा। बिस प्रकार सारा बन त माम ही हन सबक सिन्ने अग्नि-परीक्षाका सिद्ध हुआ।

२२ अगस्तकी रातको कौमी बीस पुकिछबार्मीकी हबिबारबन्ध सेना अबातक सेवाग्राममें आ बमकी। आधमके ब्रेक माभी थी मुजा लालने अफ्तरम पूजा बापको दिग्ने नाम है? अठमन बहा हूमें भी किशोरलाल मगस्वालाक बरकी लमायी सेनी है कुनका बर बहा है हूमें बगार्येने? रातक करीब डेड-बी बज होने। किशोरलाल बाकाक बरदि बरबाजे तो कुन ही थे।

बक ती माधम बपसि पाब मील बुर बहुत शान्त बपह पर स्थित है। पुमरे, एतकी नीरब घान्ति थी। मुस घांतिमें प-र-र-र करती हुयी पुमिसकी मारीन आकर सबकी नीर घोल बी। जिसके अलावा भायभमें बैसी कोयी बटना होने पर बहाका बटा रोत्रसे मिम प्रकारकी आवाजमे बजाना होता था। यह काम मेरे मुपुर्ब था। भिउरिअबे लारी आनकी खबर मिल्ले ही मेंन बटा बजा दिया।

भिउ बटेका नाम खतरेकी घटी रला था। बटेकी आवाज गुनकर पाबसे भी लोग बीड़कर आ पहुँचे। आठपासठ लारी दिघात्म्य और लालीमी संबकी सुस्वाबोके भाभी-बहन भी आ पहुँचे। सभी बिघोरलालमाभीके यहाँ भिउठे हो पये।

पुमिस अफमरने पूछा कोयी कुछ फमार तो गयी बरेवा? हमारे पास छाबन तो बाकी ह परंतु हम नहीं चाहते कि मुनका बपयोग हम यहाँ करना पड़े। माधमके व्यवस्थापनम कहा नहीं जैमा कोयी फमार नहीं होगा।

मं ती मुडकी टरह लड़ी खड़ी मुन समबूठ जैसे पुमिसबालोंकी बेघर हुक्रीबलकी रह बगी। मने कमी बितीको पनड़ते या भिस प्रकार पुमिस बलकी बरी बबुकोमे बैस देला न था। हाँ हातकी पटनात्र अलबारीम अवरम पड़ती थी। परंतु बर्बन पड़ना बक बात है और आरों देलना बुरती बात है भिमबा अनुभव मुस बिती बल हुआ।

दिउ भी मेरा तो भिस मडाजीमें बाग कनेरा दिरचय था। भिउरिअबे धनरा डर बीबी बेहरे पर बल न के भिउकी सावधानी गानमे भल बिजनी मेहनत की भठनी तो खब म रुचमुच पबड़ी बगी तब भी नहीं की थी।

पुमिस एक गान बर छानना मुस दिया और अंन अंन बाबन बाबन एक देग बाग। परंतु बक कुछ भी आगतित्रमक गार्हिय न थि गया। अलब बिघागगत बाबाके रिमी बागत्र पर हम्पावर बरनवा बटा। बटाड भिउ। बर दिया। मुपरेकी बिडीना भित गया के अदभार पुमिस अफमरन मुसल बागट निबासा और अफ

तैयार हो जानकी कहा। सबेरेके ३॥ बज गये ये। सबने मन्म हृदयमे प्रार्थना की। सामानमें सिंहे अेक पुनियौंका बंडल और बक चरणा था। भितनी बबिड कमजोर लदीयत होन पर भी बिचोरमास काहाने अेक घासक सिबाय कुछ भी बाडन-बिछानका न किया और न नपड़ोका बूमग खंडा ही थाय मिया। गोमरी बाकी तो हिम्मतवाली हू ही। बुरहाने प्रणाम करके सबसे पहले बिदा की।

पुन भिातहासमें ह्म पडस ह्म कि जब राजपूठ सङ्गे जात ये तब पूरबीर राजपूतमिया ह्मते-ह्मते बभरमें लम्बार बापकर और माये पर निष्क समाहर जाने पनियोग बहरी बैगिये हार कर लोटनक बजाय पीछ रह हुअे आगाका बरा भी बिचार रिमे बिना रजभूमि पर बागुरीस रुड़ते सङ्गे घबुके हाथ भर जाना। मुन बीर राजपूठजीका बंतरतापूर्य मलराबिचार टिटा जा रहा है भना कील कह सरगा है? जब गोमरी काकीन प्रिलन बाबक लोमाक बीच सबसे पहले ह्मते हुअे बिचोरमास बाबाको बिदाकीका प्रणाम किया तब मुन पर भना ही भनर हुआ। क्योंकि यह भी ता अेक प्रराग्रा रणधाय ही था। जिनका रक्षक मम ही दुसरा हो परंतु मोचा जाय तो बन्मुखिपि अंन ही थी। अस्ते यह रणधाय बबिक दिनक था। क्योंकि जिन बहिनक रजभूमिमें रिमीको माग्ना ता क्या माग्ना बिचार नक बरनकी मनाही थी। केवल मरनकी ही बात थी। जिनमिअे जिनम मन पर बाबु रग्ना बहुत बटिन है।

प्रणाम करनक धैरा लम्बर मरम मागिरी बा। बिचोरमास बाबाके यह पर तो सिमनहास्य ही था। जिन जिनकी हिरापने देनी थी अने बिदा देते मरन अरुटी हिरापने देते जान प। मिसी प्रराग मुसे भी मरजाया मुग्दारी भिण्डा बगबी बाभरी नही है और अयमुखबादबात्री (अने निडात्री)न मुम जैसा बाहा बैना बरनकी बनुरी ही है। जिनमिअे म मुग्दें रीजका तो नही। परंतु अब भी बिचार कर ला। अयी जिनका बाकी थीरा है। मनको अरुटी तग्ट टटोन तो। परंतु अेर बार ग्हाबीन बरनक बार पीछ न ह्मना। मुग्दारी मुम अयी छाी है। जिनमिअे बिना मोर-नया अोगम बाबर

स्वाधीनमें न कुछ पढ़ना। जिसमें कमी काठी चार्ज हो चाय या योली
 चय चाय तो सब कुछ हंसते हंसते सहन करना पड़ेगा। बिना सब
 बातोंका पूरा विचार करना और पूरी हिम्मत रखना। मुझको
 जगभय ४ बजे किशोरलाल काका जेलमंदिरमें जागके सिन्ने डारीमें
 बैठकर बिदा हुये।

अभी भी बनसतकी मातमाके विषय आममके सिन्ने जाने बाकी
 ही थे। बेसी मायता है कि किसी मनुष्यके पीछे जमुक ग्रह पड़ा
 हो तो बुझका कबूमर निकाल बागता है। किसी प्रकार हमारे
 आममके सिन्ने जमस्तमें कौनसा ग्रह अनिष्ट वा यह तो जीवपर
 जान परतु हर हफ्ते हम कोबी न कोबी जमा बड़ाका मुन ही देते
 थे। लेकिन मेरे सिन्ने तो यह (अंतिम) छप्ताह आमदप्रद साबित हुआ।
 महिका-आममकी बहिनोंने अंक बेसी मृच्छका बना ली थी कि ठारीक
 ३ - ८ - ४२ से बहनोंकी टोछियां रीज बर्बा जाकर १४४वीं वाप
 लीं। तबनुसार आज कानून-बंद करनेकी बारी आममके महिका
 बककी जाती। जिससिन्ने यों ही जयाल हुआ कि जगस्तका अन्तिम
 छप्ताह भी शांतिसे कैसे गुजर सकता है? आमममें कुछ न कुछ
 लमी बटना तो होनी ही चाहिये।

मे जगन्धररी अपनी तैबारी कर रही थी। हमारे ८ बहनोंके
 बलमें हम ३ बहनोंकी मुझमें दो-दो चार-चार बर्बका अंतर था।
 हमारे बलमें जोहरा बहुत मेरी पास दिव थी। हम दोनों तो अपना
 विस्तर भी अंक ही बना लिया था। जपड़े जी दोनोंके अंकसे थे। हम
 नूब मुन्नाहमे तैबाग हो रही थी। परतु मे छोनी भी और फौर
 पहननी थी। जिससिन्ने सब हमें बिड़ाते थे कि मनु-जोहण बन्द
 अलक हंजी क्योंकि मनु छोनी है। मुने कोबी नहीं पचड़ेना। जिस
 प्रकार बिड़ानेवालीन आममके अंक बहुत विनोशी जाती बलबलसिंहजी
 और डूभते जलमाली कावा (प्रोफेसर नभसाली) थे। मैं जिससे बड़ी
 बनेगा लुकी। जिससिन्ने हम दोनोंने अंक मुल्लि विजाली पहने
 हुए जगता पर ही मेने नाड़ी पहन ली जिससे मे बड़ी बीर नागी
 बीगत लगी।

हमारे हृदयमें ४ बहनों २५ वर्षके भीतरकी और ४ प्रीत थीं ।

हमने प्रार्थना की। विमलकाल काकाने (आधमके व्यवस्थापक)

बाके न बाके छठावे भजन (दिलिये पृष्ठ २४) गानेकी सूचना की

थी। अगका जोस भी चड गया था ।

आधममें सबको प्रणाम करनेका सीमाव्य मुझे ही प्राप्त था

क्योंकि सब मुझसे बड़ थे। अगमें मैं अके ही घाभी (कड़के) मुझसे

बहुत बड़े तो नहीं थे २-३ वर्ष ही बड़े होंगे। फिर भी मरी हुंसी

बुझाई हुअे मुझसे कहते अरी मनु हम भी तुझसे तो बड़े हैं

हमारे पांव पड़ । मैं साक्षी यदि भिन्न मंडलीमें कोजी मुझसे

छोटा होता तो मैं भी मुझसे अबरन् पाव पड़बाकर जोरसे पीठमें

बपे कपाती। परन्तु दुर्भाग्यसे अंडा कोजी भी नहीं था।

द्विन द्विनके मने पांव पड़े थे अन्हींने मुझे जोरसे बपे लगा

कर मेरा मखाक बुझाया।

द्विन लोपीके भिजे अल था और मरे प्राच निरल रहे थ। द्विन

को भाक्षियोंको प्रणाम करने समय मुझे बड़ा मुस्मा आया परन्तु अकेकी

विदात्रीके समय अरमकुल नहीं होना चाहिये भिन्न अयामसे भिच्छा

न होने पर भी मने अन्हीं प्रणाम दिया। फिर भी आज ता यह

स्पष्ट लक्षता है कि मुझ अल अके आसीबाद अरमकुल अयमें पड़े ।

अलअलसिद्धी और अलमाली काकाने अयम अन्तमें महा लड़ाकीमें

जानेका अल जानेका अंस तो तुम पर अल छाया हुआ है। परन्तु

बापूको सब साये बिना लीट आनी तो ठीरी और नहीं है। अलमूल

द्विन लागोकी बागी कनी और मने बापूके बिना अलके बाहर और

नहीं रना। भिन्नमें विदात्रीके समय अल अन्त-करणमें दिजे हुअे

आधमके अन्तुर्गके आसीबाद ही बागमूल हुअ।

हम सब अहित टीक ४ अजे अयनि तिलक बीरमें पड़नी और

द्विन द्विनके अल आया अमने भागव दिया छोटी अहर्नने राणीय

गीत और मारे लयाने शुरू कर दिजे। द्विन अरार आजे पटेमें हमने

अनी अंडलीको अमानकी अरजात थी और कुछ भीड़ भिरट्टी

हुजी जितनेमें तो रात्रसी मोटर छारी ब र र र करती हमारे सामने बा पड़ी हुजी । अममें बैठे हुजे भारमिर्षोटी बेसकर हमें अधिक बोध बड़ा । हमने खोरखोरसे गागा दुरु किया और पुकिषको बिडालक बिज मरकारी मौकरी छत्र दो का माउ अधिकारिक खोरस सगाने सगी । पुकस भी हम पर मुस्सा हो रही थी परतु हमारी आवाज सुन कर नीड़ जमा न हो पाय सिर्फ जिनीसिबे बिना कारण पेटील बढाकर भी छारीकी आवाज बारी रही । भितनम कौजी बेट बाबबाले निकल (जहा तक मुझे बाद है वह बराठ थी) । वे बाबबाले बचारे किसी अशुभ बर्गामें निकसे हीग कर्षीकि भुन्हे सरकार माजी-बाप का हुसम हुआ कि बिन लोणीका बह भुमे मुसक जाने आम बेट बराठ हुजे बाप फिर भस ही ये लोय राय बढापती रहे कुछ समयमें भजन बाप बक जायबी । हमारे बठेमें पानी जितना प्यासा मुस पना कि आवाज ही बह हो पबी । सेरिन कंती मी मुछीबठ सेकरर बारी बार्सि गारे लयाकर मुन लोणीको छकाना तो वा ही ।

बचारे बानेबालोंकी तो घामठ ही बा पबी । जतमें मुनके पानिकीकी मुन्हे छोड़कर खुपबाप भजन प-सुष्य स्थान पर जाना पना । बाने हमारे सिबे रहे ।

हमारे दनमें बाभम-ब्यवस्थापककी पली सीमटी एकरी बहुत भी थी । मुन्हे म सीनीजी नहनी थी । एकरी मीछी प्रीत्र होठे हुजे भी बहुत बिनोषी है । भिस बुटुम्भन जितने ही बपों तक बाभममें बापूजीकी अननिष्ठ सेवा की है वे अत्यन्त मूक संबक ह । वे आज भी जमो पडा और निष्ठान बाभमका मचालन कर रहे ह । बापूजी मुमे अनेक बार भिन परिवारके बारेमें बहा करत वे मैं एकरी बहनकी बाने कम ल्यामी नहीं मानता । ये बीनों पति-पत्नी बस मेरी आज्ञा सिन्ने ही बिना किसी बहमके मुमे मिरोचार्य कर सैठे है । बैसे बैसे परिवारीकी अद्भन विगलन बापूजी हमारे भिन छोड़ पये है यह हमारे सिबे कीबी कम सीबाभ्यकी बाठ है ?

मिन बहुतको हिन्दी नहीं जाती जिससिद्धे कहने लगी "जदे, बा' तो मामानी जान' है। अटलेज' मुझके छिन्ने बाबा' बीबा' है। मामाके घर रोटमाय' नहीं है ने मोटमाय' नहीं है।

जिससे हसते हंसते हमारा पेट दुखने लगा। हमने मजाकमें पुलिसका नाम मामाका घर रख दिया था।

हमें न तो पुलिस पकड़ती थी और न हमारा कहना किसीको सुनत देती थी। दो घंटे तक हमारा जोस बना रहा। अन्तमें बूब पक बनी और विधाम ऊनके छिन्ने सेक बबूतरे पर बीठी। बाजे मोटर बघैरा सब बन्द हो गये। परंतु ज्यों ही हमने बोझा शुरू किया त्यों ही बून्नोंने भी शुरू कर दिया।

अन्तम दिन छिपनके बाद साठ-साठे साठ बजे पुलिस अफसरने हुषम दिया कि मोटरमें बैठ जाओ। बूनके मुहसे धम्क निकला ही था कि मैं सबसे पहले चढ़ बनी। बबो बाज रातको बूब सोमनी हमारे मुहसे ये बुद्गार निकल। आवाज बिलकुल बंद गयी थी। १५-२ मिनटमें हम बेसके दरबाने पर पहुची।

दरबाने पर प्रारंभिक विधि पूरी हुयी। सबके साम-पठे लिखे गये। ८ बजे हमें जेक कोठरीम बन्द किया गया। मुझमें ३ ४ स्थिर्बोकी मंडली पहलेसे ही थी। वे हमें बेलकर लुप्त हुयी। बून्हे लमा हम कोबी ताजी खबर सुना सकेगी।

तेज भूख लगी थी। मगर भूखना मिली कि बित्त समय जेकमें खाना नहीं मिल सकता। भूखका मुस्ता जेकर पर निकाला कि हम बित्तनी अमसम छोटोछोटी कोठरीमें ३०-४ स्थिया नहीं रह सकती। भागेका काटक बले ही बन्द कर दीजिय। यह कहकर सब स्थिया कोठरीके बाहर जाकर लगी ही गयी।

बारबिबारके बाद अन्तमें हमारी कोठरी खुली रही। फिर भी जेकके बड़े बड़े बूहासे कारण और पुर्गोकी बीरकमें कुछ प्रयास

१ बा = यह। २ मामानी = मामाकी। ३ जान = बघत। ४ अटलेज = बिलीछिन्ने। ५ बाबा' बीबा' = बाजे दिये। ६ रोटमाय = रोजी थी। ७ मोटमाय = बीनेका बबूतरा थी।

बसाविके कारण रातभर हमारी पलक तक नहीं लगी। जैसे-जैसे धबेरा हुआ।

७

बेलके अनुभव

हम बर्बादी जेजम हो दिन रहें। परतु जिन हो बिनोम ही बनक अनुभव हुये। पहले दिन रातकी तो भूखी ही सो रही। दूसरे दिन सुबह बुनारके भाटेकी राब (कपसी) खायी। हममें से जिन जिनको जेजका अनुभव ना जुन्होम तो पी ली। परतु हम जो मजी भी जुन्होने मुहमें रखते ही बू-बू करके निकाल डाली। राब ककरीस मरी बीर कुछ अजीब गन्धवाली मालूम हुयी। जिस भाषासे कि बीपहरकी कुछ जाने कामक पचान मिलेया धबेरे हमने कुछ भी नहीं खाया। जिस पर कुछ बड़ी बहने नाराज होकर कहने लयी जलमें आकर जैसे नहारे करनेसे कैसे फल बसेगा?

नहाने-जीनके लिजे पानी भी नहीं ना बिलखिजे हमने नहाना ही छोड़ दिया।

ज्यों-ज्यों करके ११ बजायें तक कही जाना आया—जिरा लहसन पका हुआ मुड़बकी बालका पानी बीर ककरीवाली बुनारकी मोटी मोटी रोटिया। बालके बान तो अम्बर मिलतीके ही ब। जिस लिजे मैंने कुछ नहीं खाया बीर भूखी ही बीपहरकी सो मजी। हुसरी बड़ी बहने बहुत नाराज हुयी कि बैसा करोगी तो पकर ई म र बडोगी बीर कमजोरी आ जायगी। पैठमें भूख तो बूब लगी हुयी थी परतु सामकी भाषामें बीपहरका बचन जमे जैसे दिताया।

परतु बिना जाय कर तक रहा ना सकता ना? सामकी १ बजने ही जालकी बाकिटा आयी। मोटी रोटिया बीर बाल थी। परतु भूखी होलक कारण बड़ रोनी-बाल बिलनी बचती लयी कि मैं नहाना

किस मित्रा? मैं सुबेर नहीं जाया जिसका जकरको फटा बल गया। जिसीसिअ जिस बरत बण्डा जाना काव। असकमें यह बात नहीं थी। जाना मुबह जेठा ही वा परनु पेटमें अमि थी जिससिअ रोटिया लूब मीठी लयी न ककरो मामूम हुजी और न लहसनकी पत्र। बे रोटिया और दाल भितनी स्वादिष्ट लयी कि अभी तक मने जेना जाना कमी न लाया था।

तीसरे दिन जम्मापनी थी। जिससिअ जकर पूछन थाय कि हमम से कौन कौन बुपशाम करपी? सयमय सभी स्त्रिया बुपशाम करनको तैयार हो ययी। मुममें मुस्लिम बहन भी थी। यह सोम थी वा कि कलाहारम कोभी अजी थीज सानकी दिखेगी। मिठी हुजी मूयपनी और उबठा हुआ रताक उलाहारम मिला। परनु हम असा लमा मानो आज सबसे बहिया थीज सानको दिखी ही। हमन भी बरकर जाया। जब ला चुकी तो हमें तैयार होनको कहा गया और मापपुर सड़क जलम मे जानका हुबम दिया गया।

बहमि मापपुर बगमें गयी। घाम ही गयी थी। लगभग ८ बज हम मापपुर जलम पहुची। जल बटन बनी थी। बहा गुबिया भी गूब थी। परनु मरकी बात यह हुजी कि ज्यों ही हम अन्दर पहुची ल्यों ही बरमापरम दाल भात साम और रोटी हमारे सिअ आयी। दिन भरका जम्मापनीका प्रत था फिर भी हम सबन दाल-दाल गानक सिअ बल लोड दिया। हम चार दिनेकी धूनी थी जिससिअ जिस जोरनमे हमें बहा मनोव हुआ और सानके बाव ही प्रत तादतबा परचाताव दिया। कारणमे मुबह ८ बज तक मोली रही। मापपुर जलम हम वीर्यी लक-बोच नहीं थी। मैंन भी बटन बनी थी। जलने मरी अन्दर अण्ड ब।

४ बयें यिना वा परनु सटानम ८ पर लिपनकी लू थी। जम्मा कीरि नाम नहीं बरमा बरमा था। हमन जानी जानी जिसानुमार दमनकी स्रबन्धा कर भी थी। सानकबा नाम पुनचापने चलता था।

दिन भरमें हमारी डाक या कोजी नये समाचार घामको ४ बर जब हमारी मेट्रन जाती तनी मिल्लै य। जलमें डाक सुन्दर पीपलका पेड़ था। मेट्रन बुझके नीचे बंठली। ज्यों ही फाटक खुलता हन बीर कर जातुरतासे डाककी पुछताछ करती। किती मी बहनकी डाक क्यों न जाये हन सब बड़ी जिमासास भूठ सुननी। वहां हम कपीब करीब १५ स्थिया थी।

हमें जलमें बतक बन्धे-बुरे अनुभव हुवे। पू बापुजी और भयहाली भाजीके सुपबानके दिनमें हमारी स्थिति बरी बिपम रही। बाहरकी बीजी खबर न मिल्लती थी। बेक मसबार जाता था परंतु बुझमें कोजी खास समाचार न मिल्लै वे। सिबाबासे हमारी जो डाक जाती बुझमें अगर कोजी समाचार देता तो बुझ पर बधिकारी बामर पीठ देते वे। कनी कमी तो बेधे पत्र जाते कि जिफाकके पठेके ही बगर सिक पढनको मिल्लै बाकीके बसरी पर बामर पुता होता।

१९४३ के मार्च मासकी १९ तारीखकी घामको बेकाबेक जकर बामे। हमने अपनी मेट्रनको कातना ठिखा दिया था। वे कात रही थी। बेचारी बचराहटमें पड़ बनी कि बिस तरह बचानक चाहन के बानेका क्या कारण होमा?

मेरी बाने बहुत बिगड़ रही थी और बुझार जाता था। वे तीबे मेरे पास बामे। पहले जाच करती कि मनु मांजी कौन है? क्योंकि मेरी मांजी — मद्यपि बुतका नाम मनीसा बहन है परंतु सब मनु मनुबहन भी कहते वे — का बन्धा बीमार था बिसकिमे हमने समझा कि सामब मनुई पीपल पर छोड़ रहे होंग। परंतु बेकरने जाच करके बम्बजी सरकारसे फिर पुछबाबा कि बी मनुमें से कौनसी मनु? बुडी राठको फिर बम्बजी सरकारका नामपुरके जक सुपरिन्टेन्डेन्टके नाम तार बामा १४ बर्यकी लड़की मनु। बुडी राठकी बेकरने बुबाप जाकर नुस ठेवार ही बानेको कहा। मेरी बीमारीके कारण मुझे छोड़ रहे हीये यह समझकर कियनी ही बहनोंने बाहरके अपन बापुजनोंके जिमे मुझे सबेस कहे। बुझने बिगड़टा हुआ सूत बुतबानेके जिमे दिया तो बुझने बन्धेकि जिमे मेटकी बीजे थी।

मेने वो चाहे बिस्तर नीर जेक पेटी तैयार कर बी। जितनेमें हमारी मैट्रग बाकी नीर कहने कमी कुछ बागा है, बाब नहीं। नीर किसीकी कोमी भट नहीं के बागी है। तुम्हारा तो तबाबका कर रहे है। तबाबकेका नाम मुनते ही में पॉन्ड पड़ी। मेरे साथ जो बड़ी सिखायी थी वे भी सब चौकी कि भिस बचारीका ही तबाबका क्यों कर रहे है ?

हमारे साथ रहाना तैमबची भी थी। मुन्होंने बरा मुसैसे कहा "अकेली कड़कीका तबाबका करेंगे तो हम भिसका विरोध करेंगे। जिसकिसे साहबको बुझावो नीर बाब करवो।" मुन्होंने जल गुपरिस्टेन्डन्टको बुझाया। मुन्हे देखते ही रहाना बहनने मुसैसे कहा

भाप हमें बताविये कि मनुका तबाबका कहा कर रहे है। यह कड़की बापुकी सगे रिस्तेकी बेटी है जिसकिसे हम सबकी बटी ह। जिसे हम में नहीं जाने बची। रहाना बहनन जेक ही सांसमें सारी बेचना जड़ेक थी। गुपरिस्टेन्डन्ट भी मुदतमान ब। वे ठके विमापसे मुनते रहे नीर अन्तमें बीके कहिय बनी नीर कुछ कहना है ? (मैं कहकर रहाना बहनको नीर बिबाने लग।) जिस कड़कीके पुष्पकी कोमी हब नहीं। भाप सब १५०-२ बहन बहा है मुनमें भिरीका माप्य बमक मुठा है। में तो अपना नीर अपनी जिम जलका अहो माप्य समझता ह कि भिसमें से अक छोटीसी कड़की संसारके महापुरुषके पास मुनकी सेवाके लिसे जा रही ह। यह कोमी बनी बेटी बाब है ? कस्तूरबाको दिक्कत दौरा हुआ है मुन्होंने मनुकी माग की है। मेरे बयालसे भाप सबकी अनेता भिरीका जेक धाना रुकल हुआ है। यह कस धायाना महलके लिसे रवाना होनी। मेरी नीर देखकर कहने कने "बीतो अब तो बाता है न ?

तब बहनें मुम रह बची। अब गुपरिस्टेन्डन्ट साहब बोल रहे ने तब बेसी धानि थी कि मुनीके गिलेकी बाबाब भी मुनामी वे जाम।

ब तो जानबसे बागल हो बची। गुपरिस्टेन्डन्ट साहब बाने मुम तो मेरी बेटी हो। मेरी तरफने महारमाजी नीर माठा कस्तूरबाको प्रणाम बहकर तबियतके हाल बकर पूछना। में

महारानीकी पैगम्बर साहबकी तरह ही अचतारी पुरुष मानता हूँ।
यों कहकर बहपल हो गये।

गुपरिन्टेन्डेण्ट मुसलमान से मुठ पर अेक बफसर से और हम
कैदी थी। से चाहते तो अपरोक्त बात हमें न कहते। परन्तु बड़े बफसर
होकर भी से बहुत नम से।

८

नागपुरसे पुना

१ मार्च १९४३ की शामको मुझे जापाबां महलमें ल जातके
शुभ समाचार मिल। मेरे बहासे जानक मुपसक्ष्यमें अवरुधी स्थियों
और हमारे साबकी बहर्तने मिलकर २ तारीखको मनोरंजनका
कार्यक्रम रत्ता। यह कार्यक्रम जानल्य देनेवाला था फिर भी बुकि हम
सहेमिया जुदा होतवासी थी जिसलिये हमारी बत्तीसि जागुबीकी
पार लम गभी थी।

दीपहरको दो बजके करीब छान महीने तक चार-बीघारीमें रहनेके
बाद उत्तरा बडा फाटक लुका। मेरे सामानमें अेक छोटासा बैग और अक
बिस्तर ही था। सब बहने दरवाज तक पहुँचाने आभी। परन्तु यह तो
मरन और उत्तरवी मेहरवाणी ही थी। बनी बहा तक अग्ये कौन
जाव देना ?

हमारी अेकके बोधी ही दूर चलन पर सामने पुरसोंकी अेरक
जातो थी। लुनन कपडागाइव इप्पशामबाधी गाभी और बूनरे हमारे
बाधमके लपकन कुटम्बी-जन ही थ। परन्तु अुनसे मिलने तो कौन
रना ? पर लम बारम रेहना बलनन बनाया कि मभी लौन जिस
लकरने बहुत लम हूथ थ।

मम अारिपमम थ शायद बया। बग मेरे लथ जानवाले ही जवान
पुलिन लपार लड थ। अग उत्तर देने लाने बाधवान लौन रहे थे।

जितनमें सुपरिस्टेण्डन्ट साहब का बस। मुझे देखकर फिर मुस्कराते और समझाया कि समझकर जाना तुम्हें रास्तेमें किसी चीजकी बकरत हो तो तुम्हारे साथ जो सिपाही है वनसे कह देना। और तुरन्त सिपाहियोंकी तरफ देखा और खुन्हे बाहर मेजकर मेरे सामन ही बसरको बाटा। जिस लकड़ीके साथ असे बवान छोड़रोंकी भेजा बाटा है ? अक स्त्री-करीकी किलनी जिम्मेवारी होती है जिसका बापको पकरके माते बिककुड मान नहीं ह। जासिने बखरब और गोबिन्दको तमार कीबिये। (बखरब और गोबिन्द दोनों अंबेड खुमके ४ से खुपरके हुंमे।) जना कहकर मून दो नीबवानोको मना कर दिया। खुन्हीके बिस्तर जिन दो खुड सिपाहियोंको बिडवा बिये क्योकि पाड़ी ५ बज रवाना होती थी और ३-४५ यही बज गये थे। अंभर सिपाही सामान सेने बर बाटे तो देर ही जाती। बेचारा बखरब कहन कना

साहब मे जरा बर कह जाबू ? बर पर सब मेरी चिन्ता करेप। साहबन बोलीयो बर से जानके बिज अपनी मोटर बी और औरन सीटनको कहा। सुपरिस्टेण्डन्ट बडे बवानु अफसर थे। वे बखरबसे कह सक्ते थे तुम नीकर करनी ही तो कर, बर नहीं था उकठा। परन्तु खुनम किलनी बया मेरी थी वह म देखती ही रही। सिपाही बडेक मिनिटम बापठ लौठ। मेरे सिजे स्टेशन-बेसन बेसी गाडी आडी। अरुम सामान रखवाया। मैट्रन और सुपरिस्टेण्डन्टको मंग प्रणाम किया। मैट्रन तो रो पडी और सुपरिस्टेण्डन्ट भी मेरी पीठ बप बपाकर मग्मब हो पब और कहन कन बटी। मेरी नीकरीको लम्बग १८ बरन पूरे ही रहे हे। जिस बीच किलने ही करी जावे-यव। बहुतीकी फासी भी देखनी पडी है। अक अलम काम करना पडा है। मेकिन मेरे जीवनमें यह अक प्रसंग मेरे बारिमेंकि किज बहुत महत्वका भावा है कि मुझे अपन ही हाथों कैरियोकी कोठरीमें से महात्मा गांधीके पास अेक बाठिकाको भजनका लौमाग्य मिला। जिस मे कोजी अमी बसी बाठ नहीं मानता। मुझ बिबवास ह कि य महापुण्य ही हम लीगीको धिम पुलामीम मुक्त करनवाले है। खुबात मेरी यही प्रापना है कि खुनकी वह लकड़ी आगिरी लकड़ी बन जाय। नैन जिन बरनोंमें

बहुतसे कैदियों पर अत्याचार किया है परन्तु मुझे अंदा लगता है कि तुम्हें कस्तूरबा बेटी बेबीकी सेवा करने में बड़े समय में सभी पाप भक्षक बन जायेंगे। बटी! मुझ भूखना मत। मैं तुम्हें लेकर मिर्छूपा। तुम्हारा भला करे।" उन्होंने मेरे बचन को धीमे-धीमे पांच मिनट तक गाड़ीका दरवाजा पकड़कर मुझ कहे। वे आज भी मामो मेरे कार्मों में खड़े हैं। (अनका समयमें प्रत्येक शब्द मैंने अपनी नोटबुकमें लिखकर स्टेसन पर ही लिख लिखा। मुझ बहुत लिख लेना कारण तो यही था कि मैं बापूजीके पास पहुंचते ही यह बताना चाहती थी कि अब मुस्लिम अफसर कैसे थे।)

मेरी ही सुपरिन्टेन्डेंट साहब मुझे १९४९ में दिल्लीमें मिले। अब बड़े ही आनन्दके कारण मैं मुझे अकेलमें पहचान न सकी। अतिथिज मुझे मिठी तक एक अनजान मनुष्यके माने में डरते मुझे नमस्ते किया। मुझे मुझे ताजा भारा "बटी! तू भले ही मुझ पूरने नमस्ते कर क्योंकि तू अब बड़ी हो गयी है। पर मेरी तो तू बटी ही है। मादपुर जलको करे याद करती है?" हमें अपनी पुरानी स्थितिकी कमी न भूलना चाहिये। अगर हम मुझ स्थितिकी भूल जाय तो हमारी कोबी कीमत न रहे। चाहे अतिथि नमस्ते हो चाहे अतिथि बड़ा मोहवा हो फिर भी हम यदि बिनाक लीड हैं तो हम निर जायेंगे। अतिथिज अब पुनीके माने में तुम यह गिराता है। भले तू बड़ी बन गयी है। बापूके भाव मेरे पीछे बैसकर मेरा मन भावम लपटा है। अभी तो तू बालिका ही है। पर बापूके कारण तेरा बहुत भोग सम्मान करेगा। परन्तु तू अपना कर्मनाको कभी न छोडना।

मुझे अचरम अलदी याद आ गयी और मैंने मुझे पहचान न मानने कि ब्यापी मागी।

अनको अनावा जलम बन मुझे नमस्ते बायायम देना था। अतिथिज का वह अतिथि भाव नव तो पाजामा और कुरता पहनकर आये थे। मेरे बुर प्रणाम किया और अतिथि बापूजीके नाम ल गयी। बापूजी मुझे अतिथि बहुत खुश हुए। अतिथिज बड़ा बेटी जेल्सी बटी है। अतिथि

आपके दर्शन भी हूँ। कुछ दिन प्रार्थनामें कुरानसरीफकी जायत भी मन्हीं पढ़ी।

बाते जाते आपरके कड़वे शब्द कहनेके लिये मन्हींने मुझसे माफी माँगी। मने कहा आपकी तो मुझे मारनेका भी अधिकार है। बपर आप माफी माँगेंगे तो मैं पापकी जागी बनूगी। पिता भी कही पुत्रीसे माफी माँगता है? मन्हींने कहा म भिषकिय माफी मही माँगता लेकिन तू मुझे पहचान क्यों न सकी यह पूछे बिना मैंने तुम कड़वे शब्द कहे भिषके लिये माफी माँगता हू। मने कहा बिषमें तो आपने मुझे साबदान ही किया है। आप भी मेरे लिये बीसबरसे प्रार्थना कीजिये कि मुझमें हमेशा नफ़रत बनी रहे। आप जैसे मुजुर्मेनि जैसे ही बापीबाद माँगती हूँ।

मैं बागपुर स्टेशन पर पहुँची। लेकिन पाई आब बंटय भेट बी। स्टेशन पर कुछ कोपीको घायब पहुँलेसे ही किसी तरह खबर कय बनी बी। बिसेसे ब्रेक छालीसी टोडी मेरे घासपास बसा हो गयी। सब पूछने लगे कि तुम्हारी बदली कहा हुआ है? मुझे बिलग तो मामूम ही ना कि जलमें जान पर जलके लिये तोड़ना बापुजीको बच्चा नहीं लगता। और कभी बापुजी मुझे पूछ बैठ या म ही वह नू तो मुझे बुरा लगेगा। भिषकिलिये मन रुबकी पही बबाद दिया कि मेरे घाब जाने वाले बूढ़ सिपाहियोंने पूछी। न बिषका जबाब नहीं दे सकती। मैं कंरी हू। मेरे बिम बबाबसे कुछ लोन मरा ही मजाक मुझने लम। कुछ मुबकोंने कहा यदि वह कोपी तो हमारे बजाय तुम्हे काबचा होया हन अपने सने-सम्बन्धियाँ और जान-पहचानवालोंको तार कर देंगे तो स्टेशनों पर तुम्हें मुबिबा ही बावनी। बी चार भाबियोंने कहा अरे, धैमी बूब मडकीको कहा महारमा पापीके पास ले जा रहे ह। बहनवा बिलग बच्चा मीका है ता भी नहीं बहनी। यदि हममें से कोडी बिषकी बगाह होता और उसे रुमजोर बूडे सिपाही हाय होतै तब ता हम रुबा ही कर शकते। भिष तच्छ आपसमें बाते करके मरी बिलनी मुझाते रहे। मुझे यह बरा भी बच्चा नहीं लगता था। लेकिन म चुप चाप सब मुनजी रही। क्योंकि मुझे क्याका जतर नहीं देने से। ५॥ बने

बाड़ी भाजी। यह वाचा बंटा मुझे जेक दिन जितना सम्झा जपा और गाड़ी भाजी तमी जिस छद्मटसे मुक्ति मिली।

मुझे दूसरे दर्जेमें ले जाया गया। लेकिन वहां भी सगत्रय स्टेशन जैसा ही अनुभव हुआ। दूसरे दर्जेके डिब्बेमें मुझाफिर तो बे ही। मेरे सिबे सीट रिजर्व करवा ली थी। लेकिन किसीको मासूम न हो जिससिबे मेरा नाम मही सिन्हा था। स्टेशन मास्टर जाकर मुझे जल्दी तरफसे बाड़ीमें बंठा पये। नावपुरमें बाड़ी बीचक मिणिट ठहरी। जिस बीच स्टेशनवाली कुछ टीलीकी संख्या बची और डिब्बेके पास करीब छौ खादनी डिब्बेठे होकर "महात्मा गांधीकी जय बोझने लगे। मुझे बहुत बुरा जय रहा था लेकिन मैं निरपाय थी।

गाड़ी चल रही। जंवर बीठे सज्जनोमें से जेक तो पोरबंदरके ही न और मेरे छारे कुटम्बको पहचानते थे। मुझोंने भी बाते जामनेकी मिच्छा प्रयट की। बंदरबकी तरफ बेसकर मैने कहा जाप जिस भाजीसे पूछिये। मुझोंने सिगाहीकी फुसकाकर पूछा। बंदरबने सारी बात कही थी। मेरे नामका हुबम तक निकालकर दिखा दिया।

जैसा होते होते कल्याण स्टेशन आया। जिस तरफके रास्तेकी मेरी यह पहचानी ही याभा थी। मुझे मासूम नहीं था कि कल्याणमें बाड़ी बंदरबनी होगी है। वे दोनों बूढे लौ बहुत ही मोठे थे। जिससिबे कुछ पाकीम हम सीबे बम्बजीके बागीबंदर स्टेशन पर पहुंच बदे। मैं कुछ चिड गयी। मेरे छाबके से परिचित सज्जन लौ बीचमें ही जुतर गये थे। अखबारमें पडा था कि बस्तूरबाका हृदयका लक्ष हमला हुआ है। जिसने बहुत चिन्ता थी। जिसके सिबा दो दिनसे डिक्कुल भूखी थी गाडीमें कुछ जाया भी नहीं था। जैसा गिरजन किया था कि बाबूजीके पाम पहुंचकर ही खाजूगी। लेकिन मुलस भी ज्यादा चिन्ता लौ जिस बागडी थी कि मोटीबास बर मिलूगी। बोरीबंदर पर सारी बातेकी पूछनाछ की। पूनाक सिबे हुमरी गाडी मुझे ४ बज मिलनेवाली थी। नीम न रिम तरह बोनेन बह माचकर मैं ता जाप बूठी।

जब हुमरी तरफ पूना स्टेशन पर स्वामीब पुक्ति नगरिस्टेजेंट, कामरबल बरीरा मल मन आय। जब मुझोंने कुछ न देखा लौ तार-टेनी

फोन किया। मैं स्त्रियोके बैठेक सम्ममें बैठ गयी सखी थी क्योंकि सिवाही मझे छोड़ नहीं सकेते थे और स्त्री होनेकी बजहस पुरुषोंके बैठिय सम्ममें भी नहीं बैठ सकती थी। जिससम्ममें बाहर बप पर बैठी। बोरी बंदरके स्टेसन मास्टरके पास पुनासे पैगाम आया था। जिससम्ममें मे मेरी ललाय कर रहे थे। वे मेरे पाम आवे और मेरा नाम-पता पूछा। फिर बोले बहन! तुम्हारी तो बड़ी खोज हो रही है। तुम कहाँ कीसे आ पहुँची? मन सब बात कही। मुझ अपने आफिसमें बठाकर कुछ खानेका आग्रह किया। मन मना किया केबस मीथूका घरगत लिया। अखबार पढ़नका दिया बहु पडा। ये दो बट दो युग जैन बीने। मैने बात करते समय स्टेसन मास्टरसे कहा था कि मेरी बहन बम्बयीम ही रही है और बुना विभपालमें रहती ह। जिससम्ममें बुम्बयीम मुझसे बहुत आग्रह किया कि बजर अनस तुम्हारी मिलनेकी मिच्छा हो ता मरी मोटर बुन्दे आकर ले आवे। लेकिन जिस लीबमें म नहीं पढ सकती। पढ़ू तो बापुजीका कितना कष्ट हो? यह सोचकर मने अनकी दिन गिण्टलाके सिद्ध बनका आमार मानकर बिनार कर दिया।

गामका ३॥ बजकी पाठीस में बुना जानके लिये रवाता हुआ।

६॥ बज स्पणन कर पहुँची। मैनिन काम्पेबलो और पुसित गुणिल्लि शरुके न होनेसे मज आवागा बहुत कौन ल जाता? महा भी बाधा पटा स्पणनके आफिसन बैठना पडा। बरीस ७ बज ब लोम आय। अगला म ही मनु ह बिनीनी लालरी बरनके लिये मुझसे मूज जिच्छ की और बहुतन प्रस पूछ। नापपुत्र मन बी इलाधर रिय वे मुमन धरे अडेरी। बुजरानी और हिन्दी तीनी भाषाबाद हम्नाधर मिन्दाय। लेकिन बेरी यह आज करना अग्रे बग्या नहीं सब रहा था। अगरी बिषया भी मजे अगरी कर बहुबानकी थी क्योंकि वे मूब बरी हुमी थी। फिर भी बानुनरा गानन करनके सिद्ध यह बिधि बरनी बरनी है, अता बाहर बीच बीचस के लोच बाद करना बाद करना बने थे।

वहाँसे एक मोटर कारीमें मेरे साथ बसकर दा और मोहिब नामके दो सिपाही दो बग्गेज चार्जेंट और कास्टेबल और पुलिस सुपरिन्टेन्डेन्ट बैठे और आगाखा महम्मदी तरफ रवाना हुये।

करीब १५ मिनिटमें हम आगाखा महम्मदी सहर दरवाज पर पहुचे।

६

आगाखा महम्मदी

दा २०-१-४१ की शामको मे आगाखा महम्मदी पहुची। जिस महम्मदी चारो ओर पुलिसका पहरा लगा हुआ था। बाँधे ही सहर दरवाजे पर दो गोरे चार्जेंट मरी बन्दूक लिये खड़े दिखायी दिये। मुन्हींने हमारी मोटर रोक दी। वहाँ हमारी पहली उल्लाखी हुयी। (जेकमे मनुष्यके धरीर पर कौसी निशान हो तो वह भी नाम-पते और मनुष्यके साथ निशाना पकटा है ताकि कभी अपराधी भाग जाय तो उस निशानसे ढूँढा जा सके।) जिस प्रकार मेरे बाँधे वरके तल्लेके बीचका तिल दिखानेको चार्जेंटने मूससे कहा। मने बुये दिखानेमें आनाकानी की। मने कहा यदि भितना अधिक बजिस्वास हो तो आप तागापुर जेकमे बन्दसरोकी बुलवा लीजिये। मे वहाँ दरवाजे पर दो बिल पड़ी रहूगी। परन्तु अभी तक किसीने मेरी बेसी जाँच नहीं की। जिन कास्टेबल साहबने भी बेसी जाँच नहीं की। उस कास्टेबलने कहा ये लोग जग्गेज हैं। हम तो एक ही हैं। आपको देखते ही पता लग जाता है कि आप बाँधी परिवारकी है। फिर भी कानूनको मानकर हमने आपके हुस्तासुर मिलामे। अब आपको भी बेर होती है आप बदा बीजिये। भितनेमें आगाखा महम्मदी सुपरिन्टेन्डेन्ट फटेकी साहब जा गये। मुन्हींने गोरे चार्जेंटको समझाया जिसमें जिनका अपमान है। और देखो न स्टेसन पर ही जिनके हुस्तासुर मिलामे

गये हैं। दूसरी तरफ़ मी नागपुर सेंट्रल जेलकी तरफ़मे जो यह रिपोर्ट है मुझे बाबा पर भी यह मन याची ही है। और कोची नहीं।

द्विष पर साम्राट कुछ बात हुआ और पहला दरवाजा बड़ी मुश्किलमे खोलवानेके बाद पार किया। मुझे बाद बापा दूसरा छाटा-सा काँची बाइनासा दरवाजा। वहा मेरी पनी बिस्तर मेरा रखवाकर कटेको साहबने दिखानेकी कहा। मुझेने ठो मुपर मुपरसे ही देखा। मेरे मतेका रुपया छारा ही बच गया था। मुझका हिसाब मेरे छाप बापे हुआ डिग्राहिपौने दिया। मेने छारा रुपया मुन सिपाहिपौको दे दिया। वे बड़े खुश हुए। अग्लेन दूरस बापुजीके खर्चन भी कर लिये।

यह बिधि पांचक मिनटमें पूरी करके म बरामदेकी सीढ़ियों पर चढ़ी। जितन अधिक कमरे थे कि बा और बापुजीका पता सवानेके लिये म एक एक कमरा पार करती ही चली गयी।

मुम दिन र्थामरी सरोजिनी नायडके बीमार हुनके कारण डॉक्टरोंकी कुछ बूम-सी मची हुयी थी। मुझ कमरेके पीछे वाले या तीसरे कमरेमे जेक लकड़ीके लकटे पर स्वच्छ मही और ठकिया था त्रिन पर जेलकी बादर बिछी हुयी था। हाममें लकड़ीका चम्पच और जलका लौहेका फटोरा लिये बापुजी बैठे थे। साफ दिखानी देना था कि अभी तक जपवाधनी अगलि दूर नहीं हुयी है। मुनके सामने ही जेक पल्लव था त्रिस पर बा बैठी थी। मने जाते ही बापुको प्रणाम किया। बड़ी जोरका घण्टा लवाकर सहाकी आदनके अनुसार मेरा काम खीचकर बापुजीने कहा "क्यों कहा जान पडी थी?" मन मारी पहन रनी थी द्विसलिडे अग्ले पुणनी बात पार जा गयी। अब तो मनुबहन बन बनी हो न? मयण मुम न ली बाको सजाना है और न मुझे छोटीसी मनुषी बनाया है।

बाको प्रणाम करन आज द्वितरे पक बा ही बापुके पक्ष तक पहुचकर मुम पर बैठ गयी थी। द्विसलिडे मुपरोक्त बातोंके बीचमें मेने मुनके पैर छुमे। बा बहुत कमजोर और पीकी जगनी थी। बोली क्यों बेटी तू बहुत मूक पडी? जपमुखनाथ महा बापे तमी मुने

पता लगा कि तू नामपुरमें ह। मन तुमसे कहा था न कि तू कयभी नहीं जाना। परन्तु तू क्यों मानने लगी? बस जब भूख लगी होगी। महा से फिर बातें करना। बनी बनी तेरे बारेमें भीमती नाबू पूछ रही थीं कि तू बा नहीं या नहीं? सबने बत्ती का मित्रा है। लेकिन तेरे किसे बुद्धोंने सब कुछ रखाया है।

भीमती नाबू वहाँका भोजनारम्य संभालती थी। बुद्धों नगी नगी बानिया बतवानेका शौक था। और बिकानेका भी बहुत ही शौक था। भितनी बीमारीमें भी बुनका पकण बानके कमरेमें ही था। मेरे महा-बोकर निपटने पर पु बा मुझे बानके कमरेमें ले गयी। बाने मुझे कहा से यह तेरी अम्माबान भिन्ने प्रणाम कर और फिर बानको बैठ।

बिच प्रकार अम्माबानसे परिचय कराकर बान बुनके साथ बेसा पारिवारिक सम्बन्ध स्थापित कर दिया कि वह उषाके निम्ने बना रहा।

मेने प्रणाम किया तो बुद्धों अपने स्वभावके अनुसार मुझे चुन लिया। मे बोझो बकराकर मूठकी तरह खड़ी रही। मनमें भितना हर्ष था कि कुछ बोल ही नहीं सकी। बा और बापूके साथ तो मेरा बुनका सम्बन्ध था और बुनकी गौरव लेखी था भितकिसे बुनसे मिलकर मेन कोभी बिचित्रता अनुभव नहीं थी। फिर मनम यह जयान भी बकर था कि मरिजिनी देवी तो महान देवताही ह बुद्धों कयी कयी सन्नायोम बुरसे देवताका बबभर मिल पाय तो भी अपनेकी घम्य समजना चाहिय। मेनी महान देवताकी सासिध्दम में लड़ी हू। मन बुद्ध प्रणाम किया। अम्मान मुम चुन लिया। यह सब स्वप्न तो नहीं है? बिच बिचारण में मृदयनम्क बन गई थी। परन्तु अम्माबानत बुनके ही एक कहा बनी जब बुन बा लो पीठे मेरे पास बटना। मेरी भी मेबा करोधी न?

मे मात्र बर मान बनी अम बका प्यारिकाकजी गा छे थे। अमल बापी बिच अदर्शका बबभ टमाटर बटनी पुष्टि बरीग लगी रहा। बहुत दुःखी ह बिच महा बागी बनाना है।

साकर में फिर जूनक पास मची। अन्होंने मुझ प्रमसे अपन पास बिठलाया। में अतके पैर दबाव कनी। भिमसे मनो में अनकी सची मइकी हींभू, भितनी जूनक निबट पहुच मची। पहुली बार त्रितने अधिक स्नहस भिमन पर मममें जो पबराहट हुकी थी वह अब पाती रही। परंतु अम समय अनकी सेवा करतवा जो सीमाय मुझ भिसा बही भिसा। क्योंकि अमका स्वास्थ्य अधिक खराब हो जावके कारण अनी एग अन्ह छीड़ देनेवा हुनम अमकं गुराण्टरगट्ट माह्व बता गये।

बोही देरम बान बहा मन मुगीयाके साथ जाकर महादेवको पठ बडा बा। म कुछ समझी नहीं। कितनम मुगीया बहनन आवाज ही बलो महादेवमाझीकी समाधि पर पूरु बडा जावें। तभी म बाकि बहनवा बर्य समझी।

बहामे साकर अपन नागपुर जंके अनुमवा और बहाकी स्थितीकी मूर्खताकी बाहीमी बाने की। सब हुन रहे प। कितनने नायनाकनी प्रार्थनाका समय ही गया। प्रार्थना की। प्रार्थनाके बाद बापूजी अम्माबाबके पास गये। मन बाको ठेककी माक्तिन की। माक्तिन बरासे बराने बान नबकी खबर ता पूछी परन्तु अन बाबोके बीच अनामेक मारी बान काट कर वे बोली अने मुझ मेबापामय बापूजीके हाथ बने मुनकी अब मारी ही थी और बहा पा कि मन करने समय जोडा देना। बह बहा है? अब म प्यारा नहीं जीभूगी। भिम भिजे माह रखरन बज पर स्थितर मयवा मना।

येरी आनामे आसू मय आज। म बोली मीरीवा यह क्या बह रही ह? आपकी छाटी ता मया ही हुकी। परन्तु अब मरवार बापूजीको बान बह मर वेकम मयवी?

बा बापी यह मर मरन है। बापूजी बहने ह कि मात बने मर मरेग। भिजन अब म ती बा-बाय मीनकी देनाय ह अचिर मरी।”

बा बापूका भिमन बरने अम्माबाबके पास बोही देरके भिज हो मारी। बापूजीने और बाकी पैर दबावर हुन गान्धो माडे दन बने मय। मय पतग बावे पतगवे बाग ही बा माकि अरुन बरन पर मा बल

नहीं। लक्ष्मण साडे बारह बजे होने। बाकी ओरकी छापी गुरु हुआ
 त्रिमन्त्रिने में मुनके पत्रक पर खली पड़ी। "बेटी तू मेरे साथ ही तो
 जा सैरी नीर बिगड़ेगी।" बने कहा "मोटीबा आपने मुझे अपनी
 मेका फलनका यह अमृत्यु अकसर दिया है। आप मेरी पिता न कीजिये।
 मोड़ी देर पीठ और पैर दगाये। बाको बाकी राहल मिली। जैसे माता
 जाने छ-मात नहींने बालककी प्रेमने पपपपावर गुणगती है बैसे ही
 जाने मुझ मुलाया। बाको ता यही चिन्ता थी कि वे मरी नीर नराव बन
 गयी ह। विधि में मुनके प्रेमकी करनीमें अनी आगमणे सोची कि
 मुकहरी प्रार्थनाका समय हो जानका मुझे पता ही न बना।

बापुकी और बाके मनमें द्विती दया बरी हुई थी कि बचारी
 गन भर जगी है त्रिमन्त्रिने भिन्न नहीं जमाना चाहिये बन मानी रहे।
 गण्डु भवनकी आचारमे में अकबर्य शीक कर पाग पड़ी और मुल्ल
 भीने अकबर्य प्रार्थनामें बैठ पड़ी। प्रार्थनाक बाद मेंने बापुकीन पूगा कि
 मत बरी न/। अटाय? बापुकीन कहा "गुर्गलान मते कहा कि
 बाक। गणम मानी आनी गी। ओ गुन जागरण बनना पदा। मन्त्र
 ही बनी तर गुरु बरी हुई लगनी है त्रिमन्त्रिने जाने पता कर दिया।
 भेन बना। में छ-मात नहींने पत्रकी नरट मोटीबाकी बीगी
 गार्थने विनने आगमणे ना गी थी बिगड़ी आगका बना बनना हो
 गयी है ?

आपना न लो बन पड़ी। आप मुन रात्रिने अत विनना
 व गन हुआ माना है। अकबरमें गुणगे मुनेका अन्व हुआ गी।

अम्माजानकी रिहायी

आगाखा महल पुना

२१-१-४९

श्रीमती सरोजिनी तामडकी माय रिहायी हुंलोबाकी थी। हम मुन्ह अम्माजान कहते बे। मेरे छिमे तो तुमके गजबीक जानेका यह पहाका ही दिन था। और वो बंटेमे ही यह अंतिम बन गया। मुन्होंने अपन प्रेमपूर्ण स्वभावके भरनमें अपनी सवा करनेवाले छिपाहिलों केदियों और बेछके छापियो समीकी परिष्काबित कर दिया था। छिस्सिमे समीको बुनका बियोप बालने कया। अम्माजानकी बिगड़े हुवे स्वास्थ्यके कारण बेछके मुक्त किया गया छिस्सिमे मुन्हे भी क्या बातन्द होता ? मुन्हे तुमके बेहरे पर कुछ सकक रहा था। मानो तुमके बेहरेसे यह मान टपक रहा था कि अब आरमा बीरतापूर्वक सब कुछ छून करती हूँ तो फिर अरीर क्यों बरबास्त नहीं करता ? परन्तु बेसके छिमे अड़नबाकी छिस्स महान बीरजनाने अरीरसे आज हार मान ली। यह कल्पना की जा सकती है कि अब तमाम छापी वेछोंमें पड़े हों तब मुन्हे स्वास्थ्यके कारण बिचय होकर बाहर जाना बुज कया होगा। मेरे जोबका माना पार ही नहीं था। मुझे कया कि मारठके रत्नोंमें से बेक व्यक्तिके बितने क्याका गजबीक जानका सीमाप्य बरा जल्दी प्राप्त हुमा होठा तो मुझे रिठना बबिक ज्ञान मिलता ?

१॥ बने मोटर मुन्हे देने बाकी। अबिकारी बाये। अम्माजानने तैयार होकर बाकी गमस्कार किया। बाकी बेसा ही कुछ हुमा बेसा कुटुम्बके किसी व्यक्तिके कम्मे समयके छिमे छप्पर पर बाटे समय बरके लीपीको हीठा है। बाने हान जोड़कर अम्माजानसे कहा अब हम बुबाप मिले या न मिले छिस्सिमे यह बाबिगी राम राम कर से। अम्माजानने बाका आतिगत करके कहा “बा हान तो अब

अस्वीये बस्ती बाहर जाने ही चाली है। परन्तु यह केवल आश्वासन ही था।

म प्रणाम करने लगी तो मुझे मुकहना दिया— यह सब ठेक ही बसूर है। तुम मेरी मीप्या जो हो गयी। यों कहकर बपत रुपानेको हाथ मुठानकी घक्ति तो नहीं थी फिर भी मीठी बपत मार ही। जाने मेरा पक्ष लिया "यों कहो न कि यह बच्छ कदमोंबाली बाजी जिससे आपको धाय ही जेलसे छट्टी मिल गयी। बाहर जाकर बाप अधिक काम कर लेंगी अधिक घरीर-सबा भी कर लेंगी।

परन्तु अम्माजानकी मिस तरह जाना कहा अच्छा कपता था? मुन्होंने निरुपामरे स्वरम कहा "नहीं जो बापु जेसमें है, सब सारी विजयमें बन्द है। तब मेरे स्वास्थ्यके कारण मुझे छोड़ा गया जिसम मेरी क्या बहादुरी है? जिसमें तो मुसदी मेरी हैठी है।"

यह अंतिम बात कहकर अम्माजानने बापु और दूसरे सब छोड़ोये हाथ जोड़कर पीली व्यापास बिदा मापी। बापुजीने जगके काम मलकर कहा देवता बाहर जाकर तन्मुस्ली अस्वी मुबार सेना। नहीं मुबारगी तो तुम्हारी खैर नहीं है।

अम्माजानकी मोटर चली गयी और हम सब छोड आये। घरमें सब और सुगतान करने लया। बाँड़ी हैर सब बने फिर जिन समयमें अम्माजान रहनी थी मुसकी पूरी एकामी कगयी। जिसमें समय निकट गया।

अम्माजान जकके पात्रनाम्नकी मेररेल करती थी क्योंकि मुझे नाम और विमानेवा बहुत पीक था। भुनकी जगह बज गुर्गाला बहनने देवगग लगी मुक की। म जगकी लक्ष्यक बनी।

हमारा माकारण वायबम जिन प्रकार था शिरे ५॥ बज बटना दानुम बकरागे निपटकर लयमम ६ बज तक मार्भना। बापुजी २ बजब गहक और ८ जीक वगम सार्नी और १ नीपूका रग मिला कर पात्रनाक बाक म-१ ब। बारम जमी तक १ दिनके मुबारगर्नी समयोरी हानके वाक्क पादी दर जागक वगने थे। था ६॥ बज

बूठती। बाके लिन शतुन बगेठ तैमार करके और तुलसीका काड़ा बनाकर में बून्ह देती और बापूके लिन मोसबीका रस निकालती। बादमें बापूजीके सुबहके बर्तन और पीकरान बनेरा सबको मात्र डालती। बिनमें से बापूजी परममें खानेके लिन बेलका लोहेका जो कटोरा रखते व बूस ली बसा मात्रना पड़ता या कि मूह रिवाजी है। बापू कहते कि बखिन बकीकामें बकका कटोरा में बिलना बखिया मात्रते व कि बखर और बख सुपरिस्टेडस्ट बूय ही बात बे। और बकीकाकी बरममें लो नीबूके लिनके या बेसी कोजी बीज देखनेको भी नहीं मिलती थी। रेत और हाथकी ठाकठै ही मात्रना पड़ता था। यहा मुझ बिलनी बिलकठ नहीं थी बिलकिने किती बिन कम बूबला निकलता लो बापू मुझ छमा लही करत बे। फिर, बाभासा महकमें काम करनके लिन २५ कंरी मरबड़ा बकते रोब सुबह ८ बज बाये बाते और शामको १ बज बापस ले बाये जाते व। परंतु अपना काम मात्र ही करनेका हमारा नियम था बिलकिने कंबियोका बिद्यप बुपनोन लही किमा जाता था। बापू कहते यह कटोरा बेसा बूबका होना चाहिये कि बिसमें मूह देखकर में हवागत बना लकू।

यह सारा कामकाज करते करते सड़न ही ८ बज जाते। बूधके बाद हय लोन ८ से ८॥ तक बापूजीके साथ सैरको जाते महाबेन काकाकी समाधि पर फूक बजाते और बहा निरय नीताके १२ वें अम्बापला पाठ करते।

१ से १ सैरसे बाकर मोटीबाके घिरमें कमी करना बूबको मानिष करके स्नान कराना बूबका तथा बापूजीका भोजन तैमार करता कपड़ बीना स्नानके बर्तन बीना और भोजन करना। हमाए बापूजीका और बादा भोजन बकन बरन हंगसे पकता था।

बापूजीके लिन बूबका हुवा चाक बकरीका बूब बकरीके बूबसे रोब मकनन निकालना और कच्चे चाकटी भी और सुबारकर रखना होता था। बापू १ ॥ बज भोजन करते और वा ११ बजे। बाकी बिच्छा होती लो बूबके लिन बोकासा चाक भीमें लो लीक देती थी। कमी कमी से पूरीके बराबर पीठी जाती और यह भी किचक बेक-दी ही।

यायका बूब बूबमें कमी कमी मंजीर, श्राद्ध या जरदान् ब्रुवात्मकर रखती। और ह्मारे मित्र साधारण भोजन। परंतु यह सब काम मुसीबाबहत प्यारेकाकबी बीर में बेक-बूसरेकी मबरसे कर लेती। मोराबहम बनना भोजन—रोनी और छाग बुद ही बना लेती।

जब मैं बाकी माकिस बनें करनी तब मुसीबाबहत और मैं गिम्बर बापुजीकी माकिस करत और बुनका रक्तपाप रेखनेका काम करते। मिस प्रकार बाका काम मुख्यतः मूल पर और बापुका काम मुसीबाबहत पर रहता था।

१ से २ म आरामके समय बापुजी और बाके परोमें भी मरती थी। जब बीच मुसीबाबहत बापुजीके छाग संसृष्ट रामायणका अनुवाद करती और कपता संस्कृतका ज्ञान जाना करतीं। मिस १ घंटेके बीच सांको अतिबायं रूपसे सोना पड़ता था। कमी में बा मुसीबाबहत न सोनी तो बाबू बीनों पर नाराज भी हो जाते और कहते

बमी हाल ही म अमी रोज हुमी ई कि बाकक मुबा बीर बुब यदि नित्य दोपहरको बाब बंटेके मिस्रे सो जायं तो बुमता नाम कर मइने हूँ। बीर मेंच अनुभव भी पड़ी कहता हूँ।

२ से ३ मूल मुसीबाबहत मयमी पड़तीं। या व बापुजी फिर परम पानी और सहृद सिंठे मयबार पड़ते और परत बोम्ब जुपवीनी समाचारों पर नजर बाल लेते।

३ से ४ में बाके पास बलवार पड़नी हाक मित्ती बाक बाधी हो तो अने पड़ती बनेंय।

४ से ५॥ बापुजी मुले भोठा भूमिति और गुजराती पड़ते। मिसम अेक दिन वीता अेक दिन भूमिति और अेक दिन गुजराती मिस तच्छ बागी बापीम बनता था।

५॥ से ६ फिर बाकी नामपत या रामायण या बुनकी भिष्मके अनुवाद और बुछ पड़कर गुनाही।

६॥ से ७॥ बापुजीका व ह्मारा भोजन। बा ती पात्रको मिक मुबमीता काड़ा सेनी और जममें अर बैठना दिया हुआ कीमी और मगाना इत्यादी।

६॥ से ७॥ घामका छोटा-मोटा काम। कपड़ोंकी ठह करना या मागे पीछेका कामकाज। ७॥ होते ही बापूजी बटो बनाते और हमें कुछ समय बाहे बिलगा काम ही जैसे छोड़कर काबली तीर पर लम्बे जाता पड़ता। बापूजी कहते मेरे छात्र भूमनेसे तुम्हें पूरी कसरत नहीं मिलती। बिलकिले हुसरी बनी होने तक हम सेडमिशन पिन्पीम बगैरा जेल लखते। हुसरी पंटी ८ वा ८। बज होती।

८ दि ११ बापूजीके छात्र भूमना। बापल जाकर प्रार्थना करना बिस्तर उठाना बापूजीके सिरमें ठेस मखना या और बापू बीनेके पैर पबाना और फिर बजसे बिलके लिले कुछ पड़ना ही ती पड़कर डॉ गिफ्टरमे जाव पग गरीर-बिलान पड़कर ती जाती। बिल प्रकार मेरा सामान्य कामकाज और पूज्य या बापूजी तथा छात्रके बनुषीकी छत्रछायाम नियमित रूपसे मेरे जीवनका तबनिर्माण शुरू हुआ। बापूजी मुझे हमेशा समय-समय एनके लिले बार-बार बहा करते और बिलमरकी बात डादरीम गी कर लनके लिले करते थे। रोड रातको मे कमपुर्ण सिन्नी डादरी बापूजीके नामन रखती। वे हुसरे दिन भुम डादरीम मुपार करके बापू हस्तांतर करके मुझ दे देते बिलने जाव मेरे लिले अक प्रतीकका बर मे लिया ह। बहा मुझ पिछा और बीला बीनी मिली। फिर मे लबसे छोटी बी यह जेक अलम्ब साव या। बिलकिल या बापूजी डॉ गिफ्टर, भीराबहन प्यारेकासजी और नुर्गलाबहन लबके माप और लबकी देनरलम रहनका भीरा बिलनेसे अक प्रकारके और लय लय — बहुत बार कड़ी गरीला करनेबाहे — सामाजिक बामिन राजनतिक और भाष्यारिपन पाठ लीगनको मिलते।

जेसमें पढ़ाबी

मानासा महल पुना

१०-५-५३

जेसा पहले लिखा बा बुका हूं पूज्य बापूजी और दूसरे बने छाबी मेरी पढ़ाबी पर बूब ध्यान देते थे। जिससिजे बाजसे बापूजीने अपना अध्ययनके सिजे नून पुस्तकोंको पढ़ना शुरू किया जो कराबीकी मेरी पाठशालामें पाठ्य-पुस्तकोंके रूपमें थी। जिस प्रकार मूर्धिति और इतिहास-भूमौक तथा मृजराठी व्याकरणकी पुस्तकें वे पढ़ने लगे। अपना पढ़ना छोड़कर मेरी पाठ्य-पुस्तकोंके बाजार पर मुझे कैसे पढ़ामें जिस विचारसे बहुत ही ध्यानके साथ जहां भी गोट करना बुचित बा जहां पेंसिलसे गोट लगा सिजे और दोपहरको मुझे मूर्धिति और तैरासिकके दो टीप सवाल सिजबाजे। वे सवाल दूसरे दिन करके लाने थे। मेरे पास मूर्धितिकी गोटबुक नहीं थी जिससिजे मेने हमारे सुपरिण्टेन्डेन्ट साहजसे मचना ली। वह डेढ़ रुपयेकी बाबी। वह गोटबुक लेकर मैं छाबी बापूजीके पास गयी और मुझे बताया। जन्हींने मुझे पढ़ना ही सवाल पूजा कितनेमें बाबी?

मैंने कहा मुझे माजम नहीं।

बापू बोले बा पूज्यर मुझे खबर है कि कितनेमें मिली।

कटेनी साहज ती बापूके स्वभावकी जानते थे जिससिजे मुजसे बोले बापूजीको कुछ भी कहनेकी जरूरत नहीं है।

मैंने कहा मज ती मेने नूनसे पूछे बिना मंजा ली और धन न बताऊ और नुसमें केसन जिस जानू ती बापू मुझे नून गार्डे।” जिससिजे जन्हींने बिल मुझे टीप दिया।

इस रुपयेका बिल लेकर बापू मुजसे कहने लगे “तू यह समझती होनी कि हमारा पैसा नहीं खर्च हो रहा है अपना सरकारका

हो रहा है। और इमें बिजनी सुबिधा मिळी ह बिस्तलिमे चाहे जो चीज मपबानेमें हर्ष नहीं है। परंतु यह ठेरी बड़ी मूछ ह। यह पेंसा मझे सरकार कहति लाबी? अठलमें ये हमारे ही पेंसे लर्ष होते हैं। बिच तरह तो हमी बननेको बेचकूप बनाते हैं। बिचके अजाबा बेच बड़ी बुरी बात ठो यह पडती है कि जो सुबिधा मिळे मुसका अरभ्यय या दुसपयोग किया जाय। अल्ला हुमा कि तूने नोटबुक मुझे बताय किना काममें नहीं ली। मेरा बिजना डर तो लना। तुझे भाव कक पाठशाळाके नियम कहां पाऊने पड़ते हैं जो असी पक्क पुट्टेकी नूमिठिही नोटबुक चाहिये? हमारे पास ठारीलके पन्ने बहुत पड़े हैं जिनके पीछेके हिस्से बिलकुल कोरे हैं। तू बुन पर सबाब किया कर। यह नोटबुक लौटा दे।

यह नोटबुक मेने लौटा देनेके बिच कटेली लाहवकी थी। बे कहने लग बापूजी भी बुझ करले हैं। मैं अपने पास रख सूंवा। तुम्हे चाहिये तब से जाना। परंतु जो बचते ही कटेली लाहव बाक और ककवार बैन बापूजीके पास भाये। बुन समय बापूजीन बुनसे पूछा क्या मनुने नोटबुक आपकी लौटा बी?

बुन्होंने कहा हाँ लौटा बी। मगर बचारीको बिस्तेमाऊ करन बीजिये न? समालकर रखेनी तो बाबम काम भायबी।

बापूजी बोळ माऊम होना है आप मुसे जिनाऊना चाहते हैं। अनर बुने समालकर रखनेकी परबाह होयी तो क्या आप मानते हैं कि ये ठारीलके पन्ने नहीं रखे जा सकते? मुसे तो बापस ही कर देना चाहिये। मुसका नकर डक रुपया लौटा लाय या नहीं बिचकी मुझे लखर बीजिय मघपि शामको मैं जमादारस ठो पूछूमा ही।

शाम हुमी। बापू और हम सब बाहर बुमन निकले। फिर नोट बकना प्रकरन घुळ हुमा तू ममल लबी न तुझे बिचसे कितना बड़ा मचक मिना? (१) यह डक रुपया कौन बेना है? बिचे बुमकर यह सारा लख पूरा किया जाता है? बिच मारे अर्षका रववा लोबी बिलापनसे नहीं आता। बिच प्रकार मिचये मेने तुजे

मितिहास सिद्धाया। (२) और जितनी चाहिये मुसले अधिक किसी भी तरहकी सुविधा मिले तो मैं मुसला नुपयोज नहीं करना चाहिये। जिस प्रकार मानवताके अनेक कसबोंमें मैं तुने अकेल दुख खीला। (३) और बेकार पड़ी हुयी चीजका सुन्दर नुपयोग होया। मैं कैम्बेजके पर्चे पों ही फेंक दिवें चाते लेकिन अगर काममें मा सकेमें तो जब मैं बचाकर रखे पावये। और फेंके भी पावये तो नुपयोगमें जानेके बाद जिसमें कोमी हर्ज नहीं। (४) और कमी ठेरा बाहर जाना हो जब और तू घाबामें पडने जब तो पकके पुठेकी जिन्नी सुन्दर नोटबुक जिसमें सबाक किने हुने हों कोमी चुरा भी सकता है (हमारे समयमें बहुत बडा बीसा होता था)। लेकिन जिन कैम्बेजके पर्चोंको चुगनेका किसीका भी मन न होया। बोल वह सबसे बड़ा काम हुआ कि नहीं?

यह बात हो ही रही थी कि अमाबार साहब आये और मकर डंड स्पया बापल जानेकी खुसखबर सुना बये। तो मैं यह नोटबुकका प्रकरण पूरा नहीं हुआ। बापुने मिलीबमें कहा

अगर तुमने धर्म आये कि जिन तारीख बतानेवाके पर्चोंमें भी रही बयेजी हाजीरुबमें जानेवाला सबाक कर सकता है तो मैं भी जितने पर्चोंके बाद तुमने भूमिति पडा रहा है? जिस प्रकार मैं भी जानेवाला माना जायगा और तू भी खीखनेवाली मानी जायगी। जिसलिजे मेरा नाम लेकर कहना कि बुद्धोंका तो कैसी भी चीजस काम बक जाटा है।

अब तो मैं जिन तारीखके पर्चोंको जिस तरह सबाक कर सकती हूँ जैसे कोनी टपयो वा बचाहउठका बबाला संनाक कर सकता है। जिन पर्चोंमें जितने ही सबाक और बाकतिया पू बापुके हाथकी खीखी हुयी हैं। जिसलिजे बापुने जो बाखिरी बात कही थी कि आकपित करनेवाली बन्क पकके पुठेकी नोटबुक हो तो किसीका चुरानका मन हो सकता है वह बिकतुक रही है। किसीको बोरी करनेका प्रोत्साहन नहीं मिलता और वह अमूल्य वस्तु सुरक्षित भी रहती है।

आगस्ता महक पुन,

१३-४-४३

बानी रोबकी डायरीमें मैंने भूमितिकी नोटबुक संबंधी बात नहीं लिखी थी। बापूजीने मुझे लिखनके लिये कहा और वह डायरी रोब धामको भवन पास रख देनेकी हिदायत दी।

बसरीका एक नमूना

दा १३-४-४३

बजे बापूजीन मुठाया।

५ से ५॥ बातुन बनेय और प्राबता।

५॥ से ६॥ पढ़ता था लेकिन बाबोंमें नीब छा ममी और सो पमी।

७ से ८ बापूजीके लिख रख निकाला मीनीबाके लिख बसा बालकर बाद बनावी सब बर्तन मात्र।

८ से ८॥ मात्र १३मी बप्रक होगये बापूजीन सदाबदन करवाया। सदा मुचा रहे हमारा गीत नाया और बापूजीके साथ भूमे।

८॥ से पुग्ग बाके सिरम तेक मका और बाबोंमें कचो की।

९ से १॥ पुग्ग द की मालिस की उम्ह स्नान करामा और अपन तथा बाके कपडे सोम।

१॥ से ११ बापूजीके लिखे खातरा रोटिया बनावी धाक और दूध तयार क्रिया और छाछ बिलोकर मक्खन निकाला।

११ से ११॥ बड़ेबीका पाठ सिखा।

११॥ से १२॥ बापूजीको बिभाकर बाके साथ हम सवन जागा बाया।

१२॥ से १ पुग्ग बापूजी और बाके पेरोंम भी मका। कल रातकी भी बाके सारे घरीरम बहुत बीरका रई या बुबार जेमा लवता था और बमी भी था बिठकिजे मुनका घरीर बसाया।

१ से १॥ बाकी मजदूर पढ़कर सुनाय और बापूजीसे १५ मिनट बाद मुठा देकरा बजल सेकर सो गयी। १५ मिनटमें बापूजीन मुठा दिया।

१॥ से २॥ बा और बापूजीको सहकरा बरम पानी पिछाकर कावा। बापूजीका और मद्य सूत अठेरम पर मुठारा बापूजीके २२ तार निकले। सख्तभी बयेरा की।

२॥ से ३॥ कल पुबराती म्याकरनकी बापूजी लिखित पटीला कने किसकिज यह बटा पढ़नके छिमे मुझे दिया गया। अठ गुबराती म्याकरन फला।

३॥ से ४ सुसीकाबहुनसे अंपेकी कही।

४ से ५ बकरी माव और मंसका बून आठ ही मुस मरम करक मुसकी मजब अयस्ता की। साक मुबारा और सामकी रखीकी बनायी। सव छाता साकर निपट मये। (सब कंदियोंको छिजामा।)

५ से ६॥ घामोकोन पर मजनोंके रिफार्ड बजाये। बाने सेटे सेटे पुन।

६॥ से ७ घामके बर्तन माने बा और बापूजीके किज बापुनकी कही तैयार की कपडोंकी तह की बाके लिजे मेक छाड़ीकी किनारी काडनी सुक की।

७॥ से ८ बंडमिटल सेलकर बाके दसम मिनट बापूजीक साव बूम।

८ से ८॥ प्रार्थना। प्रार्थनाके बाद विस्तर बनाने। बाकी मालिख की। पुम्ह बापूजीके सिरमें ठेक मसकर वेर बवाने। येने बापूजीसे कहा रोब रातकी मुझे मेक कझानी सुनाया करिये। भित पर बापूजीन मेरी बात मुझा देनके लिजे थिड़ा-थिड़ीकी कझानी सुनायी। भित तरह थोड़ी देर मजाल करके ९ बजे बापूजी छोये। बाकी तबीयत मान बच्छी नहीं रही। पसलीमें बहुत दर्द रहा। जिसकिजे भाव बटे तक बवाना। भितसे कुछ साति मिन्ने पर वे सो गयी। मुझे सुसी की।

१। बर अपना समन करन बनी और १२ बर सोयी।

नाए — भाए ११ अरक होनस हम सबन भाए बिनका मुप
 नाम बिना। हुमाए बिनना लाना बचा मुमम बाड़ा और मिलाकर
 अरक करिबोके लिअ लिबडो। गाक कैलेकी बरनी और हुलवा बनाया
 या। बीमेक कंठी न। पुग्य बापुजीन खुद हो नबन बननीम परोसा।
 जनके ह्रापका परोसो हुआ प्रमादी लाने लार्ठ कुछ कंठिवोन कहा

हम मान मात माममे परबडा जलम हे परतु अपन अपराबोके
 लिअ भी हम भाए यह मोचटर पौरबना अनुभव करी हे कि
 महात्माओके हाबठे प्रमपूर्वक परोसो हुआ प्रमादी लानको मिपी।

जिन प्रमादकी टायरो रबनक लिअ बापुजीन मुम हियापन ही
 जो जिनके अंक अक मिनिटका लाकपानीमे महुपरोप हो। भायरी
 टायरोम बापुजीन नीपेकी आपन मूचना देवर हुन्नाएर फिय

बातनका हिमाब मिना जाय। मनम भाए हुअ बिचार लिअ
 जाय। जा जो पडा हो असकी टिपनी लिनी जाय। बरीए का
 मुपवोन नगी होना चाहिय। टायरोम बरीए गम्के लिअ कोरी
 म्बान नही ह।

जिनमे जो पडा हो बह लिता जाय। भेमा बरनन पडा हुआ
 बिनना पच गया है यह भाएम हो जायगा। जो बाग हुआ हो वे
 लिने जाय।

— बापु

जिन प्रमादका मूचनामे केरो टायरोम लिनाए बापुजी रोअ
 अनन जगताएर बरने य।

सेवाके नियम

भागल्ला महक पुना

३-५-१४३

मुस पिछले चारके दिनसे बुखार आता था। आज रातको अधिक था। बापुजी रातको मेरे पास आये मेरा सिर बसाया। मैं बापुजीको छो आगके किमे बहुत जाग्रह किया। वे बोले "तू मेरी दुयनी सेवा कर सेना जिससे पापल मुक्त हो जायगी। सुबह भरबीका एक पी ल तो तबोयत अच्छो हो जायगी। अच्छी हो जायगी तो फिसाको तेरो सेवा नहीं करनी पड़ेगी। तू सबको सेवा कर सकेगी, जिसकिमे पुर्णोका डर हो जायगा।

मे अरंडका एक पीतमें आनाकामी कर रही थी जिसकिमे सिर बसाये-बसाय बापुजाल अपरवाली बात कही और सुबह अरंडीका एक पी लना मजूर करना किया। सुबह ५। बजे अरंडाका प्याला पानोका मोटा और मोडू सेकर बापुजी मेरे बिस्तरके पास आये। और सोमवारका मीन होनेसे बोले न सकनके कारण मुस खूब हिताया। भागल्ला चोर नका क्यों मुठने लगा। मैं तो जैसे रहरी नीदमें सोयी होम् बिध तरह — यद्यपि बोड़ी देर बाद तो अरंडीका एक पीना हा था — बोग करके पडी रही। पर बापुजी जिस तरह जो-मेवाके नहीं थे। मेरो नाक पकडी कि आसानीसे मुह खुल गया और मुस हंथी जा गयी। अतम अरंडीका एक पिनाकर हो लीडा। आज पहली ही बार बापुजके हाथसे अरंडीका एक पीना पडा। बापुजीने मीन होनेके कारण परे पर लिख दिया अच्छे तो बुद्धोको बनाना ही चाहते हैं किकिन अच्छे और बुद्ध बराबर बिध कहावतके अनुसार बराबरी बाबोंम भिजना हीती ही है। मुस पर मे ठहरा तेरा बाधा जिसकिमे मेरे सामन तो तेरा बोग कंसि नक सकता था? ऐसे बन्धान

बापाबां महल पुना

७-५-४३

मेरी मास खुब काक रहती थी और परमसे मुन्टा सिर बर होया था। परमा न कपाटी तो दुरका देखनेमें कठिनामी होती थी और बाबांसि पानी सरने सगता था। भिसभिने बापुजीने क्या प्रयोग शुरू किया — बाबांसि पर बारबार पानी छीटना और जब जब समय मिले तब बाबांसि पर मिट्टीकी पट्टी रखकर बाबांसि बर करना। मुमते समय मेरी बाबांसि बर रखवाते मेरे कंधे पर मुनका हान होनसे परमते बरत भिरने मा ठोकर खानेका डर तो रहता ही नहीं था। परंतु बाबांसिकी बरहसे कम्मास बन्द रखता मेरे लिबे ठीक होया था नहीं भिसके बारेमें वे खुद प्रश्न करते। पूज्य बापुजीको यह छह्य नहीं था। भिसभिने मुनके पास पढ़ने बैठती तब वे संस्कृतके रूप रकोक संधि संधि-भियम सब मुझे अपन मुंहसे कहते। पढ़कर मुनाते। और बाबांसि पर मिट्टी रखवाते।

मेने कहा लेकिन पढ़े बिना याद ही कैसे रहेगा ?

बापुजी बोले यदि बैसा हो तो मेरी मन्ती है। य पढानेमें बिठना कच्चा माना थायुया।

मेने कहा लेकिन सबसे बलम भरप विषय पढ़ू और सभी मुझे किसी तरह पढ़ाये और याद न रहे, तो क्या वे सब बेकार कहे जायये ?

हा। लेकिन कुछ बरत तेरा मन जो पढ़कर मुनाया थाय मुसमे लगना चाहिये। फिर भी अगर मुझे याद न रहे तो मे दिनाकका पढ़ना बोन मानूया। बिभरक पढानेमें बैसा कुछक होता चाहिये कि बिद्यार्थीको पढाया हुआ विषय अपने आप याद रह जाय। बिद्यार्थी खचते-खचते सीस ले और मुझे किसी भी प्रकारकी रटाजी न करनी पड। मने कितिनसम भिस तरह किठने ही बन्धोको पढ़ाया है। कुछ अनुसन्धे बाद ही मे कहता हू कि बिद्यार्थी कमबोर हो तो मुसमें दिक्क और सिझाका मुनरवायित्ब शीन बीबाजी है और चतुर्थाथ

दिखायीका हूँ। मेरे लिये यह कोई नया प्रयोग नहीं है। यों ही तेरी भाँवके लिये ही बंर तक मिट्टीकी पट्टी रखकर तुम फिटामू यह तुम बण्ठा नहीं ल्योगा। फिर भी तेरे लिये आज कितना समय नहीं निकाल सकता। क्योंकि यहा तू बाकी मेरा करनेके लिये बाबी हूँ तेरी बाबीका भिन्न करनेके लिये नहीं। तू दिन भरमें ही पटे करने पड़ती है भिन्नलिये दोनों काम साथ-साथ हो जात हूँ।”

मिस प्रयोगमें बापूजी रुकने लगे। अक तो मेरी यह चिन्ता मिट गयी कि कुछ भिन्नता पड़कर तैयार करना है। भिन्नलिये कोई पहासे कम समय दिमागकी क्षमिष माध्याम रखनेकी ठाम्हीन मिर्षा और स्मरण-धमिषको ता काम हुआ ही। हमारे आठ दिनों ही बाबी ठोक होना लगी। मिट्टीन माखकी गरमी थीक ली। बिरतुन फिटनमें तो लगभग अक नहींना लगा होया। बापूजीकी दिग्छा तो भिन्न प्रकार चरमा पुखवानकी भी थी परन्तु यह नहीं हो गया।

मायाला महम पूना

-५-४३

आज बापूजीन वृमनका समय बदल दिया। ८ मे ८॥ के बजाय ७॥ मे ८॥ रख दिया। क्योंकि २१ दिनोंके अनुधानसे बाबी दुर्गी कमजारी कर कम हो गयी थी।

आज बापूजीन शोहरके १० बरवा पटा मुनड ही बंमा भी बाक छोड़कर भी आजक लिये कहा पा। बायमें बापूजी और बाक पैरामें थी मन्जा पा। अरिन आज १० मे १ के बीच मौनके बजाय में हमारे बायमें रख दगी। और और १ बरवा पटा होने ही बापूजीके पास गयी तो मुमीन-बहन थी मन् गयी थी। में वय भरको लग्य रह दगी। कुछ वय बाद मने बापूजीने पूछा आज भेसा कनी दिया? बापूजीका चेहरा बहुत मधीर हा गया था। अन्तान मुम अक ही बाक नहीं

“य तेरे मेरा करनेके लिये मन् नहीं हीलत। दिन दुर्गीकी मेरा करनेका अन्तान हा अये जाने करनी मन् करनी जातिन और

शिक्षिका का

बायाबाई महल पूना

११-५-४९

आज रातको पूज्य बाकी तबीयत बिगड़ नहीं थी। रातको ३ बजे
 बुन्होने मुझे जगाया। आजकी पीठ और सिरमें दर्द था। ३ से ५॥ तक
 मैं झुके पास बंठी रही। ५॥ से ६ प्रार्थना और प्रार्थनाके बादका जो
 काम मुझे करना था उसे सुधीलाबहलने बूढ़ करनेको कहा। मुझे
 बुन्होन सोनेका हुक्म दिया। पर झुकी बात पर कोबी घबल म डेकर
 मैं काममें लग गयी। बुन्होंने बाते कहा। बाने कहा हा बेपारी
 अब मेरी सेवा बरकरे एक गयी होगी और जेकसे छूटनेका मन हो रहा
 होगा। जिसीबिज गीयी नहीं और काममें जुट गयी है जिघसे बीमार
 बड़े तो लफकार छोड़ दे। बिजमें भुगका क्या बीप? भुगका अपनी
 बहलोसे मिलनेका मन होना स्वाभाविक ही है। मुझे मुकानरा मानी
 बाने यह झुलम भुगाम बूढ़ निकाला। मेरे मनमें यह डर था कि बा
 हारेंगी। उसके बचने बग्हीने भुग्गी बाते मुनागी और भैसी मुनागी कि
 मज नप कि बिज तरह अपर बा भुग्गी ही समझत है तो मैं क्यों न ती
 जाऊ। मेरे मनम छूटनेकी जग भी बुलमुझा नहीं थी किज बान भैनी
 बान केमे बह बी? मैं भिड़कर गा ती नहीं सेरिज यह बान मेमे
 बापूमीमे रह रं। बापूमीमे बहा बाकी यही ती लुर्नी ह कि नीचे
 बिजनेके बजाम परगा कपमे हुपरे पर भैमा पहार करना कि बह नीपा
 बह। इजमे वहा न गुगनी बहावत है — भइकीका बहुर बटकी
 मुनागी। मजान मज बाजब-रही तरह मुग्ग लही लबइनी थी। जो कुछ
 बहना शता बर। यह लबइकीका बहनी कि बह मुन मे। और बह
 भी भैनी भउ बा कि गुग्ग लमज जाती। भुगी तरह भवा
 बहवम बा न ग न गुग शोनी ना गु । गवनी। और

जैस मुसीकाकी बात पर तुने ध्यान नहीं दिया वैसे ही बाकी बात पर भी तू ध्यान न देनी तो बाकी बातों का ध्यान ही हो जाता। बाने यह नृपीछाकी बात परम जान लिया भिमन्त्रिजे हुमरी मुक्ति बपनाभी। बा और में क्या यह नहीं जानते कि तू हमारे लिये मर-अपहर काम करनेकी क्लिपनी जातुर रहती है? परंतु तुने मार डालना तो ही नहीं। भिम प्रकार जाकरह हो ता नींदकी कमी तरे जैस बच्चोंको किसी और समय पूरी करनी ही चाहिय। तभी तेरा शरीर बनया। तब बाने छात्र-पालनका — पीस्टनोरिका — तरीका तुम पर हुनरे रूपमें आजमाया और तुमे पूरे ३ बटे मुन्नाया। अंभी था है। अंभी अंभी क्लिपनी ही मुक्तिमां जान मुझ पर आजमाकर मुने जिन्दा रखा है अंसा बहू तो अनुचित न होया। मे कर्मी तक जीवित ह भिसका मुख्य काम बाका है। बा जाननी थी कि मे अंसा बहूभी तो मनकी बुरा क्यया और यह वकर सो जायगी। हुनार बाने पर मा कडवी दवा भी खिलायी है और मीठा पहन पर मिठाभी भी खिलायी है न ?

बापूर्वक बाबा विजना जाकर करते व भिमका मुझ भिम प्रमंतर्गि भाग हुआ। विजम भी बाकी तबोपनमें कोभी काम मुपार मालूम नहीं होना था वरन्तु बाकी मरी पहाजीमें विजम अच्छा नहीं प्यता था। भिमन्त्रिज करन पाम बैंगकर प्यारेकालजोत मुझ पहालके लिय बहू। प्यारेकालजी मुझ मुकोलके प्रमन पूछ रहे थे। मुनमें अक प्रमन बीनके बारेमें था कि बीनके लीय पानी बुझाकर पीने है पर मुझ चाय किम लिय टापनी है? भिमका मुत्तर देनमें मुझ बादी देर लनी तो बा गुरम बोल पही तू भिमना भी नहीं समझती? रोज बटलीय दबके लिय नी चाय बनानी है। दब पानी पूछ बुझना हुआ न हो और चाय टाल बी चाय तो रम नहीं जाना पानी टीकमें अच्छा है। दवा प्रमाण चाय टालनग मिलना है। और बीनमें पानी गरम होना है भिमन्त्रिज बधाकरर पीया जाता है। पानी गरम बनने और बुझानन बहुत करे है। किंतु गरम करे तो गरम है गरममें जीव वरन्तु यह कार्य। विजम ही बंद तो बुझदराक वधते भी बहू क्लिपनाभीने खिलायी देते है। अने नैदान पानीकी बजाये दब ली

घरीरको मजबूत बनाना चाहिये। यदि घरीर मजबूत न हो तो हमें अपनी कमजोरियाँ मजबूत करने घरीरकी आवश्यकतामें पूरी करते घरीर टूट न जाय जिसका ध्यान रखनेका प्रयत्न करना चाहिये। मैं जानता हूँ कि तुम्हें यतमें आपना पड़ता है। बुझार भा गया। तेरा वजन ९५ से ९१ पाँव हो गया। जहाँ ठीक ठीक काम नहीं होती। मेरा प्रयत्न शुरू न होता तो बीरबर जाने क्या होता। लेकिन मुझे डॉ. गिस्बर् और सुखीसाने बेताबनी थी। अभी भी कुनतकी कुराक पर तू खी रही है 'कहाँ मस्केरिया कब तक बच सकता है?' जिसकिसे मैंने तुम्हें १२ से १ बजे तक सोनेकी आज्ञा थी। पर तू बुझार काम करने लगी। अपनी छत तुम्हें माह है न कि मैं क्यूँपा बैसा ही तू किया करेगी? परतु तुने नियम बखर दिया जिसकिसे मैंने भी बखर दिया। जिसे सेवा करनी है तुम्हें जोहे बैसा मजबूत घरीर बनाता ही पड़ता है। यदि तेरा घरीर बैसा मजबूत और सदाबत बन जाय कि चाहे बैसा जानेको जिसे चाहे बितमा कम सनेका जिसे तो भी कमजोर न हो तो मुझे कोई अंतराब नहीं है। फिर मैं तैरे जिसे कोई नियम नहीं बनाऊँपा। नीर न जाये तो भी जहाँ बंध करके कब्जे वहाँ मेरे पास ही सोना मंजूर करे, तो भी मस्केका हठ तेरा बना रहेगा। नहीं तो मेरी कोई सेवा तू नहीं कर सकती। सोनके जिसे कहते ही मेरी वहीका तकियेके रूपमें उपयोग करके साँ जाता। मैं तुम्हें बना दूँगा। तैरे जहाँके जिस अनपराबको बना करनेकी मेरी बात भी बिच्छा नहीं थी परंतु तेरा कसबासता मुह बेसकर दया भा बनी। जिसकिसे जिस अपराबके होंते तुम्हें भी तुम्हें मेरी छत मंजूर हो तो तू भी मज। जोक पीर तो सुखीसाने पूरा कर दिया बुझारे पीरमे तू मज और जाके पीरमें भी मजकर यही मो जा। नियम पाहन करनेके जिसे बनावा जाता है।

मुझ स्वप्नमें भी जयाक न था कि मेरे न सोनेकी बात बितमा बस रूप धारण कर लगी। मैं अपना काम नहीं कर रही थी बकि ग्मोजीबकी अलमारिया साफ कर रही थी। मेरे मनमें वही भाव था कि कोई दूरगा समय नहीं मिलता जिसकिसे अपर जोक दिन न सोवूँ

ता क्या बिपड़ जायगा ? पर यह तो बड़ा महंगा पड़ गया। जिसकी जरा भी कल्पना नहीं की थी कि पाँच-साठ मिनट तक बापूजीके हुक्मी हथकड़ा असा कुछ व्याख्यान सुनना पड़ेगा।

साग काम बँसा ही पडा रहा। असा भाषण सुननेके बाद नीर तो जाती ही कहाँ ? फिर भी मिट्टीकी पट्टी चढ़ाकर अंक घटे छेद रहना पडा। यह अंक घटा बड़ी मुश्किलसे बीता। जब बंटेम अंक निर्मित बाकी रह गया तब बापूजी बोले जा मुझे नीर जान ही वाली नहीं है। मनम राम राम बिया होता तो पकर भा जाती। पर अब अंक मिनटके लिये तुम भाक कर देता हू। मैं गुरुरत लडो हो पडी। पर मनम यह बिड़ तो थी ही कि जिसकी छोटीसी बन्दीके लिये बापूजीन मुर्माकाबहनस थी मलबाना गुरू कर दिया मिनक बजाय मुझ बुलवाकर असी शाय सोनके मित्र कह दिया होना तो ? मुझके बहने अंक पैरमें थी मलबा किया और ऊपरमे जिसकी बातें सुननी पडी। जिसलिये बापूजीके गुरुरेम म कुछ वाली नहीं। शाव हो जाने पर अकेली ही बिबर-अपर बूमन लपी। बापूजीन मुझे अरने पाछ बुलाया और काम पकड़कर कहा मुझ क्यों कृन्ता रखा है ?

बैठ रहा आपन पहलेसे नोटिस क्या नहीं दिया ?

बापूजी बोले जान-बूझकर तू यह प्ररन करेनी ही अता बिबराम वा बिमलिये। तू अब और अघिब समझनी अघिब नियमित यनेनी। पहलेमे नोटिस देता ता यह परिभाषा नहीं आया। पहलमे जब बिम नागिन दिया जाय अरना भी प्रकार और पाव देगना होता है। परन्तु अरेसी बात तो यह है कि तुम जोडी डा- तो भी मने छेद मुह लम्ब समय तक बना हुआ बर्या देता नहीं। लबिन आज तो तुम दो दरमे मुझसे बोल्ता हन्दि किया तो साठ बर गय। बिमलिये देते साबडी बुट्टी अब तो छोटी जादिय न ? असा बहकर मज हुना दिया। पैरी और बापूजीकी टिगम बोली हो पडी। बिम लम्ब बापूजी बन्दीके पाव अके बरकर अरने मुह बन जाते थे।

बाबाबाई महल पूना

११-५-४३

बाबू राठको पुन्य बाकी उचीयत बिगड़ गयी थी। राठको ३ बजे मुन्होंने मुझे जगाया। मुनकी पीठ नीर सिरमें बरब बा। ३ से ५॥ तक में मुनके पास बैठी रही। ५॥ से ९ प्रार्थना और प्रार्थनाके बादका जो काम मुझे करना था उसे सुधीलानहने खुद करनेको कहा। मुझे मुन्होंने सोनेका हुक्म दिया। पर मुनकी बात पर कोबी प्यान न लेकर मैं काममें लग बनी। मुन्होंने बासे कहा। बाने कहा हा बेचारी अब मेरी सेवा करके एक गयी होगी और जेठसे छूटनेका मन हो रहा होमा। बिसीभिजे सोनी नहीं और काममें मुट गयी हूँ बिसस बीमार पड़े तो सरकार छोड़ दे। भिसमें मुसका क्या बोप? मुसका अपनी बहनीसे मिठनेका मन होना स्वामाबिक ही है। मुझे मुनानेका मामी बाने यह मुत्तम मुपाय हूँ तिकाका। मेरे मनमें यह डर था कि बा डाटेनी। मुसके बरसे मुन्होंने मुसटी बातें मुनाजी और भेरी मुनाजी कि मुझे लगे कि बिस तरह भवर बा मुसटा ही समझती हूँ तो मैं क्यों न सो जाऊ। मेरे मनमें छूटनेकी परा भी मुसुकटा नहीं थी फिर बान भेरी बान कैसे रह थी? मैं चिड़कर सी ता पनी केबित यह बाल मने बापूजीसे यह थी। बापूजीने कहा बाकी यही तो लुबी ह कि मीने चिड़नेके बजाय परोक्ष रूपसे हुमरे पर भेसा प्रहार करना कि यह तीबा पडे। इनारी महा भेच पुरानी बहावत है—भड़कीको बहुर बहुकी मुनाजा। मयानी माग आजबभकी तरह गुरल्ल लुई शकइती थी। जो मुस बहना होना यह बिन तरह भड़कीको बहती कि बहु मुन ले। और बहु भी भेरी मयानी इली थी कि गुरल्ल नमस पानी। भुमी तरह भटा बहनेमें बाबा मयाकाय था। भवर मुने डाटेनी तो नू रो पडनी। और

जैसे मुसीबाकी बात पर तून ध्यान नहीं दिया जैसे ही बाकी बात पर जो तू ध्यान न देनी ना बाका डाटना व्यर्थ हो जाना। बात यह सुनिश्चारी बात परतल बात दिया भिन्नभिन्न दूगरी मुक्ति बनानी। वा और न क्या यह नही जानते कि नू हवाएँ किम बन-नवरतन वाम करनेको किउनी बागुन गहनी है? परतु नूत मार डापना तो ह नहीं। किम प्रचार आमरण हो ना नीदनी कबी ठरे जैसे बच्चोंको विनी और समय पूरा बननी ही बाकिव। तमी ठेरा धरीर बनया। नर बाने लामन-गामनका — मीममोरोहा — तरीका नूत पर दूतरे नयमें आबमाया और नूत पूरे ३ बट मुत्ताया। अमी बा है। अमी अमी विनी ही मुक्तिया बात मात पर आबमाया नूत गिन्ना गया है असा बह तो अनुचित न हाया। ये अमी ना जीवित ह किमचा मुत्त याव बाया है। वा आनी भी कि न असा बहनी ना मनुका बुय पनाया और यह बरन ना आनी। बगार भाव पर मा बहनी दया भी गिनायी है और बीबा परने पर गिनायी भी गिनायी है न ?

बागुनी बाबा विनया आदर करने न भिगवा नूत किम प्रगपने भाव हुआ। किम भी बादी तबीयतन बाकी गान सुचार मात्म्य नही होता वा बन्नु बाकी मेरी पाठानीने विपन क्षप्या नहीं पनाया वा। किमिन्द्र आत वाम बेगवत प्यारोपनायक बात बहालव किम बहा। प्यारोपनायक बात बुदाएक प्राप्त पूछ पर न। नूतमें बरन प्रान नीदनी बाके वा कि नीदके नीप दानी न तमवत वं ने है पर नूतम वाप किम किम बाली है? कि वा नूतम देनर बस बादी देर नही तो वा लामन बाव परी नू किमना भी नही आनी? और बेननीय न ह किम ना वाप बनानी है। न नी दानी नूत मदला हुआ न ही और वाप बाव है आत ना न नहीं आना दनी टावरन नूतम है किमवा प्रमना वाप बाव ने किमना है। और नीदक नदी नयाह हाया है किम न बभनवत नीप आना है। दनी दाम बाने और न लामन नूत बरन है। किम लाम नो नी नयाह है बरन नीप-बन्नु यह बाव। किम न ही नीप नी लामनके बाव है नी नूत बनिनीने गिनायी देते है। अने नीपन दनीको बहाल परने नही

मरते। जिसकी बड़े बड़े रिवाजों के बुरे बुरे पानीका जन्माव का पाया है। जैसे जैसे बातें बापुजी जन्मोत्सव बच्चोंको सिखाते थे जिसकी बड़े बड़े जानती है। लेकिन जैसे पाठ बापुजी कहानीके रूपमें लड़कोंको सिखाते थे जिसके लड़के लड़केमें सीख जाते थे। ठीक तरह किसीको भी पढ़-सूझ कर बिनाग छापी नहीं करता पढ़ता था।

जिस तरह बाने मुझे भूगोलका पाठ तभीमठ खराब होते हुये भी बिस्तर पर छेटे-छेटे और सांसते-सांसत पढ़ा दिया।

पामको बापुजीने दिनभरम मने जो कुछ पढ़ा मुझके बारेमें पूछा। मैंने कहा माय तो बाने बड़े प्रेमसे मुझे भेक पाठ पढ़ाया। और मुझसे हुअ पानीकी सारी बात मैंने कह बी।

बापुजीने कहा न जाने कितने साल पहले मैंने यह पाठ कितनकसे निखाया होगा पर बा बूढ़ी हो गयी तो भी मुझे नहीं मूली।

मैंने हसते-हसते कहा जिसमें होधिमार कौन ? बाय बा बा ? जिसने बिनना माद रखा बही होधिमार है न ?

हा जैसा कहकर बाकी प्रिय बनता हो तो बन जा। कहकर बापुजी हसन लग। लेकिन मैंने मुझे कहा न कि मेरा लटीका मुसटा है। जिसकीको कोकी विषय न आये तो मैं जिसकोकी ही अधिक रोप देना है। जिसकीके अपन तरीकेम में क्याहा होधिमार हुआ न ? बाकी नबीमतके मनाचार जाननके निअ बापुजी बाने पास आये। (बाकी पाठ तो बापुजीके कमरेम ही बी। परन्तु हुअ मुमन गये मुस बीच कुछ नका बात तो नहीं हुकी पर जाननक निअ बाकी पाठके पास आये।)

क्या आज तो मुमन भिन मइकीका पढ़ाया है। अब कौन कह सकता है कि मुम बीनाय है ? और पढ़ानेम भी मैंने कितनकसे कुछ बान नहीं जाना न का पार रखकर गिलाया न ? पर यह लड़की मुसक है। तीरक न ना है कि बा बिननी हासियाय है जो बिनता मर पाय रखता है। अब मन उर भरता पर उर नका कि मैं बिनता हासियाय न मन हासिया कि नक पढ़ाया कि बान कोकी बान न नक न नक मन । न और बही । क्या नक मन बाय रखकर

जाय तुझे यह पाठ सिखाया। बोली अब मैं होपियार हूँ कि तुम ? ”
 जिस तरह बासे विनोद करके खग भरके छिजे मुनका बर्ब मुला दिया।
 जाने विनोद किया अपने मुँह मियां मिट्टू कौन नहीं
 बतना चाहता ? ”

प्रार्थनाका समय ही जानसे बापूजी बूठे। रातको कहने लगे
 मुझे यह बहुत बसन्त है। यदि तू बासे बड़ीकामें भेरी बी हुमां सिदा
 बहग कर लेगी तब तो तू बहुत ज्ञान प्राप्त कर लेनी — यह सल इन
 सब बी तेरे सिलक बन बने हूँ मुनसे भी अधिक जिस बपड़ बासे
 तुझे प्राप्त होगा। लड़कोंको मने घामाबोंमें क्यों नहीं पड़न दिया
 जिस प्रसन्ना सुत्तर मागे जाने जाय तुझे सिदा बेकर मुझे भी दे
 दिया है। मुझे बितला आय-सम्पन्न हुआ कि स्थितिभ्रममें रहे हुमे
 मुन लड़कोंको मने मने बैरिस्टरी पास करनके छिजे बिलायत नहीं भजा
 लेकिन मुझेने मुमन कही अधिक ज्ञान प्राप्त कर लिया होता। जिस
 बारेमें मैं तो निराक था ही फिर भी जायके विश्व प्रसंगस बीर अधिक
 निराक हो गया हू। बीर यत्र मारा प्रसंग भले विनोदमें ही हुमा ही
 फिर भी मुममें पूरा गाम्भीर्य था। मैं मानता हूँ कि भिमत मरी सिलकके
 रूपमें परीक्षा भी हो बनी। जिसके सिधा यदि बीमारीमें था तुझे बँत
 पाठ देनी खेमी तो मुन विद्वान हैं कि बाकी भाषी बीमारी दूर हो
 जायगी। अपर मानापिता अपने बच्चोंको भिम तरीकेनि ठाकीम
 हैं तो बच्चोंकी पिताके छिजे मुझे या भारी जर्ब करमा पड़ता
 है यह बहुत कम ही जाय यह भी तू जानेया। जिसमें भी यदि
 स्थिया बच्चोंकी भिम प्रकारकी गिया है तो हिन्दुस्थानके बच्चोंका
 जाय ही बुझा ही जाय। यही देनके भिम में लगता हू बीर
 क्षीणिके म स्थियोंकी अधिक महत्त्व देता हूँ।

बापूजीने सपनरत्न भिम लारे विनोदी प्रसंग बर बूनरी दृष्टिनि
 मोचनकी मनी ही सिदा बेकर बेक गया पाठ पडा दिया। बापूजीका
 मस्तिष्क बेगहिनक प्रदर्शकों बितनी मुममजामे देननेका नाम कर
 रहा है यह मोचने-मोचने में बापूजीकी बाग मुनगी रही। बेक
 जब बहने से बाग विनोदमें ही बहानी या रही पी यह

बितने बूबे आदर्शवाली हो सकती है, बितकी कल्पना भी मुस बेसी लम्बीको कैसे हो सकती थी ?

बापाका महल पूना

१९-५-४३

मैने बापुजीसे रोज एक कहानी सुनानेके लिये कहा । पहले तो मुझीने मेरी बात हसीमें मुझ ही एक का बिड़ा और एक भी बिड़ी । बितनेमें सुशीलाबहन आजी । बापुजीसे बोली वह कैसे कहानी ? बिसके बजाम तो आप अपनी ही बातें सुनाविये । बापुजी भी बहुत खुस थे । मुझीने एक मजेशार बात कही “मैं बिलायत जानेवाली स्टीमरम बैठा । मैट्रिक पास करके गया था लेकिन अपेजी बितनी अच्छी नहीं थी कि सबके साथ खुशकर बात कर सकूं । और घरम भी जाती थी कि कहीं बोलनेमें मूल हो जाम तो जोन हुसेये । बिसकिसे अधिकतर मैं अपने केबिनमें ही बैठा रहता । परन्तु जो ज्यों मैं बोरे जौगोको देखता त्यो त्यो मैं अपने आपको काका बनने लगा । फिर मैं स्नानागारमें गया । बहा पोर बननेके लिये खुब साबुन लबाबा ताकि कुछ तो खुबसूरत जाकूम होमू ! परन्तु एक तो समुद्रकी हवा और जूम पर साबुन फिर क्या पूछना ? एकदम बाद हो गया और बितना हो गया कि मैं तग जा गया । लखन पडुबकर डॉ प्रायजीवन मेहतासे बात करनेमें भी सरमाया क्योंकि स्टीमर पर पराक्रम ही बेसा किया था । अन्तमें मैने जूनसे छारी बात कही । मुझीने रवा तो भी परन्तु खुब फलकारा थी ।

हम तो वह बात सुनकर बितनी हसी कि पेटमें बल पड़ गये ।

बापाका महल पूना

२०-५-४३

बापुजीन मेकसेलको जो पत्र लिखा मुसकी बात कही “अपे के कुछ भी करे, परन्तु अब तो बिन लीयोको भारत छोडना ही पड़ेगा । मुझे विश्वास है कि भारतकी अब ये जोर अधिक समय तक मुसामीमें नहीं

रख सकें। मैं तो कहता हूँ कि यदि हम लोभोको पकड़ न किया होता तो बिनी सन् '४२ में ही समझीता हो जाती। बिनीलिखे भावपथ लेकर खानके बाद मने महादेवसै कहा था कि जिस बार यदि दिनलिखमोमें समझारी होमी तो हमें बिरपजार नहीं करेंगे। परन्तु बिनासके समय विपरीत बखि ही सुझती है। अस्वबाजी करके सबको जेलमें डाल दिया बिनीन बाहिर होता ह कि सब भारत अप्रत्यक्षताको अधिक बर्ष तक सहन नहीं कर सक्ता। मैं यह जानता हूँ कि लोभोने बहिषा और सत्यका भाव मन बचन और कर्मसे पूरी तरह नहीं अपनाया। परन्तु जिसमें भी मैं लोभोकी अपेक्षा अपना दोष अधिक पाता हूँ — मने स्वयं यह मार्ग मन बचन कर्मसे नहीं अपनाया होगा। बिनीलिखे शिव बार बिनीनो अधिक तोड़फोड़ हुई। यदि हम अंशके साथ बहिषा और सत्यको बुद्धिपूर्वक अपना सकें तो मैं जेलके दरवाजे अगल भाव कुछ आय शिवम मुझे मन्देह नहीं।

आज बर्षा होनेके कारण बाहर नहीं खला जा सका। बरामदेम ही लगे। मन रस्ती करनेका खेक खेक डी दिखडरन बी यही खल लेक। परन्तु मैं अरामी देरम ही हाफन लगे। पवास बर्षम सुपरकी मुग्रम के हमारी तरह रस्ती करकेन छलाग केने मार मचैत ब? इन लून हंस रणे बी दिनीलिख का धानी। डी गिडर बहुत ही बिनीदी स्वभावके है। बाने कहन लगे ब बर्षोकि जि बुद्धे आदमीका मजान बुझानन ल न आ गन है। शिवप ती के लडरिया मल गला ली है।

बा हमन लकी और बोनी अप जनोंको मला के खेला मचनी ह? परन्तु बी न हूय न कि आज बर्षा है और बन्दन नहीं हुई। जि लक रस्ती बरबर व्यापाम कर किया ह।

बद बदबर मड पव पव तो डैठकर पयाल मोटा * वा लेक लया। शिव छोटा बालबोके मलमें लकी बड लीग छामिक हो गये। जि बर का बहुत लगी शिव लरवान लनम बन्द बरके अप

* बर्षोका बर लेक।

कोई किन्हीं बड़ा धाराम कर दिया है। (लेकिन बा और बापूजी के विषय सब धाराम से से बोगों देखते से।) बापूजी के लेख लाना कर रहे हैं। बापू पर सरकारकी कितनी कृपा है।”

हाँ गिरधर बोले बा मनु मुझे आज जानती कीबकी कहानी पढ़नेकी से मानी थी। बाकवातामिोंकी बिना पुस्तकमें मुझ वह कहानी बहुत ही पसन्द आती। (हाँ गिरधर पारसी होनेके कारण बुझपाती जानते अक्षय से परन्तु बुझपाता सिखने-पढ़नेकी आदत कम थी। मेरे हाथमें वह पुस्तक आते हैं। मैं मुझे यतीरजतके किन्हीं पढ़नेकी से मानी थी।)

जाने कहा बापू कीसोंकी मजा आये बिनाकिन्हीं तो कहीं यह न जानो हो? तो अब बापू कहानी पढ़ने बैठे हैं। लेकिन बापू ये पुस्तकें और कब पढ़ते? बिना किन्हीं पुस्तकका भा सीजाम है कि बापू जैस बड़े डॉक्टर मुझे बिनाने घोषण पढ़ रहे हैं।

डॉक्टर परन्तु मेरा सीमाय और अंग्रेज सरकारकी मेहरबानी है कि बापूजीके अन्दरे रहे सीक ५५ बुझापेमें तो जाना हो रहे हैं। बाहर रहने पर किन्हीं सांसटों और बीकमूप पीसे बगी रहती हैं?

बिना प्रकार हमारा परिवार जानन्वसे दिन बिना रहा बा। मजे ही मैं से से छोटी थी परन्तु ये सब बिनाने छोटे छोटे दिन बन जाते कि मुझ समय में वह भूख जाती कि बापू बा डॉक्टर गिरधर, कठेकी छाह मीरबहन आरेकाकर्म और सुधीकाकर्म मिलन बड़े हैं बिना है नेवा है और राट्टके निर्माता ह।

प्रायना — आत्माका भोजन

बागाबाई महल पूना

२६-५-४३

बापूत आज बूमते-बूमते गीताके बाठमें अध्यायका पाठ करया। स्लोक पूरे होत पर मुम लाबहल भी पूवन भा पत्नी भित्तलिय बापूजीन कहानी कहना मुम किया और पोर्ट सेवर तक अपने पङ्कजनको बात कहकर छोड़ ही। केवल साठ ही मिनट तक बड़ी।

परन्तु आज प्रलकासकी प्रार्थनाम में नहीं बूठी थी भित्तलिय बूमकर आने पर हाप-मुह बोले समय बापूजीन पूछा "क्यों तुम पना है मने तुम कान पङ्ककर बयाया बा फिर भी तू नहीं बठी?"

मने कहा मैं मजनके समय अपने आप बूठ मारी थी। आप भुठाने बाये भिनका मुम कुछ नो पता नहीं है।

बापू बोले तुम बार बार कहा तक कहा जाय कि पूरी नीह से? रातकी डेरये मोला और दिनको मोलेका डोंग करना। तेरे धरोरकी ती बस पट नाह जकर मिकनी बाहिय क्योंकि अभी बह बड़ रहा है। परन्तु तू अपनी जिब छोड़ तब न?

मने कहा रातकी मैं बाके साथ करन लेसन बठी थी। ककिन बा नहीं जनी। मैं राबहन डॉ विस्कर, बटनी माहक और मैं चार ब। बह भावनीही कपो पड़ रही थी भित्तलिय कान मुम बलाकर लेसरेकी भजा। निनीसे मोनमें डेर ही पत्नी।

बापूने पूछा कितन बने प?

मने कहा मैं सोभी मुम समय १२॥ बज रहे ब।

बापूजीन कहा ता बह नीह आज दिनन पूरी कर सेना ताकि प्रार्थनाके समय बूठ रुक। प्रायना न ती बूपने-बूपने ही मन्दी है और न जकरु कएली जा मजती है। प्रायनाके समय भीरवा

मय बननेकी कोशिस करनेका मुम्बर अबसर है । प्रातना आत्माका भोजन है । मैं तुम्हें यह भोजन देना चाहता हूँ । परन्तु बीस घटीर रक्षाक सिद्ध हो दिन भोजन करे और चार दिन न करें तो घटीर कमजोर हो जाता है वैसे ही प्रार्थना भी दो दिन करें और चार दिन न करें तो आत्माको बहुतका पोषक तत्व नहीं मिलेगा और आत्मा भी घटीरकी तरह दुर्बल हो जायगी । इमेसा एतकी सोते समय मनमें बृह संकल्प करना चाहिये कि कुछ भी हो जाय प्रार्थनाके समय तो अठना ही है । जिससे तू अपने बाप अठ जाया करेगी । यह बात मैं तुम्हें सुबह अठते ही कहनेबाधा था परन्तु बापमें भूष पया । अब सोचा कि मेरी और बाकी मासिकके समयमें से पाँच मिनट कम करके भी यह बात तुम्हें समझा दूँ । जिसलिये समझा बी ।

जिसके बाद मैं एतकी सोते पढ़के इमेसा निश्चय करके सोती कि प्रार्थनाके समय अठना ही है और जिस संकल्पके बाजार पर अबसर बनन जाय कम जाती कमी न जानती तो बापुकी जगान जाते ही न । अतके जाते ही अठनेकी आजत पड़ जाती । जिससे प्रार्थनाम में क्वचित् हो अनुपस्थित रहती ।

पूज्य बान अपने हस्ताक्षरोंवाला सबसे पढ़का पत्र आश्रममें रहने वाली काशीबहन बर्नके नाम लिखवाया था । परन्तु अठका कोबी अतार नहीं आया । आश्रममें रहनेवाले लोगोको ही था अपने कुटुम्बीजन जाननी थी । परन्तु जेकरके निबनातुसार छण-सम्बन्धियोको ही पत्र लिखा जा सकता था । यह शर्त किसीन मजूर नहीं की थी । परन्तु मेरे जाणासा महकम अ नके बाद पू बान अपवादके तौर पर यह नियम काब दिया था । और मैं तो नापपुर जेकरमें बी लमीसे सम्बन्धियोको पत्र लिखती थी । जिस प्रकार मेरे लिखे तो जाणासा महकमके नियम पावनकी बात ही नहीं थी । जिसलिये मैं और वा पत्र लिखती थी । वे भाग पत्र मुझमें लिखवाती और नीचे अपना और बापुकोका नाम अरु ही लिख देती । जिससे आश्रमवासियोके लिख पू बापुकीक पत्रकी कमी पूरी हो जाती थी । जब किसी प्रकार उड बर काशीबहन गाधीके नाम पत्र लिखवाया । अतम आश्रम

बासियोंके किन्हे किठनी सावधानीसे याद कर करके समाचार लिखवाये
 विद्यका नमूना नीचेके पन्थि मिलता है (मैन मुसकी मकल रख
 ली थी)

पि काशी

तुम्हारे बोनो पोस्टकार्ड मिले। पढ़कर आनन्द हुआ। सबकी
 अपेक्षा तुम्हारा ही पत्र नियमित आता है। पढ़कर बहुत ही खुशी
 होती है। ता १४-५-४३ का पत्र आज मिला। जिस प्रकार पत्र बड़ी
 देरसे मिलते हैं। वहा सब अच्छे है यह जानकर आनन्द हुआ।
 किठोरलाकमात्रीका स्वास्थ्य अच्छा है यह आनन्दकी बात है। जिससे
 पहलेका मेरे हस्ताक्षरोवाला पत्र तुम्हें मिला ना नहीं?

आर्यनायकमूनी नागपुरसे आ बये है जिसकिन्हे मुझे और
 आसादेवीको मेरे आशीर्वाद। पत्र लिखो तो प्रभु तथा बवाको मेरे
 आशीर्वाद लिख देना। कल कलमीका पत्र आया था। लिखती है कि
 कमी कमी बवाके पत्र आते है। जैसे यहाँ सब मजमें ह। मेरी तबुस्ती
 अच्छी है। मेरी चिन्ता न करना। तुम्हारी तबीयत अच्छी होमी। बन्धु
 मजमें होगा। यहा प्रार्थनाके समय तुम सबको खुश ही याद करती
 ह। पि कहाना (कनू पाबी) क्या लिखता रहता है? साक तो
 समी बोडा बोडा काटते है। कहना कि बोडा तू भी काट। बससाती-
 मात्रीसे पढ़ता है या नहीं? बडमीका काम करत आता है या नहीं?
 जैसे मेरे किन्हे तो यह उरलता ही होवा परन्तु मैं कैसे जानू? पि
 कतसे कहना कि तू सबसे मिलभूलकर रहा कर। लीलावतीसे कहना कि
 तुमें जूमका सन्देश मिला मवा है। मुत्से कहना कि मुसे पसन्द हो सो
 करे। जैसे मेरा तो क्याल है कि यह कालेजमें भरती हो जाव। यह
 तो अच्छा रास्ता है। छवनकाठको आशीर्वाद। लीलावती बीमतीबहन
 आनन्द, बन्धु बरीरा सत्री आशमबासियोंको मेरा आशीर्वाद।
 कल्पवन्त्री जैसे बी हो सके जैसे कहानाको अच्छी तरह रखें फिर
 पसन्द न हो तो भेज दें। नागपुरमें सब बहनोको आशीर्वाद लिखना।

बाके आशीर्वाद तथा

बापुजीके पुम आशीर्वाद

बिससे में छोटा नहीं बन जाता। और छोटा बन जानूँ तो भी क्या हुआ? जैसा सवे कि परिणाममें कुछ न कुछ सेवा होगी तो काम बड़े फिटना ही इच्छा हो तो भी खुश करना सबका फर्ज है। हम (महादेवभाजीजी) समाधि पर बापूजीमें अभ्यासका रोज पाठ करते हैं मुझमें भगवान्‌ने क्या कहा है? —

यो न हृष्यति न श्लेष्टि न क्षोभति न कांसति ।
 धृमाधुमपरिवर्धी भक्तिमान् यः स मे प्रिय ॥
 समः सती च मित्रे च तथा मानापमानयोः ।
 शीतोष्णसुखदुःखेषु समः सपविर्भावितः ॥
 तुभ्यनिन्वास्तुतिर्मागी सन्तुष्टो येनकेनचित् ।
 भक्तिश्रेष्ठः स्विरपतिर्भक्तिमान् मे प्रियो नटः ॥

बिसे हर्ष-शोक राग-द्वेष नहीं और जो बिसकी चिन्ता नहीं करता कि कौमी भी काम सफल होगा या नहीं और कार्यसिद्धिके लिये किसी भी तरहकी आशा नहीं रखता — जैसे कि मैं यह नाम करूँगा तो मुझे बड़ा पद मिलेगा या रुपया मिलेगा जबकि मेरी बाहुबाड़ी होगी बिस प्रकार कर्तव्यके पीछे बिसकी किसी भी प्रकारकी आशा नहीं — बिसकी दृष्टिमें सम-मित्र समी समान हैं और मान-अपमान सब ब्रेकसा है। भक्त तो सब कुछ भगवान्‌के शरीरे ही छोड़ दे। ठीक हम भगवान्‌के सच्चे भक्त बन सकते हैं। फिर हम प्रार्थनामें बहुत बार यह बचन पाते हैं

साधो मनका मान त्यागो ।
 काम कोष सगल दुर्मनकी ठाठे अहमिष्ठ मानो ।
 सुख दुःख बीनों सम करि जानै और मान अपमाना
 हर्ष शोक ठं रहै शरीता तिन बचतत्त्व पिछला ।
 भक्तुति निन्वा शोम् त्यागै बीदै पद निरवाना
 जन नातक यह जल नठिन है कोम् गुणमुख जाना ।

(यह मारु भजन बापूजी बोल गये) यह जवन बड़ा महत्त्वपूर्ण है परन्तु यह जानके लिये नहीं है। बिसका जर्ज और मेने तुझे भीताके

बापूजें अन्धकारके स्तोत्रोंका जो अर्थ बताया वह ठीक ही है। परन्तु बिसे जो लीज आचरणमें से भाठ है अन्हे अनोखा आनन्द जाता है। बिसेके पीठर जो पढ़ता है वह महामुक्तका अनुभव करेता है। लेकिन बैसनवालेको मुस पर दया जाती है। मैं तो बिसेके पीठर पढ़कर बिसे आचरणमें अन्तारके प्रयत्नमें लया हूँ। बिसेके आज जब यह कवर माजी कि सरस्वर विप्रसाहाह्वक पत्र अन्के पास नहीं पहुँचायमी तो मुझे बड़ा आनन्द हुआ। लेकिन तू बैसनवाली है, बिसेके तुझे मुस पर दया जाती है कि बापूका किताब अपमान हुआ। और मुझे सीधे बेन आजी कि आप पत्र न लिखते तो अच्छा होता। परन्तु हरिका मार्ग बीरोंका मार्ग है जिसमें वापरोका काम नहीं। बिसेके बीरवरको जो करना होगा करेया हम क्यों चिन्ता करके मुसके प्रति अपनी मठा कम करें और अपन विमापको बीसी लक्ष्मणमें फसावें ?

यह सारी बात मुझे बापूजीने बहुत ही रसपूर्ण और ज्ञान पूर्वक समझाई। अन्तमें बापूजीने मुझे कहा यदि तू उसे प्रसन्न करती रहेगी तो मुझे बहुत अच्छा लयेया। बिसेके तुम ज्ञान तो प्राप्त होना ही चाह ही बीरवरकी पहचान या होनी और बिसे डंगसे मैं तुझे तैयार करना चाहता हूँ मुम अपने तैयार कर सकूँया। यह बात बिसेके कहना है कि तुम लगता होया कि बापूजीको असी बात मने क्यों कही ? मेरे मनमें धावर यह विचार ही कि मने तो हमसे-हसते यह बात कही जो फिर बापूजीने मुझे प्रिय तरह अन्हेना क्यों दिया ? बिसेके तुम निमकोच बनानेको विनया वह बैत है।

अन्तमें मुझे बीसा ही लया था कि मने कहनेको तो यह दिया कि विप्रसाहाह्वको आपने पत्र क्यों लिखा ? बिसेमें किती हृद तक मन्ना भी था। लेकिन मन्नामें यह वाग्शीर्य जा गया और मनेमें बापूजीने प्रसन्न पुठरेका परधानार होने लया। बापूजी मानो अन्के जान लये। अन्हींतु मुझे निश्चिन्त कर दिया बिसेके मेरे आनन्दका पार नहीं रहा।

त्रिम प्रकार पू बाका यह मरु ही पत्र बताता है कि मुनके किसे आभयवासी क्या वे ?

[त्रिम पत्रमें त्रिनका त्रिक भाता है वे सब परिचित ह। परन्तु बहुत लोभ बार-बार मुनका परिचय पूछते हैं त्रिसक्तिमें नहीं वे देती ह।

काशीबहन गांधी से बापूजीके मतीमें छपनलाकभाभीकी पत्नी ह। बापूजी और बाके साथ क्लीका और हिन्दुस्तानमें रही हैं। काशीबा बहुत मीठे स्वभावकी हैं मेरी बड़ी ताजी होती हैं। मैं तो कौटुम्बिक दृष्टिसे मुन्हें ताजीभी कहती थी। परन्तु आभयकी दूसरी क्लिया काशीबा कहती और बा तो मुन्हें काशी बहू कहकर मीठे कहनेसे बुझाती थी।

आर्यनायकमुजी से नागपुर जेठमें वे और कूकर सेवाग्राम आये वे। बाबादेवी मुनकी पत्नी हैं। दोनों सेवाग्रामम ताजीमी सबकी मुखर सत्वा बना रहे हैं।

प्रभुदासमाजी और बबाबहन से काशीबहनके पुत्र और पुत्रवधु हैं। प्रभुदासमाजी बन्धने वे। जेठमें मुन्होंने बहुत कष्ट सहन किया। बबाबहन बाहर थी। मुनके दु खर समाचार कमी कमी बाको मिलते रहते थे। त्रिसक्तिने बाने मुनका मुस्नेस किया है। प्रभुदासमाजी बाभीकी हाल ही से जीवनका प्रभाव नामक बड़ी विज्ञापन पुस्तक (बुखपाठोम) प्रकाशित हुआ है। त्रिसक्तिने मुनका विज्ञेय परिचय देतकी अस्मत् नहीं है।

कहाना यह रामदासमाजीका पुत्र है। पू बाका लाइला कइका है। जैसा नाम है वैसे मुख है। तुकनी थी लूब और जूपरसे बाभीयाका लाइ। ठिर पून्व कल्पुखा जैसी बाभीयाकी ताजीम त्रिसक्तिने घट गती होनेके साथ होशिवार थी लूब। मुनने बासे सिद्धायत की थी कि बाप नहीं है त्रिसक्तिने आभयके व्यवस्थापक कुण्णचन्द्रकी मुसे शाक काटनेको कहते हैं। मद्यपि बा आभयमें थी तब भी मुसे काम तो करना ही पटना बा परन्तु बीठे बीठे करनेका काम मुसे बिल कुण्ण पसन्द नहीं बा। त्रिसक्तिने बन्धने पत्रमें कहानाका मुस्नेस किया है।

साक्षात्कर्षी बहन यह बहुत बचपनमें ही पू बापूजी और बाके पास आ यमी थी। भित्तिलिखे का और बापूजीके सिमें तो ब पुत्रीके समान ही थी। परन्तु अन्तान ४२ की लड़ाईके कारण पढ़ना छोड़ दिया था। भित्तिलिखे के भित्त पसोपेसम थी कि जब क्या करू ? वे डॉक्टरकी पढाई कर रही थी और बाका हुनम पाहूँगी थी। भित्तिलिखे बाने भुम्हें मन्दछ कहसबाया।

मय भाष्यमबागी और भाष्यमक बाकक नामपुरम अमी तब भाष्यमकी बहुत जल्म थी — अन्हे याद करके आसीबाँर मय ।]

सरकार पत्रोंको सँभार करती थी भित्तिलिखे का कोमी भी भँसा बाध नही लिखनी थी जिमकी सरकारकी काटछाट करती पड़े। "नामपुर खेदकी बहुत छद्म लिखावे ती सरकार पत्र ही म प्राप्त थे। भित्तिलिखे नामपुरमें मय बहनाई। आसीबाँर लिखना बाधय लिख बाया। पू बापूजी और बा ती खेदक और सरकारक पुराने और परिचित महुमान ठहरे, भित्तिलिखे ब बहाके मरी नियम मतीबाति जानने थे।

•

•

•

बाक नामकी विप्रानाहबने बापूजीके साथ बागर्षाठ करनेका मुताब रिया था। और बापू पत्र लि में अमी मुबना डॉन पत्रमें पड़ी थी। बापूजीकी अलबाग ती मरी भित्तिलिखे ब। भित्तिलिखे पर भुम्होंने विप्रानाहबकी पत्र लिखा था। भुम्हना मरबागकी तरफमें अंतर आया कि जब तब बापूजी अना राजनेतिक अचरम न करने तब तब सरकार अमरा पत्र विप्रानाहबकी नहीं थे मरनी। परन्तु सरकार अगकी अलबागाम अरापित कर देनी। भित्तिलिखे पर अम मुबने-मबने बापूजीम बहा आत जानते तो वे कि अलबाग आरना पत्र विप्रानाहबकी नहीं देनी तब भी आरने पत्र की लिखा ? भित्तिलिखे आरना लिखना अयमान हुआ ? विप्रानाहबकी पत्र लिखना होगा ता आरकी लिखने।

बापूजी करने तो भित्तिलिखे केरा अयमान नहीं हुआ। विप्रानाहबने बात लिखना दिया भित्तिलिखे पत्र पत्र लिखना ही बाँरिय।

बिसरते में छोटा नहीं बन जाता। और छोटा बन जाना तो भी क्या हुआ? जैसे मने कि परिणाममें कुछ न कुछ सेवा होगी तो नाम भले कितना ही हलका हो तो भी उसे करना सबका फर्ज है। हम (महादेवमाजीकी) समाधि पर बारहवें अश्यामका रोज पाठ करते हैं मुसमें मनवाने क्या कहा है? —

बो न ह्यप्यति न हेष्टि न छोषति न काञ्छति ।
 सुमासुत्रपरित्यायी भक्तिमान् यः स मे प्रियः ॥
 समः धर्मी च मित्रे च तथा मानापमानयोः ।
 पीतोऽप्यमुक्तबुद्धोपु समः संप्रथिवर्जितः ॥
 तुल्यमिन्द्रास्तुतिमौनी सन्तुष्टो येनैकनभिः ।
 जनिक्वैत स्थिरमतिर्मन्त्रिमान् मे प्रियो नरः ॥

जैसे हर्ष-शोक राग द्वेष नहीं और जो बिसरकी चिन्ता नहीं करता कि कौकी भी काम सकल होमा या नहीं और कार्यचिद्धिके निम्ने किसी भी तरहकी भासा नहीं रखता — जैसे कि मैं यह काम करना तो मुझे बड़ा पर मित्रेमा या अपना मित्रेमा बनना मेरी बाहबाही होगी बिना प्रकार कर्तव्यके पीछे बिसरकी किसी भी प्रकारकी भासा नहीं — बिसरकी बृष्टिमें धनु-मित्र धनी समाज हैं और मान-अपमान सब भेकसा है। मन्त्र तो सब कुछ मनवानेके परोसे ही छोड़ दे। तभी हम मनवानेके सच्चे मन्त्र बन सकते हैं। फिर हम प्रार्थनामें बहुत बार यह मन्त्र पाठे हैं

छाबो मनका मान त्यागो।

काम क्रोध सगत दुर्जनकी तात अहन्ति मागो।

मुक्त बुद्ध बोनीं सम करि जानै और मान अपमाना

हर्ष शोक वे रई अतीता तिन अपतरण पिछाना।

अस्तुति मित्रा बोम् त्यागे खोई पद निरवाता

बन मानक यह बल कठिन है कोम् गुदमुक्त जाना।

(यह छाग मन्त्र बापूजी बोल पये) यह मन्त्र बड़ा महत्वपूर्ण है परन्तु यह जानेके लिखे नहीं है। बिसरका बर्ष और मने तुम पीतले

बापूजें अघ्यायके स्लोस्लोका जो बर्ब बताया वह जेक ही है। परन्तु बिसे जो लोग भाषणमें से भाँटे हैं अन्ह मनोका आनन्द आटा है। बिसके भीतर जो पढ़ता है वह महामुक्तका अनुभव करता है। लेकिन देखनेवालेको मुँस पर क्या आती है। मैं तो बिसके भीतर पढ़कर बिसे भाषणमें सुतारनेके प्रयत्नम रूपा हूँ। बिसकिसे आज जब यह खबर आयी कि सरदार जिजासाहबका पत्र बुनके पास गयी पहुँचायेगी तो मुझे बड़ा आनन्द हुआ। लेकिन तू देखनेवाली है बिसकिसे तुझे मुँस पर क्या आती है कि बापूका कितना अपमान हुआ। और मुझे सीख देने आयी कि आप पत्र न लिखत तो अच्छा होता। परन्तु इरिका मार्ग बीरोंका मार्ग है बिसमें कायरोबा काम नहीं। बिसकिसे बीरवारको जो करना होया करेवा हम क्यों चिन्ता करके मुँसके प्रति अपनी सदा कम करें और अपन दिमागको बेसी क्षमटमें फनायें ?

यह सारी बात मुझे बापूजीन बहुत ही रमपूर्वक और ज्ञान पूरक समझायी। अन्तमें बापूजीन मुझसे कहा बहि तू जेठे प्रश्न करती रहेगी तो मुझे बहुत अच्छा लगेया। बिससे तुझे ज्ञान तो प्राप्त होया ही साथ ही बीरवारकी पहचान म। होयी और बिस संघसे म तुझे तैयार करना चाहना हूँ मुम अपने तैयार कर सकूँया। यह बात बिसीबिन्न कहना हूँ कि तुझे समता होना कि बापूजीको बेसी बात मने क्यों कही ? तेरे मनमें घामर वह विचार हो कि मैंने तो हमसे-हमसे यह बात नहीं बो फिर बापूजीने मुझे बिस तरह मुक्तहना क्यों दिया ? बिसकिसे तुझे निगदोच बनानको मिलना वह वैठ हूँ।

जबमुच मुझ बैठा ही क्या ना कि मन बहनेको तो यह दिया कि जिजासाहबको आपने पत्र क्यों लिखा ? बिसम बिठी हूँ तक मजाक भी था। लेकिन मजाकमें यह गार्भीयं आ गया और मनमें बापूजीने प्रश्न पूछनेका पन्नागार होने लया। बापूजी मानी अमै जान गये। अन्हूँन मुझे निदिचल्य कर दिया बिसकिसे मेरे आनन्दका पार नहीं रहा।

बा और बापूका खेल

आनासा महक पूता

४-९-४३

डॉ सुधीलाबहन और डॉ गिस्टरने भेरी आर्से किसी बच्चे डॉक्टरकी बठानेके लिये हमारी पेशके सरकारी डॉक्टर कर्नल चाइसे कहा। जिसलिये वे डॉ पटवर्धनको साथे ले। डॉ पटवर्धनने दो दिन तक आर्सेकी परीक्षा की। नम्बर बढ़ जानेके कारण नये चरमेकी आवश्यकता बतायी और आर्सेमें डासनेकी दवा लिख दी। जिस पर बापूबोके पास कर्नल बम्बारीकी तरफसे यह सूचना आयी कि मेरे लिये नया चरमा लेना ही तो वह मेरे लिये लिखा जाय।

जिस समाचारसे बापूजीने कहा "कैदीकी सम्हाल रखना तो सरकारका काम है। यदि आपको चरमा दिकाना हो तो दिलाविये। नहीं तो आर्से चली जानेकी जिम्मेदारी अपने छिर जुठाविये। यह ठीक है कि मनुके पिता मुझे लिये चरमा खरीद सकतै हे। वे जितने परीब नहीं है कि चरमा न खरीद सके। परन्तु जिस कड़कीकी सारी जिम्मेदारी जिसके पिताने मुझे सीनी है। और यदि बीमार कैदीकी हालतमें न होकर बाहर हो और मान लीविये वह खरीब स्थितिका हो तो चरमा लातेन भी चरमा ले सकता है। कैदीकी सम्हाल रखनेका काम सरकारका है। मुझे कुछ रुपये बर्बाद दिये जातै हे। बीमार पड़ तब मुझकी मार-समाल भी की जाती है। सरकार भैंसा न करे और मनुष्य मर जाय मयबा मुझके छीरमें कोई शोष पैदा हो जाय तो जिसकी जिम्मेदारी सरकारकी ही मानी जायगी। और लेना हो ना सरकार लीकी जिगाहमें अबरय बिर आवनी। जिसलिये कर्नल बम्बारी और बापूजीके बीच बोड़ीसी लिखा-पढ़ीके बाद सरकारन यह नय दिया कि चरमा दिया जाय।

बागाळा महल पूना

१९-९-४३

बनो बनी बरसात ही रही थी जिसका बाहर कुछ लाला नहीं जा सकता था। जिस कारण बक बड़ी मेज पर जाल बछवाकर पिप पौध खोजनका कटक साहजन सुझाव रखा। जिसके सिद्ध कोजी खास खर्च करनेकी प्रकृत नहा थी। जिसलिये घामको मुसका मुसघाटन बिबि हुत्री। मुसघाटन बापूजीके हाथसे हुआ। बक तरफ बापूजी म और घूमते तरफ था। डॉ गिस्टर साहब भीराबहन और हम सब तो हाजिर थे ही। बापूजीन बरसा हाथम भकर छोटीसी मन्को — जो खास तीर पर विमर्षीय खोजनेमें ही काममें ली जाती है — मारा। घामतसे बाको मारना था। पता नहीं बापूजी नब यह लाल लेके हौम ? न तो बापूजा ठीकसे मार सक और न बा नेंदको लींग सकी। हमारा तो हँस हँसकर बस निराल रहा था। ७४-७५ बरक बापूजी मानो कोजी खिलाडी बल रखा हो जिस तरह बोधे बैलना हा में बनो भडाका करता हू। हम सबको खूब आनन्द आया। और घामको हम लोब बिगने हूसे कि घूमनकी भी मुष न रही। याबकल अनेक बार अकल्पित आनन्द कल्पके अनुभवोंमें पूम्स बापूजी और पूम्स बाको विमर्षीय लकठे बैलनका बुरप ली बनोला ही था।

बापूजी हाकम ही घरकार द्वारा प्रकाशित कापसका विम्मदारी नामक पुस्तिकाका औरदार जबाब देनके काममें जुट रहने हैं। जिसके लिये उन्हें गमोर बिब र करनमें बिमानकी बहुत छलित लर्ष कानी पड़ती है। गविर्षीमे मलाह-मजबिरा करना पड़ता है मुन्ह बननी सरप और अहिमाकी मूषमना समजानके सिद्ध खर्चाप करनी पड़नी है। अंधे गमीर बाताबरनकी भी बापूजी दान बरम बिनीधी बाताबरनम बरस बाळी है।

बागाळा महल पूना

९-७-४३

आजकल म पूम्स बाके लिये अंधे छाड़ी पर बर्षादा बाड़ रही हू। यह छाड़ी अलकमें तो मरालताबहन (अबनालालजी बजावकी पुत्री और

बागाबा महल पूना

८-८-४३

अंग्रेजों हिन्दुस्तानस बल बाबो बाबा अतिहासिक प्रस्ताव पास करनेको बाब पूग खेल वरम हो गया। हमने महा प्यजबंदन किया। डॉ निरदरने कराया बा। हमने महा बाबा रहे हमारा सारे बहस मज्जा हिन्दोस्ता हमारा और बम्बमातरम् भाबा। जिसम बा बापूजी हम सब और खेल सुपरिस्टेण्डेंट साहब मी शामिल हुये। बमाचार और विनाहियोने मी हिस्सा किया। सबन साथ मिच्छकर गाया। और कैदियोंको मोजन कराया।

बागाबा महल पूना

९-८-४३

माठ जल्दी ही सरबदा जेवसे जय-जयकारका गान सुनायी दे रहा बा। पू बापूजीको बागाबा महलमें बाये पूरा खेल बय हो गया। बूमते-बूमते बापूजी कहने मने कौन जाने क्यों महादेव मुझे कहला बा कि सरकार पकड़ेयो। बिगधारीका बाण्ट बा गया पुक्ति अफसर बा गये तब मी मुझे बिस्वाम मही हो रहा बा। महादेव जब पुक्ति अफसरका मेरे पास आया तभी मरोमा हुआ। बाब बनेछा नमन मागा। महादेवत ली मानो बी महीने पहलेमै ही तैबारी करके मारी मामकी जुटा ली बा।

बापूजी मात्र दिन प्रकार जब महादेव काराखी पाद कर रहे थे तब हमारा हृदय इतिन हो गया।

गुजामोका दिन बा। पू बापूजीका ११२ तथा बाबा पीड बजन निकला। कोभी न बटा और न बडा।

बागाबा महल पूना

११-८-४३

बापूजीने मात्र मुझे बुझिा दिया कि महादेवकी पुण्यतिथि १५ मारीसको है। बून नमय गू मबके साथ रीतापाठ कर उनके दिनकिजे

किसी भी तरह बठारहीं अभ्यासोंका मुन्धारण प्यारेलास और सुधीलाके साथ निरु सके जिस तरह वीबार कर से। अभी बार पांच दिन बाकी है। जिसदिने जब जब मुझे बा प्यारेलासको या सुधीलाबहनको बसत निके तब तब तू सब काम छोड़कर मुन्धारण सीखने बैठ जा।” जिसदिने मारा दिन लगभग जिसीमें बीठा।

बोपहरकी पू बाके पास अबबार पढ़ने नहीं बनी थी। परन्तु बरमाठसे मारबाइके मुपलेटा प्रदेशमें जो भारी हानि हुआ थी, मुसफा जो स्पीरा अबबारम जाया या मुसे भूपर भूपरसे बाने पड़ा। फिर मुससे कहने लयी स्पीरा पढ़कर मुता। बारमें अपना काम करना।” स्पीरेमें या कि मारबाइम बीस-पच्चीस हजार आदमी बाइमे यह पने बेबरवार हो गये और पच्चीसकी हानिका ता कोभी हिसाब ही नहीं है। अपकेग गाब बहनमें बास पास बचा।

जैसा बीइलनबालो बार्से सुननेके बाद बा बीसी बोक और बयारम मुबनरा हुमरी तरह इवारी जिस भङ्गाजीमें झिने ही अचानाई निगला बनिदान हुआ हागा झिने ही बन्ने मर भये होने और गोसने बार यह प्रकृतिको अनिबृष्टि। क्या भारतका माम्य भेसा ही है? बाकी नबाबद बकडी नदी थी। बिस्तर पर तस्मियेके सहारे बैठे ब्रेग माग पद हुअ हुयी हृदयके कहन मगी औरपर बापूजीके मय्य प्रीय अहिमावी अब तक कही परीथा करना रूबा?

के सब बर्षोंमें सुनकर बहुत दुःखिन् हो जाती है। मुनकी उम्रता है कि बापुजीन सेवा न तो कहा बा और न किया बा फिर भी सरकार क्यों झूठे आरोप लगायी है? कहते है कि सत्यकी सवा जीत होती है। अमुक बात सत्य है यह प्रत्यक्ष देखकर भी सरकार भये आरोप लगाये तो बिसे क्या कहा जाम? बापुजीकी सत्यतामें बाको महा तक विश्वास बा कि साक्षियोंमें होनेवाली भिन्न सारी मंत्रपाके जितने झूठ बाके कार्यों पर पड़ते और समझमें बाते मुन पर मन ही मन के दुःखी होती और मेरे सामने प्रगट करती। अल्पवत्ता किसीको जिसका जरा भी जमान होना कठिन बा कि पू बा यह सब सुनकर अपने मनम पमीर बिचार मा मारी चिन्ता करती होमी। मे बिना बर्षोंमें जितनी महरो शिल्पनस्वी नहीं होती थी। बहुतसी बातें तो मेरो समझतकी पकितसे बाहर भी होती थीं। फिर भी भिन्न काम करते करते अबबा पू बा कुछ कहें तब या मुनके पक्षन पर बैठकर मुनकी सेवा करते करते कुछ मुनको मिल जाता बा। जिसके सिवा खाल कुछ नहीं। मे पू बा और बापुजीकी सेवा करने जाने-याने और पढ़नेके सिवा ठीक-ठीक बर्षकी मुझमें बहुतो राजनीतिक बातोंमें क्या समझू? जिसदिने मुनकी बर्षोंमें कीजी रख नहीं मिली थी। जिसका आज कुछ और परचात्ताप भी है कि १९४२-४३ के संघर्षके दिने काइसकी बिम्बेदारीके आरोपका मुत्तर दिनमें पू बापुजीकी अल्पवत् हो महीन लभ पये होमे मुन पर भी अल्पने साक्षिमकि लाभ जो धैरिहासिक बर्षोंमें होती मुनमें बापुजी जो मनोम्यबा अटकलें मुसमें नाय केनेका मुझे सीमाप्य नहीं मिला। फिर भी पू बाके सं कदम मुझ्गार अपनी डाकरीमें सहर ही येने किस किये वे और अब मुन्ही परते बापुजाकी मुन ममवकी मनोम्यबाकी कल्पना करके आइवाहन प्राप्त करना होया।

महादेव काकाकी बरसी

बापासा महल पूजा

१५-८-४३

बाबू महादेव काकाको किस संसारसे बिधा हुअे पूरा बेक बर्ब हो गया।

कल बाको दिखता दौरा हुआ था। साप ही सांस केनेमें भी बड़ी कठिनाजी होती थी। खांती मी थी। जिसलिये रातको अच्छी नीद नहीं ले सकी थीं। में और सुखीलाबहन बारी बारीसे मुन्के पास बैठी थी। परंतु बापूजी काप्रेस पर सवाये गये जिसबामोंका सरकारकी बजाय बिछ रहे हे जिस कारण सुखीलाबहनको बिनमें काफ़ी काम रहनेसे बाने सुखीलाबहनसे कहा मुझे तुम्हारी बकरत पड़ेमी तब जबसय बुझवा लूँगी। मनु मेरे पास है। वा सीधी छो छो ही नहीं सकती थी। छातीमें सस्त बबराहट रहती थी जिसलिये बब कभी बोडा आराम होता मेरे सहारे पोथमें छिर रखकर बोड़ी बेरके लिये नीद ले लेती थी। सुखीलाबहन बीच बीचमें जाकर बेल जाती। जेक बार बधा मी पिला पकी। जौ दिम्बर मी रातको बी बार आ पये। बाको बिन कोबोंकी चिन्ता थी। बोली बाप मेरे लिये क्यों जानकर जाते हे ? मेरे लिये बापरब कपी करत हे ? बापको बिनमें मी काम करना पड़ता है। बापूजी जेकाय बार बाप यह भी बाको पतन्य नहीं बाबा। मुझे जिसका बडा बुझ था कि मुनकी बोमारीके कारण पूतरे सोय परेशान हाते हे।

बिन प्रार मीने जायत रात बिठाजी। प्रार्बनाका समय हो गया। में बाके पलक पर ही बैठी थी। मुझसे कहने कपी पू अब प्रार्बनाम जा। सारी रात बने मुझे परेशान मिया है। बाबू

तो महादेवकी पुण्यतिथि है न? खरे ने बर्षकी जाते क्या देर कभी? जान लायक में भी खीर बका क्या वह। मेरा बुनियामें जब क्या काम है? बेकारो दुर्ग और बाबलाकी प्रयत्न कैंसी परीक्षा से रहा है! बापूजी बाहर होते तो मुझे बड़ा आश्चर्यन मिळता। खीर, खेरी प्रयत्नकी सरजी। आज महादेवकी बरसी है। अिसल्लिखे प्रार्थनामें बैठ। मने कहा में महा बैठी रूगी। बापूजीने भी कहा मनु वहीं बैठी बैठी बोलेनी तुम चिन्ता मत करो। बाकी सात फुल्लती थी अिसल्लिखे मेरे सहारे बैठी थी। म बुनकी छापी पर हाथ फेरती थी। बर्बनी बहुत थी तो भी वे प्रार्थनामें भाग लेनेका प्रयत्न कर रही थी।

यह बात तो सर्वविदित है कि बा और बापूजीके लिखे महा देव काका पूनबत् न। प्रार्थनाके बाद बाकी बीडा आराम मामूम हुआ अिसल्लिखे तो पकी। मने खीरेसे बुनका सिर लकिये पर रख दिया और मच्छरदाती बालकर अपन कामम लग पकी।

कमय ब्रेक बंटे तक अम्हें कच्छी नीच काकी। बुठी ही बीती आज कैदियोंको भाजन करायी न? मन कहा हा मुचीला बहन कैदियोंके लिखे भोजनका सामान निकाल रही है।

हम लोपीने स्वयंतापी मृत्युतिथिके दिन बाह्यभ-भोजन होजा है। अिनित बा अिनित बचारे अरगाकी कैदियोंको बाह्यभोति भी बुन्य माननी थी अिसल्लिखे मुबह ही मुबह मुमने पूछा कैदियोंको अिसल्लिखेगी न? पूछत अमानको पूछने गास्त्रोंको माननवाली कठिग्रस्त बाके अिचार अिनित यहरे से यह अिन अम्हेंनि मामूम हो जाता है।

आज हम सबका अप्बान था। बापूजीन मिळ परम पानी बुसम दी अम्मक महद और जरा ना सोडा बालकर प्रार्थनाके बाद पीया था। एकका रम आज छीड़ दिया। अिसल्लिखे मूम कोकी सात काम न था। मुचीलाबहन और बीटाबहन मबाअिटीं फर्दंन मजानेके लिखे पहले ही अर्ना पकी थी। मैं बाकी दागुन बरबाने और बाडा देनक लिखे ट्टर पकी थी।

ठीक ७॥ बड़े रोजके नियमानुसार बापुजी समाधि पर पहुंच गये। मैं नहीं बड़ी बिसरिबे बाने कहा तू आज न काम बहुत मुझ बण्डा नहीं लगता। फूट बडाकर प्रणाम करना और पीछापाठ (बीठा का बारहवां अध्याय वहाँ रोज बोला जाता था।) करके बनी बामा। बिसरिबी बेरमें मुझ कुछ नहीं हो जायवा। मेरे पास काड़ा रख जा मैं कुछ पी लूँगी।

मने कहा डॉक्टर साहब (बां गिस्टर) और मुसीलाबहनने पास पीरस कहा है कि बारी बारीसे बाके पाग किसी न किसीका हमेया रहना जरूरी है। बिसरिबे मुझ कोगोके बाके बार म प्रणाम कर बाजूगी।

मुझने कहा तू कहता कि मुझ बाने भेजा है। बिसरिबी बेरमें मुझ कुछ भी नहीं होनाका है तू जा।

म समाधि पर बड़ी तक स्मोच बोले जा रहे थे। मबकी बाके बर पी। बेकिन मेरा स्वर सुसम मिला बिसरि बापुजीने जरा बाके लाका फिर बर कर ली। अगरबत्तीका सुर्षबिठ मुझा चारों तरफ फैल रहा था। मीराबहन और मुसीलाबहन दोनों ठहरी बलाप्रमी बिसरिबे इतिहा और हमने कुन्ने मुन्ने मुन्ने सजाबट की थी। जिम भक्तिमात्रम महादेव बाका बापुजीके सम्मुख बाड़े रहत थे ठीक मुनी भक्तिमात्रम आज बापुजी बीना हाथ जोडकर प्रभातम सुषोरपकी मुन्ने। गिर्याक बाके भाग बर करके बनीर मुलमुझमें लड़ थे। जस पर गानात्रक बारहवां अध्याय—भक्तिबोधका पाठ हो रहा था। बिसरिबी मेरे मनम मन्त्र यह लयाक बाया कि बिसरि समय बिसरि रिमका बरक न बाय महादेव बाका बापुजीके बरक या बापुजी महादेव का व बरक

येन ह स्कार गमान हुअ पहला प्रसन्न बापुजीन रिवा बा तू न। पहली बाक मुझ जसा इया बनी है बा। आज बर दसा बरमा है। बरके बाके तू महा न बा सरे बर बाकी बने मान बाका यह बनाना है रि बाके हरपकी पहला हुअ महादेवकी व वरा बाकाक बनी न बर बनी ही बना हुमा है।

मे समाधिसे लीची बाके पास जाती। बापूजीके साथ मुसीला बहुत लौटी। जिस कमरेमें महादेव काकाके लवको महानानके बाद गीतापाठ और प्रार्थनाके लिये रखा गया था उसमें गीतापारायण करना था। जिसलिये भीराबहुत उसे छुवाने जाती। युग कमरेका छारा फर्शपर निकलवा दिया। कमरा साफ किया और अककी एक पादर बिछा दी। जिस तरह बड़े बर्ष पहले महादेव काकाका मृत शरीर मुखावा गया था और जिस जोर मुनदा मिर था उस जोर पूरुसे बड़े कसामय हंसे छे बनाया पैरोंकी तरफ १ (फोम) बनाया अगवती मुसगाबी और सारा बाताबरन पवित्र कर दिया। जिस बीच बापूजी और हम सब महा-बोकर नियत गये जिसलिये एक बामी और अम्मथ केकर ठीक दस बजे बटी बजायी। पूरा रात गीतापारायण ही सब तक चोका दिया अकानको कहा था जिसलिये मन भीका दिया बलाया। जिस प्रकार सब प्रार्थनाम बैठे। बठली साहब (हमारे मुररिण्टेगस्ट साहब) भी मोमूर वे। सबके बैठ जान पर महाकी मोगि प्रार्थनाके रात बीसे जानेवाले स्लोक शुरू हुए।

सबसे पहले जापानी स्लोक मन्वो हो रग बयो बोला गया।
(जिस स्लोकका अर्थ होगा है कुछ मयदानको मेरी अोगन ममस्कार।)

जिसके बाद हा स्लोक था

भीषावास्पमिह सर्वे शक्तिष्व अगत्या अवत् ।

तेन त्यजेत भुञ्जीथा मा गृध्व वरुणस्विदमम् ॥

जिस स्लोकके बाद कुचन परीपट्टी जायन बोली गयी। बारमें अरपोस्त जाया हा पियन्त नाहन बोले।

(मन्वो भीषावास्प कुरान शरीपट्टी जायन तथा अरपोस्त जाया बापूजीको बुबह-शामकी बैनिक प्रार्थनाम मदा बाल जाते थे। मुनदा अर्थ जायम-अजनाबलिके अर्थ मस्करगम दिया गया है।)

अपरोस्त स्लोक बोले जानेके बाद वैप्यवजन तो तन बहिए अजन मुसीलाबहनने और मेने शुरू किया। बरतु जिस अजनकी पहली ही बड़ी जान पर कता कर जाया। प्यारेजायजीन अजनवा मूर लंजान लिया और मुनिरलते अजन पूरा किया।

मन्नके बाद भीराबहन कमरेके खेड़ कीनेमें तानपूरा लेकर बैठ गयी। बुन्होंने तानपूरेकी मोठी भनकारक साथ अपनी पहड़ी मायामें रामबुन नवायी।

बापूजी और बा अपनी कमखोर लबीपतके बाबजूद आँसे बन्द करके बैठे थे। एक तरफ़ बिना जस रहा बा पूर्योका छ और † (कोस) का पवित्र किन्हु वे तथा अपरबलीका मुगभित बुजा मारे बाताबरमकी पवित्रताके छाधीके रूपम फेक रहा था। बा और बापू पाकबी मारकर आँसे बन्द किने सीबे दोनो हाथोंकी बुपलिया स्वामाभिक रूपमें हो जोड़कर ध्यानमग्न बैठे थे। बड़ा हृदयशावक दृश्य था। रामबुनके बाद भीराबहनने महारथ काकाका प्रिय बड़ेका मजन पाया

When I survey the wondrous Cross,
On which the Prince of Glory died,
My richest gain I count but loss,
And pour contempt on all my pride.
See from His head, His hands, His feet,
Sorrow and love flow mingling down
Did e'er such love and sorrow meet,
Or thorns compose so rich a crown?

अिन मन्नके बाद पीतापाठपत्र शुरू हुआ। सारे पीतापाठमें एक बटा इन मिनट लय। पीतापाठके बाद—

बिपदा नैव बिपदा सपद्यो नैव सपद्य ।
बिपद्विभग्यं बिप्योस्तपघारावकस्मृति ॥

अिन स्तोत्रके बाद सब काम पूरा हुआ। बा निरवाच लेकर बाकी पिछके माल अिस समय तो महारथकी बिठा जस रही थी और बुनियामे केवल बसका नाम रह गया था।

प्रार्थनाके बाद सुधीलाबहनने बापूजीको वरम पानी और चहच बिद्या। मेन बाको पानी बिद्या। बाहमें हम दोनो कँदियोकें किने बन रहे जोजनको रंजन गयी। हम दोनोंन पीजन बनानेमें सहायता थी।

मोजन सब तयार हो गया तो सब कैदियोंको एक बजे खानको बैठाया। १ कैदी ब। बा जिन ब्राह्मणस्वरूप कैदियोंको खिलाने जेक कुरसी पर बैठी। मोजनमें लिचड़ी कड़ी साक हलवा और पकौड़ी बनायी थी। सबसे पहले हरबेरकी दस्तकी चमकती हुयी तलसीमें कड़वासे कापठे हाथों बापूजी हलवा परोसन लये। बाकी चीजें डॉ. पिस्वर, मीठाबहन प्यारेकाकाजी सुसीकाबहन और मैने बारी बारीसे परोसी।

पू बाका ध्यान ठेठ छिरे पर गया जहाँ में पकौड़ियाँ परोसना शुरू गयी थी। हमरेको परोसना शुरू किया कि मुझे टोला देब मुन कैदीको तूने पकौड़िया नहीं परोसी और यहा कैस परोसना शुरू कर रिया? परोसना भी नहीं अठा? कीन एह मया जिनका ध्यान रहना चाहिय न? (जय गाराजीसे बोलीं।)

सासके कारण और एक रिक्का भी बीस हुमा या मुसकी कमजोरीके कारण अग्रस्त बनी हुयी बाका ध्यान कहा प्युवा? और में परोसनेवाली होन पर भी बाबिरी अरमीको नुक गयी जित्त मतमें मुन समझी।

कुछ करी ती बीस बीस बर्पकी सजा पाये हुअे ब। वे कहते कि हमन पाप करत समय बोझा सोच-विचार किया होना जित्तीकिज धिन देबुवजके सनात महात्मजी और माताजीके हाथकी प्रसारी साकर हम पबिन ही रहे है। जित्त प्रकार जिन कैदियोंको जितनी अजाबोत बा और बापूजके साथ रहनेका सीमात्म मिल गया या और बाहरके लोपीके किज बापूजीकी चरनरजके किजे तरसन रून पर भी वह समय नहो बा। और जब कबो बा और बापूजीकी प्रणाम करी और मुन दोनों बिरल विनूतियोंके पबिन अजीर्वाह देनेवाले हाथ कैदियोंका पोठ एने तब कैदियोंके बेहरोँ पर अन्ने अ-पको अग्य सनसतका माव दिनाभी दिय बिना कमे रूठा?

जित्त प्रकार बा बापूजी और कैदियोंके बीचका यह पबिन प्रनव एगानें जिन कत करेका काम यमपि मर तिम बहुत ही कठन है फिर जो अस पबिन दृश्यही में सारी थी जित्त कम बोझमें यह

कल्पनाचित्र महा लीचनका मैं प्रयत्न कर रही हूँ। जिसलिये स्वभावतः ही मेरी आँखोंके सामने यह दृश्य आया हो जाता है और मुझे लगता है कि आज जब वे दोनों विभूतियाँ देहस्वरूपमें संसारसे अनुरूप हो पड़ी हैं तब जितन कैबिरोंन जिस प्रकार बा और बापूजीके हाथोंसे परोसी हुई प्रसादी खाती होगी जिनकी पीठ पर जूनके प्रमथुण हाथ आँसूबदिके रूपमें फिरे होंसे जून बनराही कैदियेके मतमें कितना आत्मसंतोष होगा? क्योंकि हत्या करके सजा पाय हमें कैबिरोंके भाग्यमें महाभागोंके जितन समीप रहना काम और पर पुष्कल हो जाता है। परन्तु जिस दुस्वकी कल्पना करनबाँके मगम यह सजा सह्य हो नसे जिना नहीं रहेगी कि दुनियामें दुर्कर्म की मूलम हा मजता है।

कैदियोंके सिक्कालके बाद बा और बापूजीन थोड़ा आराम किया। मैंने दोनोंके वैरोम की मला। जिसनम १। बज गय। ठीक २॥ ६ ॥ बज तक ? बरा सामूहिक कटाही-मज रखा बा। जिसकिये सबन मन नके प्राचना का बूझी तरह जिस ? बँटमें मौन लेकर कता।

ठीक ॥ बज बापूजीन सुपवास छोड़ा। (सबन २४ बँटेका सुपवास किया पा।) बापूजीके मोत्रन कर केनेके बाद हम सबन साथ बापूजीके भाति भायकाककी प्राचना हुई और प्राथनाके बाद रविवार होनेके कारण बापूका सोमवारका २४ बँटका मौन बन शुरू हुआ।

मौन की सामान्यत बहुतसे इतनाम है बज इत है और यह मौनबिन मा कुहरती और पर आज ही पता जिसकिये सारे दिनमें सबनको आज जिस वय पबिन आइको कुहरतन अन्तमें छोटी ममम पूरा बना दिया।

मेरी रिहाशीका हुकम

दयावर्षी महक पूना

१-९-४३

दिउडे कुछ दिनोंमे मुझ बुझार रहता था और मुझक कारण बचन बन गया था। आज बचन केतका दिन था। मेरा बचन ४ पींड बन आ तसे मुझ छत्र चिह्नान कम कि अब तुम सरकार अवस्थ छोड़ रेनी। और फटली चाहत वेक कागज टाकिय करके और मुम पर मूठ हस्ताक्षर करके मुझ छोड़नका हुकम भी ले आय। डॉ. मिश्र, काली साहब पारिकाशनी और सुधीकाबहन सब मेक हो पय। मे बकेली ही थी। मैं तबमुख ही मान किया और बसे छत्र कासक निहनाम होत पर रीतका भावय सती हू बैसे अब कोनम बैठ कर मे रीत लयी। पहक ती हिम्मत रनी परतु अब सब लोग कहत सब अब रीयेनी अब रीयेनी तो मे तबमुख रो पयी। कि प्रकार कवमय अब घट तक मुन भोगोंने मुझ तय किया। अब घट बार मय ईसन तुझे बापुजीके पास मय। बापुजी कहत सब जो चिहना है मुझ सब चिहना है। यह तो मूठा कामज है तुम सब बना रहे है। तू रीती है दिनकिच दिन सबकी जानब बाता है।

मुझ बोड दिनभ सुधीकाबहन मिलेइके किठिहास और सुधीका (अंग्रेजीकी छत्रे कमानका कम्पाककम) विषय घामको १ स १-२ तक बाटी बाटीस पडाती है। आज मे काममे लयी हुयी थी। १-२ हो मय दिनकिच १ दिनियम क्या पडा जा लवता है यह सोचकर मे बहा न मयी और हुमरा काम करत लय मयी। और मराकी जाति १। अब बापुजीके पास मुमने चली मयी। बापुजी कहत सब

बेक बार मय मयम जो निषय कर किया हो मुझे छोड़ना नही चाहिये। तमो हुमारे जीवनकी प्रयति होती है। तू काम पूरा न कर पाती हो मयबा किसी दिन कदाचित मयबाके कपय निषय छोड़ना बडे तो मुझ दिन बकर मुमस कइ किया कर। मिश्रि तू

नियम पालना सत्य भावना । किसी तरह बन्दकी पाबन्दी संज्ञानी
 चाहिए। अभी शिक्षणतः कि तु सानके किम भी ठीक ५॥ बर
 नहीं जाती और पाच-घाठ मिनटम ही का सेठी हैं । पाच-घाठ
 मिनटम मछा क्या पानी होगी ? वो कहना ज्यादा ठीक होना कि तु
 कम नैमे साना निगल सेती ह । भे साच ही रहा का कि जिस सबकीकी
 मनेरिया छाँटना बना नहीं ? भाज मुस फटा बना कि तू बिना कबाय
 जैसे जैसे का शो ह धिमीझिरे बीमार पडा करती हैं । सानेमें ठीक
 बाया बना क्याता ही चाहिए । बीस्वरन तुम दाठ सधुपयोकके सिबे
 दिय ह आम्बरन का म करनके सिबे दिय हैं । बाँतोसे अच्छी तरह
 बसाया जाय और परिशामस्वरुप सम्युस्ती अच्छी रहे और घाँट
 अच्छा हा नो ही सेवा हो सकनी ह । जिनकिम हम हरजक बात जिस
 मावमाव करना चाहिए कि सब कुछ बीस्वरके कामके सिबे करना हैं ।
 माच २० बस तू बोधी तथा कपडा सिन्नेमाल न बने और रत छोड
 ना बह जियो समय मड भावना अभी तरह बागोना सधुपयोग नहीं
 करना ना ब म मडरन गिर भावना । ये भी यदि ठीके बाँतोही तरह
 बरन म तसम तिम प्रका पमनका व्यावाम न करामू ता पस्वी ही
 बिना मोत मर जाभू । लुद हापर बिना बीत अच्छी करना भी पाप
 ह करार बिना मोत । हम अपनी गुरी नमाल न रग्य तो ही मरते
 ह (मोत न मी न रिय भावधाना बाता देग बुटिम भव ह ।)
 और इना रतनके सिबे अवाग्य रहरना यह तो पाप ही हुआ न ?
 पाप दर तो ब मड त्र की मसम दामनगे पहले बीदवर्ती
 मा २ ३ ४ ५ आम्बर हम सानका रता ह मज सुकता
 न २ ३ ४ ५ ६ ७ ८ नियम तु पाएनी तो तुम
 १ २ ३ ४ ५ ६ ७ ८ ९ १० ११ १२ १३ १४ १५ १६ १७ १८ १९ २० २१ २२ २३ २४ २५ २६ २७ २८ २९ ३० ३१ ३२ ३३ ३४ ३५ ३६ ३७ ३८ ३९ ४० ४१ ४२ ४३ ४४ ४५ ४६ ४७ ४८ ४९ ५० ५१ ५२ ५३ ५४ ५५ ५६ ५७ ५८ ५९ ६० ६१ ६२ ६३ ६४ ६५ ६६ ६७ ६८ ६९ ७० ७१ ७२ ७३ ७४ ७५ ७६ ७७ ७८ ७९ ८० ८१ ८२ ८३ ८४ ८५ ८६ ८७ ८८ ८९ ९० ९१ ९२ ९३ ९४ ९५ ९६ ९७ ९८ ९९ १००

आयाशा महक पूना

५-९-४३

आज पारलियोंका गया बर्य ह। जिसकिसे मुसीबाबहाने प्रार्थनाके बाद सुरंत डॉ. पिरडरके कमरेके पास चौक पूरा। बाहर आंगनमें भी पूरा। १॥ बड़े कटेसी साहब फूलोंके हार और बुसरी मेंटे सेहर डॉ. साहबको देने नीचे आये। बा मुसीबाबहल और मत भुन रोगोंको बारी बारीसे तिलक किया और सूतके हार पहनाय। बादमें भुन रोगों बा और बापूजीके पैर छूये। चाप पीकर हम सब बेडमिडल खान्नको नाचे सुतर रहे ये कि जिसनेय जाने मुझे बुझाकर कहा रोगोंके जिसे आज कोमी मिठाभी बनाया। बुसरी बहुत नी मिठाभी थी जिसकिसे रोगोंग मना कर दिया। जिस पर बा कहने लगी बाप क्या जान ? राहुनकी लो बनायी ही चाहिय न ? रोगों भुप हो नये जान मुझे पूरकपोली बनानेको कहा।

जब म खोलकर लीगी और बाके सिरम मालिम करम लगी तब ये बोली देख बचारे कटेसीकी भी आज बाहू महीनके लीहारेके दिन आपन बामबन्धोसे बनन रहकर हमारी तरह जल ही मोगनी पडा रही है। निहरकी लो कोमी बात मही। ये रोगा बाहर होते लो जैने और सब नबबपके दिन आजक मनाते ह बेध ये लो मनाते। जिसकिसे हम बुछ न बनाय लो टाफ नहीं होंगा। अत देख पर डड़ बज जान बैठ तब गरम गरम पूरकपोली बनाया।

अधरा बा भिन रोगोंकी जिमानके निज डड़ बज मंत्र बर आओ और आपहपूवक भोजन कराया।

असल बात यह है कि जबम बापूजी और जान अपना जीवन परिवर्तन किया तबसे भुनके जिसे सब दिन बनन हो नये थ। फिर लो बा बुनरोंके लीहानीका प्रजन भिन प्रचार व्यावहारिक काम साप लेनी थी।

बाबासा महल पूना

१९-९-५९

बाब बापुहरको जब म बापुजीके परेमें बी मल रही बी तब कटेकी साहब बाये। मुझसे कहल क्यो जिस बार तो सचमुच तुम्ह छीड़नेका हुकम आया है।

मन कहा बाप सबको जिसके सिवाय और कोमी काम ही नहीं है। मुझको बिडाना आता है? बाप मम ही मबाक करे, अब म पहुँकी तरह रोनेवाली मही हूँ।

जिस प्रकार बात बली बिठनेमें तो मुझे बिडानवाली मडकी बना हो पयो। कटेकी साहबने बापुजीके हाथमें कामज रखा जिसकिसे मेन मोचा कि मबाक ही होठा तो बापुके हाथमें बूठा कामज हरमिज न रहते। क्या मुझे सचमुच छोड़ दिया बायबा? मैं बोल बूटी और छूनेकी बबराहट फिर पैदा हो पयो।

मन कहने ला बलो अब मनुको बिबायी बेनी पड़ेनी। पू बा भी पकम परसे बहा बा गमी प्रहा बापुजी नीचे छो रहे बे। ब लो तो मनुबाबा बनी बायगी? मुझे पब किबती रहना। अब बीको करको जाकर पबना। सबसे अेक बार मिल जाना। बेचारी तरा बहुत तुमने मिलनेको किबनी तरह रही होंगी? बे बूझ हो बायगी। तुम हमारी बहुत सेवा की है। परतु सरकारके जाने हमारी क्या बने

वह विबला बायब बा बोली कि बापुने कहा परंतु बिठमें तो जैना हू कि तुम सी पा सरकार छोड़ रही है। तू सी पी सरकारकी बीबी है नाबतुरमे हुमरी बहनोंको छोड़ रहे होने बिबकिसे तरा हुकम यहा मेजा है। परतु यदि तुझे यहा रहना हो तो तुझ पर जो बहुत है न जागी ही रहें। और कूना हो तो किसी भी समय बू नबती है।

मेने कहा मुझ नहीं जाना। मेरे जानबका तो पार बही बा। बया हुकम होगा यह कल्पना कैसे हो सकती बी? मनमें मे

बिना बरसे काप रही थी कि बा बापूकी पबित्र सेवाका बीसा वरुण्य
 बबसर हाथसे छिन जायया। मने बाबमें साहस करके कहा बाप
 तब भडे ही मजाक कीजिये। पहली बात थी यह है कि मुझे
 स्वप्नमें भी खयाल नहीं था कि मुझे बापासा महकमें रहनको
 मिलेगा। पूर्वकी पुष्पबन्धे और पू बा तथा बापूकीके प्रेमके
 आकर्षणन यहा बा मही। बीस्वर कोभी बीसा अनुदार नहीं है कि बसी
 अनुस्य सेवाका बबसर बेकर तुरंत ही बापस ले के। तब तो बीस्वर
 पर मेरी बात भी मजा न रहती। परन्तु हृदय भी कितना बड़िया है ?
 कोभी कमीका भाव्य छोड़े ही छीन सकता है ? ”

बा तो बहुत ही प्रसन्न हुयी। कटेकी साहब कहने कने
 यह तो तू बहुत रोयेगी बिनीलिख बिनी राहत मानी थी । ”
 (मजाकमें ही कहा) सब हंस पडे ।

फिर बोड़ी बैरमें बा बोली तू बिनी छोटी बुग्म क्यों हमार
 पीछ परेधान होनी है ? बाहर जायनी तो क्याच पढ़-लिख सकेगी । ”

मने बाबिली जवाब दे दिवा मुझे यहा जो धिधा
 मिलयो है बसी संसारमें कही भी नहीं मिलेगी। मुझे बिन तरह
 नहीं जाना है ।

बा बोली तरे नाम क्या है यह जाननेको म तुमसे
 बिरह कर रही थी। बिसम रोनेकी क्या बात है ?

कटकी साहबने बापूकीमे कहा मनुके पिताजीमे पुछजाना
 पड़ेगा न ?

बापूकी बोले बियु लड़कीका पिता मानी भेरा मतीजा या
 बेरा। बोनी बक ही बात है। मुसका मुस पर क्याच बिरधान है।
 बिन लड़कीमे लिडे जो मेरी बिष्म है बही मुसकी बिष्म ह। मुने
 म अण्ठी तरह जानता ह। लड़कियोंकी बिनी स्वपनना देनबाले
 बहुतने पिताजीमें यह मरु है। बिनी छोटीमी मनको एक
 जानेन जो जमने नहीं रोरा। जहा तक म जानता ह अनु और
 बिनी बहनोंकी बिने मा-बापन क्यों बिनी बातकी क्यों नहीं रज
 ही। बिनिख बिने पिताके बारेमें मनु और म बीनों बिदिपन है।

बापूजीने फिर पूछा कि ऐसा बोझ भी बिचार बाहर जानेका हो तो कह देना। मन कहा जब मुझे पूछ्ये तो मैं चुतर ही गही चुमी। बिन सब बातोंके कारण बापूजीको सोनेमें दो बज बसे। डाक्री बने बैठकर बक रही कागज पर पेंसिलसे कटेकी साहबको देनेके लिये मुझ नीचेका मसीरा बना दिया। वह मसीरा वैदिकवादि मसीरेके रूपमें मेरे पास आज भी चुसी हालतमें सुरक्षित है।

माहरीय कटेकी साहब

आपने मुझ खबर बी ई कि थी पी सरकारकी कर्तव्य होनेके कारण वह मुझे छोड़ना चाहती है। परन्तु यदि मैं अपनी मरजीसे यह रहना चाहू तो वर्तमान बंधुओंके नीचे रह सकती हू। जिसका जवाब आपने मुझसे माया है।

मेरा जवाब यह है कि यहाँ मैं पू. कस्तूरबाकी सेवाके लिये ही आज भी और जब तक चुनकी मरजी हो जब तक यहाँ रहना चाहती हू और वर्तमान पाबन्दीकी स्वीकार करती हू। मैं समझती हू कि यदि मेरी विच्छा कूटनेकी हो तो मैं कूट कर जा सकती हू। जिसलिये मेरे पिताजीकी विच्छा जानकी बात नहीं रह जाती। परन्तु जब मुझे जब लिपुपी तक भन्ने यह बता चुकी कि अभी मेरी विच्छा यहीं रहनेकी है।

यत्र मसीरा बापूजीने लिख दिया और मने अपने अक्षरोंमें लिखकर कर्म माहबकी मीन दिया। किन्तु मनीरेमें अंतिम बावद लिखीलिख लिखा कि हमारे जब बन्धुओंके बहुरिवाजके अक्षर की बावद पात्र कर लगी जान दिव जाते हैं नहीं तो बात छान कर है। मने करने बाल व बात्र न व दिदीलिये मने यह मनीरी कर बा। मने तो जब यही दोकलसे जब जानना दोकल मनेभव लगे लख हृदयन बीकबरवा मुन्धार माना। बापूजीने यह मुझ मनीरी जब लख ही पात्र एक छोड़नेकी मुचमा की और बावदीय बन्धा मनेक कर मनेकी कहा।

जिस सारे काममें दोपहरकी सुधीलाबहनके पास अंधवी नहीं पड़ी था लकी । अंधेबोका बग न छूट बीर निमनकी रखा हो उसे जिसके लिये बापूजोने मुझे अपने पास पढ़नेके था। से ५ बजेके समयमें से १५ मिनट सुधीलाबहनसे पढ़ लेनेकी दिया । जिससे अंधेबोका बग भी नहीं छूटा बीर संस्कृतका बर्ष भी (जो मैं बापूजोसे पढ़नी थी) नहीं छूटा । बीर ५ से ५॥ एक बाकी भागवत मुनातेके कार्यक्रम पर ठोकस बनस हो सका । बने सब कुछ पूरा काम परन्तु बाकी भागवत मुनातेके समयमें से एक भी मिनट न तो तुमने किसीकी देना चाहिये बीर न किसीकी तरफ सेक मिनट लेना चाहिये क्योंकि बाके किये वह सेक खुतरक है । बा एसायन बीर भागवत मुनकर हो मानस प्राप्त करनी है," बापूजोने कहा ।

१८

'बा बसती है।'

मायाजी महल पूना

१७-९-४३

माय बाग मधिकाल काशकी एक तार दिया (मधिकालभाभी बाकी बापूजीके सुन्दरे पुत्र है।) क्योंकि मुनका बहुत समयस बधिय बन्धेकास कोशी पर नहीं आया था। बीर बहा लड़ाओ जो समय समय पर किसी न किसी बातकी केकर होती ही रहनी है जिसलिये बाकी बड़ी चिन्ता ही रही थी। तार बधिय एक वा भजनके लिये मैं बटनी साहबकी दिया । परन्तु धानकी वे बापूजके पास माय बीर यह हुआ कार्य कि तारके शान कस्तूरदान मिय जाय ।

बापूजी कहन लये "बेचारी बाके पास तो एक पात्री भी नहीं है । चाहिये तो मुनकी अभाव पात्रीकी माही बच दीजिये । दीनक समय ही बन्दर मिल जायवे ।"

सब सिद्धिबिदाकर हुंसेने क्ये । कटेकी साहब जीट भवे और बिग्ड बारेमें सरकारको किन्न भेजा । अन्तमें अबाब आया कि बापाबां महङ्के लखमें से बिठनी एकम नामे लिख बी जाय । बापू हुंसेने हुंसेने बोले सरकार जानती नहीं होनी कि फरारसे पानी निकले ती ही मेरे पाससे बपमा निकले । अखम्ममें बेसी बाँटे पूछी ही नहीं जाती बाहिये ।

अपरोक्ष मतीरबक प्रसङ्के आभार पर बापूजीने बाँटे कहा मुझे तो लम्बा कि ठीके अकेला साड़ी बेचनेको देनी पड़ेगी । परन्तु यह तो बात नहीं बाबी । मेरे कण्ठके तो (बापूजी २॥ गब लम्बा और ३२ वा ३६ बिब अर्बका कण्ठ पहनते थे ।) तार बिठने बाम कोमो नहीं देना परन्तु साड़ीके तार बिठने बाम मिल बाँटे । यों कहकर बोडो देर बाको हुआया ।

कापूसके बिठड लग ये क्ये आरौपोंका अबाब बापूजीने बिजबा बिदा बा । अमको छोटा-सी पञ्च सर टाँटनहामकी तरफसे मिळी कि बापका अबाब मिल गया । अबाब देनेका बिचार किया जा रहा है ।

बड़ पत्र पु बा बेठी पी तबो आया बा । बिठिबिब के कहने लगी बाप सबन पातकी जानरब कर करके बिठना बड़ा मुत्तर बिदा है । परन्तु जिसे सच-कुठले कोबी मतकब नहीं मुत्तर पर बापके मुत्तरका क्या अमर होबा ? आपने यह कहामी छोडी बिठिबिब बेचारै कमी लागोला मार डाला । अर्ब बेडे पत्र बिब किन्नकर सरकारसे अपमा न मान कराना है ।

बापूत्र बोले बिबमें इमारा अपमान बिबडुळ नहीं है । मापना कभी अममान नहीं आला ।

बा यह बात नब है कि सपना अममान नहीं होला मयर इतिव ना अरबावई रिनाम सरकारन केडे पत्र लिखे ? बाबी तक भा न मनना है कि अकका काडी मुत्तर है ?

अम बापूजीने अमन हुंसेने कहा अकेल मुपाय है । पत्र अत्र म और नू सरकारका मापनीमाया मिल हैं ।

बा बमरकर बोली "बम उहने बीबिय में क्यों माफी मांगू? में माफती ही नहा कि मन कौसी बरछप किया है।

बाबू री में माफी माग लं?

मौली या और मो बिड़ी जिण मनु और मुगीला पेंदी कइकिया बिनाग मो छोणे चितनी हो कनमो मुकुमार कइकिया और कइके पनीमें पड हं और भाप माफी मांगल?

बाबूकी बिच लच्छ पमीर मुह बनावर बाबा मुछर मुन रहे से माफो गबमुब ही माफीकी बाल कर रहे हों। बा माफती की कि बाबूकीके स्वादिमान — मापकी बिनी भी बीमन पर रनर होनी बाहिय और बरापिन् माफी मांगे तो चितनी परनामी हो? भेनी बदनामी बा रहन ही बंन कर गवती है?

वे पिइपर औरकी बराबरन बोनी बिनलिख कइए गानी बा ली। भेन बाबूकीके बटा बापन बाबो क्यों बिडा दिया? केनवे बंवी गानी बर बाबो है!

जब एकदो ब्रेक पहिरेमें बरसी बानी हो कही टूट-फूट हो पबी हो तो मो वह बन्धी तरह मही जब सकठी। यही बात सांसारिक जीवनकी भी है। मले बा बहुत पड़ी हुमी नहीं है, परन्तु हिन्दू स्त्री जिस पतिव्रता-वर्मको सब बर्माँवे खेष्ट मानती है उसे बाने अपनाया है। मने जब कनी भूले की है तब बाने मुझे फिठनी ही बार समय पर सचेत किया है। जिस प्रकार मे तुझे यह समझा रहा हूँ कि बाने पतिव्रता-वर्मकी पौबीवर्म मही बना बाबा। जब मे बक्षिप बक्षीकामे बा तब हमारे यहा ब्रेक पंचम आतिके मां-बापका बीसाबी लड़का लकड़का काम करता बा। बहाके मफानोंमे हमारे मफानोंकी तरह टट्टी और पेधाबबर नहीं होते। यहा पाँट (बरतन) रखा जाता है। मेहमानोंके पाँट बा तो मे झूठाता बा या बा झूठाती थी। यह बीसाबी लड़का बमी तक मेहमान जैसा ही बा। परन्तु बाने हंसते हुवे देहरेसे नहीं बल्कि मुँह बनाकर यह पाँट झूठाया। यह मुझसे सहन नहीं हुवा। मे चिका। बा भी माराज हुजो। मे हाप पकड़कर खो ही उसे बाहर ले बाने कना बाने रोते पीते मुझ मुझहना दिया कि तुम्हें जाब-खरम मही है परन्तु मुझे तो है। कौनो सुन या देख केया तो क्या कहेया? दोनोंमे से ब्रेककी भी खोमा नहीं रहेगी। यह प्रमय मने आरम्भका मे भी दिया है। जिस प्रकार बाने पतिव्रत बर्मके पासनके साथ साथ बेंसी निर्भयता भी थी। मे मने तुझे जाबकी कहानी भी कह बी। जब शामकी नहीं कहुँया।”

मने पहल सिखा है कि बापूजी अपने जीवनकी बटनाये इमें चुनाबा करते थे। सुधी सिलसिलेमें अपरोक्त प्रसन कह चुनाया।

तीसरी बटना भी बेंसी ही बाब हो पबी। सुधीकाबहन स्नामा मारमे उपरकर फिर पबी त मुझे सकल खोत बाजी थी। जिससे मुझे बुझार जान लगा। जिसलिके धामकी बापूजीको बूब बनेमें पाब मिलट देर हो पबी। बापूजीका जाना-पीना सरा सुधीकाबहन सबाकठी थी। (मझे ये धुमरे काममे होती और बाको सिलाने-पिखानेकी जिम्मेदार मरी होती जिसलिके बापूजीका मुबहका जाना-पीना मे ही सभाल केनी। परन्तु सामकी पाब बने देरा बाकि पाब रामापब पढ़नेका समय हानके कारण यह काम सुधीकाबहन करती थी।)

बाकी तन्हुस्तोमें भी बिनाइ-मुबार होता रखा बा। में दूब परम कर रही वो। बुनास बा रखा बा अितनेमें बा बीमी बाकते खासती-बासती मोजनात्ममें बा पहुचो। “कमा कमी एक बापूजीको दूब नहीं मिला?

मेने कहा बस दे ही रही हूँ। बाप महा क्यों कानी? बापूजी और गुणालाबहन माराज होंन न?

बा बोला “तुम माझूम तो बा कि मुपोलाकी तबीयत कन्धी कहा है। अिसमिज तुसे अपने मनमें चिन्ता रखनी चाहिये न कि मुझे कमुक काम कमुक समय करना है? अन्य काम बाधमें। मेरे पास रामायण पाच मिनिट कम पडी होती थी?

बापूजीको दूब देते हुने मन कहा बापूजी पाच मिनिट देर हा गयी।”

बापूजी कौमी हर्न गही।

मेने कहा परन्तु बा मुझ पर नागज हो पगी।

बितनमें बा भी आ कगी। बापूजीग कहने सगी अिस लड़कीन पाच मिनिट देर कर बी। पता तो बा ही कि आज दूब-खजूर तुम देना है कगी हालतमें कड़ी पान रखकर हो रामायण पढ़ने बेगना बा।

बापूजी अिसमें कोसो हर्न गही। कहा कहा बाहरकी तरह शिमीकी मलाकातना समय दिया हुआ है?

बा भयर मुझ माझम है न कि कन्धी पाबन्दी बापको बहुत पमन्द है। बाप महा भी काने नब काम समय पर करण हू तो फिर देर कगी को बाप?

बापूजी और में निबलर रहे। क्योकि मन भूल की भी अिसमिज अब बचाव करनस म या बापूजी कौमी भी बाकी दलीकके सामने अिड नहीं लवते थे। परन्तु बापूजी काने सगरीके अम्नअमे बुबरा घूट सिंठे हुने अरु ही बापय बीसे बा अंठी है!

मकसम निकाला !

आगाछी महक पूजा

१८-९-४३

हमारे बड़ा आश्चर्य मासका पहला रविवार विशेष महत्त्व रखता है। मुझे बीरपसली का दिन कहा जाता है। कुछ दिन मासी बहूकी कुछ न कुछ बेटे होता है। जिस निमित्तसे जाने बापूजीकी बड़ी बहन पू गोका बुआबोको और बुतकी लड़की लूकी बुआको अके अके छाड़ी और थोलाका कपड़ा (अपनी बोरसे) भेजनेको आश्रममें लिखवाया था। मुमका अभाव आज आया। मुझमें यह पुछवाया था कि छाड़ी किस पैनीम किस जगह रखी है। आश्रम महीनेके पहले रविवारको बीस अंक मास हो चुका था और अभी तक मुपरोक्त प्रश्न पूछनेवाला पत्र ही मेरे नाम अके सम्बन्धीका लिखा हुआ आया। यह मने बाकी पत्र सुनाया।

बा बहने लयी कंसे लीम हूँ ? बीरपसली कमीकी लकी गली और अभी तक काको पढ़ावालो वो छाड़िया ही किधीको नहीं मिलो। मातो मेरी, कोठरीम तिबोरी हो और मुझमें कही कुछ छिपाकर रखा हो वो किधीको मा मही लिखता। धरे, मुझ बिना साकल-कुन्दवाल पत्रों अपर ही तो रखी है। अब तक में लिखा हूँ अब तक बुआबोको बुनी आश्रम बापूजी तो क्या देये ? कह देये कि मेरे पास बतको कुछ भी नहीं है। मैन बे वो छाड़िया चास ठौर पर बुआबो और फलाके लिख रखी थी। जरा मोटी है और बाइमें पहनी जा सकगी। परन्तु समयकी बात समय पर ही सीया देती है। बुआबोको भी दिन बार कैसा बुरा लमबा ? बारह महीनमे बेचारको अके छाड़ीकी तो आशा होगी ही न ? अब अच्छी तरह समझाकर आश्रमबाबोको लिख दे। फिर मज पर जरा नाराज हुयी सुने तो

बच्ची तरह लिखा था या नहीं? छाड़ियां कैसे नहीं मिठी? आज ही लिख दे कि वे न मिल तो कोमी भी ब्रेक सटोर छाड़ी भेज दें। अब बापूजीका जन्मदिनस आ रहा है। कुछ समय मिल पाय तो भी काफी होया।

बापूजी महात्मा ठहरे, मुनके लिखे सभी दिन समाप्त थे। परन्तु माजी (बापूजी)की तरहसे बहलके लिखे जो कुछ किया जाना चाहिये उसे माजी (बा) कितनी भावनासे करती थी! ठीक बीरपमली के दिन मनबलो भाने माजी-मार्जीकी तरहसे कुछ भी न मिलने पर बुरा क्या होगा भितका मुझे बड़ा दुःख ही रहा था। जैसे जैसे व्यावहारिक प्रसर्पोंकी रखा करना था कमी भूखती गयी थी।

आजकी बटवास था कुछ हुआ थी। मुझे अब कमी अच्छा न लगता था अस्तमें वे मन्त्रनामलि लेकर बैठ जाती। तदनुसार कमसप सब बज रहा-बीकर वे बक कोच पर बैठी बैठी स्तोत्र बोल रही थी और मुनके भयं पड़ रही थी —

शोचिन्व द्वारिकावातिन्, हृत्प गौरीजनप्रियम्।

कीरसे परिमृता मा कि न जानासि देवव॥

(बहु माटी प्रार्थना मन्त्रनामलिमें आस तीर पर स्त्रियोकी प्रार्थनाके रूपमें ही गयी है।) था तो जब मुनका मन बुद्धिमान होता था अचछतर मन्त्रनामलि लेकर यही प्रार्थना पढ़न लगती। परन्तु मुनका अर्थ वे मन्त्रनामा करनी और मुने भी औरसे बोलती है प्रम् है बी-कर, जैसे शोचिन्व यह प्रार्थना का बने में भी तुमसे बिलगी करती है कि तु औरसे (बहल)से बिरे हुज के विम देगकी रखा कर। और कितने ही बचारे बकमें पड़ रहे हैं अन्हे अब छोड़। तुने रचना हो तो हम बीनोंकी रन करन्तु अब तो मेरे बीरजकी हर हो रही है।"

बिन प्रकार प्रार्थनाकी शब्द बोलती। वे शब्द व बिलगी ही बार छिछर मुनसे भिन्न नहीं रानी। पू बाज जब अत्यन्त बहल स्वामें वे शब्द बने कि "तुम रचना हा तो हम बीनोंको

(बापुजी बीर बाकी) रत परन्तु बीरोंकी छोड़ " तब वे निस्वाचताके किठन बूधे घिसर पर पहुच गयी थी।

बा कोच पर सेट केटे भिन्न प्रकार प्रार्थना कर रही थी बीर में बापुजाके लिभ मन्सन निकालनेको छाछ बिलोटी बिलोटी बक गयी थी। मनको प्रार्थना पूरी हो गयी मगर मेरा छाछ बिलोना गयी तक पुग नहो हुआ था। भिन्नभिन्न बा बोधा बोकसी रभी बूमनी बाहिय तमो मन्सन बण्ठा तरहू निकल सकता हूँ। मैंने कहा मन्सन तो में गमो निकाल देनी हू। माँ कहकर मैंम अस छाछको अंक कपड़में छान लिया। पानी नही डाका था भिन्नभिन्ने गयी तक रही जैसा थोक ही था। बिहसे पानी निचोकर निकाल दिया बीर थी बहोका माथा रह गया था बूसकी छोटी कटोरी मर गयी। मैं बूधो बूधामे बाके पास गयी बीर बोधी देखिय बा मैंने बाव मन्सन किठना जम्बी निकाल लिया ? बण्ठा निकला हूँ न ? मैं तो अस मन्मूच ह्यो मन्सन समझ रही थी बीर बिन्न गयी सोचसे बरा पक मो गयो थी कि कपडम छान कैनसे बिठना बडिया बीर क्याथा मन्सन निकल सकता हूँ।

परन्तु वे बिप तरहू मेरे पराक्रमके मुधावैमें बोड़े ही जानवायी थी ? बूधे बापुजमें हुआ कि बकरके दो (कण्ठे) सेर बूधमें से कटोरी मर मन्सन निकल हो कैसे सकता हूँ। मुझसे कहने क्यों नहू म मान ही नहो सकतो मुझसे प्रैसका रही बिलो डाका होया। यो कहकर बाहरके दरामेमें जाओ बीर कनडा पानी बवैरु बैबकर मेरी मन्सन निकालनका गयी सोच पर कहिय या मेरी मूर्खता पर ह्यन सयो। बिगनी हसी कि बस मिनिट तक कवाठार बीरकी खासी रगी बीर मस्किरसे छास बैठी। फिर भी मैं समझ न सकी कि बा बिन्न प्रकार बिगना क्याथा ह्यो क्यों। मुझसे बोधी तूने मन्सन नहो निकाला परन्तु भोजन बना दिया। यह बापुजीसे कहू देना मूर्ख ! मन्के मर मरकर छाछ बिलोनाके लिभे ह्यम अपने बचपनमें किठनी बन्व कुठनी बीर बिलोने बिलोठे हाफ जाती थी। ठीर तरहू यो कपड़से

रहीको छानकर मन्वानके नामसे बेठी ठी हमारा क्या बेहाल हुआ होता ? अब अब भी मैं तुझ जिसमें से मन्वान निकालकर बताऊँ ।”

बैसा कहकर जाने बुबारा कुछ और कुछ रहीके पानीको निकबाया और छाछ दिखोनेम नित्यकी जाति ही खासा जाच बटा जमा गया । में मन्वान तो रोज निकालती ही थी । अगर कुछ दिखोते दिखोते ही रोज ही नगी और जाने प्रार्थनाके बाद तुरन्त टोक दिया कि अंकुशी रजी भूमनी बाहिय । तब मुझ बहु गया रास्ता सुभा जिस पर तुरन्त बमक किया और क्या कि रोज खासा बंग जमा जाता है जिसके बजाय जिस तरह पाच-साठ मिनटमें ही कितनी धन्डी तरह काम निपट जाता है । जिसकिने आज यह गया पराक्रम किया था । परन्तु जाने बन्धमें बुबाए घर पर खड़ी रहकर जमा रोज करती थी बैसा ही करबाया और मन्वान निककबाया । बापुजीसे कहने लगी

जाच तो मनुको आप पर कुछ प्रेम भूमक काया बा किगिने भीखड सिक्कानवाली थी ।” और मुझ धारा किस्सा कह सुनाया । मैं बापुजीको जाना देकर अपनी मूर्खताए सरमिन्दा होकर बहासे जक ही । परन्तु सारा क्रमरा जिस नगी खोजके पराक्रमके कारण इंसीसे मुंज रहा था । जिसने मेरे स्वाधिमानको चोट पहुंची । मुझ क्या कि मैंने तो अपनी बचस बीबायी और ये लोक है कि मैरा बजाक मुझा रहे है । जिस प्रयत्नरा मुत्तर कुछ बफल तक नहीं मिसा था जिसकिने मुझ दिनकी बावरीमें तो कुस्सेमें मने यही किस्सा है कि मेरे स्वाधिमान पर काज जिस तरह काजात हुआ ।

परन्तु आज जब मैं सोचनी हू तब अपने बचपनकी जिस हास्य बमक बटना पर हसी तो आती ही है । लेकिन पूज्य बान दिन प्रेमसे मुझ बुबाए स्वयं सब कुछ सिखाया भूमका पूज्यमाणसे स्मरण भी करती हू । और विचार करन पर आज बैसा भी लगता है कि पाचर भून समय मेरे काम करनेमें कुछ आलस्य भी रहा होपा । क्योंकि बहुत बार बचपनमें जब मुझे काम करनमें आलस्य था जाता तो मैं बैसी दिनी खोजमें लग जाती । परन्तु ये दुर्गुन मुझम पैर

होनेसे घाम ही बा और बापूजीके सामिप्यमें रहनेसे और बुनकी मुझ पर तीव्र बेखरेब होनेसे मिट जाते थे।

जिस प्रकार कुम्हार धागेमें जिस बंगसे सुन्दर बर्तनोंका निर्माण करता है और बुझे बाद ही बुन बर्तनोंकी कीमत धाँकी जाती है ज़ुली तरह बागाबा महज्जे मेरे जिस प्रकारके प्रारंभिक निर्माणका मेरे जिन्ने आज कितना मूस्य है जिसका वर्गन सर्वों द्वारा करना मेरे जिन्ने समय नहीं है।

२०

सच्चा स्वदेशी

बाबाबा महज्ज पूजा

१९-९-१९३३

मेने पिछले प्रकरणमें लिखा है कि बापूजीके कामकी (बास तीर पर साने-पीनके मामलेमें) बा स्वयं बेखरेब रखाती थी। बीमार हाती तो भी छोटे छोटे बा कुर्सी पर बैठकर सब तरह काम बाले बिना न रहती।

रोज तो बरगीका कामका बूब मीराबहन ही छागती थी। आज मीराबहनको तबाबत खण्डी नहीं थी जिसजिन्ने मुझे छानना था। मीराबहन जिस कपड़ेसे बूब छासती वह कपड़ा मुझे न मिला। वे सो गयी थी जिसजिन्ने बरुह जवाकर नहीं पूजा या सफा था। परन्तु जब बारीक कपड़ा मेरे हाथ लग गया। जिस कपड़ेमें बाहरसे मेका बच कर आया था। वह माफ और बारीक था जिसजिन्ने मुझे मैंने मयज केरक रख छारा था। जसि आज बूब छाननेके जिन्ने निहाला। उस बीकर बूब छान रही थी कि बा बा पड़ती। बूब मयजग ८ था । बज (तीमरे पहरके) बुहकर जाता था। बुनो समय या ई गिण्डर और कठेली साहब तीसरे पहरकी बाय उन मयज पर आते थे। बा गरम पानी और छहर पीती बा और जिन मयजाका बाय पिनाती और कुछ नास्ता कपती थी।

मे कूप छान रही थी। बितनेमें बा बोकी मीराकी तबीयत कैसी है?

मने कहा मुझ कपड़ा मिल नहीं रहा बा बिससिखे मुझे पूछने पत्री थी। परंतु ये भी रही थी बिससिख मने जगाया नहीं।”

बा “तब यह कपड़ा कहाँसे लिया? किसमें है फाड़ा? बाँपा या पा नहीं?”

मने कहा कटाचीसे बिस कपड़ेमें राबूर बबकर धात्री थी वह कपड़ा है। कपड़ा बिलकुल गया है। मने उसे बोकर साबधानीसे रज लिया बा। अब बोकर मुससे कूप छान रही हू।

बाने मुस कपड़ेको हावम लिया और मुसट-गबटार रना। वह मिलना पा। बोकी त्रिग बिसस कपड़ेसे बापूजीका कूप छाना जाना है मका? यह तो मिलना कपड़ा ह। बापूजीको मालम हा जाम कि कूप बिससे कपड़म छाना हुआ है ता मुनबा मन बुन्ती होगी। भान्न पाम गादीक कपड़ क्या कम है? हम जाने ही काममें मिलना कपड़ो ही पूरा हाता हा। ता यह काम ही हमें छोड़ देना चाहिये। केवल बिलक पा बिपामनी कपड़ेम हमारा काम हउगिब नहीं निकाला जा मरना। नू जालनी है कि बिसस कपड़ा बितनेमें बारात होता ह। बिससिख बहुत बार यह मामा जाना है कि छान्न या कम ही कपड़ापके निब्र वह मुत्तम हाता है। पर यह बिलकुल मरना है। गादारा कपड़ा माटा हाया तब भी मुमरी बनानीमें कम मिद होन है कि यह बिलने कपड़ेमें क्षयिक कपड़ा काम देना है। आज तुम यह मयात हुआ हाया कि त्रिग कपड़ेमें कपड़ा छनेपा और छाननक क्या हरे है कपड़ा पतनना ही ता ही क्षयित है। परंतु यह बड़ी मुत्त है। आज तो मन कूप छाना और कप लम कपड़ा कि बिलना मुत्तापक है क्या, पान ल। बिल तरह क्या मन बिस ज्ञापना। ताब ही बिसस कपड़े छाना कडा कूप देना जाम ता मुत्तम दुत्तने यह मेक प्रहायना पात ही देना क्या क्या जाना। हमने स्वर्गीनी

प्रतिज्ञा से रखी है। और बापूजी किठनी बुझाये प्रतिज्ञाका पावन करनेवाले हैं? तुझे किस बातका कोबो पठा न होना। तुने साफ भीर बारीक टुकड़ा देखकर काममें लं लिया। परंतु तुझे आर्मराके सिद्ध सावधान करने और छिलानेके जिज्ञे कह रही है। प्रतिज्ञाका पावन करनेवाला होता है मा पावन करनेवाला होता है। (तू जिस समय मेरी या बापूजीकी प्रतिज्ञा पावन करनेवाली है।) तू कबाबिठ बकरीके बूबके बजाय भेंसका बूब बापूजीको दे दे। जिससे बापूजी तो बोपमे नहीं पड़ते परंतु तू पड़ती है। जिसजिने दोनोंको सूक्ष्म रूपमें प्रतिज्ञाका पावन करना चाहिये। तभी की हुआ प्रतिज्ञा सच्ची कही जायगी। बाकी तो सब भुविषा-भर्मकी तरह निरा बंभ ही कहलायगा। अब बुबारा खादीके कपड़से बूब छान ले। और जिस बटना परसे जायेके जिज्ञे पूरी सावधानी रखना।

मैंने साग बूब फिरसे खादीके टुकड़ेसे छान लिया। परंतु यह समझमे आ गया कि प्रतिज्ञाका सूक्ष्मतरु रूपमें जैसे पावन किया जाय और जिसके कपड़से छाना हुआ बूब बाने फिरसे खादीके टुकड़ेसे छानवाया जिसमें बाने समझपूर्वक खादीका जो बापूज बठाया मुठकी बात मैंने बापूजीसे कही।

बापूजी कहन लगे भले ही बा अपड़ है परंतु मेरी बुष्टिसे जितना असन बहलं लिया है जितना मुझे समझ लिया है मुझका वह सूक्ष्मतरु सूक्ष्म पृथक्करण कर सकती है। और मैं मानता हूं कि जैसे काभेजम कोबी खास विद्यार्थीके प्रोफेसर लड़कोंको खास विषय पर पूर्ण बुद्ध और भावनात्मक व्याख्यान दे सकते हैं जैसे ही बाने भी समझकर जितना हजम कर लिया है असने थडाके साथ भातकी मिश्रकर आज तुम खादीका जितना माहात्म्य सुनाया। जैसे बेकाबलीका माहात्म्य तुझमे बा प्रत्यक्ष अंतराधीके दिन पड़जाती है जैसे ही वह भी मेक पवित्र खादी-माहात्म्य है। यदि घरमे माताजे बालकोंकी बेसी शिक्षा देने लग जाय तो जसमे मझे पूरा मनोरु होना। जिसमें न कोबी बपेजी भूमिति सीजनकी बरुग है और न बीजपवित। केवल

धडा चाहिये। परंतु वह धडा ज्ञानपूण होनी चाहिये। गीतामाता कहती है

धडावान् मन्त्रे ज्ञान तन्त्रः मयनेऽपि ।
 ज्ञान मन्त्र्या करा गाल्लिभचिरेवाधियच्छति ॥
 अत्ररथाध्वानन्ध धेगवात्या विनमपति ।
 नाप कावाऽस्ति न परी न मुनं मंगयात्मन ॥

जिन प्रकार बात तो केवल धडामे धरे पीछे जानी जीवन नीचा बनानी है। और धडा यदि मुझ मूढनाथानी हो ना ज्ञान ज्ञान ज्ञान प्रकट हुआ है। परंतु धडा धराथानी हो तो ज्ञान प्रकट नहीं हुआ। अस्मिन्ने ज्ञाने गायत्र्यापोरो कर्ता श्री मुन कर्ता सिद्धता। उर नाश पुत्र को नर बा न तो कौबी गार्थिया विज्ञान जानती थी न ब्रह्मवा विज्ञान जानती थी और न यह गन्धित ही जानती थी कि जिनमे देवाय क्या ज्ञान है। परंतु ज्ञाने धडामे ही केरी सिद्धताया ज्ञान दिया ना कात्र जगता यह ज्ञान ज्ञान काय प्रकट हुआ और मुन वह जिनका मुण्डन पाठ दे लगी।

जिनमे मुन मन्त्र बात ना वह जिनकी कि कर्त्वी प्रतिज्ञा किस रहा है? वह किस तरह वाली जानी है? अस्मिन् निराय यदि मुन कात्र गिर्द दूध उतारन निर्र सिद्धता करा अस्मिन्नाय विद्या जो काय किमी और बावने अस्मिन्नाय अस्मिन्नाय बन हो गयता है। जिन प्रकार यह ना ज्ञान नाय बावनी जगोनीया विद्या हो ज्ञानया। अस्मिन्नाय जिन ज्ञानय करवा ही कर्ता चाहिये। नाय ही दुराग्य काहीरे करने उतारा कर काय दूध देनको करन गार्थिः जिन बावी बरिच कावने नाय ही केरी जिन अस्मिन्नाय अस्मिन्नाय जिन और नावनी अस्मिन्नाय श्री लविः बनता है। एत ना जिनमे अस्मिन्नाय अस्मिन्नाय और ज्ञानय यह नाय अस्मिन्नाय अस्मिन्नाय।

“अस्मिन्नाय और अस्मिन्नाय ना एत अस्मिन्नाय जिन कि अस्मिन्नाय नाय के अस्मिन्नाय नावी हो ज्ञान है। अस्मिन्नाय अस्मिन्नाय हुआ अस्मिन्नाय श्री अस्मिन्नाय एत अस्मिन्नाय अस्मिन्नाय श्री दे अस्मिन्नाय। और नावी अस्मिन्नाय श्री दे अस्मिन्नाय है। एत अस्मिन्नाय अस्मिन्नाय एत श्री

क्या वेद मर सकते हैं। राजासे लेकर एक तक काठ सकते हैं। जिसमें कितना पुण्य भरा है ?

सामाजिक और राजनैतिक पाठोंमें पठिने जो भी पवित्र प्रतिज्ञा थी ब्रह्मका सूक्ष्मतासे पारान करानेमें पत्नीका साथ सामाजिक दृष्टिसे मेरे जवाबमें बड़ी भारी बात है। और राजनैतिक पाठमें तो बाकी पहलना ही जिस समय अंग्रेजोंके राजमें बपराम है। सूतके बागेसे मात्र ही स्वराज्य प्राप्त किया जा सकता है जिसमें मेरे मनमें बरा भी एक नहीं — बसते ४ करोड़ लोगोंके हाथमें बरखा जा सकतो बले। जिस प्रकार मात्र तो पुने मेरी दृष्टिसे बहुत बड़ा ज्ञान प्राप्त कर लिया है।

बापुजीने पूब पीठे-पीठे मेरी पढाईके समय बुरा नया पाठ देनेके बजाय पु बाकी बाबकी बातका अधिक धुइ स्पष्टीकरण करके मुझे बोक बनोबा पाठ पढाया।

२१

बाकी राजनैतिक भाषा

बापाबाई महल पुता

२०-१-४१

पू बा रोज एक बार सुब मेवेमें बबीर, बरबाबू, मुनकका काली ब्रास बनना जो भी हो ब्रुसे ब्रुबमें बुराकर लेटी थी। पही मुनक लिब दबा और बुराक बोनोका काम करटी थी। (मुनसे बुराकी बुराक नहीं थी जाती थी।) बिही प्रकार बापुजीके सिम्ने बबुर बुराक और दबाका काम देटी थी। बापुजी कमनप रोज सामकी ब्रुबमें बुराकर बनुर लेटी वे। ये सब बाते करारकीके मेरे साथ सबस रबनबाके कुछ भाबी-बहुन जानटी वे और करारकीका सुता मेवा तो प्रत्याग हगा। अब बापुजी बाहर वे सब तो सब बाहिने लमी मे भगवा लनी थी। परन्तु अब जेकके नियमानुसार पब किलकर ती मपबा ही नहीं सकनी। जिसलिसे यह समझकर कि बापुजी

और बाके लिख दिया नहीं होया जब सौगोंकी तरफसे भी धाम्नि-कुमार भाभी द्वारा मन्ना हुआ पार्षल बाबू मिथ्या। साथ ही बापूजीकी प्रत्येक बयती पर बहुतस स्त्री-पुरुष अपना अपना हाथके सूतकी खादी बोदियां दमास बर्गरा बनाकर पू बापूजीको अपना करते थे। परंतु जिस समय जून मसका पता नहीं होया कि ये चीजें बापूजीके पास कैसे पहुंचेगी। फिर भी कुछ परिचितों और साम्यवासीयोको माकूम ना कि धाम्निकुमार भाभीके द्वारा भेटी चीज बापूको मिलती हूं जिस-धिन्न प्रभावहन कंठक बनतुस्सलान बहुत तथा रिक्तसुख बीवानजीकी मोरसे पू बापूजीकी आगामी बयती पर मेंट करनेके सिजे जिस पार्षलके साथ खादीका बाग भोठिया और स्मारक मित्यादि मिले।

पार्षल बोल्ते ही पहले बनूर देखी। बनूर स्वच्छ और सुन्दर थी। में तुरन्त बापूजीको दिखाने के गयी। भेटी बनूर मेंने कमी नहीं देखी थी। और उसके बाद भी अभी तक मेंने बेटी बनूर नहीं देखी। वह कुछ और ही किस्मकी थी। बड़े शानेकी विकटुल बारीक गूठडीवाली स्वच्छ और प्रत्येक शमा अल्प बदन और रसदार था। बनूर बटर पेपर छिपटा हुआ था।

बापूजी और बाको दिखाने गयी। ना अपने पक्ष पर बैठी थी। जिसनी बहिया बनूर देखकर कहने लगी देख ले धाम्नि कुमार जिसनी धारवाणीसे सब कुछ भिक्डठा करके भेजता है। लेकिन में खुश और सुमतिको आधीनतिके सिजे नाम तक नहीं लिख सकती क्योंकि उसके पीछे बांभी नामका पुछमका नहीं है। सरकारना भेसा काम है।

यह बात केनके बाद कि और क्या क्या किसकी तरफसे जाया हूं बापूजीने बात कहा तुम जानती हो न कि धाम्निकुमार सिधियाक मैनेजिब डाबिरेक्टर है और अब हमारे भेजण बन बने बीसठे ह। जूनमें वह कुपलता है। हमारे सिजे भापरीक करके सब चीजें भिजवाना मुन्ह बुरा नहीं लगता बल्कि जानबहायक माकूम होता है। वे रामचस और देवदास जैसे ही हमारे सिजे सब कुछ करनेको तैयार रहते है। सुमति और धाम्निकुमार ती प्राण लीजाने

करनेवासे पति-पत्नी हैं। परंतु सिन्धियासे मुझे बामबनी होती है जब कि हमारे से अनेकतमिक बेबेंट है। जिस प्रकार जैसे सबको अपनी पसन्दका काम मित्र जाता है वैसे ही ज्ञायर शान्तिकुमारके जिन्ने भी हुआ। (शान्तिकुमार भाभी गरोत्तम मोरारजी ठो बापूजीके पुत्रोंमें से एक है। पू बापूजी जब जेलरुनी महलसे निकले तब मुझे किनारे जिन्हीके मेहमान बने थे। जिसजिन्ने मुनका परिचय जतावस्थक है।)

जिस पर जाने मुसस अपने पिताजीकी पार्यंकी पहुंन सिन्ध बनेको कहा। मैंने तो पहुंनमें छाफ नामसहित सिन्धा कि शान्ति कुमार भाभीके द्वारा जितनी बीजे मिछी है बीरा ।

बाको मैंने पत्र पढ़कर सुनाया। बा भी जबरबस्तु थी। राजनीतिक भाषा जिस तरह काममें की जाती है यह जानती थी। मेरा पत्र नापास कर दिया। कहा जिस तरह छाफ जिसेपी तो तैरा पत्र कौन जान देना? पत्र कभी जयमुलकाकको मित्र भी नवा तो काटकाट किया हुआ मिभेमा जिससे मुन सबको जिन्ता ही बावनी कि कोबो बोमार तो नहीं है। बा पहा बैठ। मैं नये सिरेसे पत्र लिखवा दू। फिर मुझे छोटा परंतु सजीट नया पत्र लिखवाया

जि जयमुलकाक

मुम्ह जि मनु समय समय पर पत्र लिखती रहती है जिसलिम में बाफ ठौर पर नहीं लिखती। तुम सबके पत्र मिलते है पढकर जानब होता है। जि मनुका पढ़ाजीका कम अन्नी तरह जय गया है। मेरी सेवा भी बुर करती है। बापूजी डॉ गिरडर प्यारेनाल और मुसीकाके पास जाती-जातीसे नियमित पढ़नी है। स्वास्थ्य इन सबका अन्ना है। जि संवृता जि मुनिना और जि विनोदकी हमारा भासीबाब।

तुम्हारे अजस्टक कुलक-समाचार जाने। बहुत बकरी भी बा मीकेना बा और बडिमा बा। सबको मेरा बाफ ठौर पर भासीबाब लिखना। मुम्ह मेरा भासीबाब।

२ - ९ - ६१

बा तथा बापूके

भासीबाब

मैंने प्रयत्न करलके किन्हे अपना पत्र भी जमा और बाका यह पत्र भी मेजा।

महोनें मर बाद माजम हुआ कि मुझे अभी तक मेरा २ को लिखा पत्र मिला ही नहीं और बाको अपने पत्रका बजाब मेरे पिताजीकी औरसे १५ दिनमें ही मिला गया। मेरे सीधें नाम-पतेवाले पत्रका अभी तक कोबी ठिकाना ही नहीं है। जिस प्रकारकी दो अर्धबाखी भाषा पु बा कमी कमी भिन्न अंशसे काममें केती कि बन्धे बन्धे लोगोंकी भी पढ़कर अर्ध लगानेमें जोड़ी बुद्धि अर्ध करती पढ़ती। कौन कहेगा कि बा बपु की? मैंने यह पत्र कटेकी छाहबको डाकमें उलवानके किन्हे निबमानुसार दिया। वे बाप भी रहे ने। मुझे पत्र पका और फिर तह करके किपत्रमें रक्त दिया। बादमें मेरा भी पका और मुझसे बोले "यह सब काट हेंगे परंतु यहां जाने दिनेमें हमारा क्या बाता है?"

मैंने कोबी बात तो नहीं की परंतु हठि बिना नहीं रहा गया। मुझसे मुझे किन्हे कारण पूछा। मैंने कामको डाक अर्ध जानेके बाद बात की। सुनकर वे कहने लगे मने तो यही समझा कि तुम्हारे कुटुम्बमें कोबी प्रसन्न होया। बुद्धीके सिद्धितेमें बागे लिखबाबा है। परंतु बायंवर छाहब किन्हे ही अनुबाध करणें जैसे ही बन्धे बुझाती जाननेवाले बापा-बास्वियोंकी हैं बाकी भाषा कोबी नहीं समझया।"

हुमा भी बसा ही। बाका मेरे पिताजीके नामका पत्र बाप भी मेरे पास है और मेरा पत्र तो जाने कहा बका गया।

२२ मेरी परीक्षा

आयाची महत्त्व पूर्ण
२३-९-४९

दोपहरको सुधीलाबहन मेरी अंग्रेजीकी परीक्षा लेनेवाली थीं। मैं बूमछी तैयारीमें लगी थी। कुछ घण्टा रट रही थी। मेरी यह रटतब जब तक सुधीलाबहनने प्रश्नपत्र मेरे हाथमें नहीं दिया तब तक अर्बान् अन्तिम क्षण तक जारी रही। प्रश्न भी पाठशालाके डेग पर ही बाकायदा ४ पंक्तियोंकी नोटबुक बनाकर स्याहीसे लिखने थे। समस्त अंक बटेका था। परंतु सुधीलाबहन बुरा अंम ही थी जिस लिखे मुन्हें विद्याविषयों-संबंधी अनुभवोंका विश्वास तो होता ही चाहिये। मुझे भी पूरा विश्वास था कि जो पांचवीं रीडर में पढ़ रही हूं वृत्त मेंने बिजना रट लिया है कि मुझमें से सब्जियोंका बाजार या किसी पाठको अबानी बोझनके लिखे मूखसे कहा जायगा तो सादर बोल जायगी। जिसलिखे पास होनके सिवाय १ में से कमसे कम ८ नंबर तो मुझे मिल ही जायने। परंतु यह कल्पना मुझे कइसि हीती कि ये पाठशाळाके बाक्य पूछेनी तथा जो चौथी रीडर में पढ़ चुकी हूं वृत्तके अर्थ पूछेगी अथवा अनुवाद करायंगी? मुझे तो बिजना ही कहा था जब तेरी अंग्रेजीकी परीक्षा लगी। मैं मनमें पर्व कर रही थी कि भले कभी नो ले ल। पांचवीं रीडरके सिवाय नीचेकी (४वीं जगानी) पढाबीमें से बीजे ही पूछंगी? पर मुन्होंने मुझे जिससे बेखबर नहीं रखा था। अन्होन कहा था पाठशाला चौथी रीडर और पांचवीं रीडरमें से प्रश्न पूछना। मेरा जयाल था कि चौथी कक्षाके कोनी अर्थक नहीं पूछेगी। परंतु मेरी धारणा बिलकुल बल्ल मिथकी और सभी प्रश्न लगभग चौथी कक्षाकी पढाबीमें से ही पूछे गये। आमतान अकस्मिक प्रश्नपत्र देखकर मैं अचरज लगी।

बा कोच पर पंर फंसाये डेटे थीं। मुझसे बोकीं खुन पड़ रही थी। कज परीक्षाके मारे खोचने मी नहीं बनी बिसकिने ब्रेक बंटेके बजाव घायब बल्की ही पूरा कर डेगी। परंतु ऐस बल्की ठरह विचार कर लिखना। बी बिन्ने मुसे हुवारा पड़ गेमा। मूर्से न हों और पाठ हो जाला।

प्रस्तुपन बखकर मेरे मुहसे बिसमा निकल गया सुधीका बहन! यह ती आपने बीबी रीडर और पाठमाळा - भाग १ के प्रथम डे बिने; परंतु बिस नबी पाचवी रीडरके बी बीस पाठ ही बये हें बूतने से मा पाठमाळा - भाग २ में से कुछ मी नहीं पूजा।

मुसोळाबहन बासे बोकीं ऐबिने बा में किठनी ब्याक हू! मनुको पूरे नंबर डेनेका कंसा बकिमा बखघर मेंने दिया हू? यह पडती है पाचवी बंपबी और सबाक मेंन बीबी बंपबीके पूछे हू। बिसकिने मनु घायब सी में से सी नम्बर डे बायगी।

बाको नया पठा कि मेरी बिस समय कंसी ब्याजतक स्थिति हू?

डे बोकीं "परंतु सुधीका तुने मूल की। तुमें ती बिससे पाचबीमें से मी सबाक पूछने चाहिये बे। बीबीके (बर्नाड् विछबी बातीके) नबाबकि बजाव ती मेरे बंती मी डे सक्ती हू बिसमें नया हू?

मझे बोकीं भाषा हुबी कि बाके कहनेके बगर ब्रेक बी सबाक मेरी की हुबी रटाबीमें से मा बायं ती मजा बा बायपा।

मुसोळाबहन मेरी बिसम स्थिति पलमरम समझ गबी। बिसकिने कहने लगी "बय बा धाय ती हो गया सी हो नया। दुसरी बय डेलुंगी।

मेंने बिसमा घार बा बूठना मुबिबकसे लिखा। बंटा पूरा हो गया। मेरा पचां सुधीकाबहन मुमी समय डेगने डगी। सुधी मसठ बिसाकर कुछ १ में से ४५ नंबर मुबिबकसे मिल सके। मेंने कहा "मुसोळाबहन मेंने पहलेका पडा ही नहीं बा। आपने बिसमा पड़ डेनेकी कहा बा परंतु मेंन बूठना बट्ट नहीं किया। अब बीबी

कक्षाकी अन्तिम परीक्षा मजसाली काकाको बीबी तब तो मुझे १
में से ७ नम्बर मिले थे और तीन कड़कियोंमें मेरा पहला नंबर
आया था। (बाब में सन् '४२ में सेवाग्राम पढी तभी मजसाली
काकाने मेरी परीक्षा छी थी। यह बाको बन्धी तरह था।)

मेने सुपरोप्य सम्ब बननी कुछ बहादुरी बतवानेको सुधीला
बहनसे कहे।

पर बा तापब हो गयीं— पढ़ लिया तो तो मुझ बानेके
लिखे ही न? तबो तो तूने अपने सबाब पढ़ते ही फौरन सुधीलासे
कहा कि बीबी रीडरमें से क्यों प्रश्न दिने पांचवी रीडरमें से क्यों
नहीं? बाता नहीं बा बिछीलिखे तो बैसा पूछा। सुधीलासे पूछ कि
तुमसे प्रतिबन्धितमें कभी भिन्न तरह पूछा गया था? रटन्त करनेसे सब
मना करते हैं तो भी करते ही रहना चाहिये? समझकर ब्रेक बार
भी पढ़ लिया बाब तो कैसा अच्छा बाब रहता है?

फिर सुधीलाबहनसे कहने लगी। “बाब भिसे बीबी ही पुस्तक
पढाना। भले ही ब्रेक बर्ष सन बाब। परंतु बी पढ़े सो पक्का होता
चाहिये।

मेरी आत्माने टप टप बासू बिरने लगे। बीबी कक्षाके प्रश्न
पूछनेके कारण सुधीलाबहन पर मुझे गुस्सा आ गया और बिल भर
बदन बोकी नहीं। बाके माब भी नहीं बाकी। मुझे बुबारा बीबी
कक्षाम अन्तर देना बिलनी मानहानिकी बात थी? यदि पाठशालामें
पढ़नी हानी और बिम तरह अन्तर देने तो पढना छोड़ देती।
परन्तु अन्तर नीचकी रक्षाम पढ़न जाना कैमे हो सक्ता है? भिसे
आज्ञा मंग मांग दिन अन्तर था गया। वामको बूमन मही बा रही
बा भिसे बापुजीन अन्तर हान परहान मुझ माब के लिखा।
मन परहान पमनम माब मी थी और तूमे लाग सस रहे थे।

पढा गया म और बापुबा वा ही ब। मदन बाप मेने
मुना व सम १ नर म अनन मु १ बा और सतने भी
नरा म १ अन इन १ १

मने कहा परन्तु बापूजी मने कितनी बार अपनी रीढ़के पाठ और धब्ब पड़े ने? मुझसे कोबी भी पाठ बुझवा लीजिये। अभी बोलूँ। लेकिन बाने मुझे बीपी रीढ़ ही बुझाए पढ़नेको कहा। मन जरा भी नहीं छोड़ा था कि सभी सभाल बीपी कसाके पूछे जायने।”

बापूजी कहने लगे “परन्तु तुम तो मेरे विश्वविद्यालयमें पास होना है? संसारके विश्वविद्यालयमें नहीं तुम बिठाना है? फिर भी तेरा रटना मुझे जरा भी पसन्द नहीं है। कम रातको नीदमें भी तू पाठोंके हिज्जे रट रही थी। मुर्सीगाबहन मूल कह रही थी कि पाठ-घासाकी बह भयकर कृटेक मनुको भेगी पढ़ मकी है कि कितने ही बार टोकन पर भी मिटती गयी है। बह तो डॉक्टर है न? विश्वविद्यालयमें मुझने यह विचार आरमाया। बाने तुने बमकी भी है। तुमने नीचेकी कंधामें नहीं मठाग जायगा परन्तु जिससे तेरी जब पकड़ी हुआ मुटब छू जायगी। बहुतरे विद्यालयोंमें यह होती है। मैं भी जब छोटा था तब कभी या तो मास्टरके विषय समझा न सचनके कारण या मेरे प्यास न केनके कारण रट लेता था। यह आरत बाने बहकर बहुत बुझ देती है। भिन्नका भिन्न तेरी नीद पर भी हा गया। कम रातको तू नीदमें बहबहा रही थी। नीदम यह रातम ता मैंने कितन समयमें तुमम पहली ही बार देखा। तू कुछ हिज्जेकी पढ़बढ़ कर रही थी। यह मज रटनका परिचाम है। रटा हुआ ज्ञान स्थायी नहीं होता। परीक्षाके होत्रम मेरी नीदम रातम पढ़ते देगकर मुझ धारणके विद्याविषाही इतनीय स्थितिकी बलगत ही आभी और दुग हुआ। मनक विचार कर रहा था कि भारतीय बालक रातम विश्व शोधके शानिर नहीं बड़न तब क्या वैश्व परीक्षाके सिद्ध पड़ने है? मेरी दृष्टिमें ता इतारी मारी पड़ाईका हम ही गालन है। मन यह बकी बार कहा है। परन्तु मुर्सीगाबहन पर तेरा जोष बजा है। मन मनता था कि तू निर्माण करीता नहीं लेगी लेकिन आज तो तीन बदन तूम लबके माय बदोला ले गया है। आजम भी नहीं दिया और लेजम भी नहीं पकी। यदि विश्वविद्यालयकी परीक्षाम अनुवीर्य हो जाय तब तो समुझ ही दूर भरे न? भेना बहन विद्याविषीता हुआ है और अब भी बकी

बनइ होठा है। मीने अब तैरे गुस्सेकी बात सुनी तमी मुझे तुझसे कहना चाहिये था। परंतु बाबुमें सोचा कि बूमते समय तुझे समझावूना। मैं मानता हूँ कि सुधीजाने तुझे डॉक्टरी इंगलै यह बिम्बेनयन दिया है। यह तुझे बार-बार समझाती थी कि रटा न कर। परंतु तू जिसके बिम्बे प्रमत्त ही नहीं करती थी। जिसकिजे तुझे पड़ी हुमी रटनेकी कुटेन अब जिस पाठशाळामें अपने आप मिट जावपी।”

रटनेसे मैं बितनी क्यावा बरनाम हो गयी जिससे मैं अब धर्मिणी। परंतु जिसका बमत्कारी साथ तो तमी अनुभव किया अब म जापाळा महङ्के छूटी बीर फिरसे कटाचीके धारवा मंथिरमें पड़न लनी। जिस बीर जेक साबधानी रखी कि किसीके बैसते हुअ जाहे अब रटना बिबकुल बन्द कर दिया लेकिन कोची न बैसता तब रट भी डेती थी।

२३

बरसा-शाबशीका मुत्सब

जापाला महङ पूना

२१-१-४३

बाबु बीपहरको तीन बजे बाद कलके कार्यक्रमका विचार करनेके लिए डॉक्टर साहब मीराबहन प्यारेजालजी बीर मुधीलाबहन बैठे। मैं जिस कमरेमें नहीं रखी गयी थी क्योंकि बात परसे बात निकल जाय और मैं माननीय कुछ कहू तो बसै बिनोदका मजा किरीडिया हो जाय। परंतु अब जागनी नीर पर कोची बात होती है तब कुछ जगना बलकला जागत हो जाती है। क्योंकि मुझे बिलगा तो पता था कि य लोग कन्हे लिए काजी कार्यक्रम सोच रहे हैं। मजबूत बना गया। मैं अब कमा लुनी तब जाने और सेजनेसे बिलगाए दर बतवा दर मन मन पकन रखा था। और दिन

बातोंसे बिनकार कर बेटी तो सहज ही बुनका कागज भी मुझमें पूछा जाता। जिस मायबीके आचार पर मैं अपना काम बना लेती थी।

जिस प्रकार घामकी जब बंटी बनी तो मने लेकनसे बिनकार कर दिया। मुसीबाबहुन कठे हुओंको मना लेनकी बना जानती है। जिसदिने बुझोने मुझसे जिस तरह बात की जैसे मुझ साग ब्योरा से रही हों कि कल क्या क्या करना है। मुझ बुझ समय तो संतोष हो गया। परंतु बग्हाने गारी बाग नहीं बठामी जिसका पता हमारे दिन ही मना जब हमने बख्ता-शादधीका नाम दिन मना लिया। परंतु अजना निश्चित है कि मुसीबाबहुन मुझे पांच ही मिनटमें अनुष्ठान कर दिया और मैं अपने भी बनी यमी।

मैं नीचे मुनरी जिसदिने प्यारेगायत्रीने बिनारमें ही निश्चयसे कहा मनुको बहाके अस्तानामें धरती कथना पड़ेया एक हीका हा जाता है।

मन बापकीकी तरह बगुल बठारक बहा बाप सब मने ही कुछ भी बहा करें परंतु मुसीबाबहुन मुझ सब कुछ बठा दिया है। और सब गिरानिमाकर हम पडे। परंतु इतना कारण भी बाक नहीं बाक नाटकके देखनी हूँ अभी समझम आता है।

जिस प्रकार फिर सुन ही कर मंड बना सभी नाम पूरा किया। प्रायनाके पार बागुर्के सिद्ध बोधी बीगी पठिया बनामी। मुसीबाबहुन भी कदियोंके सिद्ध मिगरी बनामी। बा और बागुर्के भी बाकके बाद मुसीबाबहुन और बीराबहुन गिरादियोंकी अहायनाम अमाबहुनके कारण बनाय। ५ मुनरी बदनमें गठने बाक सब सब ही थी। राज्य भी यमी।

परंतु बीराबहुन और मुसीबाबहुन दोनों टहरी बनायमी। बगुल सबके गारी गान बागुल देखनी-देखनी बना हमारे बिनारामयाममें दारा बाक गठनी अराबट कथनक बंदन ही थी। बीराबहुन प्यारेगायत्री और मुसीबाबहुन राज्य मरिचकके हा दो बंद भी भी होनी।

जैसे बीबाजीके बाद सब बपेके दिन पत्नी झूठ कर हम तयार होती हैं वैसे ही पू बापुजी और बाके विषय हम सब अपने आप ही जान सब के और छान्द बार बने बापुजीके झूठनसे पहले कहा—बीबर तयार हो बने ।

बरखा—बारधी

२१-९-४३

सबेरे ठडके ही सबसे पहले जाने बापुजीकी प्रणाम करते हुंने कहा सोजिये यह मेरा अन्तिम पत्रालिका प्रणाम है बरधी बारधीकी मैं रहनबाधी नहीं हू ।

बिसके बाद हम सबन बारी बारीसे बापुजीकी प्रणाम किया । रातभर क्रिय सब श्रुपारमें — पारे बरामदेमें बल्लग-बल्लग रंपोसि सुन्दर बरामदेमें लिख गय सुम्कतके पवित्र सूत्र और स्तोत्र आकर्षक कथामय शोक और फूलकी महक व सब तो बाह्य आकर्षक थे परंतु बाकी मौजूबनीम उत्सवका कुछ बनोबा ही रूप ही जाना स्वामाधिक था । प्रार्थनाम आजना मजल था

बीर नहीं कछु कामके
मैं बरोस अपना रामके ।
बीम् बखर सब कुल तारे,
बारी बामू मुस नाम पै ।
गुलभीबास प्रभु राम बयावन
बीर है सब बामके ।

यह सबन बापुजीके अन्तिम दिनके सुपवासके समय अंक बहाने नाम तीर पर तारसे मजा था और बापुजीको बहुत प्रिय था ।

प्रणामके बाद निरपेक्षा कम बना । बा झूठी । मुनके बानुन-बानीबा अन्तकाम कर और नाम हैकर निरपेक्षा नाम पर मुझे सुखोभावहनत डॉ गुरुजीके कमरेमें न तको कहा था । बिसकिसे मैं

वहाँ मची । जाकर बैसती हूँ तो सभीका भस बरका हुआ था । मीराबहनन बाड़ी लमाकर सिक्कीं जमा छपेद छाफ़ बाँध रखा था और डॉक्टर साहबके फीट-पचकूत बड़ा छिन्न थे । जब हाथमें सिक्कीं जेमा कड़ा था । भुजाकी बांधे और धीरेधीरे रचना बकिया थी । जिसलिये बिलकुल सरपारकी जेसी मगती थी । डॉक्टर साहब पठान बन । मीराबहनकी बुझोशर मलबार और सिर पर पठानों जेसा तुर्प निकालकर फटा बाधा था । मुर्माकाबहनन पारपीका बस बनाकर गरिमें क्रॉस डाल लिया था । प्यारेकाक्री शक्तिनी माधु बने और मैन फॉर भुजा भडाके बूट और सिर पर पारपी टोपी पहनी जो बटनी साहबन जुटा दी थी । किस प्रकार हम तंबार ही रहे व जिस बीच था जपकेने बेंक बाग भाकर बैस भी बनी और बापुजीको परीस करमें बह भी दिया ।

जिमी अन्तम बटनी साहब बापुजीको कह भाप कि भाव भापका जगन्निबम है जिसलिये छापद कुछ मुकाबानी आवे । परन्तु बापुजी पोड़े ही जिस प्रकार मुकाबम जानवाके व ?

हम मीराबहनके कमरेमें बैठ और बटनी साहबन बापुजीस कहा कुछ द्यनाची कहती है कि वे सरपारमें मजूरी लेपर बाँके द्यन करन भाप है । बापुजीका प्रमनका समय ७॥ बर (मबरे)का ही बया था । जिसलिये वे हमारे कमरेम जाव । ज्वा ही बापुजीन पर रखा लो ही वे नबमें पत्रक गयी और कहा महात्माजी मात मुबारक । मरा नाम जेरबाजी जरीवाला है । गुडा जपकी बटन बटन बियाव । मन भुजी भागान कहा जा जाव तीर पर पारपी बोनी है ।

बापुजी भीर का निकलियेकर हम । बापुजीन केरे जान बेंकपर गुर औरपी बन लयाभी ।

बापुजी मीराबहन बाड़ी परावी हणरवी बट लेपर । नरन ही जना परिचय दिना और हणरवा बरावी थी । बापुजीन अन्के भी गुर बोनी बन जबावी । सिर भाव ही सिद्ध गनुर

बिस्पादि पठानी मेवा लेकर। और पाइटीके बाद अन्तमें बाह्यण साबु
बिस्म तरह बाय मानी प्रणाम करन और आनीबाद देने बड़े हों।

हम सब पैद पकडकर इस और बहसि चीपे महादेव काताकी
समाधिकी तरफ जाग लय। परंतु हम क्यों ही मदानमें निकले
त्यो ही कटको माहबन समाचारकी इरानके लिजे डांठकर कहा,
“यं कौन भावनी कहा था लय? दोड़ो दोड़ो।” बचाप रजुनाब
समाचार माहबकी भर्षी औरकी बमदीस बबरकर बोड़ा। परभाव पर
पहग दनबाब गाणे साजर्ष्यान नी बकिय हीकर अपनी बटी बानुके
समाज भी। रजुनाब धाकर हमारे मूहकी तरफ देखन लया और सबसि
पहले बाला अरे यं तो सुधीलाबाजी और मनुबाजी है।” बचारेके
बमम बम आया। और किसीकी बम्बी पहचाना नहीं था छपटा था।

बूमकर कामके बाद हम अपने रोजमरके काममें लन गये।
बापूजी गहान बने मय। जिस बीच बापूजी जिस कमरेमें बटनबाधि
बं बहा बतके लिज अन्त मकठोग स्वब काठकर जो बाजी मेजी
पी मने अन्न अन्त बजसे सजाबा और फूकों तथा सूतके तोरम
बनाम। बापूजीकी गहोके ठोक सामन फूकीसे छे लिखा। बापूजीने फूकीके
क्यादा हार बनानेका मनाही का भी। सूतके हार भी जिस तरह बनानेकी
कहा था कि दूसरा बाग नुरत ही वे गुननके काममें बिय जा सकें।

लडा प्रमन्नीलाबहन ठाकरधीकी तरफसे कुमकुमके साबियबाका
नाभियल आया था। जिसके दिबाब तीन गबी बटोरियोमें एककर,
गहु गूड बज्याकी बोडो बा और बापू दोनोके लिज माकाजें बपेरा
सभो बाकम भरकर रजुनी माहब नीपि के बामे।

गहारन बापूजी अपनी गद्दी पर बंठे। छबसि पड़े ७५ बिबिया
कुमकुमकी बनावन हम अन्न अपन अपन हाथके कांठ हुजे ७५ टारोंका
जो हार लया दिया था अथि पू धाने बापूजीके माबे पर
तिलन कमाकर पहनाया और प्रणाम किया बादमें हुमने बाटी बाटीसि
तिष्ठत करके माकाज पहनायी।

आज बाब बापूजीके हाथके कांठ हुजे सूतकी काज किनारकी
माजी पहनी थी। जिस साडीके लिजे मुख धाने बास ठीर पर

हिदायत बी बी कि मेरे पास बापूजीके हावकी काठी हुयी यह अक ही साड़ी है। बिठे बर में गरु तब तू मुझे बोझ देना।” मे पंजाबी पोशाक पहनती बी फिर भी बाने मुझ बाव साक फिनारकी बूसरी साड़ी पहननको कहा।

मुसीमाबहन भी ठाक फिनारकी ही साड़ी पहनी। बा कहने बनों बाव बीठे बी ठी अक बार बीर बालिरी बार यह बापूबोबाली साड़ी चरवा-हावपीके दिन पहन लूँ। फिर वहाँ पहननी है ?

(बिसके बाव सचमुच ही यह साड़ी बुनकी मूतदेह पर बौझानका कठिन काम मुझ ही करना पडा। बसन बीठे बी बाने बूसरी बार बापूबाके हावकी साड़ी बानावा महत्तम कमी गही पहनी।)

फिर हमन छोपीसी प्रार्थना की। बंध्यबजन का भजन नाया। प्रार्थनाके बाद बापूबाके लिज में भोजन लायी। बा रोज गो बापूजीके धा भेनके बाद पान बीठनी परंतु बाव देर बहुत हो पडी बी बिठलिके बापूजीन बनावस ही कहा बाको भी परोस है। म बीर बा अक हुनरेवा ध्यान रखकर साम ही पा लेंगे। बीर गुप्त लीज भी भोजनठ निपण ली।

बान बापूजीको बापहनुबंक मीठी पनई बी बीर बीनी धान बैठे। बाके जीने बी बालिरी चरवा-हावपी हमन लूब धानसे मनायी। अरुके दुम कमी तब मेरी बालाके बाग भिजन ठाव है कि में बिचवार होनी तो बुनना तबह बिज गीच देनी। परंतु हम यह कहना बोड ही बी कि बाक लिज यह मय बगिठम ही नाबिठ हीया।

बापूजी बीर बाके भोजन कर फिन पर धब बरी प्रणाम करने धान। मेरी ठावरमीरी ठरदन जो सठरे बीर भोजबिदा बायी बी, वे बापूबाके हावन दिनबानक लिजे बान मयबनीं। बंदी प्रणाम करठे मर बीर बापूजी बायी हुयी मारी भेन बुग्य काठे मर। फिर बाराब करके लिजे सेट मर।

मैंने बापुजी और बाके पैर पत्थी पत्थी मके बिलगमें २॥ घे ३॥ बनेका सामूहिक कठाम्रीका बन्ध हो गया।

२॥ घे ३॥ एक सुबने मौन-कठाम्री की।

४॥ बने कैदियोंको मिठाभी पिबड़ा और छेब-नांठिन दिये। यह सब कैदियोंकी सहायतासे घर पर ही बनाया गया था।

मीराबहन अपनी नमी बूनमें चार बनेछे ही बंठी थीं। वे बनेक मिट्टीका मंदिर बना रही थी बिलगमें मंदिर, मस्जिद और गिरजेका बाकार दिख सकै। छ बने बुन्होंन यह काम पूरा किया। छ बने जब बापुजी बूनन गये तो बुसी कमरेमें मीराबहनने फूलके पीरके यमले रखकर जयलका वृष्य बनाया। पत्थर रखकर पहाड़ बनाया और बुसमें यह मंदिर रखा। छराभियोंमें सोझू दिये जलाये। मंदिरके भीतर शिबलिंगके रूपमें एक जमकवार पत्थर रखा जो रास्तेमें मिला था।

बापुजी बूनकर बने बिलगमें ती बुस कमरेका बुस बनेक जेसा बत गया। मे बिल काममें मीराबहनकी सहायिका थी। सब बलिपा बुसा हो बनी। बिन बियोंका प्रकास सुम्बर मालूम हो रखा था। यह बुस जेसा अनुपम वा मानो जयलमें मंजल हो रखा ही।

बा तो बहुत ही जास्वा और मज्जावाली थीं। बुन्होंने बुस पत्थरको शिबलिंग ही मानकर बुसे अपने तुलसीके बमलेमें रखवाया। बहा वे गोक प्रात छाय पूजा करती और बीका दिवा बजाती। यह बुनका शान्ति प्राप्त करनका स्वात था।

(बीबवरकृपा और सीभाग्यसे मीराबहनका बनाया हुआ यह मिट्टीका मंदिर और यह पत्थर बिलकी वा शिबलिंग मानकर पूजा करती बीनो प्रमादिका मेरे पाठ बुस पवित्र चरखा-क्यंतीके प्रतीक-स्वरूप मीबुब है।)

कामकी प्रार्थनामें बाका प्रिय भजन हरिने मबतां हवी कोबीती काज बती नवी जापी रे गावा। यह भजन बाधम भजनावलिंग है।

प्रार्थनाके बाब बापुजीन सोमवारका मौन किया। बिल पर्यंत और जयलके बुसको देखकर किसीका भी बी नही मर रखा था।

बपसा मौका मिलते ही वहाँ जाकर लड़े हो जाते। बापूजीन मौनसे पहले कहा "मीराबहन प्रकृतिकी पुत्राणि ह अतः मुमके सिद्ध सृष्टि सौम्यका अचलीकन करके मुझे आचरणमें लाना बापे हाजवा लल है।" सुधीलाबहनन किछ दृश्यका चित्र बना लिया। चित्रनिजे मुहूर्तेन किछ दृश्यको अपनी चित्रवसासे स्थायी कर दिया।

ती बजे बापू बिस्तर पर पय। येने मुनके पैर बसाकर और मुन्हें अंतिम प्रणाम करके आत्मका यह मंगल विषय आनन्दमें समाप्त किया।

२४

दो वर्षगांठ

आयाता महन पूना

२९-९-१४३

काठं तिनदिपको भारतके बाहिर्भरौवका पर सोदवर भारतमे विद्या लेनवाने प। अतिनिज पू बापूजीन अंक तिनके मति अग्ह बन लिया। अमुका मार यह पा

आज भारतमे विद्या ही रहे हें अतिनिजे दो गण्ड तिनकी अिप्ता हो रही है। आपके हृदयमे अीरवका निबान हा। आगा है अीरव आरको यह नयननका मरुवति देया कि आज अने अक महान राष्ट्रके प्रतिनिधिन अक अक गागात्मने अिपनी बड़ी गूठ अलावन नबीर भूने थी। मयकान् आरको यह मरुवति है।

आयाता मारन पूना

२ - -१४३

बबरी मारवाकी मारन अने आज दिन पर लिया कि मुहरे छटना हो नो अची ही तन नदीकी बरने उर अिप्ता हा उर मती तन मवापी। अिमके अगणन बन लिया कि अे दता अक केरिवाके कपने आची ह और रही ह अिर्दिन अरकी मची तने अने मरर ह।

बाबाजी महक पूना

२२-१ -४१

मात्र डॉ गिहडरका बासठवा अन्न-दिवस था। अतिथिमें सबने एक भूमनाम रही। डॉक्टर साहब बापूजीको प्रयास करने वाले तब बापूजीने अपने हाथके सुठके बासठ चारका द्वार सुन्ने पहनाया। बा और हम सबने तिसक करके डॉक्टर साहबको द्वार पहनाये। जाने को सक्कर बैकर सबका मुह भी मीठा किया।

कटेकी साहबने खानेकी मेज पर अच्छी तरह पैर किये हुये और ऊपर पतेके सेबल बिपके हुये छोटे बड़े पार्सल जिस तरह बमा दिये वे भागो डॉक्टर साहबके सम्मिलित निमित्त बाहरसे पेटे जाती हों। एक पार्सल पर स्मोकसेस सिवार लिखा हुआ था। कुछ पार्सलमें कुछ कोको बुड़ और मूबफलीका मूसा मिलाकर बुष्ट बीसा ही रय और आकार बनाकर ऊपर सभ्य बुष्टका ही सुनहरा कागज सपेटकर बुष्टके लकड़ीके डब्बेमें (जिस कंपनीकी तरहसे वे बने हों मूसा मिष्ठान बाबम रखनको) भर दिया। डॉक्टर साहबके बुष्ट काममें लनके बाद जो डब्बे पाली होठे सुन्ने हममें से तिसे आवस्यकता होती रह ले लेता। बेस डब्बेका अनुपयोग किया गया। बुष्ट बीसी रह बाकसेट बनानेका परिधम प्यारैमालकीने किया था।

दूसरे पार्सलमें अक कसीबा किया हुआ मेजपौच था। उसे सुधीलाबहनन ठमार किया था।

अक पार्सलमें मिट्टीके सिक्कीने — बकरी बेक नाम बिरप्यादि थे। वे भीराबहनके बनावे हुये थे।

ये सब पार्सल डॉक्टर साहब सुबहुकी बाब पीने मेज पर बाये तब कटेकी साहबने गंभीर चेहरा बनाकर सुन्ने धंवि और बही पर लीने। जिस प्रकार जानब-बिगोबमें प्रात-कालका समय वहाँ बजा गया जिसका पठा ही नहीं बजा। जिसकिने सुबह बेडमिटल खेकनेके किने हुये मुठिककसे पइह मिनट मिडे।

हम खेकने नीचे सुठरे। बाकी समजा यह भी कि आज को डॉक्टर साहबको ही बीरना चाहिये। जिसकिने ह्यारे बक बनाने

गम । अंक वसमें बटनी साहब डॉक्टर साहब और प्यारेबाबजी और दूसरोंमें मीराबहन मुधीबाबहन और मैं । हमारा बस हाथ और डॉक्टर साहबका बस जोता । बिससे बाकी सब मानव हुआ ।

मायाबाई महक पूना
२९-१ - १४३

बीबाबीका त्यौहार हमारे यहाँ सब बूमबामसे मनाया जाता है । परंतु बापूजीके छिन्न तो ये सब दिन अंक प्रकारसे समान ही थे । क्योंकि सब जेठमें थे और भारतमें पूजाकी भी बिसछिन्ने मानव तो जाता ही कैसे ? परंतु वा सकुन रखे बिना कैसे मानवी ? कपमग नी बस में रोब बूमके छिरमें मानिष्ठ करके कभी करती थी । मुझे कहने लगी वाक बीबाबी है न ? बिसछिन्ने तू मेरी मानिष्ठ करके तुम्हरी बात बडा देना और पूरूपोकी बगाना । बाबमें बक्षिष बक्षीकाडी बात करते हुये बोली " बापूजीको पूरूपोकी बितनी बबिष्ठ प्रिय थी कि हर रबिबारको बकर बगबाठे से ।

मैंने कहा यदि हम बककरके बत्राय गूड़की बगामें और बकरीका भी काममें लें तो बापूजीको खानमें क्या बेटपत्र हो सकता है ?

वा बोली " तू बापूजीसे पूछ देना ।

मैंने बापूजीसे पूछा । बापूजी बस मुस्कयकर बोले यदि वा बखे तक नहीं तो मैं मुझे बरके बडा सूना । मेरी नयनमें नहीं आया कि बापूजी यह धर्म क्यों कया रहे ह बिसछिन्ने मैंने पूछा । मुधीबाबहनन नमनाया बाकी बाल मारी पड़मी और हूरपकी बड़कन बड बायमी बिनूबिन्ने बापूजीने बँसा कहा हाया ।

यह समस किन्नेके बाद जो एव बापूजीने कहे थे वही मैंने बाते कह दिये ।

जन्हींने तो अंक दागका भी बिचार किये बिना कह बाका यदि बापूजी बायें तो मुझे पूरूपोकी बखनी तक नहीं । बापूजी और हम सबको जन्हींने जानदुर्बक पूरूपोकी बिबाबी ।

आगाखा महज पुता

नववर्ष

१-१०-४३

बस्ती बंठकर प्रार्थनासे पहले ही डा प्यारेलाकजी सुधीला-बहन और मन बापूजीको प्रणाम कर लिया था। प्रार्थनाके बाद नहा-बोकर मन जब सबको प्रणाम किया तब दुबारा बापूजीको भी किया। बापूजी बिनोबस कहने लगे तू सबसे छोटी है जिसके तुमसे बर्षों होना है। मेरे लिये कैसा मजा है कि माब तुझे सबके आधीबाँवकी घप मिकती है और मुझे किसीकी भी नहीं।

भित्तम डॉक्टर साहब भी प्रणाम करने पहुंच बने तो मेरे साथ हुआ बात डॉक्टर साहबको दुबारा मुनानेके बाद बापूजी बोल

यह बीड ही नववर्ष है? सच्चा नववर्ष तो खुशी बिल मनाया जायया जब आगत आजाव होना। और बीबाजी या होली ममी त्याहार ममी मनाये जा सकते ह जब हिन्दुस्तान आजाव हो। सबको वेगमर आनेकी बिले कपडे मिक और रहनको मकान मिक। आब चागे आर होना आब रही है। परतु जैसे नववर्ष और बीबाजी कितने ही बने नब और घायब कितने ही बने जायये। असबता मुज पुग पायब है। ओ हाता है या हुवा है मुमने हिन्दुस्तानका मन्दा हा है असा मानता आडिये। आपने तो बड़ेरामजी मलबारीकी यह कबिता पढ़ी हावी न — मया बीठा में साहजालमना मौक मानता रागब * इम बनीक वागिम है न? मुमके मवजी कहे तो भी मलत मरी हावा। बीचर आन इम नब नक मौक मायनी पड़ेवी?

आगाखा महज पुता

०-११-४३

आब मागाबहनका अम्बलिन था। अम्बलिन तो आत ही है परन मागाबहनका अम्बलिन कुछ बूमरी ही तरहरा था।

मागाबहन मल-नववर्षको मेने दलियोंमें आब मापते देवा ।

मझे मे बापूजीको प्रणाम करने जाती तब बापूजीन अपने काते हुके सूतकी बटाख टारकी माका मुसमे जाती।

मीराबहन बापूजीके पास ही थी बिनाबिजे मुझे आश्चर्य हुआ कि सिर्फ बटाख टार करा? परंतु कुछ समय यह साथ ध्येय पूछनका भीका नहीं था। मने तुरत बटाख टारकी माका दे दी। मीराबहनको पास बहरी आदि पशु-पक्षिमो पर कुछ ही प्रम है। बिनाबिजे बटकी माहबन दिट्टीकी नाम बिड़िया आदि बिलौलीका पार्मक बनाकर बापूजीके हाग वन्हें दिया।

बिड मारी बिडिके बाद जब मीराबहन मेज पर बूब पीने बैठी तब मने पूछा बापको नाम बापूजीन सिर्फ बटाख टारकी माका किस कितने पहनायी? नाम और पर नियम यह है कि बिमबा जो नाम मुक हुआ ही मुने मुतने ही टारकी माका पहनायी जाय।”

मीराबहनने मुजम कहा य अपना जन्म कुछ समयमे माकली हु जबमे मे बापूजीके घरामे जाती हूँ। बापूजीके दुनियामे पीना बडे मीनायकी बात है। परंतु बापूजे भागतमे जेना तो जन्ममे भी अधिक है। बरध मे बापूजीके पबिब घरामे जाती तबमे अपना सच्चा जन्म हुआ मानली हु। ७ नवम्बर १९०५ को बर्लि जाबसे बटाख बप पहले मने बापूजीके घरामे मिर ग्या। बिनाबिजे आज कुछ बटाख बपे पूरे होकर १९ वा बपे लग रहा है। घरे ही मुझे बीजनेम मे बडी समती हूँ परंतु अपन मनमे म बापूजीके सामने बटाख बपेकी बालिका ही हूँ।

प्रबोधिनी बेकारसी

-११-४९

प्रबोधिनी बेकारसीके चिन तुलसीका व्याह होता है। और बाकी तुलसी पर बनीम यज्ञा थी। बुबह-नाम तुलसीके पम्पेने पीका दिया बकवाती। प्राबना, या पाठ थी बही बेकर करली और बेक तुलसीका बमका बरामदेने रखा।

पू जाने पार पभीका मुन्दर मंडप बनबाया । मुठीलाबहनने गगोलीबा बक रबीन बडा फस बना दिया । मुठ पर पमला रबबाया । सामने छे छित्ता और मुन्दरीको फसोति बूब उवाया पवा । मुर्य-पीले मेबाका प्रताह रवा । सामके समय बापूजी बी बेनन बाब । आरटी मुतारी और नोदके समय प्रार्थना हुजी । प्रर तक मिरयके अनुसार रामावनकी बीपात्रिया गाजी नबी तब तक बुर-बीप बरुठी ही रखे गये । प्रार्थनाके समय रोघनी बंद कर बी जानी बी । रोघनी बन्द हो जानके बाद अमरवती और बीके शिवका तेज और तुसुछीका बडिया भुगार देखते ही बनता बा । छान ही प्रार्थना रामजन भजन रामायणकी बीपात्रिया मुठीलाबहनके मंत्रीरे और मीराबहनक तबूरेकी सकारके छान बाये जा रहे थे । तेजकी प्रार्थनाकी अपेसा बाब कुछ बनोछा ही बाताबरन बन पवा बा ।

मप्लाहमे दो बार भजन मानेकी मेरी बारी रखी बी छोम बार और सूकमार । बाब छोमबार बा । जाने नीचेका भजन गानेकी सूचना की

बिलमा बीबो करो र बीबो करो
कडा नाम कोचने परहुरो र बिलमा

दवा बिदेस प्रेम परचामु लाबो
माही सुग्तानी बिबेट बनाबो
माही बह्य अग्निने बेताबो र बिलमा

साचा बिलमो बीबो म्पारै बाधे
त्यारै अथाह मटी बाधे
पडी बह्यकोक तो बोझबाधे बिलमा

बीबा मात्रे प्रदटे बेबो
गळ निमिरता बेबो
अन मंभे तो नीरखीने बेबो बिलमा

बाद रजछोड़ कर संभाल्यु,
 गरी कृषी में ठपक्यु ताळु,
 बसु बीमडळ्या बजबाळु दिस्सा

[अर्थ दिस्समें दिया पलाओ। काम-कोषकी सुरासीको छोड़ो। हवाका ठक और प्रेमका शीपक लाओ अन्तर ध्यानकी बत्ती बनाओ और अस्समें ब्रह्मकी अलि प्रयटाओ। जब सन्ने हृदयका दिया जलेगा तब बबेरा मिट जायगा। बादमें ब्रह्मलोडका ज्ञान होमा। दिया हृदयकसी आशासम बेसा जसे मिछसे सारा बंबकार नष्ट हो जाय। अस्सि माळोसि बळी ठरु देव दिया जाय। बाद रजछोड़ कहते हे कि ज्ञानकी कुंजी मिल गरी ताळा खुल बरा और हुमें आरमज्ञान ही गया। मिछसे भूमडळमें जुबाळा हो गया।]

अिस प्रकार माजका बजन मी जाने अिस बाताबरकके अनुक्य ही हुंइ निकाला।

२५-११-४१

हाँ मुसीलाबहनकी माभीके अेक दिनकी छोटी बळी छोड़कर पुजर जानेका तार मृत्युके बस दिन बाद मुसीलाबहनके हाथमें आया। अिस संवसमें पुहविभागकी तो पत्र लिखा गया बा परंतु साब ही बात बापूजीके अिस प्रकारका पत्र भजनका भी बाग्रह दिया बा कि मुसीलाबहनको अजकी माताजीके पास दिस्सी बरा जाय। सेविन यह अर्थअर्थ बाद बी बपोकि सरकार बापूजीके पास रहनेवालोम में दिधीको बाहर नहीं बरना चाहती थी। तब जाने यह बाग्रह दिया कि मुसीलाबहनन अब ठक अरन दिधी भी नंबधीको पत्र नहीं लिखा। सेविन यह टक असे समय छोड़ देनी चाहिये। मुसीलाबहनन कहा कि सरकारकी अब अक बार बठा बुकी कि ये पत्र नहीं लिगुमी तो अब कैस लिग सकती हुं? तब बा बापूजीके पास दरी और कहा कि मुसीलाबहन तवा प्यारेलातरी बीनी माजी-बहनको बर पत्र लिगना ही चाहिये। बापूजीके समझानेसे बीनी माजी-बहनन पर पत्र लिखा। परंतु

मुझे मध्यप्रान्तकी सरकारन छोड़ा बा और देवदास काकाके पत्रमें खुशना खुशनेच किया गया बा जिससे कुछ गलतफहमी हुई। मुसीला बहनकी माताजी दिल्लीमें रहती थी जिससिजे समय समय पर देवदास काका खुशने मिलते रहते थे। खुशकी स्थिति देखकर देवदास काकात बाके नाम पत्र लिखा कि मुसीलाबहनने छूटसिे जिनकार कर दिया परंतु खुशे अंसा नहीं करना चाहिये बा। खुशकी माताजीको खुशकी सहायताकी बड़ी आवश्यकता है।

बड़ी गलतफहमी होनके कारण बाने छोड़ा खुशना खुशे भी दिया क्योंकि मनके पत्र में ही लिखती थी। पत्र यद्यपि मैं लिखती परंतु बा बस्तुतत तमी करती जब खुश पढ़ केटी कि क्या लिखा ह। बाकी जिससे बड़ा दुःख हुआ। खुशोंने सोचा मुसीलाबहनकी माकी कही अंसा न कर कि मेरी जिनकारके समय भी मेरी पुत्री काम नहीं जाती। जिससिजे खुशोन बापुजीसे कहकर अंक तार लिखवाया कि सरकार मुसीलाको नहीं परंतु मनुको छोड़ रही थी।

मुसीलाबहनन तार देनके जिज बहुत मना किया परंतु बाका हृदय मातुहृदय बा। और बच्चाको माताके प्रति कसा बर्ताव करना चाहिये अथवा लड़का या लड़की अपन माता-पिता या बड़ोके प्रति जब मनको अधिक लयनवाला व्यवहार करता हूं तब खुश लालक या लड़काका व्यवहार कितना दुःख पहुंचाता है जिसका बाकी बच्चा तरह बचभव बा। जिससिजे खुशान मुसीलाबहनकी बात न मानी और ना लिखवाकर ही बत लिखा।

जेसमें मुसाकारते

भाषाभा महम पूना

२७-११-४३

बापूजीने (भारत-सरकारका) बिम बाधपका जेक पत्र लिखा था कि कार्य-समितिके सदस्योंके बिस्तरके बारेमें नये सिरेम बिचार क्रिया जाय तो मात्र बबानम जो मुसमरी पढी हुमी है बेघम हमारों आदमी मर रहे हे और भेवा करनबासे जकामें सड रह ह बसका फोडी हुक मिनस सक्ता है। अस पत्रका भारत सरकारके मंत्री गिबाई टॉन्गहामकी तरफम जबाब आया कि

८ अगस्त १९४२के प्रस्तावके बिषयमें आपक बिचारोंमें कुछ भी परिवर्तन हुआ नहीं बीखना। बिमी तरह जिस बालका बीजी बिन्हु दिखानी नहीं देना कि कार्य-समितिके सदस्योंम से जो किमीका मत आपम भिन्न हा गया हो। और यह ची बीनोंको अच्छी तरह आसून है कि बिज घनी पर महानमूनिपूर्व बिचार ही सक्ता है।

बिसके अलावा बापूजीन अक और पत्र लिखा। डॉ गिन्डरकी पत्नी बीमार थी। बरनु अन्ह या बापूजीके साथ रहनबासे बुतरोंकी बापूजीक साथ हीनके बाल्य माभारत कर्हिर्पाकी हुके तीर पर जो मलाभान भिन्नी के बी नहीं भिन्नी थी। बिमन्ज बापूजीन लिखा कि

मेरे साथ रहनवालाय भिक डॉ मुर्डीका मप्यरपो ही तार देने भिना हो अथवा अमे अदमर पर बी कर्हिनाकी बुनानी पडी हो ना बाध नहीं है। डॉ गिन्डर भी मेरे साथ रहने बाल्य भरनी गर्नी वा पुर्वीमे नहीं भिक

सकते। छोटीसी मनु पाबी अपने पिता या बहूनीसे नहीं मिल सकती न कस्तूरबा ही अपने पुन या पौत्र-पौत्रियोंसे मिल सकती है।

अल्पवयस में जानता हू कि ये प्रतिबंध मेरे साधियोंको कबे प्रतीत नहीं होते। यदि बेधा ही होता तो मनु गांधी बाहर जा सकती थी।

मूक पर क्यार्ये क्ये सरकारके प्रतिबंधोंको में समझ सकता हू। परंतु बूझरों पर क्यार्ये क्ये प्रतिबंध मेरी समझमें नहीं आते।

बूपरोक्त पत्रका बूतर आया

डॉक्टर साहबकी पुत्रीन भी अपनी मातापीकी बीमारीके कारण डॉक्टर साहबसे मुलाकात करनके लिजे सरकारको बर्ती थी हू और बस पर विचार हो रहा है।*

बोपहरकी समाचार मिजा कि कस बर्ती २८-११-४३ को डॉक्टर साहबका मुसाबल मिलेगी। तब बूछ हुजे।

आपाबा महस पुन

२८-११-४३

मुलाकातके लिजे बर्तीन मडारी डॉक्टर साहबको छोड़े बाइ बस केनकी आस। मलाकात बूतके बपतरसे रखी बर्ती थी। घामकी बार बस डॉक्टर साहब को।

* जिन पत्रोंकी असाध्या अवसल ती मेंन नहीं रखी थी परंतु बूत समझ लिजे क्ये एक पत्रकन अतथा मार मेंन लिख लिजा बा। बर्ती से नहीं हू। अिनलिजे कोबी एललीमि यह न समझ ल कि में मर्यादाक सापका पत्रध्वबहार असाध्या से रही हू। मूक पत्रध्वबहार ता असाध म ता जाला बा। परंतु मरी असाधी मुचाकनके लिजे और बेमे पत्रध्वबहारम मरा आतरारी बडालक लिजे ही मुसीलाबहलने अिस पत्रध्वबहा ता म असाध पा तम समावेस बन रिजा बा। रोज मेंने कया पडा असाध रिगतता पडा—आदिकी बूझे तीव एलली बडती बा। अमाम यह लिजे हुजा हू।

पू बाकी तबीयत खराब हो पयी ह। गतको सोचा नहीं जाता। जिसलिये आज ती अतिथिगत मनाया पड़ा।

आगासा महल पूना

१-११-४३

बाकी तबीयत खराब ही रही। डॉ गिब्टर और सुपीलाबहनन विचार करके बापूजीसे कहा कि मानसिक रहत मिलनके सिवा यदि बाहरके स्थितीमे बाकी बाती बारीम मुलाकात होती रहे ती बचावित् कुठे नाम ही।

बाहरकी भिमकि मिलनियेम अेक बन भी भिया गया।

आगासा महल पूना

२-१२-४३

आज कटती माहबन गबर ही कि तबपियाकी मूषी बनाकर नरकारण। अत्र ही आज ती अमरा मुलाकाते ही आययी।

बाहरको बापूजा का और अेरे गाधी-अधिकारके लक्ष्यके—
जिनमे मे आप तो अक्षेयाम रहने हे—नाम बाकी लहित या-
नर अके लिये। र्नी-मुदर मिलकर लपकव ५ नाम हुअ।
(जिनमे विवाहिया लक्षिया और अनेके लक्षे-लक्षियाँ ही
मनायेग बन दिवा। गो भी जिनमे ही रहे पर बे।)

मृत गो लम्बी मायावर्ती देगवर आज ही बना जाता रि जिनमे
विगत बुदबुद ही। अने बापूजीसे यह बात कही गो के बोले तब
तो ठेरी अेला येग अधिकार बचावित् ती मुना बड़ा होमा। “
बाप लक्षी बी। बापूजी दिनी गाधी नामवालेको ही अरना
बुदबुदी बड़ी बाते ब। अनेके सिवा गो गाे अके अने
बुदबुद। अेमे ही ब।

आगासा महल पूना

४-१-४३

अने अरारीम लक्षे अत्र ही कि राज्याम लक्षीको लक्ष दिवा
ही रि के बाद तो बापूजीके अनाकात बनन आ लक्षे हे।

वे खत्री बार्ते कर ही रहे थे कि अिठनेमें मुनका मावपुरसे लेई फील आया कि निर्मला काकी (रामबास गाभीकी पत्नी) की बेजा है। कनक भडारीने कहा कि यदि आज बा बाब्यपी तो आज ही मुलाकात कर सकेंपी जिसस मुलाकातिमेंका समय भी सराब न हा और मुलाकातके हरमिदान बा और बापुकी ही मौजूद रह मकेने दूसरा कौडी मही।

जायाका महक पूना

४-१२-४३

खामकी बार बज निर्मला काकी नामपुरसे मिलने जाती। मंग कबल बुरे प्रनाम किया बात तो हो ही नहीं सकती थी।

निर्मला काकी समयव हो बटे रही। बाने परिवारके सभी कोपोरै कुलम-समाचार पूछे। मुझे बसा लगा कि आभमकी छौटीसे छाटी बाने और आभमबासिपीके स्वास्थ्य भेब निरबके कारंबमके बारेमें सब कुछ जनस बातकर बाने मममें ताजबी महसूस की। आज ब लभ बिलाजी बेनी थी।

गनका समाचार आया कि बल देवबास काना बानबाले है। गन अच्छी बीनी बना बडा आ सकता ह। बड बज सांस बड़ी हुडी या मदन पर बान मज बगाया। परम पानी और दाहू पिया। मंग बग पी प ताब फग। गुरत मो यत्री। निछम तीन दिनीकी बगधा आज बान अच्छी नीर थी।

जागला महक, पूना

५-१२-४३

म मोन र बा निर्मात्र नव बुछ छात्र लवता बा। पत्र म न प नर बिबा न बापुकी निछमे लवबव बहह दिनने म । र पा प बम ग्ना र्ना अमितिपी पुस्तक (Plane Geometry) बप ह प आज बह बुरी हो यत्री ना बापुकीने न न ग्ना र्ना र्ना बाव बेन तैरी अमितिपी पुस्तक बह

नी। मुझे जिसमें बड़ा रस आता। मुझ पढ़ाईना ठा मेरा और भी गुनगुनान ही आवणा। कलमे हुमें विन्नुमे प्रारम्भ करता हूँ और जिसमें जिसमें भयभी नाम है अर्थात् गुजराती नाम बतान ह।”

हम ना छोट साल जल्म बितान हूँ जिसदिन गुजरातीमें अेक पुस्तक भी तैयार हो जायगी। मन बापूजीम कहा था वे हमने सगे।

भाय देवदास काका आनेबास प। परन्तु बान कहा कि निम् कल आ मज्जी भी जिसदिन देवदास जल भाय न भावर कल जावे। दिन पर बापूजीम लिखा किने पना रातको क्या हो जाय? भायदास नाम भाय ही कर गिया जाय। हम बहु बचन गो गाते ही ह कि जो कल बनना ना भाय कर ले या भाय बने ना अथ कर ले।

जिसेना बाकी भी ठहर मज्जी बी। परन्तु बीमांदा भाय मही भाय दिया। बीमा बाकी-बाकीमे भाय जिसेमे बदेकी साहबकी मलाबागियांही साबरी एतदम गुबिया गे।

बाकी मज्जीम निम् टीक मही। गणवा फिर बिमही। भायमे अने और बान बचनेम माया पुन दिया। बापूजी और भाय सब बाह्यक बगमदेम मान हे। गणवा बीच न भायमे बाबा बधुकी मज्जी पी। जिसेन बाकी बापूजीका आभास न बनना पदे जिस तबालते बान यह काबतरन करदया।

आभासा कहल पुना

१-११-६३

भायदास बाकी देवदासमें मज्जे बाण और बाह्यकी मलाबागियां बाण्य बापूजी मज्जा गणवा हा जिस मज्जा मज्जा मज्जा पावे। जिसेदिन मज्जा मज्जा ही कहा दिया।

मान बच देवदास बाबा और जिसेना बाकी भाय। जिसेना बाकीका भाय जिसे दिव था। देवदास बाबा अर्थात् हा दिव हाय मज्जा।

घानको हम घूमने निकले कि जेकाजेक बाकी तरीयत दिगड़ी। बिसलिये तुरत सब रूपर भाये। सुसीलाबहन और डॉ. बिस्डरने मुनकी परीक्षा की। वरा ठीक जगने पर प्रार्थना की।

सुसीलाबहन तो इस बजे तक बड़े पैरो ही रही। मैं खरीर वगाने बा कुछ बकरी बीज का देनेमे ही मदद कर सकती थी। परंतु डॉक्टरके नाते मे तो तीन-चार बंटे तक अस्पमव ततत बेठी रही। इस बजे बापूजी पीड़ी बेर बैठे। सुसीलाबहनको और मुझे बापूजीने आगम करनके सिद्ध कहा। मैंने बिस्कार किया तो बापूजी बोले मैं कहू इसा करती रहेवी तो ही पार जुठरेवी। बिसे बाकी सेबाका काम लेना हो बस पहले अपनेको समाजना होपा।

मैं चुपचाप अपने पल्ल पर चली बसी। मेरे जानके व्याने बंटे बाह ही बान बापूजीको भी आग्रह करके सोनेको भेष दिया। बापूजी सोनेको जुठे और प्यारेआकधी बाके पास बैठे। प्यारेलाकधी दो बजे तक रहे। बीचमें जेक दो बार सुसीलाबहन और डॉक्टर साहबने बाकी परीक्षा की। १॥ बजे बापु जाकर मुझे जुठा दये। खासी और मासका बडा और बा। खरीर दुस रखा बा। १॥ छे ७॥ के बीच जेक बार ३ मिनट और जेक बार २ मिनटके बिजे बाकी बच्छी नीव बाजी। सीधा नही सोबा जाता बा।

मझे वातुन करके गरम पानी और सहृद पीकर ८ से ९। तक बच्छी नीव की।

बापाबाई महक गुना

८-१२-४९

पू बाकी मानिश करनेसे सुसीलाबहनने मना कर दिया। महानकी भी मनाही कर ही परंतु स्पज करवाया। इस बजे बाने जेक रफाही बाडा किया। कुछ माता नही। दुधमें बाबा पानी डरुवा कर अजीर अबाक और बीपहरके आजनम दिये। कमजोरी बहुत ज्यादा लगती है।

बाबू रोपहरकी मुलाकातमें हरिलाक काकाकी दोनों लड़कियाँ थीं। रामीबहन कहती थीं कि माधवदास मामाको मुलाकातकी अनुमति नहीं दी गयी (माधवदास मामा बाबूके भाभी हैं।)

छोटीसी जमिने बढ़िया नाम करके बिसाया। बाबू अपने बेटेकी साथ बंधकी बेटा जमिनी कला हसते हसते जानबसे देख रही थीं। बाबा-बाबूको अपने पुत्रों पौत्रों या पौत्रियोंके पद्यक्रम देखकर आनंद होना स्वामाधिक है।

कित सबके जानके बाद माधवदास मामाकी बारी थी। भाभीकी बहन अंक भी और बहनके भाभी अंक थे। जैसे भाभी-बहनकी जेलके नीचे मुलाकात होना अंक अनीला दृश्य था। बाकी भाभी बूझर नहीं थी मिसलिजे माधवदास मामा मनसे कुछ अस्वस्थ और दुबसे लगत थे। पहले ही मामाके प्रवेश करत पर हृदिके आदेशमें अंकम कौड़ी बोल नहीं सका। दो मिनट नीरव धामित छन गयी। मने मामाको बहुत बर्षों बाद देखा। प्रणाम किया।

बाबू अंकम बोळ मूठी "जिजने दुबसे बर्षों हो बर्षे हो? रामका नाम लो। सारी चिन्ता छोड़ दो। अब बर्षों अर्बकी चिन्ता की पाव?

जाने मूठे चाय देनेको कहा। चाय थी। निर्मला काकी मापपुरसे बाबूके सिद्ध मेचीपाक बनाकर लायी थीं वह सब मूठे दे दिया और कहा यह निम्न बनाकर लायी थी तुम्हें बापस दे रही हूँ। वा सेना और बेकारकी चिन्ता मत करना। अब जीस्वर-भजनमें चिन्तनी चिन्तनका समय है। चिन्तना हो लके रामनाम लो।"

अंतमें विद्याजीके समय दोनों दग्ध हो गईं।

तीसरी बारी देवदास बाबाकी भाभी। देवदास बाबूने खबर दी कि मापपुर जलमें चिन्तोरकाल बाबाका स्वास्थ्य बहुत ही बरतन है। बजन ७५ पीछे ही जान और दम मूटनकी बात नहीं। मूठे

पैरोल पर लड़वानेकी बात का। बापूजीने मना करते हुये कहा किशोरकाकाको तो मैं लौ चुका। मुझे मैं बच्ची तरह पालना है। वे बीमारीके कारण पैरोल पर छुटनेको राजा होनेके बजाय जेलमें मरना पसन्द करगे। नागपुर जेलम हा महाशैवकी तरह मुनके बड़े जातका सबर मुनू तो मुझ आश्चर्य नहीं होगा। कौन जाने बड़े काकोके बलिदान हो साथर स्वराज्यकी कुर्बानी साबित हों।

२६

सरकारका बरसाव

आगावां महेश पूजा

२६-१२-४२

पू बाका स्वास्थ्य कमी बच्चा कमी बुरा बढता रहता है। बाबू सामन्तका काका अपने परिवारके साथ शैवराध काका परिवारके साथ और जमनाबाब काका भी बिश्रावठ मिळ जानके कारण बापूजीको तीन बज अयय। यह उनाचार कर्तव्य बढवाणी है बय।

मुझको बारी बरके बाद ब्रह्म जाती। और सब परिवार बच्चोके साथ होनेके कारण बहुत धोर हो रहा था। बापूजी बच्चोको सुखा सेवा दिया। सामन्तबाब काकासे कहन क्या से तु भी तो बच्चोमें ही गिना जायगा न? मेरी दुगिटम तो तु बाकक ही है। वो कहकर ब-ह भी बापूजी प्रयाची थी।

इस (बारी शैवराध काकाकी थी। कभी काकी छारा मोहन और राम मना अ य य। मन सबको जी मेवेकी प्रसाची थी। मुझे मुन सबके साथ बलनका बालन-द मिळ गया। मैं छारा और मोहन इमरं बमरंम बलन बैठ गया। बिलमें मैं बलना काम भूळ पयी। परतु बापूजीको पढानका समय न मिलनके कारण नाम्यबध बय बयी।

मर्क ज़ानेवा समय ही पडा। उस सदनो काकोन बाको प्रणाम करनेके लिये बच्चोंको बुलाया। बाग ईब्रहाम काकामे कहा "अधुनाकाक और मनुको बहुतको खबर देना और कहना कि मुहें बुझिया हो ती मकाब बार मिल जाय। य एज मेरे कानों पर पड़े और मैं प्रसन्न हा गयी। जाते जाते काकाने कहा मने कराची समाचार मख दिरे है। जिसमे मैं बहुत ही खुश हुयी। इइ बयमे विगीजा मुह नहीं देखा था जिसलिये जानब होना स्वाभाविक था। बा कहन मनी हम कानून नहो तोइ सफ़ै जिसलिये तू कीजी बात न करना। परतु मिथना तो होगा ही।

बा अजमे भी हमरेका विचार फिलना प्यावा करती है। बाग भी मही है। सभी मुलाक़ाती कीजी बाके साथ बाने नहो करे बसोकि अम्हें बाग करनेमे भी हम जुटना है। मुलाक़ाती तो केवल प्रणाम करते ह। बा मरका कुमक-ममक पुछती ह। बाहमे तो सभी लक्ष्मण बापुत्रामे ही बाने करते ह। बाहर बा और बापुत्राके समाचार पानेके लिये नहपनी हुयी अजलाको मुलाक़ातियों द्वारा अन्के साथ समाचार मिल जाय तो अज फिलना पीरज बंध।

मलाकात छ बजे तक बर। बाकी तरीयत ठाक रही। बापुत्रीका रक्तबाग बर गया है। हम सब दिनकर पिछले बरामदेमे खुश ही बने है।

आनामा महक पूना

० -१२-१३

बुद्ध ही जाड़े जाट बरे बरनी नाहने बामे बरा आज मनका कुदरत बा रहा है। बागो बरी लमो हुयी। ये बाकी अछा बेचारी छात्रीनी मरबा मरा परी है। जानी बहन और बाबे मिलकर लम ही जायगा। बरनीकी मिथकी रिच्छा ना जानी ही है न? मरी लक्ष देनकर बहन मनी ये आज तो ती गिनाती और लजला बा रहे है मुगे कुछ बहना है ता मुसन कद् देना।

बाबू सबको साथ बाने दिया। कनुमाजी और मेरी बुबा भी थीं। कनुमाजीने बाकी धन मुनाया। मेरी बहनने भी धन मुनाया। कनुमाजीने बाके चिरने ठेक मचा। मेरी दिन लोपधि बोधनकी तो बहुत भिन्ना हुयी परंतु क्या करती?

बहनकी छोटी छोटी बन्धिया—धरना और हुंसा थी। बहनमें मे बहनाको तो मैंने बगमाने ही बेकरम भुठा लिया। बग बेकानके बाद ही भाग हुआ कि कानूनका सम्बंधन कर दिया। परंतु कटकी साहब बड़े मझे हूँ। मैंने क्यों ही बहनाको नीचे भुटाया मे मुझसे कहते मने छोटे बच्चोंको न बेकानेकी माझा सरकार नहीं देती। मैं और भी समिन्दा हुयी। दो बटे बाद सब बने मने।

आपणां महल पूना

२-१-४४

कटेकी साहब मक हुनम काये। मुलाकातके समय बेक ही बर्ष मीमूद रह सकती है और बहुत बकरत हो तो बेक डॉक्टर उपस्थित रहे। जिसके मलाया वा डॉक्टर दिगणा महेताकी देखभाइके निम्ने तरस रही थी और धानप देसी बवास कुछ पाहूत निम्ने जिसके निम्ने बार बार बेक बैसको दिखानेकी माय करती थीं। मैं सब बर्ष सब ऊर्णय मकारी या कर्नल साहू जाती तब वा कबक मूठे करतीं। परंतु मनका कोडी परिणाम न होने पर बापुने टॉटनहामके नाम बेक पत्र लिखा कि मुलाकातके समय सेवा-बुझूपा करनेवालों पर पाबंदी नहीं होनी चाहिये। बीमारके असक्त होनेके कारण कमसे कम दो तीन सेब करनब खोंकी जरूरत होती है। कनुमाजीको हर नामने दिन बातकी बिबाजत निम्नी है। जिसके बजाय मुझे आपणां महलम ही रहते बंनकी बात भी बापुजीने सिन्धी।

मह भी सिन्धी कि बस्तुरवाको मुलाकातियेकी बिबाजत तो निम्न गयी परंतु सेवा-बुझूपा करनेवाला मुन समय मीमूद न रह मके बिमम शानो बिबध नहीं है। निम्ने बिबाय हरिकान काका यही न परंतु तबक मकारीको मन्ह भीन देतकी अनुमतिकी कोडी

सूचना न होनेके कारण वे मिशन नहीं जा सके। यह बात जब बाकी माछम हुआ तो मुझे बहुत दुःख हुआ। जिसदिने जिस बातका बूस्केस भी पत्रमें किया कि हर बार मुलाकातियोंको बंबयीके दरवाजे ही अनुमति लेनी पड़ती है जिसके परिणामस्वरूप देर होती है और मुलाकात नहीं हो पाती।

जिस पत्रका अंतिम भाग तो बिलगा करन था कि जब मे मुलाकातवाहनके पास पड़ रहा तो सब बातकी जानकारी भी बायू रख पड़े। मुसमें लिखा था कि

श्रीमती बस्तूरबा तो सरकारकी बीमार है। मुनके पठिके गते मुझे कुछ नहीं कहना है। जीवनेके बजाय मुझे मेरे साथ मुनके ममेके लिखे महा रखा गया है। परतु वे बन्धी हो बायू या मुसुकी ओर चली बायू जिस बायू और कुछ न हो सके तो मो मुन मानसिक धामिकी राहत जिस यह बैजना मेरा और सरकार दोनोंका बर्तव्य है। मुनके किसी भी मानसिक भावनाको चोट पहुचानवा अनर मुनके रीज पर बहुत ही बुरा होगा है।

बायूजीका बरन जिस सन्ताह री पीड बट गया। आजकल लयमग रोज कामरन होना है। लुराक मो रीजके हिनाबसे पट बनी है।

आमाया महल पूना

८-१-४४

मदधियादी मुलाकात लयमग रोज ही होगी है। जब आया सरकारकी ओरसे बा यकी पी जो बायू चली बनी। बेबायी बरन बालरन्धीकी छाडकर जाती थी। जमे भी रातदिन हमारे गुण नजर रीजमें रहना पडना था। यह मुम रीज बस्या लयगा? जिसदिने बरनम बायू तो कतु मुन यकी।

छारके बाग लयमग १ फन्गी ययह है बरा मुनकी बुर जाती है। बायूजी गबरे बरा मुमते है। आज हुकम बायू कि बरा न मुन।

बुधनी पत्नी प्रमावनीहूनके माव भिनने बरी बंदुकोंबाळे धारण करतार में हंस पडा। बापुजीके कहा मेरे साथ जानबाळे मावपुर बेधनी भ्रम नये बेचारे बी निपाहिमोंकी यह पता नहीं बा कि मावपुरसे पूना क्रिमरथ जाते है। बिधकिमे सरकारकी दृष्टिमें मे विस्वाभवास मानी पावुनी न ?

बापुजी कहन कम ठैरि साथ सच है। सरकारी दृष्टिसे भले विस्वाभवास नु ही परनु मेरी दृष्टिमे प्रमा होयी। नू कबो माव भी साथ परनु प्रमा हटगिअ नहीं जागनी। यो कहकर हम दोनोंकी बाके पास भेज दिया और प्रमावहूनकी महाने और मुझे मुझे विमानेकी कहा।

प्रमावनीहून बाके पास गयी। जाने सबसे पहले बरप्रकाशनीके मनाचार पुछ।

“अवध स्वास्थ्य मज्जा नहीं रहना। के अवध माग और बच्चे पये मुमके बार मन पर मुम करनेमें सरकारन हर कर दी। बा कहकर भरी आपकी बा मुनानी।

प्रमावहूनन बहुत ही कष्ट गहन क्रिया बा। जाने ही मुनोन नाम गंभाऊ मिया। बहुत ही भिन्नमार और प्रमळ स्वभाव है। मेने कहा “बाकीकी बराबर तो मुनरन हीरिब।

के बोनी परनु मुन तो मुम्हारी बराबर दूर करनी चाहिये न ? बापुजी और बाकी केवा करनमें मेरी बराबर करन-आन दूर हो जायपी।

हम बीनामें वायका बटबाय हुआ। मुबारा मरु बर लड में बाके पास रह । मे ९ एक प्रमावहन। मुम्भावन या प्पारेलाकरकी करन करने पर ही मुभाया जाय। के बापुजीको केबासे रडे ताति किमें पर वायका ह्याता जाय न बरे।

अर नी बरिबान भय ही प्रभंता है कि हम नरुके बाके हमारी बाकी कि रने नरीबनी बरा के रिममे हमारा अंधन और नी बरवान ही जाय।

बाके अंतिम दिन

आवासीय महक पूना
१४-१-४४

आमकल सामग्री मुकाबलियोंके आनेके कारण बा रोज बा र कम बुनराती बास्पीकि रामायण पूरी करनेके बाद भायवत मुन्ती। अंक बा र तो सारी भायवतका पारायण हो गया बा। परंतु कुछ पूर भाय में छापी भावार्थ बाको समझा नहीं सकती थी किस्किने सुधीकाबहन पढ़ने लगी।

पिछले बार-बार दिनेसे अपरोमठ कारणसे पारायण कम रहा वह बाको लटकाता बा। बाब अन्होंने मुझे कहा सुधीकासे कह दे कि वह मुझ ही बजे आकर पारायण गुना जाय। परंतु वो कम सुधीकाबहन राधिके आनरके मारे ही रही थी किस्किने फिर मैं ही पढ़ना शुरू किया। यद्यपि सुधीकाबहनसे मुननेमें अन्हें अधिक रस आता बा फिर भी मुझसे वह काम बच जाता बा। किस्किने अन्होंने मुझसे कहा तू कौभी कम देखत वर्षाका बॉमटरका काम बोज ही कर लकेगी? परंतु भायवत तो पढ़ ही सकती है। किस्किने मुझसे मा प्रमाण जो काम हो सकता हो वह काम सुधीकाको छीपना बुझना बोसा बडाना तू।

यद्यपि सुधीकाबहनको किस् बातका कुछ रहा कि मैंने अन्हें मोलेने नहीं प्रजाया किस्किने बाकी किस् मैबासे वे बचिठ रही परंतु कम परत ग्याहा भार अंतर बातका बाको मन्तोय हुआ।

मैं भायवत मता कभी तो बात पूजा बाब तो अकर अर्कान्त ह न यह प्रोहार मैं याद नहीं गया किस्के अन्होंने काम ला परंतु अर बातासे अर्कचित रकनी मीनर तीर पर कहा

“अैसे स्पीहार मुझे पाद दिखानेका विषय कर्तव्य था न? आज तो गापोंको नाम डालना चाहिये। काठियावाड़में बाकके पुष्पधानकी महिमा मानो बाढो है। बिबर महाराजजोपोमें भी तिळमुड़का रिवाज हुआ है। यह तु कब सीखेगो? या महासे सीखो बाकर तिळके अद्दू बना डाल (तिळ मंगवा रख ब)।”

मैं सीखी बाकर तिळके अद्दू बनाए ज्यो। बापुजी कहेते थे कि बीसा खर्च हमें नहीं करना चाहिये परंतु बाको बुझी न करनेके असाध्य बखने दिया।

घामको प्रत्यक्ष कंठी और मिपाहीको बान बनने हाबोंसे बक-बक तिळका अद्दू दिया। जो बपजी संभ्रमणिकी मैं कहां जीपी रहूंगी? यह माखिरी है।”

बाका स्वास्थ्य बहुत ही गामूक हो गया है। विस्तरके पाठ दो बनोंकी अपस्थिति अगमग हुमेया ही चाहिये।

बाकसे ही बापुजीने रातको बायलकी मारिया बाब थी। अंक रात ९ से २ बजे तक नुमीलाबहल और २ से ७ तक मैं और अंक रात ९ से २ तक प्यारेलाकजी और २ से ७ तक प्रमावतीबहल ठाकि किनी पर अकरतसे ब्याबा बाज न पड़े।

बागाना महक पूजा

२९-१-४४

बाके स्वास्थ्यमें कोमी काम फल नहीं है। अब मुलाकाती बानी बपनी बारीके अनुमार बाठे रहते है। रोमकी तरह नाम बक रहा है।

बाज स्वानम्न-विषय हीनके कारण हम सबने अपुबाम दिया और नियमानुसार अपना कामा कीदियोंको दिया।

घामकी अजबबदन हुआ। डॉ गिरडरने अजबबदन कराया।

अब मुचा रहे हमारा सारे जहासे अच्छा हिम्बोला हुआय और अम्बेमाठरम् के तील पील पाव गब। बिनके बाद बापुजीने जो प्रतिज्ञा (हिम्बोमें) फिरसे की मुझे बिलिठ काने डॉ गिरडरने पड़ा। यह बिलिठ प्रकार है

हिन्दुस्तान सख बाँर अहिंसाके रास्तेके समीकी समी बाँर हर मानीमें पूरी बाबाकी ले यह मेरा बिन्दपीका मकसद है और बरधोसि रखा है। मेरे बिध मकसदको पूरा करनेके बिधे में स्वतंत्रता-दिनकी बाँरहणी बरधी पर बाब किसे बिकरार करता हूँ कि यह न दिखे ठक ठक में न तो बुर चीन बूया बाँर न बिन पर मेरा कुछ जो बरर है बुरूँ चीन सिने दूना। मैं बूध महान बीस्वरो अकितठे बिधि बाँरसे किसीने नहीं देता और बिधे इन पाँड अस्थाह परमात्मा बँधे परिचित नामसे पुकारते है प्रार्थना करता हूँ कि मेरे बिध बिकरारको पार बूतारनम यह मुझ मदद दे।

रातको मेरा २ से ६ बजे तक जागरण हुआ बा बिधकिसे ९ बजे बापूबाने मुझ फिर सोनेको कहा। ९ से ८ तक में सोयी। बापूबाने कहा जो जागनेबाके है बुरूँ किसी भी तरह समय निकाल कर बागे-पीछ तीर से ही लेनी बाहिने तमी के देना कर सकेंगे।

बाबाकी महक पुना

१०-१-४४

बाब तो बाकी तबीयत बहुत ही सराब रही। बमेका बहुत जोर बा बूध पर बापूबीका मीन थी बा।

दोपहरको कनुमाजी आय। ७ बजे तक रहे। मेरी और मुसीबा बहनकी जागनेकी रात थी। हम दोनों बदन-बपने समयमें बाकी मजन मुनाय। सारी रात मजन बुन और गीताजीके बापूबने अम्पानके बनेके सुनातकी ही माग बा बार बार करती रही। बाबकी-सी सराब रात थी बभी तक बक भी नहीं गयी होयी। बापूबाने बाँर रतबाप बूबा रखा है।

बैयो बिधति हाँके कारण बापूबीने बा हाँकी जानेबाकी बाँर दिनशा मनेबाकी मापके बारेमें बके पर सरकारकी सिखा बा। परन्तु बभी तब बमबा बूतर न मिल्नेके कारण बूतर पर बिखा कि

बीमारकी हाकड बहुत खपव हे और जुनकी सेवा करनेबासे केवल चार ही बाबनी हें रातको हर तीसरे दिन ब्रेक साव हो जनोंको काम करना पड़ता है और दिनमें तो चारोंको काम करना पड़ता है। अब बीमारका भी बीरब टूट गया है वह पूछती ही रहती ह कि डॉ. दिनसा अब बायेंने ?

१ अभीके निम्ने डॉ. दिनसा महेठाकी सेवामें निक सकेंगी ?

२ मुत्ताकासके समय सेबाके निम्ने मौजूब रहनेवालोंकी संख्याका प्रतिबंध दूर हो सकेपा ?

म बिजगा ही चाहता हूं कि यह कहनेका मौका न बाये कि राहत बेरसे मिली। और यह चाहता हूं कि अपरोक्त स्पष्टीकरण जल्दी मिलें।

द्विन दिनों किमीको ब्रेक दिनिकी भी कुरंत नहीं रहती। सब मधीनकी तरह काम करते रहते हैं। बाकी बीमारीके कारण बाताबरब खूब संभार बन गया है।

बाबासा महल पूना

१-२-४४

बाब कनुमाजीको पू बाकी सेवाके निम्ने जानेकी मंजूरी मिल सती। हे रातको ही बा नये और डॉ. गिस्डर और भुपीला कहनेने सबकी बाकायदा इप्टी लगा बी। मेरी रातको जानेकी इप्टी मिलकुल हटा बी क्योंकि मुझे बा और बापुसो दोनोंका खुदकर काम करना होता है। परन्तु यह गया करवबब मुख्यत मेरी जासीको बचानेके निम्ने बा यद्यपि मुझे यह कारण बताया गया कि "तबी यदि रातको जानेका बापह रहें तो हमें खिलाबबा कीन ? सो कहकर डॉ. गिस्डरने अपने स्वभावके अनुसार मुझे बताकर समाप्त किया।

द्विम प्रकार मेरी इप्टी जरी मुबह ५ म ९, बोंपहरकी १ म ३ और ताबकी ९ म । रातको ब्रेक दिन भुपीलाकहन तथा कनुमाजी

बाने दुरंत गीतार्थीके १२ वें अध्यायके दसौक मुननेकी जिञ्जा प्रमट की। बाबूजीने १२ वां अध्याय सुनाया। बाबूमें बुद्धे लटका कि बाबूजीकी नीर बियकेगी। भिमसिन्हे बुद्धेने बाबूजीस से जानेकी कहा। मुझे अपने पास ही रहनेकी कहा। डॉ गिस्वर जीर मुसीकाबहुत भिस बुद्धेबुनमें से कि किस तरह बाबू रहत पहुंचामी जाय। कनुमाजीने गीतार्थ ११ वां और वा अध्याय और मजम मुननेके बाद बाने बुद्धे मीनेकी कहा।

सेक घर रिकार्ड पर नीचेके बहुत प्रिय मजम मुने। बाबू बुद्धे लया कि रिकार्ड बनेसे से बाबूजीकी नीरमें अरुल पड़ेमा भिससिन्हे घामोफेल बद करवा दिया। और जीम स्वरसे य मजम मुबह नक मुने

बाबू कहा तदि चरन तिहारे	
जिनका नाम पठित बाबन है	
जिसे दौल अति प्यारे	बाबू०
तन है डार मन है डार	
दे डार वा कुछ वा नार	बाबू
दिल चरमनका भिया सहाया	
बहु है मू ही क्या [स्माग	बाबू

* * *

बापा डार मुम्हारे, रया	
बापा डार मुम्हारे	
अब अब नीर परी मस्तन पर,	
मुनने ही दुल दारे रया	
मुनने ही दुल दारे।	बापा०
मनमें टाया बहन अकता	
दीरक कीन बुम्हारे? रया	
दीरक कीन बुम्हारे?	बापा०

मैया मोरी बीच भंवरने

तू ही पार बुतारे, रामा

तू ही पार बुतारे। बाबा

मिस हुसरे भजनका बुझौने बुझेस किया कि हे भयवान !
मिस भजनके अनुहार मेरी मैनाको तू पार बुतार रे। मुझसे तो
किसीकी भी सेवा नहीं हो सकी। प्रभु ! तुझसे भेक ही प्रार्थना है
कि महादेवकी तरह बाबूजीकी गाँवमें मुझे भी बुलाना।

बा राठको तीन छाड़े तीन बजकी नीरख साँतमें भीरवरसे
मिस प्रकार कबज प्राप्त कर रही थीं। हमके मारे सोया नहीं बाठा
बा। बुनका सिर मेरी बोधन था। मैं छाठी पर धीरे धीरे हाथ डेर
रही थी। हुसरी बजकन ठीकीसे चल रही थी। साँसकी बाबाज
ना रही थी।

अतन बजक हाँठन भी भेकाभेक बुझौने दूट हुए स्वर्ने
गागा धक किया

हे गोविन्द हे गोपाल हे गोविन्द राखी करन
अर तो जीवन हारे।

नीर पियन हेतु गयो सिन्धके किनारे,
मिबु बोध बनव चाह करन करि पछारे।
चार प्रहर मुँड भयो म भयो मसचारे
नाक कान डबन लग्य कृष्णकी पुकारे।
हारनाम शब्द भयो धीर हुज मारे
पल बक बडा पछ बरुड म मियारे।
मूर कह भ्याम मुनो शरन ह निहाणे
अरना बार पार गयो मरक बुसाने।

बा पर भजन अरन बनन रोगके विरुद्ध बुँड करी करी
मा मरुके मर गे राया पा अतनन मुनिमाचहन बा बनी।
बाबा ना । लम ना। अर बुँड रीच मानव हुज । परतु
बा करन जगा मीना मु अर मारी गी मरी बटी बीमार

हो जायगी। सब मेरे लिये परेधान होते हो। मेरी तबीयत बरा ठीक है तू सी चा।

मुसीबावहल बोलो बा! हमसे कहिये न हम आपको मजन मुनायेगी। आपकी बोलनेका मज नहीं करना चाहिये।

“जिसन कोरी हजं नही। मजबाकके नामत भी कहीं बकाबट जाती है? तुम कोय कहा मिन्कार करती हो? परंतु बज्जा समता है किसीके बनी बनी बोलो। मनु, कनु सबीने बापी बापीसे बर तक मुझे मुनाय ही है न?”

चार बदन पर बापुनके झुठनेका समय हुआ। पार्थना बाके पास की। बीठा-मारामकें सब बज्जे बरा नीदका शोका बा गया जिसके पाठ पीयो बजाबसे किया। सापी रातमें साड़े चार बज बार कुछ राति मिल।

ये सवा पांच बजे तक रही सवा पांच बजे मजाबहलकी गोदमें बाका छिर बीरेसे रज दिया। वे सोती ही रही।

सवा पांचसे साड़े छ तक बापुनीन मूस छो जानेकी कहा। साड़े छ बज बूमने जाते पहले बापुनी मूस झूठा मज।

बापुनी बाकी देखरेल करने हुंने हज सबकी बधिक देखरेल रखते हैं। सबकी अपने पीठ खिलाने मुकाम और झुटाने बेती सापी छोटी छोटी बागोंका वे ध्यान रखते हैं। बापुनी कहा करते हैं कि कोरी भी बामार हो जायगा ती मुंस सबाके अनीम्य सबमुंवा। जिस लज बापुनीका ती बादेन हीना मूस पर तुरत अमल करना ही पड़ना पा। अमके बिकट कोरी भी बनीक बनपठ मानी जाती थी।

बादकी रात बड़े संघटकी रात नहीं जायपी। बा बाल-बाल बनी। रातमें सबकी यह डर लग रहा बा कि सापर कुछ हो जायगा। परंतु बीरबर-इत्तान कुछ तबीयत मुचपी।

बापुनीन अना मोरत बहुत बज कर जाता है और मुकाम हुआ नाग पाच पिये हुंने बागम अंक मीन मकलम और हज सपी

बिच्छटा बनवा बाकरी है। साकका कचुमर बनवा केते है। बिच्छिजे
जानेमें बहुत बेर नही छनती। बर मिमिटमें ही पी केते है।

फलोंमें ठीक छोले तुम्हें संतरे (जुनको छीकनेमें मेष या बी
छोले मुसका कस्त जाया है बिच्छिजे) पिछे हो दिखि बन्द का
दिने है। और जुनके बजाम बोरहरको रस पीना पुरू किया है।
सामको केवल बाठ बीस दूध और बोक बीस गुड़ ही केते है।

मानाथा महक पूना

१२-२-४४

बहुत समयसे पू बाकी किसी ऐसी बंधते बिच्छाज करणकी
बिच्छा होनेके कारण कल बापुजीने बिछ बारेमें सरकारको पत्र लिखा।
कोभी मुत्त नही जाया बिच्छिजे बोक कड़ा पत्र लिखा। परंतु
सामको ही पत्र जानेसे पहले बंध हुकीम या बकरी डॉक्टरों मरबकी
बात बनके डॉक्टर कर्नल घाह पर छोड़ हो जाने पर मुझे
छोन करके पूनाके बंध में जोषीको बुलवाया।

मुझेन पू बाकी बाध करके बवा ती बी परंतु राठकी
बंधनी बंध गयी। और वे राठकी अकारक बोक ही बात कहन
कयी मस मेरे कमरेमें छ बलो मेरे पल्ल पर मुका हो। बिछ
तरह वे कर्मी नही बोला बी। बापुजी सुधीछाबहन जो भी कोभी
बनके पास होना मसमे पही कहनी। परंतु बल्लमें पाच बजके करीम
मो गयी।

तो बंध डॉ गिम्बर बाके पास जाये। जुनमे बाने कड़ा
पत्री बंधना बंध बनी रं। मुत्त बंधक बवा नही केनी। परंतु
मसाकाबहनन रता हा बाध दिन देन में कोभी काम नही होया
तो या रण। और बन्धुका बनकी बवा के रही है बिच्छिजे
बचका या जानका पन्ध मानन ब। वे बाधना और सावधानीपूर्वक
बिच बानका बागमा बर रहि ब कि मुझे दिनी भी बवारने बग
लिख। परंतु बनकी कहनन पन्ध लिख हुयी।

बाबासाहि महस पुना

१९-२-४४

मात्र स काहोरस बाब हुम पठित सिधयमाकी बवा घुसु हुमो।
 मात्र दिन भर तबास्त बहो अगुडा रही। हुमे क्या कि बिग बेव
 राबको बबरम मध प्राप्त होगा। घामकी तो बा कहन छोपी
 घुम बाकहुप्पके पास ले चलो। मीठबहन अरने कमरेम बाकहुप्प
 रगडी बा और बा अन्धा हाकवमे बहा रोम बापी बी। बाको
 प हुनबाकी कुस्मोमे बिठाकर मे बहा के बनी। बापुकी मुछीभाबहन
 और प्रभाबनीबहन सब घुम छे व। और बा बाकहुप्पकी
 प्रार्थनाम लोल हो मनी बों। यह देखकर बापुकी सुपर भा। बापुकीको
 देखकर बा मुस्कणकर कहन लव। बाप घुमन बाभिन
 न? घुमन घुमन यहा क्यों आ गर? बापुका हंस पड और कहन
 लम "बोल अर तिह मा सिभार?"

कुठ डेर यो विनोर करके बापुको फिर बही चक्कर बनाने
 लने। प्रार्थनामे पहले बाब मुप्पकीके पास दिवा जलवाया। प्रार्थना
 भी बहुत दिन बाद अछी तरह की।

परन्तु रातको फिर बेबना घुसु हुमी। अक बर मुर्पाकारहनन
 बटनी साहबको बवाया और बेव सिधयमाकी फोन किया। अन्हाने
 आकर अर बोल बी। मरकारने बेवरीको रातको बाबासाहि महसमे
 रहनकी विशयन लही बी बी। परन्तु अुनका बिलाअ चल गहा या
 बिनिअके यह तो केमे बहा या मरुता बा कि हुवाय बर अुनकी अरुल
 पड जावनी? बिनिअके बेवरी एम दरबारके बाहर मोटरमे लो
 गर ठारि अरुल पडन पर मुगन बा मरे।

बाबासाहि महस पुना

१९-२-४४

बरला बीना बरिबर्षन बाबम हुवा बा बीनी ता लबीजन लही
 रही। परन्तु मबना मानवा बा कि नान दिन क्याकार बवा बरनी

* बापुका बाबब है कि बेबासेबा सेकी तरह नामना
 बरोग या बिबागकी तरह हार मान लोनी?

ही चाहिये। जिस प्रकार आज तीसरा दिन है। बेचारे बेचरी रातको ठंडमें बरबातें पर सो रहते हैं और दिनमें यहीं रहते हैं। किसी बन्दी बहरत होने पर ही रातमें जाते हैं। बाहर ठंडमें सोनेसे मुंह भी कुछ जुकाम-सा ही पया है।

आज मुझे बाहर सोनेकी तीसरी रात थी। शिवसर्माजीको बचानेमें भी दूसरे चार जनोंकी नीब दिगड़ती। पहले ब्रेक सिगाही जापता यह बसाधारको बगाठा बसाधार कटेकी साहबको बगाकर कुर्ची सेता बरबात पर रातको पहरेके निम्ने रहनेवाले सार्बष्ट बंध रहे हो तो वे भी जायते तब कही शिवसर्माजीको बहर जाया जाता। रोक्की तरह आज रातको साढ़े बाय्ह बने राठे स्वास्थमें परिकर्तन मामूम हुआ और मुपरोक्त विविधे बेचरीको बुलाना पडा।

बेचरीने साढ़े बाय्ह बने बन्दर आकर बाकी बोली थी। मुंह परा भीरम मामूम हुआ तो डेढ़ेक बने सोनेके निम्ने बर बाबके बाहर जाट बने। मुफके बरबातके बाहर बने जानके बाब पुरन सिगाहीने फिर ताका जगा दिया। और बसाधारने कुर्ची कटेकी साहबको सुपुर्ब की तब वे मुपर सोने जा सके।

बापूजीको जिस बेदनामें नीब नहीं आयी। हो बने मुठे। प्यारेधालक को बुलाया। बापूजीकी बाबस्वक कापवात देकर बुनहोने कहा मुझे बाप सेने सेट डिबाबिये न? बापूजीन बिनकार कर दिया। स्वय ही ब्रेक कडा पन सिडा। मुसम मुपरोक्त स्थितिका बर्षन किया और सबको कितना कष्ट होता है यह बताकर लिखा कि

मे जानता हू कि जिस स्थितिको दूर करनेका मुषाब बकर है। तब मेरी पत्नीके निम्ने मारी राठ ब्यर्ष बितने जोनोंकी बाबन रहना पडे और यह भी ब्रेक रातके निम्ने नहीं बस्कि अनिश्चन नामके निम्ने यह मुझे असह्य लगाटा है। सुधीजा-बहन और डा निरबर डॉक्टर है। परन्तु ये बेला बिबाब हुमरी ही तरहके होठ है जिसनिम्ने ये जीन बिधमें सहायक

नहीं हो सकते। जिससे बीमार और जिसका अिकाम हो रहा हो उसके साथ कराचित् अनजाने अन्धाम हो सकता है। जिस कारण बीमारके भक्तिके निम्ने जब तक बीघकी बसा हो रही है तब तक अन्हें रात-दिन नहीं छुन दिया जाय। यदि सरकार अंसा न कर सके तो बीमारको पीठेक पर छोड़ दिया जाय। और सरकार अंसा भी न कर सकनी हा और बीमारके पठिकी हैसिमतसे मे सरकारमे अुसकी जिञ्जानुसार धार-गभाळ तथा अिकामकी सुविधा प्राप्त न कर सक तो मेरी यह मांग है कि सरकार अरनी पध्दतके किसी और स्थान पर मुझ अेज है। बीमार को बेरना अनुभव कर रहो है अुसका मुझे अेक निश्चिन्त घाथी नहीं बनाता चाहिये।

अह पत्र रातके २ बजे कस्तूरबाके किञ्चिअके पास बैठकर लिख रहा हू। परंतु अह तो अब जीवन और मृत्युके बीच मूल रही है और अरि कल (१७ फरवरीको) रात तक बीघकीके बारेमें आप मतापअनक अुत्तर नहीं देंगे तो न अिकाम अन्ध कर दिया।

रातको १५ बजे प्यारेनाअजीने अिगे टाअिय रिखा। आरमें प्रार्थना हुअी। अरुअी अमअय अारी रात आने हैं। आकी जीवन मोका अमआरमें है। मे प्रअुन अेक ही प्रार्थना करती हू कि प्रअु यह अरुअक बेरना देखी नहीं जानी। मुझे बी भी करना हा अस्वी कर। नत्र कुछ ठेगे हाअमें है।

आपाना अहत पूना

१०-२-४४

अरुअे करे पत्रका अतर मनोअनक आया और आअने अर तक अरुअत हो तब तक बीघकीकी अंअर रहनेकी अिआअन है ही अरनी।

मोरकी दराके अमअमे आ दिनमें आगिमे लेगी ही अरनी। अंअ अुअर नहीं अटा अरनी थी अिअना अगा था। अर अर ती नुआताअहनने अरुअरनी अघाअर नुअरके तीर पर नुअीअना अानी

बुद्धे दिया। मुक्तिरूपे ही ही चम्मच पिबे और बोली "मूत्रे घातिसे सोने दे । परंतु हाउउ अण्ठी माकूम महीं होती। वरुं पर मूत्रम बिबायी बेती है। घरीरमें सक्रि हो नहीं तब बेचारी कांठी क्या जोर मारे? परंतु बे गसक जिन्ह अण्ठ महीं माकूम होतै अती बात डॉ. गिस्टर, मुसीलाबहन और बैचराजकी बातचीतसे मेरे कानों पर पड़ी। मेरे जाने पर मूत्र जोषोंने बसों बंद कर दी।

डॉ. गिस्टरसे मने पूछा मुझे कहिये तो सही कि बाकी तबीयत कैसी है?

प्रेमसे मेरे सिर पर हाथ रखकर डॉक्टर साहब कहने लगे तु बेचारी है न कि बा पहले सो ही नहीं सकती थी लेकिन अब घातिसे सो रही है? जिसमें यी कोबी रोनेकी बात है?" बैसा कहकर मुझे बाहर भेज दिया।

लेकिन मूत्रसे कुछ छियाबा बा रहा है बैसी गन्ध मुझे बाती ही रहनी थी। फिर भी डाक्टर साहबकी बातसे आश्वासन पाकर मेने मान लिया कि बात सच्ची है बीमार बाबमी जितना सोये मूत्रना ही अण्ठा है। जिसकिन्न अब बा अण्ठी हो चामयी। मूत्र बाबात न पहुंच और काममें बिज्ज न जाये जिसकिने बे प्रेम पूर्वक अरुण अरुण रीतिसे कहत रहे बेटो बा ठीक है अथवा बोरी ठीक नहीं है। अण्ठी हो चामयी। मेरे बैसा अनुभव बहुताको हुआ होगा। बिपीकिन्न लोग कहत है कि डॉक्टर तो बर नक मनस्य मर नहीं जाना तब तक कहत नहीं है।

बाबाबा महल पूना

१८-२-१९४४

बचर बैचराज नाम पूनाक बाजारमें स्वयं दुककर कारकि क्रिय दबा नाम। परंतु अन्होन गिरासा बनस्य ली। बापुजीसे कहा कि बिज्जना हो सका किया परंतु कोबी फर्क नहीं पडा। अब यदि डॉ. मुसीलाबहन या गिस्टर साहबकी काबी मया मुपाव मुझे तो कर।

वे बेचारे अितना कहकर बदन हो गये। परंतु बाबूजी बोले
 भाप क्या करें? आपन भरणक प्रबल किया। एककीफ मुठानमें
 कमर नहीं रखी। मनुष्य अकिडमर प्रबल ही कर एकटा हूँ एक
 भीतरक अवीन हूँ।”

अब बाबूजीकी अिच्छा बाबा सर्वथा रामनाम पर रखनेकी थी।
 परंतु बीनो डॉक्टर माननेवाले नहीं थे। अुम्होंन बोपहूका ठेअर्मेनका
 अिअंगन दिया। अुमने बाको कुछ फायदा-ना जान पड़ा। सुत्तर
 था। अिबीन-ना सनता था। अेक बार अिअंगनमें काम माअुम हुआ
 अिसअिअे रातमें सुनप अभाया। परंतु सुअीलाअहन कह रहा थी कि
 अिअर काम नहीं दिअामी देता। बेअमी अमी तक यही ह। अुनको
 दवाका भी अुपयोग किया जाता हूँ। परंतु अब तक अकेले बेअमा
 ही नह कुछ करते थे अुनके अजाय दो डॉक्टर और बेअगने ठाणी
 अिलकर अिअर कर रहे ह।

बाबाका महल पूजा

२०-२-१९४

अब तो गारी रात का अांसीअनही नहीं अामकर सो
 रही। परंतु नहरे सुअरन लगी ह राम! ह राम! अब कहा
 अामू? बाबूजी भाप। अगुअन अिर पर ह्राअ कर ही गानन हुआ
 और भी राम अमी अुनमें अुनमें यह अदुआअ्यायदा अिराई
 मुना।

सुअीलाअहनन गतही अया थी। भी अब नह सीअी। अुनकर
 अानुन-अुअे अिअ और अते बाबा लुअानकी अया। अर बाबा अेअिअ
 अरने अक दरावी अर अिया।

परंतु अान अान अेनी अेनी अिअ रात ही नहीं। अअन अीअ-
 गाअ और अन ती गतअ अन ही यह अ। अब ना बा भी दया
 लेनमे अिअर कर रही हूँ। बाबूअंअे भी अया अि अब अिसके
 अिअ राअनाअरी ही अया अीअ हूँ। अनी अिअय और गअ नीअ
 अर कर दो। अुर अये अो अिनीमें अान्ति हूँ। बाबूजी ती अरना

सब काम काज बन्द करके बाकी सेवा करनेमें ही लीन हो गये हैं। अधिकतर समय कुनके पास बैठनेमें ही बिताते हैं। बाकी साफ करनेमें बार बार छोटे रूमस सराब होते थे जिन्हें हमने से कोजी मौजूद न हो तो बापूजी स्वयं गोते थे।

२८

बाका अवसान

महाधिबराधि

महानिर्वाण दिवस

२२-२-५४

कल बन्दराम काका जा गये। परन्तु बायका दिन मयकर हैं भिन्नी आनाही सबके मनमें थी। सब रातभर जाने थे। प्रातः वा सुर्जाभाबहनकी सोदने थी। बापूजी अपने दैनिक मोचनकी केंदरीय लिख रहे थे। मैं बाके पैर दबा रही थी। वे सुर्जाभाबहनसे कहने लगी मुझ बापूजीके कमरेमें ले चलो। बिस पर सुर्जाभाबहनने मुझे भिचारेसे समझाया कि डा. कुमलेकी तैबारी कर रही है पू उर और बाहर बगीच थे।

बापूजी केंदरीय काममें लिख ही चुके थे। कटली साहब कोजी काबज लेकर प्रातः (मुझ याद नहीं यह काबज किस बारेमें था)। परन्तु बापूजीका बड़ा बर्षिक मुझे अपना लक्ष्य बड़ा शब्द मानता है। मुझ या जिन पर जतनाका विरवाच है मुझे बेतमें बन्द करके वह बेचका हर्गिज नहीं दबा सकता। यदि जतनाने सन्ने बिलसे विरवाच प्रकट किया जागा तो मैं महा लप बाभूगा तो भी अपना काम पूरा हुआ समझूंगा। परन्तु मुझ स्वराज्य सेनके लिखे बीगा तो है ही। मैं जोनका प्रयत्न भी कर रहा हू। यह केंदरीयका हिताव लिखना भी मेरे न नके प्रयत्नका एक भाग है। बिसलिसे बाकी बीमारीमें और सब कुछ काइ दिया परन्तु यह काम नहीं छोड़ा।

भितना कहकर बापूजी मुँह धोकर बाके पान पये। सुधीलाबहन मूठी बीर में बहा बैठी। बापूजीने कहा "ये टहलने जाऊँ न?" जाने मना कर दिया। रोब बन्दू कितनी भी तकलीफ़ बर्बा न हो वे बापूजीको टहलनसे मना नहीं करती थी। लेकिन आज मना कर दिया।

मेरी जबह बापूजी बैठे। रामपुत्र बिल्यावि हो रहा था। परंतु बापूजीकी मोहमें अन्ह बोड़ी पालि मिली। माघ बटे बाद बापूजीने बुबारा कहा अब में जाऊँ?

हे राम! अब कहा जाऊँ?

बापूजीने कहा जाना कहा? कहा राम से जाय बली।"

दस मिनट बाद जाने अडार्डी मीन परम पानी बीर महूर किया।

समयद दस बज बापूजीको छुट्टी मिली। बापूजी कहने लगे किमकुम न टहलू तो बीबाए पन जाऊँ भिमजिअ बोड़ा टहलना जम्मी है। सुधीलाबहन बहा बैठी। पूयति समय बापूजी कहने लगे अब बा बाट हँ समयकी महमान ह। मुदिरभने बीरिंग बने निरास ना निरास। बेयभा हँ किमर पायस बहु अस्तिम निडा केनी हँ। पाष बरार म्पावर रूप अय। पाष पाष दिनटमें डी गिस्टर जावर दग जाले। बापूजी पूयतर जम्मीसे मासिग और स्तानने निरास किये। रिउर बा रिभने बापूजीका पलन जानाय होनके बायस रिने हुबे बाणय केना भी अफ्रान बन्द बर दिया है। मंग बापूजीने कहा आज में पाशम जाऊँ नहीं लय?

बापूजी बरि पा तो बा बपुडी हो जाय लय किया जाय या बा समर्रके पाय परी जाय लय किया जाय। बबानमें समय लपाना ही पाहिन। न लाया जाय ना कुछ भी हानि नहीं परंतु अपबचरा पैटमें जाय तो मम रागिया ही पाहनी पड। भिमजिअ बबान हुबे पाष- बचुमयम दूग दानरर मन बापूजीका दिया खिरे वे पा लर।

बापूजी माड बाण बर बाके पान लर। लबका मह लपान हो गया या रि बा रिनी भी पाय परी जा लरनी ह। बेचान बाका

मेरे पिताजी और हरिदास काकाकी पुनियां या पत्नी थी। जिसलिये बापूजी बग देसकर आरामके लिये केट पय । मने बापूजीके पैरोमें भी मसा। बीस मिनट बापूजीने आराम किया। डेढ़ बजे कनुभाजीने कुछ फांगे लिये और देवदास काका गीतापाठ पूरा करके बाके पास प्रायं। बा खुनसे कहने लयी बेटा तूने मेरे लिये बहुत बन्ने खायं। रामदासका मना कर देना। यह बचाप बीमार है। यहाँ तक क्यों अने बीडायया जाय? तुम सब लूब सुखी रहो।

साठ तीन बजे देवदास काका मनाबक और तुलसीके पत्ते के माये। लिये पानके लिये दान मुह खोला। देवदास काकाने बोड़ा बक पिन्नाया और बा छान्त पई रहीं। साथे चार बजे फिर बापूजीकी तरफ देसकर वे कहने लयी मेरे लिये बहू खाने चाहिये। कुछ कैसा? हे भीरवर महो लमा करना अपनी भक्ति देना। दूसरे सबकी कामे वे खुन सभसे बा बोली कोभी कुछ न करना।

पाचरु बजे बाबू मुझसे कहने लयी बापूजीकी बोटलमें कुछ लतम हो रहा है। तूने हुसरा बनाया?

मन कहा हा बा मुह अगीठी पर ही है बनी तैबार हो जायया।

दल मेरे पाम लो बहुत सोय हे बापूजीके लूब-मुह (खाने) का अिल्लजाम करके तू मे खा लेना।

द्वितीया बापूज के हर तरहकी शिषामे रहने और मन्थन इनक दाना मनमके मोखलकी बारीक जांच रखनेका काम बान लयी गयी छाना। आज अलिये दिन भी बीमारी और मपबानन लहन लहन मन्थन बरानेन मुझ लसेत किया। दिन मनय व मन पिताज की पावन या। मुझसे बोली बरनुकलाल महा न तु जा।

जिन मन्थनहा अिल्लजाम अिलय बायमान श्राना भा मया बा। अिल्लजाम बापूज देवदास राका हा गिल्लन मुझ ल बहन प्यारीलाकजी वनल शाह म। लहन मन्थन मन अिलय बरान मगापूज वे कि अल्लजाम जिन बान या गयी।

मैं भीड़नाश्रममें गयी। मुड़ बना लेनके बाद मुझे ठंडा जलको पानमें रखा। बेचार मुसीबाबहनने मुझसे कुछ सामा नहीं वा भित्तिके बे खान खायी। और लोम भी खानवाले थे भित्तिके मने बिचर्ही कड़ी रोटी बौरा बनाया। और जिन दो चार लोयात्र धिय राधिका सुपचाय वा बनके किये अल्प मत्र पर फलाहार तैयार किया। सब कुछ तैयार करके सबको माह पान बने बुलवाया। सबके खा पीकर निपटठे-निपटठे माह छ बज गय। (आम तौर पर भी हम साइं छ बने म्याल कर लेने व।)

अभी तक पेनिभित्तिके भित्तिके देन न देनकी चर्चाका संत नही हुआ वा। बाठे-बाठे भी चार्ने हो रही थी कि पेनिभित्तिके सायद फाववा हो वा।

अन्तमें लमम मानेक बने मुसीबाबहनने मुझे भित्तिके मुझिया बुवाभनेका थी। मैं भित्तिके मुह पर अर्णम मुह रखा और घाम हो जानेस मुझके पान चुप-रीप करनकी तैयारा थी।

बिबर बापू चुप पी कर मुह बोले गये। स्नातकमें मुह बोकर बोडा भूमता वा। परनु प्यारेभित्तिके कमरेम देववास काका थे भित्तिके मुझे बलाम लम गये। मैं मा दिया अफानके भित्तिके स्नातककी मेरके खानेमें दिवागमार्गी देन गई, जहा यह भित्तिके संदर्भ चर्चा हो रहा थी। मत्र बेकारके मुसीबाबहनसे कहा आप की की हुयी बिबेस्नकी मुझिया तो कर्माम अवल बनी होयी। मैं तो भूत ही गयी। वे बोसी बापूजेल भित्तिके देनको मना कर दिया भित्तिके मने चुहा बुजा दिया है।

मेरे नाती पर बापूजके भित्तिके ही मत्र पड कि अब तैरी मरता हुयी माका मुझी बनी चुमीकी वाय? परनु प मत्र मुन न मुन कि मैं दिया अफानकी अस्वीम हामस बहामे चर्चा मयी। मैं दिया अफाया। आम दचम अयर्थाकरण कहा। प्रमावर्णबहन और मेरे पिताकी बनके वाय थे। भित्तिके बाके मार्ग मावबचाम माना जा बये। अह देना। बोसना चाली हीगी परनु कुछ बोच

नहीं मर्झी। अकामक कहा बापुजी । सुसीकाबहन था रही थी। बापुजीको याद करते ही अगुँ हुआ। बापुजी हंसते-हंसते आस । बहन अब तुम यह कहालु होता है न कि जितने सारे सबकियेकि आ जानसे मन तुम छोड दिया? मैं कहकर बापुजी मेरे पिताजीके स्थान पर बैठे। पीरे पीरे बाकि सिर पर हान फेर। बापुजीसे कहने कर्मी अब म आ रही ह। हने बहुत मुच-मुच भोग। मेरे किसे कोभी न राये। अब मुझे भागित है। जितना बोली कि सोस रुक गया। इनभायो फानो से रहे बे परंतु बापुजील रोक दिया और रामचन गामका बहा ।

हनु मर राजा राम राम राम सीठा राम राम राम गाने ला। राम रामके अन्तम स्वर मुने न मुन कि हो मितिमें बान बापुजी के कब पर सिर रखकर साराके सिधे नीर से ली ।

बापुजी क आलापे हो बूर बापुजीकी निकल पड़ी। मुन्हीन चम्मा अनाए दिया। मैं तो मुझके तरह बेसठी ही रह बनी। क्या तपभ पकड़की बाकी प्रसपूर्व आवाज अब सुनायी नहीं दग मनाए हा ही तपसे अिन प्रकार रुकको छोड़कर बला जाता ह यह दृश्य मरा अिन्दरीम पकला ही सा ।

बापुजी । हा मिति न स्वप्न हो बवे परंतु देवदास काकाका रहत लक नहा जाता था। माय बिलड हुम छोड पकवेकी धाति के बाक ही पकडकर दग कन्दन कन्दन लगे। असी हासठम हमारी निर क क्या न मन रहना अब हुनर बदीका एगोमें बर्षन न नक मजम न स न ह ।

उस पर मिति क न पा मशगिबगविधी थी। मंदिरीमें
 १ २ ३ ४ ५ ६ ७ ८ ९ १० ११ १२ १३ १४ १५ १६ १७ १८ १९ २०
 २१ २२ २३ २४ २५ २६ २७ २८ २९ ३० ३१ ३२ ३३ ३४ ३५ ३६ ३७ ३८ ३९ ४०
 ४१ ४२ ४३ ४४ ४५ ४६ ४७ ४८ ४९ ५० ५१ ५२ ५३ ५४ ५५ ५६ ५७ ५८ ५९ ६०
 ६१ ६२ ६३ ६४ ६५ ६६ ६७ ६८ ६९ ७० ७१ ७२ ७३ ७४ ७५ ७६ ७७ ७८ ७९ ८०
 ८१ ८२ ८३ ८४ ८५ ८६ ८७ ८८ ८९ ९० ९१ ९२ ९३ ९४ ९५ ९६ ९७ ९८ ९९ १००

हैं। तू रोना बैठ जायगी तो बा पो चार्ली भी मो नहीं हो सकेगा। तब खुमकी आत्माको शान्ति कैस मिलेगी? मुझ भुठायो। दरवाजे बाहर भी बहुत रिक्तदार थ परंतु सरकारी हुक्मक बिना भीतर कैस जाँत?

बाके शरकी मनवापारमें लामे। बागाम्बा महम्म बाबी सबसे बाके सिरके बाल में ही खोनी और कबा भा म हा बानी थी। बाब में अनके बाल पिशाचाकीक माबुमने का लरी बार पोथ। महम्मामने और लाम भी मेरे साथ थ। बाल घोकर तिम कमरेमें बाने अतिम दवात भिया खुमकी सफात्रीम कनुमाकीका हथ बंगाने बनी। गोमुख और गादरमे जमदू भोगकर पबित्र की। मीराबहनने तिमम भागम गव रहु अनके पूनमे खोगल बनाकर गिरनी औरके हिस्सेमें कृशोक छ बनाया और देरोकी तरफके हिस्सेम अस्थिक बनाया।

१ ६० में बापुकीक हाथके मूनकी मो मारी पहनकर अग्निदेवही म हू न बन जानकी अतिम त्रिज्जा बान प्रस्ट की थी और मुझे नीती थी बरो मारी मेने बारने हुआ मुझ बाबाकी। बरा मुझ ममा ममव यह अविष्य दीन ममा हया कि यह गारी के मने ही हया जोइनी? बरा त्रिनीलिन अग्निने मम बर मीरा हाणी?

उही प्रेमदीन बहन टाहनीन ममाअनने मियात्री हुई। एक गारी बर। थी। बर भी बांश दी बनी।

मनीरबारी (ममनन ममाबा माबाहा पनी) मे बरो पुगली मानेकी पृ। बनी हुकी बुटिया और बनी बनानी बनी मत्री पहनात्रीकीर बु टोके बसाप पू बापुन हथ न मूनने नान बपुत्री पर बथ। तिमने बार गवना बरा मेटा दिश बर माबुमने जगह बबिब बन ली बनी थी।

लाल दिवाला मार गारी पहनावन दवाक बरा बाके अनके कल गूब बबाक पर थ न और कुदुमना केा दिया पानमें बांदा लिया और अवरनी गया। बने केहरे पर प्रेमा खूने मत्र बनक रूा बा मारा माधान् जगम्बा ही।

परंतु पत्नी पर मोड़ी तब रुचमुख यह जयाल हुआ कि नहीं
 बर बाके पास मोतकी नहा मिश्या। विछल कभी विनीधि में
 रातकी समय बाके गाब ही छाती थी। आज अकेली रह
 गयीं! मेरे पास मुसोलाबहन माझी। हम दोनों बंकसी बुकी थी।
 फिर मैं बुन्दोत मुझ रूप प्यारसे मुझजाया। बरंतु कभी-कभी जब
 कोको जाबक बाबबासन बन आना है तब अधिक जायात समता
 है। बहा ही हुआ। मुसोलाबहन और मैं एक बुरसे मिपटकर
 रो रही था। बो-शात्री बर बापूरी पास। मुझ अपने पास बुलाया
 और बड़ प्रमसे बीबकर कहा। धान मेरे सामन ठेरी बहूष बार
 विचारिया की ह। बा कहो नहा गयो। नू सों रोयमी तो ठेरा मुझसे
 रोम मोना पडना बकार हा जापगा। तुझसे बाकी बही जाघा भी
 ठेरी मके बजाय बा मिला और बाके बरल भव मे है। नू मुझ
 अपना ना समल क। बनी सबेरे बहुत काम करना है। बिब बरल मुझ
 मर समजाबुधा वा जावरण होना। भिन्किने धान्तिसे बाबा नाम
 सेक ना जापगे तो मैं भी तो छपगा।

मुझ पार नहीं कि बापूरी पास में जब सी गयी। छठ बार
 बर प्रार्थनाके मन जयाया लगे बछ।

२६

अस्येष्टि

जायाला मईल पूरा

२१-१-४४

मुझकी प्रार्थनाके सब बापूरीन मुन जयाया। निरपके अनुहार
 प्रार्थना की। प्रार्थनाक बाद बापूरीन सब पास बर परल पानी और
 गार सिवा। नाइ गन सब जयाया रन किया।

समय नाइ धान बरमे लोड भंजर आ वा रहे प। पूनाके
 नागरिकोंको तो दरबार पर बरी मोड लगी हुयी थी। धान भी बर
 तब बन्दबाके लही और सबपी पूनभावा सेकर आ पडुब। धारा

सब रफ-बिरसे सुवर्धित फूलोंसे ढंका गया किबल बेहरा ही बसा रखा गया था।

साठे गी बज प्राणना बध्यबजन का मजन भीर पीठाका बारहवा अम्पाम पड किय जानेके बाद हम सबने अक बार बाको अठिम प्रणाम किय और सबको बाहर बरामदेमें लाने।

बहा पुरोहितजीने बोर्डोसी बासिक क्रिया कराबी और बेह पर अठिम माथा-नामघो रखी। अित कामकीमें जी टिठ नारियल और गीमागक चिह्न-स्वरूप पाच हरे कापकी बूझियां रखवाबी। सबको रामरत्नके माथ चिता-स्वान पर से बाया घसा। सबसे पहले बापूजीन हाथ ध्नाया और मुसके बाद बारी बारीसे सबने बाको कंठ पर सेनका पुष्पधाम लिबा। मेरे हाथमें पुरोहितजीन कुंडूम और हल्दीकी ग्वाबी दी ब बिन्हु में बाके पछ पीछ छाटती हुबी गयी।

शान्तिदुभारमाजीन अदनकी लकड़ीके लिखे बापूजीसे बून बाबह किया। परन्तु बापूजी बोले बा गी नरै बकी पर्नी थी। गरीब बाबमी अ नी पर्नीके लिख अदनकी लकड़ी बहामे का ककता है? तुम मुस अदनकी पैराग तो परन्तु मज बह प ल गहो। हा सत्कार केँ तो बाग अन्वय ब बा मन्कारक केँ है अत जमे सरकारन सेवा-भुषुपाकी महाधना री और मेन थी बंस ही अन्वन जी से लेता। ऐसे सिबाधानमें मैं सिद्धाना भावक म रहता ह परन्तु यहा महाममें रहता हूँ।

उस बात क उ नानवन मुन भी। अन्नेन बहा कि मेरे पास अदनक लकड़ी है। (अ गाना म लकै र्वाचमे अदनका पैड बा। अ के मुझ अत प अन्का म इया कटवाकर रख ली थी।) अित अिन पुजन अमर अशाय कल ब नार कर लिया।

उन्का म ल ग्वा पर लिनाय अम समयकी दुख बडा हूय। अ बा मज ल्ब नर री मय पिब पास ही चिता बनाबी म ब मर त अ म ल्ब म नारा है यह अन्क का अत्र मर क व गी।

ए ए ड ए ड ए नाम बा श्री मस्तिम धर्मोकी अ म प्राय ए म ए ड ए अ व अ न या बाबा यवा बा

मंगल मंदिर लोको बरामदा। मंगल मंदिर लोको भजन पूरा होति
ही बेहोका मंगोचवार हुआ। और बैबवास काकाने सचकी प्रवर्धना
करके पिता सुखवासी। लनमरमें पिताही जवालादे फेड मनी और
बा सरकारके बरदा-गृहस सबाके लिजे मुक्त हो गयी।

बापुजी भिनलीके पेड़के नीचे कुरसी पर बैठे थे। कुछ लोगोंने
बापुजीको आगमके लिख जानेको कहा। बापुजी बोले अब ता
आगम ही नरमा है न? पिता सुम्पते ही म यह से क्या जानूँ
तो बा गृह माफ नहीं करेगी। तुम बेको न कि म तो टहकने का
रहा था। बैबवाससे बर्तन करन कहा रह गया और जाने मुझे अंतिम
समय माह किया। यदि मैं नीचे बैठ जाता तो कह से पहुंच पाता?
पाच ही मिनिटका बला था। अिसलिज अब मैं अचर्याजमे क्या जानूँ
तो बा मुम पर नाराज हो आगम। बापुजीमें तो यह हसते-हसते
ही कहा बा परनु अिसके पीछे रहा अुनकी मनोवेदनाका लिख आज
मी मेरी आसक्ति सामन कहा हो जाता है।

हम लड़किया रो रोकर अपना जी हकना कर रही थी और
बापुजी आश्वासन देनबाले थे। अिससे सान्ति मी मिल जाती थी।
उमदात काका जमी तक नहीं आ पायें बा और बैबवास काका भी
बेक जचह बैठ गये थे।

पिता ठाकुर नहीं जमाजी पडी थी अिसलिज मुममें और लड़कियां
हाकनी पडी। यह सब कहा भवकर था। मानव-बैहको अिन प्रकार
बचकती हुयी पिताम जलते बेसा और अुस पर मी चौदीमा बटे
सतत प्रेम रखावाली पाकी अिन प्रकार अिदाम भस्म हुनि देखा।
यह मेरे अिन जनन लर्क-चितर्क वैदा करनवाली बाल हा पडी।

ठीक ४ बजकर ८ मिनिट पर बाकी देह भस्मीभूत हो
गयी। सब बड। अुराम मुह ल सब अन्दर भाये। बाहरमे जये हुये
लोवाने बापुजको प्रभाव दिया। बाकी बहुबा आनेके बाद साहीजन
बापुमे अतिरिक्त अरबिके लिख दिया के रहे थे। यह सुनब हृदयको
मच हाकनदमा था।

मेरे पिताजीने प्रणाम करके बिदा ली। तब बापूजीने कहा कल रातसे जब मैं मनुकी मा बस गया हूँ मला। तुम चिन्ता न करना। जब तक तो वह जिस सेनाके लिए बायीं थी वह खुदने पूरी करेगा। मुझे सेनासे दूरे-बाके समयमें सूचना पड़ागी होती थी। परन्तु यदि वह सरकार खुले रहा देयो तो वही रखकर मुझे पदार्थ करानकी मेरी जिच्छा है।

मेरे पिताजीके जिन्दे तो मुझे बापूजीको सौपनेसे अधिक निश्चिन्तता और क्या हो सकती थी? मैं कुछ नहीं बोध सकी प्रणाम किया और हम बुरा हुये।

३०

सुनापन

सबके आतके बाद बापूजी नहाने पय हम सब भी नहाने चले गये। बायीं तरफ सुनापन कराया जा। नहानेके बाद हम सबने नींदका सर्वन किया। चौबीस घण्टे बाद पानी पिया। बापूजी भी खूब बरक पय थे।

बापूजी सामको सुनापना हुआ। साक और डूब से रहे व जिनतम बनेस भर्दार आय। प्रभावर्तिलहनके और मेरे बारेमें बात हमी। बापूजीन कहा यदि प्रभावर्ती और मनुको पहा रख ना मज अच्छा मगाता। मेन अभी अभी मनुके पितासे बातें की हैं। बसके उहा रहनेमें अन्त वाला अन्तगम नहीं है। प्रभावर्तीकी यदि मरगाए मेरे माल रहने न देना चाह तो वह मायल्लुग्ने बायीं थी जिन-अन्त व अन्त बापूजी है। जो ना म प मरगाएने छोड देता। अन्तगम जिन मरगाए अन्त देता रहने न दे तो वह अन्त गिना था जो भाव ना बाइरमें ही भाव है।

जिन मरगाए अन्त देता रहने न दे तो वह अन्त गिना था जो भाव ना बाइरमें ही भाव है।

जैतबो बाबू निकलकी बात सुनके मनमें ही रह गयी। बापुजी कहते लमे वा बिबिठ हीजी और तू क्या होता तो मुझका कुछ ही खेचता न ?

उस खाना प्याकर बुबारा बिठा-स्नान पर फूल रखन गय। सभी मान जल ही रही बो। बहा फूल रखकर सीट बाय। प्रार्थना बिध्यादिका कामेकम पूरा हुआ।

घामकी (मजदर घानकी बारी मेरी बी अिठकिय) बापुजीन मुझ भजन पानेक कहा। मन कहा "बीरबले मेरी बाकी मुझस छीन छिया। बर तो मैं न प्रार्थनामें भाव लूगी और न रामनाम ही लूनी। बापुजी हसे मुझ कही बी। परंतु आज तो देववास काका पावग यह कहकर मैंन मजदर पानेकी बात टाक बी।

रातकी मोनेसे पहलू पू बाके कामन मनबाली बुझिया कठी पाहुका कुहुम बिध्यादि बीजे मुझ सीरी।*

प्रार्थनाके बाद बापुजीक पैर बजाकर साठ नौ बज मे मो बभी मानो बर कोभी काम ही न हो। देववास काका और रामनाम काका बोनोको तीन दिनके बाद बस्त्रिया बिगड्ठी ही पाने पर संभारीमें बिठजन करनको मे घानके लिज करकारन रहनकी बिजामत ही ह। बिठकिये मद्यपि मनुष्योंकी संस्कारमें ती बुझि हो यभी बी परंतु जक बाके भमे जानते बैठा सुनापन छा घना वा मानो सारे महकमें मैं बकेली ही हू और मेरे पास कोभी काम ही न हो।

जापासा महल पूना

२४-२-४४

रातकी मूलने से बाग बठ बठी और मेरी बघठी बरार करन मुझ कमरेमें यभी जहा बाबा बीनारीका बिछोना वा। कोभी बापू बर हीव। सुगोठापहन बिड छी बी। मुझे बेचकर नदन

* जिन सारे स्थानके लिजे बस्त्रिय बापु—मेरी मां पृ ९।

पत्नी। हम दोनों सोड़ी बेर रो ली। म बुनके पास सो पत्नी। कोभी दो बर फिर मैसा ही हुआ। कुछ बस्त बापूजी जान रहे थे। उन्होंने मुझ रामनाम लेकर सो जानेको कहा।

प्रातः चार बजे प्रार्थना हुई। प्रार्थनाके बाद बापूजी भी नहीं सोये। मैंने बहुत दिनों बाद बटे भर काठा।

बापूजी रामदास काका और देवदास काका बातें कर रहे थे। उनम बीमारोके समय सकारका प्यरहार और बेसर्की बूझरी सब नैतिक बात थी। म तो मुबह ही महा जोकर निपट पत्नी थी। सब ताब टूट्ठन गये। जाब किसके लिये बचना बा ?

टहन्ते टूट्ठते बापूजी कहने लगे यदि बाका मुझे धान न मिलना तो म भितना हगगिब गही बड़ संकटा बा। मेरी प्रबल भिष्ठा थी कि बा मेरे हाबोम हूँ। जाब मुनये पहुँके हूँ पत्नी जाय। बा मेरे हाबोम हूँ। नभी भिससे जेक प्रकारसे मेरा बोम जाब हुस्का हो गया। ननरना ममका कमी तो कर्म। पूरी नहीं होगी। जाने-अनजाने मेरे पँछे पँछ चम्पना हूँ। मुसग अपना बर्म माना बा। भिस प्रकार बाक मम्मरबोर्क बात हुई।

भारतमें सतिबोके सुतीत्वकी परीक्षाके अनेक बराहुरण हैं।
 जूनमें से अके यह था। अतथा सारा जीवन सुती सीताकी तरह अग्नि
 परीक्षामें ही बीता। और जूनके सीताम्प-धिन्हू चूड़ियोंको अग्निदेवने
 अविच्छिन्न रूपमें लौटा दिया।

अस्थिया और अस्थ लेकर मैं जूपर आग्री। मने जो चूड़ियां
 ही थीं जनी रंगकी और अन्हीमें से अके चूड़ी मने अंगीठीमें आकी।
 तुरंत अगुफे टकड़े टकड़े हा पड़े।

बोपहूरको पू बाकी तमाम बीजोंके मूची बनायी और देवदास
 काकाको सीपी। वे कित्त समय क्या काममें लेटी थी कीमती बीज
 बिछट्टुव काममें मही ली पड़ीं। आदि सब कुछ रातके बाहू बने तक
 स्थिरकर देवदास काकाकी दिया। बापूजीने मुझ सीपीं हुनी प्रसादीम
 से चूड़ी मुझे ही दे दीं। प्रभावहनको मिळी हुनी चूड़ियां मुझे
 ही और मुगाबाबहनको मिळी हुनी अगु सीपीं। बापूजीने बपों
 पुरान सोनकी पट्ट बाकी जो चूड़ियां मुझे प्रसादीके तौर पर दीं थीं
 जूनमें भिन्न पवित्र चूड़ियां अनेकीं सोमा पैदा कर दीं। कहुनउके
 अनुसार सोनेम सुपस्थ मिळी और आज मैं कंठी क्मान पवित्र
 पाहुका हुहुम और अगु चूड़ियोंकी प्रसादी प्राप्त होनेके अिजे
 अिषयका मन्ने अल करणने आजार मानती हू।

अब तो कोत्री अर्वा मा जानेको मही कहता और आज यह
 डायरी रातको साडे बाहू बने स्थिरकर पूरी की।

आमाका महक पूना
 २१-२-४४

आरबासक डेरों तार देव-विदेवने आ रहे हू पत्र भी
 बहुत आ रहे हैं। पठित माधुशीयत्री महायज्ञका तार पू बाके
 अस्थि-पुण्य प्रमाण के आनके अिजे आया है।

मुझ पुरोहितजीने विधिपूर्वक अतिम पूजा करायी। अस्थियोंका
 पात्र लेकर देवदास काका और राधाम काकाने बापूजीसे बिदा ली।
 बापूजी दोनों भायियोंको डार तक छोड़न गये।

सरकारका झूठ

आपाग्या महक पूना

२१-९-४४

मम कहने बुझा जाता है। अगर कनका है कि अब चांद मरजार मुझे और प्रभाकरनीकरनडा पढ़ा रहा रहने बेगी। मेरे शिष्यमें धात्र सब खर्चा हो रही थी। पू बापूजाने भी मुझ होना पड़ेगा। बापूजी मंग देवन बापू ब। और जमी बुझने बने है। म यह चांदके प सब लिख रही हू।

बापूजी मुझने कहने का बखना हू कि ठीक यडा मेरे प्रति का मेका है या नहीं? यदि मुझे बान जरा भी बज ममसेवी तो मरजार मुझ छोड देगा। परन्तु नरा बीमार पड़ना ही बभाता है कि बाट बनियन मे मुझ कम प्यार करना हू। नही तो हू बीमार क्यों पर यथापि वह सब विनादम कहा मय परन्तु मंग लया है कि मेरे इनम बापूजा जना रनुन पालन ए बबना यह मानने है
 १ १ मर १ १ मरे १ १ बबन १ १ यथाप्ये मुप खभी है।

कलकत्ता बापूजीके विनोदमें बहुत बड़ी यूकता थी। मेरी बुद्धि फिटनी बिग्या हो रही थी यह जिन पत्रने साबित कर दिया। और मेरी यह पारना सब निकली कि बापूजीने मेरी छाटके पास वाफर पांचेक मिनिट मेरे सिर पर हाथ रख कर जो विनोद किया मुझमें मेरे मित्रे मुझके मनकी तीव्र बेदमा छिपी थी।

यह भव्य पत्र बापू—मेरी मां (पृष्ठ ७) में प्रकाशित हो चुका है फिर भी जिसका सिलसिला बलायें रखनेके निम्ने मुने दुबाय दे डूं तो अनुचित नहीं होया। क्योंकि परम पूज्य बापूजीके मेरे पत्रिण संस्मरणोंमें यह पत्र अद्वितीय है। मेरे नाम पु बापूजीका अपने हाथसे लिखा यह पहला ही पत्रिण पत्र है।

पि मनुड़ी

तू बचठी ठरहू सोभी न ? तुम और प्रभावनीको रखनेके बारेमें कम संबा पत्र लिखा। परंतु रातको विचारमें नींद नहीं आती। अन्तमें प्रकाश दिखायी दिया। जैसी माय नहीं की जा सकती। करे ता जेल कैतो ? हमें अंक-दुमरेका विरोध सहन करना ही होना। तू तो समझदार है। दुखको भूल जा। तुम बड़े बड़े काम करने है। रोना छोड़ दे। झुप ही जा। बाहर बाफर जो छीका जा सके छीकना। बिजनी छेबाके बाद तेरा हर हास्यमें कल्याण ही होना। मुझे तेरी बड़ी बिग्या रहनी है। तू अपने जैसी अंक ही है। जोली भरल और परंपरारी है। सेवा ठेरा बर्न ही बना है परंतु तू अभी भाड है। पूर्ण भी है। तू अपड रहू जाय तो तू भी पछनायेवी और जीना रहा तो ये भी पछजायूया। तेरे बिना मुझ अच्छा नहीं लपेगा फिर भी तुमने अपने पाप रखना मुझे पसन्द नहीं। क्योंकि वह दोष और मोह होया। मैं निश्चित करते मानना हू कि अभी तुमने राजकीय जाना चाहिये। वहा तुमने नायपबदासना लम्बा मिलेया। वहा तू झुपवीपी बना पीलेवी और लपीत ता पीसपी ही। बिजके बलाया जो भी छीकनेको मिले छीकना। बयले बय अंक

बद यहाँ बिगापनी तो तू लमसदार बम जायपी। फिर बरापी
 जाना हा ता बहा जाना वा और बर्ही जाना। बरापीने बु-
 दधान महिन्दे दे पर वे अब बही नही रहेंगे। जिनमिसे बहा
 ता कसक रड़ावा हो हो सोंगे। बहू भी बामनी बीज है। बहूगनी
 मदा राम रहना भी अकटा है। परतु वो बीज रात्रहीने
 दे बह बही नही ह। जिनमे अचिक ता मेरा मोन लनेमा तब।
 न । बा ता मे हा ह न ? जिनना लमस ले ती बामी है।

यह पर तू लजागार रगना।

आमाणा महल पूना

१-१-४४

श्रीश्रीत बंटेके बखंड बरखेकी बाब घामको ७-१५ पर बापूजीने पूर्णाहुति की।

आमाणा महल पूना

२-१-४४

पीतावाळ, प्रार्थना बर्बच रोब होते हैं। यद्यपि बापूजी खूब आंतरमें रहते हैं परंतु मुझे बैसा लगाता है कि प्रामद अन्तर्गत मनमें बोझी बंधा बनी रहती है। कभी-कभी यह समझ होता है कि वे बिचारीमें मस्तबूक रहते हैं। बाके बितास्वान पर मिट्टीकी कच्ची उमाधि बना ही गयी है और बुरा पर है राम। बिच दिया गया है जिसकी बा टावरिन एटन बिबा करती थीं। हम दोनों बन्धु बिच उमाधिकी याबा करने जाते हैं। बापूजी स्वयं पूछांछि कौंस बनाते है और हम सब मिलकर बाराहना अभ्यास बोलते हैं।

आमाणा महल पूना

५-१-४४

मुझे बुझार बाता है। बाब घामको बड़ पया है। बापूजी बिच समय (घामके छ बर) टहकने पये हैं। मैं बकेजी ही बेठी यह बिच रही हू। बापूजी बब सोचते है कि अन्तर्गत किन्ने होतेशाबा आमाणा महलका बर्ब बहुत अधिक है। मुझे हो छके तो किसी तरह कम किया जाय। मेरी जी बर्बा होती है कि सरकार बब मुझ क्यों रखे? प्रभावतीबहन बनी तक सरकारकी बँधी है। बिचकिन्ने मुझे बँधे बन्धन रखेकी बँधे बहाँ रख सकती है परंतु मुझे क्यों रखे? बचकमें बिचमें मेरी बख्ताकी परीसा है। यदि बापूजीके प्रति में हार्दिक बख्ता रखती हूँ तो बब बापूजी कूटेगे तनी में कूटूंगी यही बीबरखि मेरी प्रार्थना है।

बापाजी महल पूना

१-१-४४

२ मार्चको अिगडैणकी लोकसभामें पू बाकी सेना-सुभूषा और बीमारीके दरमियान सरकारी व्यवहारके प्रसोकी चर्चा हुयी। सभमें बटकरने बिलकुल पच सग्याजी। विसके सिवाय अंतपट्टि क्रियाके बारेमें भी अंसी ही शूठ बात पनोंमें बायी ई कि बापूजीकी पसन्द ही आगास्ता महलमें अठिम क्रिया की गयी।

बापूजी कहने अने यहि मेरी ही पसन्दकी बात होती एव तो ये समझानबूझि ही पसन्द करता। परंतु यह सब बाके नामसे हो रहा है यह घोमास्पद नहीं। अितीतिमें बापूजी अुठिम हो अुने ह। पसो सरकारको अेक पत्र भी लिखा। अुसमें लिखा कि सरकारकी तरफसे जो सुविधाओं की पत्री के बहुत देरसे मिलीं। और वे भी लसी ही गयी जब बापूजीने सरकारको जतना दिया कि मुझ बीमारका मुक साखी न बनाकर सरकार वा तो बासे दूर कर दे अथवा अिलालकी पुरो सुविधा दे। डॉ बिगधाकी देखरेअके अिजे सी अिलता ही अिलम्ब क्रिया गया। क्योकि डॉ बिगधाकी बाप जनबरीस की पत्री की और अुसकी पजूरी मिली करबरीमें। डॉ बिगधा पौषकी माम पर तो कोजी प्यान ही नहीं बिवा गया।

अिमके अिवाय बटकरने रडा ई कि बाको पीरीस पर छोड़नेकी ता मान ती नही हुयी परंतु अुह न छोड़नेमें सरकारने समझबारी

साक्षी है। परंतु भिन्न मामलका राजनैतिक अनुयोग करनेकी बापुजीकी विच्छा नहीं है।

बापुजीने विच्छा है कि

मेरी जीवन-संमिनी कस्तूरबाका जीवनरीप तो अब कुछ समा है। अगर अब बिठनी बाधा तो बकर रखता हूँ कि बाकी पवित्र स्मृतिमें धरे मनके सतोप और शांतिके निम्ने और सत्यके नाम पर सरकार अपनी हो चुकी भुजोंम और बनरीकाम भारतीय प्रतिनिधिन जो बाधचर्म बनक बदान कस्तूरबाके संबंधमें बिबा है मुझमें मुचित मुबार करेगी बहि मेरी पिछायत सही हो। जबवा बखारोंमें प्रकाशित बदान और बटकरके दिवे हुये बमानमें फर्क हो तो सरकार मन्वा बबान प्रकाशित करे।

बापुजीका कुछ बिनी बातका हूँ कि जब वा पैसोके निम्ने बिठना मुठ चलता है तब बेचारे मामुकी कैरियाका क्या हाल होता होना ?

प्यारेलाकजीन बोपहरका साथ समय यह पत्र सम्भारनम कदाया।

मुझे प्यारेलाकजी कहते थे कि, बहुत समय है तुम सरकार छोड़ रेपी। बिठनिमें आजकल बापुजी सरकारको भी कुछ निर्वे बनबा सोचें यह सब तुम ब्यापमें रखना है। क्योंकि यह बाहरके लोकोके निम्ने बडा अनुयोमी होया। बिठनिमें बापरीमें बिबरकर तो रखा ही बाय परंतु बापरिया सरकार बचाविन् बाहर न जाने है, बिठनिमें सब विभागमें ही रखा बाय।

यह पढ़ामी बनोखी बी। जैसे बंधेजी बिठिहाम मुगोळ गमित बिठ्यारिके पाठोंमें कमी कमी भूल हो बाय तो याद रखनेके निम्ने मास्टर बार पाच बार सिखनेको कहत हूँ जैसे ही यह नया राज नैतिक अभ्यसन कर प्रारंभ हुआ। केनिन जैसे पत्र मात्र रखना मेरे निम्ने बठिन होनेके कारण बापुजीको मुझ पर यह बोण काटना पठन्य नहीं बा। बिठके बत्राय वे बाहरी वे कि मटी पाठपानाम होनबाली पढ़ाई ही कथयें। परंतु बापुजी बापू वे और प्यारेलाकजी मंत्री। बाय: मेरे बाद रखनके निम्ने वे जैसे पत्रोंवा बंधेजीसि मुबधती

वनुवाद करक लिख रहीं बीर जनका पुत्रराठी छार में रट लेलीं।
रिमी भी पत्रके बारेमें जाहे बिच समय पूछठाछ कर छेते।

भिम प्रथम पत्रसे यह प्रयोग बार्तन हुआ बीर बाबू रोपहरमें
यह पत्र पाब बार लिखा बा बुका है।

अन्तमें छामको चार बजे ती म बुकवा गयी। परंतु मुर्होंने मुझे
तभी छोडा जब यह पत्र कटस्थ हो गया।

यह मजी पढ़ाजी करते समय खयाल हुआ कि यह मजी अलिखत
कहाम जा गयी? यह मया बिषय पडनसे मुझे जितनी बरबि भी सुतनी
और किमी बिषयसे लही थी। परंतु जैसे कभी कमी नापसन्द बीज
अप्सुत काम देनी है जैसे ही पढाजीके तीर पर लिखे नमे से पत्र
मी ब्रेक ब्रिटीम साहित्यके रूपमें मेरी बामरीमें रह पय है।

३२

बेबेलको पत्र

बागासा महल पूना,

१-१-१९४४

भाई बेबेलका समबदनाका पत्र जावा है। मुसका मुत्तर बापूजीने
रूप दिया। असमें पू बाके बारेमें जो कुछ लिखा है यह सब
ममन्नत सायक ह। व्यापकालकीन तो महा तक कहा कि

बापूजी बाके सुस्मरण तो अब लिखंग तक लिखंगे परंतु यह पत्र
बिलना हृदयस्पदी है कि भिमम मारे मझिण मस्मरण बा आते है।”
त्रिम पत्रम बापूजीन पत्रके ता भाई बीर लेडी बेबेलका आचार मागा
है। बादम बाके बिषयम जा कुछ लिखा मुसम कहा कि

बपत्र मत्र मागा या मुसम कस्तूरबाकी कमी कुछ क्यारा
मत्र कतर रही है। परंतु म यह जरूर चाहता बा कि बिच
बीमारकी कारण दुखने छूटनके लिख के भिस देहुसे बल्की

मुक्त हो जायें। हम कुछ दूसरी ही तरहके रंपती थे। १९६ में हमने बेक दूसरेकी स्वीकृतिसे आत्मसंयमका निमग्न पान्नेका निश्चय किया। मुझे हम बेक-दूसरेके ज्यादा और ज्यादा निकट जाये।

यद्यपि वे अत्यन्त बड़ बिच्छाघ्नितवादी थी फिर भी मुझे मुझमें ही समा जाना पसन्द किया। जब सन् १९६ में मैंने पहली बार राजनैतिक प्रवृत्तिमें मुक्तका प्रवेश करवा था तब दक्षिण अफ्रीकामें बेल जानेवाले भारतीयोंकी सूचीमें कस्तूरबाका नाम सबसे पहला था और धारीरिक कष्ट मुझे मुझसे अधिक भोवा। कभी बार जेक हो जाने पर भी भिन्न महत्त्व लैटी प्रकर्में बड़ा उनी सुविधानें मौजूद हैं मुझे अच्छा नहीं लगता था। हमारे नवाबोंकी और मुझे तुल्य बार मेरी और कस्तूरबाकी निरपेक्षातीसे मुझे बहुत दुःख हुआ क्योंकि मैं बहुत बार मुझे यह आश्वासन दिया था कि सरकार मुझे हर्षित नहीं करेगी। भिन्नभिन्न बिल बारकी निरपेक्षातीका मुझे मन पर बिलगा पायी आघात पहुँचा कि मुझे दस्त छत्र दये। परन्तु सीमावर्ति डॉक्टर सुधीका गम्बर छात्र थी। मुझे तुल्य दिखाना किया। जिससे वे बच नहीं गयी वो मुझसे भिन्नके पहले ही मृत्युको प्राप्त हो जाती। परन्तु मुझे दैवतके बाद ही अपचारके बिना ही मुझे दस्त बिलगुल बन्द हो गये। फिर भी मानसिक बेचनासे मुझे मन पर जो आघात लगा था और दिल लट्टा हो गया था वह मिटा ही नहीं। परिणामस्वरूप पीड़ा भोगते भोगते वे चल बसी।

वैसी कस्तूरबाके जिसे अहमदाबादमें सरकारकी तरफसे जो मुठ बयान छपते हैं मुझे मुझे कितना दुःख होता होता था यह आप आसानीसे समझ सकते हैं। वे मेरा बगमोल रत्न थी। मुझे बारमें असत्य बात लिखी जाय भिन्नसे दुःखर वस्तु और क्या हो सकती है? मैंने भिन्न बानकी धिक्कारत गृह-विभागको घेरी है। मुझे पढ़नेका आपसे अनुरोध करता हूँ।

परंतु सरकार मुझे बेतनका इपमा तो गरीब लोगों पर कर क्या कर ही पैदा करती है न? यदि बापूजीको साधारण बेकमें रखा जाय तो खर्चमें बहर फर्क पड़ेगा। यह बात मुझे समझाते हुए बापूजी कहल कमें

बी कमें भागी हों और वे साथ ही रहें तो कम खर्च होगा और बकाय रहें तो दुगना खर्च होया। फिर भये ही बीनों भागी बकसा भोजन बनार्ये और बेकसा ही खार्ने। मैन तो बीठे बहुत प्रयोग किये हैं। मेरा साथ जीवन ही प्रयोग है।

बापाबा महक पूना

१५-१-४४

मुपरोक्त कर्चके बारेमें बापूजीन एक पत्र सरकारको लिखा था। वह पत्र लिखा तो मया ४ मार्चको परंतु बहुतत पत्रोंके अनुसार करने थे। मुझमें यह छोगसा वन रहू मया या तो आज ही मिला। साथ ही कांग्रेस पर लगाम बन सरकारी आरौपीका बनान बापूजीन पुण्य बाडी बीमारोंके दिनों १९४३ में दिया था मुझका भी बीडा बीडा अनुसार करती हूं। परंतु यह मेरी ममझमें नहीं आता। बिह सिद्ध बापूजीन कहा यह ठीके सिद्ध करणत कठिन है। बिहमें समय कपाना कर्च है। नू आजकलके पत्र समाज मेगी और पचा मेमी तो भी में समझूया कि तून बहुत कर लिया। मिर्तलिके आज ४ मार्चको लिखा मया पत्र पडा। मुझमें बापूजीने लिखा है

पाठनमामें पूछे कपे मेक प्रमके मुझमें यह-विनायकी जोरमें यह मुझर दिया मया है कि हमारा मासिक खर्च लगभग ५५ रुपया होजा है।

मैन तो अनुसार १९४३ म ही लिख दिया था कि मुझे बिहन बने आनीयान बंभामें रगा जा रहा है मुझमें मुझ लगता है कि वे हिन्दुस्तानकी गरीब जनताके पैमेका अपव्यय ही कर रहा हू। मुझ किनी भी कसब रग दिया जाय मया में जानें दिन आकरदेके बिजामुया। परंतु बिहन बनान बापुसभामें

पूछे गये प्रश्नका उत्तर बापूज मुझ यह सख्त माप दिखाता है कि मुझे अपनी बात पर बटे रहना चाहिये ना। परंतु अब जाने तमो सचेत — मूल तो किसी भी धन मुचारी ना सख्तों है। जिसलिसे मैं ही अब जिस प्रश्नको छोड़ता हूं। मेरा और मेरे साथ रहनेवाले लोगोंका स्वर्ण कैवल ५५ रुपय ही नहीं है। परंतु जिस बालीसात बंगलेका किराया—जिसका बड़ा भाग अब ही रहता है कैवल छोटासा भाग हमारे जिसे जुना है—और पहरेदारों का सुपरिन्टेण्डेण्ट जमादार और दूसरे सिपाहियोंका स्वर्ण भी जिसमें खामिख करना चाहिये। यहाँके अपनीपकी देखरेख और बंगलेकी सजावटी जिसे बरबदा जेकसे कैंदियोंकी जाना पड़ता है। यह साथ स्वर्ण मुझे तो बनाकरयक ही प्रतीत होता है। और जिसमें भी अब बापू देखमें जैसा (बंगाल जसा) बहाल पड़ा हो तब तो मेरे जैसा प्रत्यक भारतवासी जान जनताका अपराधी माना जाया। मेरी मांग है कि सरकार मुझ और मेरे साथियोंको किसी भी साधारण जेकमें रखे। जल्दमें जितना ही कहूँगा कि यह सारा स्वर्ण भारतके करोड़ों मूक और बरीब लोगोंसे जिना जाता है यह कष्टमन विचार मेरे मनमें तथा बटकरवा ही रहता है।

जिस पत्रके बाद तो मामल होता है अब मुझे जरूर छोड़ देने और प्रमावती बहनको भी बहाल से जाती थीं वहाँ से जायगे। क्योंकि जैसा स्वर्णके प्रश्नकोके बिच्छु तो बापू जिद करके भी स्वर्ण साधारण जेकमें ही जायग। बापूजी कीन कम हठीके हैं ?

और झूठ

आमाची महल पूता

२२-३-४४

आज पू बाकी मुक्तिको अंक महीना बीठ गया। सब कुछ स्वप्नवत् हो गया बीचठा है। जैसे वा कमी भी ही नहीं। मुनकी येरमोबुरनीका मूनापन तो दिनदिन कुछ अधिक प्रबल होता दिखानी देता है। बघपि हम सबका अक-अक मन काम-नाजसै मर पिबा गया है। बापुजीन किमीको अक दिनटको भी पूरसठ नहीं रहने बी। फिर भी किरीको अनी एक मानसिक पाम्ति नहीं मिछी ह।

बहु पूछने पर कि आज जाम तीर पर क्या करता है, बापुजी कहन लगे बाके बिना अक महीना बीठ गया। बाके मनको पठन वा कैदियोंको मोजन कउता काटना और पीठापाठ। हम नहीं करें।

हमने मूपबाम रत्ता और कैदियोंको मोजन कउया। परंतु कैदियोंके आरके मोजनम न ती हमेगाका आनद वा और न जीवन करनबासे कैदियोंका मुस्कुराता हुआ चेहरा वा। बिनी प्रवार हर बार गानवालोके बीचमें तिन दुगी पर वा धारगस्य भावसै उमरी निजगत बैअरी बहु बीमारीके रिबीमें गया काजम आनवाकी पहिपचार बाउमदुर्घी भी नहीं पी।

घामको ताड़ पाव बाके बापुजीन कैदियोंको निचरी नहीं और ताग पटीना। हमने भी बाई बाईमें पठेना और कैदियोंन मदान और दुगी मनसै गाया। तिन कैदियोंन पू बाकी बीमारीके टीउममें देवा भी बी मुनम में बी जीवन तो मानिक त्रिबिके निमित्तमै मूपबाम भी दिया वा।

७-१५ बजे बर्नार्ड जिस क्षण बाकी आत्माने जिस मानवबोधैषे और सरकारी बजस सबाके छिन्न मुक्ति प्राप्त की थी ठीक उसी क्षण बुनकी पसन्दकी प्रार्थना प्रजन और गीतापाठ शुरू किये गए। कुछ बदन बैसा लग रहा था मानो आँसुके छामने बाका हंसता बैहरा तैर रहा हो। सारा कमरा प्रजनके पवित्र गुणधारणोंसे पूरा गुठल था और जना लगता था जैसे वा फिर ओके बार हम छोपेके बीच था पबो है। और कुछ समयके निम्ने हम पूछ गये कि यह प्रार्थना प्र के धाड़के निमित्तसे हो रही है। वे हमारे साथ प्रार्थनामें बाग भी बबस्य से रहो होनी। चायब हम बर्नार्ड बबानके कारण मुझ प्रत्यय न बख पाते हो। कुछ भी हो लेकिन बाबूजी प्रार्थनामें कुछ बुरा ही बातावरण था।

बाके बाग्म बबाने गये सरकारके झूठके छिलसिधमें पत्रब्यवहार बभी तक जारी है। परन्तु मूम तो बिनाशकाक बिपरीत बुद्धिबानी बाग समनी है। सरकार जिसनी अधिक पिर यमी है कि पात्रमन्त्रम पूछ गये माने प्रब्लोके गुनर गुणने बिलगुल झूठ दिवे है। अरु जिम्मेदार सरकार बिगत अधिक झूठ बीस छरतो है। और किस ब्यक्तिके बाग्म झठ बबाब दिव था रहे है यह देखनेकी भी जिस समय बिगत सरकारी बिल्ला नही रही। जी वा नीची-साधी बकी

बुल रहे हैं। जिसलिये तुम्हारी तरह मुस्ता जानेके बजाय मुझे सरकार पर बया बाजी है। जैसे किसी मनुष्यको थोटा सा बाने पर मनमें ब्याकी भावना पैदा होती है कि बरे, बेचारेके पाट छप पानी! वैसे ही मुझे लमाक होता है कि जिस बेचारेको झूठ बोलना पड़ रहा है। मुनाह बरीब होता है। मेरे लिये जैसे लोग क्रोधके पात्र नहीं बल्कि ब्याके पात्र हो जाते हैं। यह ज्ञान बासानीसे समझम जाने कामक नहीं है। मनमें किसीके लिये ससमान भी क्रोध करना मेरी दृष्टिसे तो हिसा ही है। जब यह मूलजनाकी भावना ही मनुष्यमें न रहे, तब यह सच्चा बहिष्क नहलाता है।

बागावाँ महल, पूना

११-१-४४

बामे संबंध रखनेवाले काण्डमें सरकारने कर्नल मंडारी बीर डॉ. मिस्टरका भी लपेट लिया है। कर्नल मंडारीने सरकारसे कहा था कि डॉ. मिस्टरका यह मत है कि बाकी बीमारीमें डॉ. रिलया महेवा कोबी खास मदद नहीं कर सकते। यह बात बिलकुल गलत है। परंतु बापूजी डॉक्टर साहबसे बहुत लये मुझे यह सब बखता लपटा है। जिसके स्पष्टीकरणके लिये डॉक्टर साहबने पत्र लिखा है कि

दिसम्बर १९४३ में कतल बहबानी जो कर्नल मंडारीके लट्टी कर जानेके मतकी जगह बाम करले के मुझसे मिलने जाये थे। मुझसे मुझने पूछा कि डॉ. रिलया महेवाना कुछ सुनवाई हो गयेगा? मैंने धार्यत्री या डॉ. सुनीता बहबानी काप कोबी बात नहीं की थी जिसलिये मुझे लमय कोबी पत्रों काय नहीं थी। परंतु इनके दिन मैंने यह लिया था कि डॉ. महेवा बहुत ही जगदानी जाबिठ होय।

दिसर् थी ११ जनवरी, १९४४ तब डॉ. महलाके लिये पांथी पत्री जिसासनके बारेमें कुछ भी नहीं हुआ। तब हमने इनके बारे में निरिग्रय याददिलानी करयी। जिसके विचार

जो विधानसभे रायके बारेमें भी भिन्ना बा और बार बार कहा था। लेकिन मुझका तो कोबी जवाब ही नहीं मिला था।

और ताजीम पानी हुजी राजीके बारेमें सरकारने जो मूक-मरी बात कही है मुझका स्पष्टीकरण करनेकी जिज्ञासत छिने हुमे म कहपा कि ताजीम पानी हुजी बोक भी राजी कभी नहीं गयी। पामकोकि बस्यतारुमे काम कर चुकी बोक बाता ही गयी थी। अमन जाठ दिन बाद ही मुक्त कर देनेके लिखे कलेकी साहबसे कहा और यह बली मनी।

अिस प्रकारका पत्र लिखकर बिस्वर साहबने दोपहरको खाना किया।

यह पत्र खाना हो ही रहा था कि अितनेमें अिखतके कमरा बोक बट बाद अलशरौम जाया कि नबी दिल्लोकी राजमपरिपद्में पी रामसरनरासन अंक प्रश्न पूजा कि बोक अिनसमाँओ बाका अिलाज करनेकी अनुमति कब भी मनी थी? मुझके मुत्तरमें कहा गया कि हमसे ९ फरवरीकी मजूरी मागो मनी थी १ फरवरीकी हमन मजूरी ही थी और अंक-ओ बिनमें बीमारकी अिकित्ता शुरू हो गयी थी। अलशरौम मया है कि यह जवाब पृह-विभापके मनी कोतरान लिखन दिया है।

परन्तु नहीं बात यह है कि ३१ जनवरी (१९४४) के दिन ही शामको बापुजीन बरनी साहबको लिखित पत्र दिया था। मुझ समय में नहीं बीते थी क्योंकि बापुजी मुझें मार्गोपदेशिका का पाठ समझा रहे थे।

अंक-ओ समाचार म आयी हुजी यह रिपोर्ट मने काट थी। बापुजी भी अिस तरहकी बात जो अलवा अलवागाम जाती है मुझकी कतरन कमा तो स्वय ही काट लेते थे या कतरनकी सूचना दे देते हैं और अमी कतरनकी फाइल रखते हैं। अिहलिखे मने मुझपाती अलशरौकी कतरनकी फाइल बना भी है। मुझपाती अलवा
— वेस हा थी और अब में अकली हू।

हु ठो रही थी परतु किसी पर प्रमट नही होने दे रही थीं। वे ईसते मुह सब सामान बाध रही थीं क्योंकि बापूके आध्यात्मिक जीवनका रस वे अपॉठि पो रही थीं। जैसे आध्यात्मिक जीवनके दर्शनका लाभ ठो बहुतोंको भिखा होगा परतु प्रभावहनने मुसे अपने जीवनमें मुसार किया है। भिखिके मुनके सिने यह बचसर कठिन होने पर भी वे बालबपूर्वक मुसका सामना कर रही थी। परतु यह मुनके स्वान पर मैं होती ठो मुझे मज्जतापूर्वक स्वीकार करना चाहिये कि हुषम भिस्ते ही घामध में रोना शुरू कर बैठी।

घामको मुनने बाठि समय बापूजी बोले देख प्रमा कितनी बहादुरीके साथ तैयार हो रही है? यही दिन यह ठेरे सिने बा बाय ठो बच तुझे हरगिज बाधनर्ब नही होना चाहिये। प्रमाको ठो फिर बायकपुर बेरने ही जाना है जब कि तुस अपने सबभिवॉकि पास जाना होगा। दोनो स्थितियोंमें कितना अंतर है। यद्यपि प्रमा तुमसे बहुत बड़ी है और वह भी सच है कि मुनने बहुत कुछ देखा है। परतु मेरा दृष्टिम ठो वह बेसी ही बाय-ठेय-बयंकी लकड़ी है बीठी यह पहल-पहल मेरे पास बात्री थी। मुसके बजाय ठेरी रिहारकका हुषम भावा हुआ ठो?

मेरे बबाब देनने पहले ही हममें मे कोबी बोळ मुटा परन पानी का बळ ही बल जाता!

मे बाधम भी भिखिके मन बहा आप सब मने कुछ भी कह परतु मग ठो भगवान है। देख केना बापूजीको भिये बिना नही जावगी। भिन प्रकार यह ठो रही थी परतु मनमें लज रहा था कि कृतका हुषम बाधबा सब पठा बलेना।

बाबाजी महल पूजा

१२-४-४४

आज प्रमावनी बहुतके जानेका दिन था। बाय बज ला-वीकर सब बने थे कि भिनेमें अेक पुनिन टुक बापी। यह बाठी और वालीने बय की हुमी थी। बीरे नार्नेष्ट बाय-बाय भुमित और अेक

मिट्टन थी। पुलिसवाले सब खुली बंदूकें लिये हुये थे। मैंने कहा
 ये बुबली-पठली प्रभावतीबहन कहां भावकर जानबाकी है जो मिलने
 पुलिस केने बापे है?"

बापूजी हंसते हंसते बोले यह तो भापनेबाकी नहीं है परंतु
 किसका पति (अप्यकाधजी) भापता है न?

बापूजी और हम सब प्रभावतीबहनको बस तक छोड़ने गये। कुछ
 समयका दुस्म नडा कदम था। बाकी सराके सिन्ने छीड़कर बापूजीसे
 बुद्धर चिरा लीं जा रही थी। सबकी आंखीमें पानी आ गया था।

बापूजीकी ठबीबठ कुछ खराब हो गयी है। एतको एरीरमें
 अथ बुद्धार-सा स्ननके कारण आज बुहोंने आना छोड़ दिया।

३५

बापूजीकी बीमारी

भाभाजी महस बुना

१७-१-४४

यू बापूजी मलेरियाम पीड़ित है। बुन्गार बहुत रूना है।
 आजमे बागी बारीमे मरके पास दिनरात रहनेकी रपूनी मना
 थी पनी है। कुनेन मेनसे बिन्गार बरठे है। बिम बीमारीमें
 बाकी कनी अबरम महनुम होनी है। बीस्वरमे शार्बना बग्गी ह
 डिं बापूजीकी जल्दी ठडुदस्त बना रे।

आमको हम नमाधिकी यात्राको जा रहे थे। बापूजी बोड कि
 मुते भी बनना है। लेकिन डॉ बिस्वर माहबने समझाया तो मान
 गये। रातको सबबस १ ४ डिपी बुगार था। डॉक्टर माहब बट्ट रहे
 थे कि आज यही हाल रहा तो बल कुनेन देनी ही बड़ेगी। आज
 मानिय और स्वात नही कपया गया।

२५-४-४४

डॉ विधानबाबूको बुद्धिमानकी भाव की पत्नी । वे जीर डॉ गज्जर बाबूसे । बापूजीके लूनकी परीक्षा करनेको छेरे लून से गये थे । सरकारने भिय बीमारीमें बहुत दिखानी नहीं की । हमें आशा नहीं थी कि डॉ विधान बाबूको अनुमति मिळ जायगी । बैद्यराजने भी कहलबाया है कि जकरत बढ़ने पर मुझे सूचना दें ।

कुनेन रुना तीन घेनस आरम किया है । काममें बहुरपन भपता है । पूष तो बापूजी नहीं सेते । फर्रोंका रस भिठे ह ।

मुता है मशबियोने भी मुझाकाठकी भाव की है । छार वेध बिलनासे पढ गया है ।

३०-४-४४

अमनाशम काकाका मिलने जानेकी बिजाजत मिळ पत्नी है । लखर है कि वे कल आयंग । कनुमाजीने भी सरकार सेवा करनेके जिसे जाने वे तो जानेकी बिच्छा प्रकट की है । बापूजीकी तबीयत सुधार पर तो है । परन्तु कमजोरी जीर लीकापन बहुत बढ़ गया है ।

२-५-४४

अमनाशम काका मिलने बाबूसे । भीतर-बाहरके बहुतसे समाचार आय । परन्तु बापूजीका यह अच्छा नहीं लखा । अमनाशम नाथी है अियलिके बन बिजाजत मिळ बाबू जीर बापूजीकासिमेंको जो मशबियाम भी अदिक से बिजाजत न दिखे ? यह खबाब होने पर बापूजीके सरकारका अंक पढ लिखबाया ।

अशियम काकी अदिक मिश्रभाजतके परिणाम न हो अियके अिय म अमनाशमन भिना ता मही परन्तु मैने अपने अिय दूता । मिय बनाया ह कि अिय स्तली बाभमबासिमेंकी मश अ न मशरी हा उहा है व यदि दाबी परिभा के न होनेके कारण दहा नहा आ मशरी ता नाथी परिभाजत से मिलनका मात्र न मश उ न बना बासिये वदपि बुनमे मिलना मुसे

बण्डा लगता हूँ। मैं मानता हूँ कि मेरे बुढ़वायके समय मुझे
 हुरबोकेसै मिलनकी जो छुट भी नहीं थी बुसुका कोश्री विररीत
 बगियाम नहीं हुआ। तब क्या मेरी उबायत बण्डा न हो
 जाय तब तब सरकार बीसा ही फिर कर लगनी? "

१-५-४४

भाज बनूमाधीको जानेकी मजूरी मिल गयी है। वे मरद
 भारत जा पय हें।

३६

छुटकारा

बायागी मरद पूना

५-५-४४

भाज नामको भाइ उ बने हब नाममे बिगटे तब भी बहारी
 और ही पाठे काय। मुसामे बहल लग "बायुवीको भाबिपी
 मलिन मोदकवा हबम भाया है। परन्तु मुसामा बनी काय मरी है।
 बिगिदिब लगत भी नहीं पांरका पांरत न? यह बात हबने
 दिग्दुल गूठ हो पायी। बायुवीके पाग मर। मर बहियारो
 नामको बहल मर काबला काय मे मर। बिगिदि हबे काबल
 हुआ कि बिगिदि बहल मर काय मे मर होंगे? मर मर कि
 बायुवीको बिगिदि मरकाय पुग हा मर हा। काबलके बिगिदि और
 बिगिदि मरिदि के मरी लग मर काय मर मुने नाम काय
 मरी का। परन्तु नामका मरका बिगिदि मरी बाहरी बिगिदि
 मरका हा मरी मरी।

मेग पू बायुवीके मरका या बिगिदि का और मर
 बायुवीके मर का मरका मी भाय मर मरका नाम मर।

बिस्स मुझे अपार आनन्द हुआ। मैं मुञ्जफ्ती-कूबती डॉक्टर साहब कटली साहब प्यारेमानजीके पास पत्नी और सबको छोटे बच्चोंको तरह बगुल दिखाते हुमे कहा क्यों देखा बापूजीको लेकर ही बाहर बापूजी न? मयवान किसका? बापका या मेरा?

छामको बापूजी बोडे बचकर छवाने आमनमें आवे। "सब अच्छी तरह पैर करना बर्येरा बाने नहीं। और अंतमें बोडे "म जाने क्यों मुझ छूतना कोयी बरसाह मही है। मुस्ट मुझ अपने हृदयके भीतर बबराय लप रहा है। बलना हू बाहर जाकर क्या कर छकूपा। मय तो बराक है कि सरकार अधिक समय मुझे बाहर नहीं रखने देपी। दिमाय पर सब बोसा सगता है।

मावनाके बाद पू बापूजीके पैर बबाकर हुम सब छामान बावन म भुन गये।

पुलक स्पेसलरी और हुमरा मी बिलना छामान पैर करना बा कि मागबहनके दिमाय गलमर हुमम मे किसीने पकक तक नहीं पागे। अकअक रिहू जीना हुवन। हुमने तो बाकाबबा बरकी तरह सब अिनजाम कर किया बा। प्यारेमानजी और मुसीछाबहन तो अपने बागवान मे ही मिन न बरा मके। डॉ बिस्वरने अपना पैरिम गलका जगनी बज पूरा किया।

की विपत्ता देनेवाला हुआ था। बाबूजीने आगाछी महलके बाहर पैर रखते हुए अकेले पत्र लिखा। सुमने लिखा

महाराजबाबू जी को का दोनोंकी अंतिम किया महा हुमी थी। त्रिमन्त्रि दिन बीना समाधिपी पर नरवरकर्मोने पुण्य बनाकर रोम दोनों समय अत्रनि करीब थी है। अन्तिमहाके दिन स्वान पर जानकी भिक्षुता रानेबाप गये-अर्थात् जब चाहे तब जा लठे त्रिमन्त्रि दिने म आगा रगता ह कि मरकार माननीय आगाछीकी परीक्षणों में वह चाप प्राप्त कर ट्यो। ये यह पण्योवहन करना चाहता है कि त्रिमन्त्रि पण्य स्वान पर शानों समय प्रार्थना हो। मेरी, पाण्या है कि मेरी प्रार्थनाके अनुसार अवरप किया जायगा।

टीक आठ करने ही महारी का पहुँचे। तब परिवाराकी आज्ञा त्रिमन्त्रि महीनके बाद हटा दिया गया। आठ बजे बाबूजीन बीटममें देर रगा। बीछे घंटा सामान गढ़ जानेमें ये हुमरी भागमें आयी। पहराके बाबूजी कुर्सीपरबहन करनेपर महारी बीर ही पाह तथा हुमरीमें डॉक्टर माहक घीगाबहन बीर में। तीसरीमें अनुबाबी और प्योगेणमत्री ये।

बहुतों पहुँचे। वहाँ का नाम के मनमें आज्ञा दिवानी या तब बने जैसा आठ का। बाबूजीके राने बनवका मोन भीटिदारी तरह हुआ २५ ब। आठ ही समाप्ताबहन स्वाम्य-अवर्षी कुर्सीन जारी किया। येने बाबूजीके त्रिमन्त्रि सामन्तीना मैदान करना शुरू किया। बाबूजीन पिताबालाका नाम मनी बा। आठमें बाबूजी बीर अकेले दिवत ही देर ली में गये। बाबूजीक घीकरी प्रमन्त्रिना बहनमें त्रिमन्त्रि अवरकर्म रानेबाप आठ आठ त्रिमन्त्रि त्रिमन्त्रि लगी लगी हुमी।

बाबूजीके आठके किया। येने पैराके भी मगा। लम्बका लंब बनरी अवरकर्म ही रानेके त्रिमन्त्रि अवरकर्म अवरकर्म कि तब हुमरीके लम्ब लगीबका अनुबर दिवत रगा। अवरकर्मके त्रिमन्त्रि स्वान

बिससे मुझे अपार आनन्द हुआ। मैं बुलन्दशही-कूबती डॉक्टर साहब, कर्टेकी साहब प्यारेभाऊजीके पास पानी बीर सबको छोटे बच्चोंकी तरह बंगूठा दिखाते हुबे कहा "क्यों देखा बापूजीको लेकर ही बाहर आभूगी न? भवबाम किसका? आपका या मेरा?"

शामको बापूजी बोड़े बचकर लामाने जागामे जाये। सब धन्धी तरह पैर करना बगैरा बाते कही। बीर अंतमें बोड़े "न जाने क्यों मुझ कूटनेका कोबी वृत्ताह नहीं है। मुस्ते मुझे अपने हृदयके भीतर खबेरा लम रखा है। बसता हू बाहर बाकर क्या कर सकूँगा। प्रैरा तो खयाल है कि सरकार अधिक समय मुझे बाहर नहीं रहने देनी। बिभाग पर लूब बोसा छपता है।

प्रार्थनाके बाद पू बापूजीके पैर बबाकर हम सब सामान बाचने म कुन बये।

पुस्तक स्पेसरी बीर बूसरा भी बितना सामान पैर करना बा कि माराबहनके सिबाब रातमें से किसीने पछक तक बही मारी। बेकाअरु रिहू भीका हुनम! हमने तो बाकायदा बरकी तरह सब अितनाम कर छिया बा। प्यारेभाऊजी बीर मुध्रीमाबहन तो अपने कागबोम से ही मिर न जुठा सके। डॉ गिस्बरने अपना पैरिब रातको भंडामी बने पूरा किया।

१-५-४४

मैं मुबह ४ बजे निपटकर महाने-बोने गयी। साड़े चार बजे प्रार्थना हुई। बापूजीको गरम पानी बीर बहुर दिया। कर्टेकी साहबने बरुगर हृदयने ३१ रूपयकी बैली बापूजीको अर्पित की। ये प्रेमी बरुठ प। ज्ञान बरु समाधि पर गये। बहा बिग समाधिमें लीन हुजी को महान आत्माआम लच्छी बिदा तो आज केनी थी। अब तक रोज फूठ बङ्गानेदे बहान नी मानो नाआनू भिन्न हो जाता बा। अब पता नहीं बापूजी कब आरम? लूब मजाबट बीर लूपरीप किया। पूरी प्रार्थना बीर बागहबा अणाय बोलते बोलते समी बरुपण हो बने। भिक्कीछ नहींभीये को बा प्रिवत्रनीम पहा कठोर बिदा ली थी। पत्थर बीसे हृदयकी

भी निचला देनेवाला दूरव था। बाबूजीन बागालो महफके बाहर पैर रखते हुए अक पत्र ठेमार कराया। कुतम लिखा

महादेरमात्री और वा शानोही अंतिम किया यही हुभी थी। अिममिने दिन शानो लमापिनी पर नरनरभरने पुन बड़ाकर राज शानो समय अरदि अरंग की है। अमिराहके अिन स्थान पर जानेकी लिच्छा रगतवाने मग-नरंधपी जब चाहें लर वा नरें अिनके लिने में आगा रगता हु कि मरवार मानवीय आमागाही जमानने मे बहु भाग प्राप्त कर ली। मे यह बाबोवस्त करता चाहता हु कि अिन अरिभ स्थान पर शानो समय प्रार्थना हो। मेरी आरम्भा है कि मेरी प्रार्थनाके अनुसार अररय दिया जायगा।

ठीक आज करने ही मरारी आ बहुके। लर अरनेवारानो आर अिनकीय मरानने बार लग लिया गया। आठ अने बाबूजीने मोठममें पैर रगा। पीछे पीछा मारकर यह जानेमे में हुनी मारने आभी। पहलाक बाबूजी मुजीमावहन वरनेक मरारी और ही चाह गया हुनीमें अरकर मारर भीगवहन और मे। तीठरीमें वरमात्री और प्यारेलारने। मे।

वर्यहुी पहुच। बाग ना मंग के समयें आर दिवानी वा लर वने जेगा वानर था। बाबूजीन रमने करनवा लोड भीरियाही लर अरर र। मे। आते ही मुजीमावहन स्वाध्य-अरर अरनेक शारी किया। मेने बाबूजीके अरर मानारीया लीपार करता लक किया। बाबूजीन अिनरवालाका वार ली था। आरमे बागल शीव अर अिन ली अने ली ल लर। बागल अर पीछरी पुनर-अर वरने अिनका अरनेवत रगरवा वार अरर अिन किया ली। अरनेक हुभी।

बाबूजीन अररर किया। मेने मे अने वर। लररवा वरर वरही अरनेकय ना ररर के अिन अरनेकी अरर अरर लकी रि लर हुनेके लरर अरनेकय अरुकर अिनर वर। अरनेकके अने अरर

घाव होनेके कारण सोव पेड़ों पर चढ़ गये। प्रारंभिक बार बापुजी बोझा घुमे और लूब बक बानेके कारण बोझा भाराम करके डूब गया। डॉक्टरोंने बाध की।

रातको जब मैं बापुके सिरमें टैस मल रही थी तब मुझे झूठोंन बिजला ही कहा। रेश सिधा मनुष्य वैसी मझा रचता है वैसे ही फल मिलता है। हृदयके को बड़ी निस्वार्थ प्रार्थना कभी निष्फल नहीं जाती। बितना दूने प्रत्यक्ष अनुभव कर लिया। मैं और दूसरे सब बय तक बिनोर करते थे। परंतु यह मैं तुझे बिनोरमें नहीं कह रहा हूँ। बितना ज्ञानपूर्वक समझ लेयी तो बहुत है। मझा ज्ञानपूर्वक ही तनी यह महत्त्वपूर्ण काम करती है। यह हृदयमें अंकित कर लेता।

३७

पर्जकूटीमें

पर्जकूटी पूजा

७-५-४४

पू बाका स्तुभ शरीर हमारे बीचसे झूठ गया या फिर भी झुनही समाधिके दर्शनमें भेसा गयास होगा या कि मैं हमारे बीचमें ? परंतु आज पहला दिन बेसा मुगा जब मेरे मनमें और हमारा महत्त्व भा — यथाप पञ्जकूटीम जाबही समा नहीं रहे थे — कुछ न एक तम मान्य तमो और वह भी पू बाकी अंतिम छाया थी। तबकाय अकाशक परिवर्तन हो जायता मान्य पहले-पहल जाय मझा तब मुझके अंत यवन बय मुझके अंत बय तकके समझमें मया रकन एक मया बिजला मतन त ई जान लयास नहीं था।

यब अंत यक बापुके साक्षात् निज जानस यह मुझसे बोले म पू तब मैं तब तबमें यह मया अंतर कि समाधि पर बा तब क त बनि पर अपन जयण। प तू यह बिचार माने ही जान

हुआ कि आज हम वा बीर महादेवसे सबकुछ बुझा पड़ गये हैं। क्योंकि फल सरेरे तो खर्चन करके पळे ही थे। यदि तुमने या बूझर किसीको जाना हो और समय मिले तो हो जाना। मुष्मीसाबहन तो काममें मिलनी बूझी हुयी है कि बूझ बिचकुल बन्द नहीं मिलेगा। परंतु वह वहाँ जाना पसन्द करेगी। जिसलिये बूझ पूछ भेजा। मुझे आकर जाना बेसी तो जलोगा।”

वहाँ जानेवालोंमें तो हम बहुतस हो गये। सब वहाँ गये और खर्चन करके वापस आये।

आकर साहे स्यारह बजे बापूजीको आगा दिया। बीमारीके बाद आज यह पहला भोजन था जो कुछ खास्ता पतली रोटी (तालरा) बरासा मसतन छ और कुछ और खुम्मा हुआ था। बापूजीको अभी तक कमजोरी तो है ही। मुसाकाठिपीका पार नहीं है। जिससे बापूजीको बकास भी महसूस होती है। घामकी प्रार्थनामें लीय जगह न होनेसे पैरों पर खड जाके है। घामकी कर्मक चंडारी आये थे। कटली साहब अभी तक आनाथा महलमें ही हैं। कहते हैं कि वहाँ मुझे सब कुछ मीननेम ब्रेक दो दिन लग जायगे।

पर्वशुद्धी पूजा

१ -५-४४

पू बापूजीको वहाँ रहनेमें आराम मिलेगा जिसकी डॉक्टरों और बापूजीके बीच गूब बर्षा हो रही है। बापूजी तो सिवापाम ही जाना चाहत हैं। परंतु वहाँ खर्चन गरमी हानके कारण ममी मना करते हैं। नाम ठीर पर हवा लानेको ही नहीं जाना तो बापूजी हर्षवत्र नहीं चाहत। परंतु हवा पाके लाने तरीकेके मुपरते हुमे बापूजी कुछ महत्प्रयुष वाक कर सके भेसा खान ता भक बग्गरी ही है। अतने तप हुआ कि बूझ पर जाकर छ। यह अनुभव बिनयके बाद बापूजीने घान्तिगुमार भार्गीके मेहनत बनना म्वापार दिया। जिसनेमे आज घान्तिगुमार भार्गी बबरी पय ह। बल हवारा जाना तप हुआ है।

छामको हम सभी छामाधि पर गये थे। बापूजी यी छाम थे। छामको बापूजीने दूध नहीं छिया। केवल दो छंठरे, परम पानी और छहुर छिया। अभी तक छितनी चाहिये खुतनी खुपक शुरू नहीं की है। बेहरे पर पीलापन अधिक छयता है।

राठको कहू रहे थे “कारोंका बहुरापन पूछ नहीं गया। छिछमें कुछ हुर तक रामनाममें भड्डाकी कमी भी पाटा हूँ। यदि राम-स्टनमें कुछ भड्डा कम जावयी तो बहुरापन बचरय बला जायगा।

३८

बंबमीमें

बुध

११-५-४४

हम सुबह अल्बीकी याडीमें बम्बजी जाता था। छिठछिमे हम प्रार्थनासे आर बटे पहुँक खुठ गये थे। आधा छामाज तो छीषा मोटर-कारीमे बम्बजी गया और बाकीका पैक करके कमुभाजी और नारायणभाजीको सौप देता था। प्रार्थनाके बाद बापूजी आधा भँटा माय। प्रमलीका बहुरकी पर्यकुनी अेक मुसाफिरखाने बैसी बन लगी है। बुन बंधारीका भी अंक छिनिटका आराम नहीं छिछटा।

मुबहुरे श्री पुता स्पंसल पर लोनाकी अगार छीइ बमने लगी थी। अब बापूके बम्बजी पहुँकने पर बम्बजी लकरीमें गया हान रामा। लकमग मबा हम अब हम अंक छोटने छोटके वाठ खुतर। अब स्पंसल पर बहुत भँड हागी जैसा सोचकर हमने अिम प्रारार से बके स्पंसल पर हा छिनिट गाडी लकवा ली थी। बापूजी मुग लकलल और में अंतर गया। परनु जनताको यह तो मामूम ही ली बरा था कि बापूका अक्रम रजग। अिमलिक अटक कुछ लोच पू बापूके निषामाधानका लकल जा लक व। हमारी माटरके मुबरलका

कोपोंको पठा न चलन इनके किसे झाडिबर मड़ी होधियारीसे मोटरको ठीकीसे ले जा रहा था। परंतु कितनी ही बगहू बनताके प्रेमके जाने खुशकी होधियारी नहीं चल पाती थी और जीप मोटरके पाछ भाकर भाबीकी बिन्याबाद के नारे लगाते थे।

मोटरमें एक तरफ में एक तरफ सुर्तीकाबहन और बीचमें बापूजी बैठे थे। बापूजीका विचार था कि कुछ पढ़नेमें एक बंटा बग आयसा बिससिबे में सो लगा। परंतु सो न सके।

प्यारह बजे घर पहुंचे। सुमतिबहन (श्री सान्ठिकुमार भाबीकी पत्नी) ने बापूको तिलक लगाकर भाला पढ़नाजी। अम्माबान (श्री सरोजिनी देवी) बही थी मुन्हींने बापूजीका भास्त्रिन किया।

मने मुन्हु प्रणाम किया कि तुम मुनके मुहसे ये धर्य निकले क्यों बनी था तो हम सबको छोडकर चली गयीं न? आज बाके बिना बापूका बकेक देखकर हृदयको चोट लगती है। जाने मरकर तीन ही पहीनोंम बापूके लिले जेल्के द्वार खोल दिने। मुने बाकी भापिरो बातें मुननेकी विच्छा है। तुम तो बड़ी माय्यवान हो कि झाडिबर तक बही रही लेकिन मं मुनकी भाडिबरकी बात मुनकर ही मरनको पबिन कर सू।

मेरे मनम अम्माबादके लिले पुस्यपाव तो था ही परंतु मुनके सैठे प्रममय शर्य मुनकर मुनके स्नहसीम स्वभावने में बधिक परिचित हुयी।

बा और मराजिनी देवीके बीच कैमा कीन्धिक संसंध था मुसका महा बचन करना अमरतुन हाया। अमी बने नामान थी टीकम अमाकर नहीं गया था लेकिन भिन लमासन कि मुनके से टार्य बही पून न चाम् मुन्हु मन बननी शायरीम मोट कर मिया।

बापूजी भाब प म नबगे बिनमुनकर मास्त्रिन करवान मये। मे बापूजीके लानेकी संजधीरमें लगी।

लगभग माडे प्यारह बजे बापूजी सब बायन दिरटकर आगप करवने लिख लेन। म पैरीमें थी पल रही थी। मुन रहन बन

बाप मुझे ठीके बारेमें सच्ची चिन्ता हो रही है। मुझे सरकार कितने दिग्गज बाहर रखेगी यह मैं नहीं जानता और जब मुझे पकड़े तो सरकार तुम या सुखोबाको मेरे साथ नहीं रहने देगी। लेकिन सुखोबाबहन तो डॉक्टर है जिसके साथ मुझे मेरे साथ रखे। जिसके जैसे सुनारके पास सोना या मुहर होना है परंतु मुझे आकार कौन देगा जिसकी मुझे चिन्ता नहीं है, मुझे तरह मुझे आज ठीके विषयमें चिन्ता हो रही है। ठीके पढ़ाई ठीकसे होनी चाहिए लेकिन जब मैं जन्मे बाहर हू तो भी मुझे अच्छी तरह पढ़ाना मेरे लिए कठिन है। जन्मे हुए कुछ काम नहीं होता था। लेकिन महा तो चिन्ता काम आक और मुसाकतो रहते कि मैं ब्रेक पिनिटकी भी फुरमन नहीं निकाल सकता। चिन्ते तुम्हें जरा भी चबचना नहीं चाहिए। पर तु अब मेरे विचारपर मुझमें जुदा होना ही पड़ेगा। जिस तरह तु रोगरोग कर मके चिन्ता चिन्ता मेरे समझाया। जिसका

भैरवी चित्ता होयी जिसकी कल्पना मुझे लगी हुयी जब मुन्होंने गरम पानी पीनम इस निमिठ बेर की ।

दिनभर दंतदार्थियोंकी मीड़ छाटक पर लगी रही । परंतु प्रार्थनाके समय ही सबको भीतर आन देना ठय हुआ ।

घामको सूर्यास्तके समय जुझे छट पर बापुजीकी हाथिरीमें गर्वन करत हुमें सागरके साज मानव सागरके मिलने पर मध्य प्रार्थना हुयी । अतएव २१ महीने बाद बापुजीके वर्धन क्रिये । प्रार्थनाके बाद बापुजीने भेंटमें माये हुवे फल बालडीको घाट विदे हरिजन फंड विक्रुटा क्रिया और घर आकर बोड़ा घुमे । गी बने बूब पिया और परके लीमोठि बात कण्ठे सा मने ।

जिस प्रकार बंबजीका पहला दिन बीता ।

१५

१५-५-४४

बापुजीको चितना माराम बाहिरे मुठना नहीं मिल पाता । मुलाकाथियोंकी बंबजीमें लड़ी-सी लगी रहती है और बापुजी बाठे क्रिये दिना रह नहीं सके । जिसदिने डॉक्टरोंने घोषा कि कोबी बीधा चौकीदार होना बाहिरे ली बापुजीको भी बूठसे बाहर जाने पर कह सके और मुलाकाथियोंको भी काबुमें रख सके । बापुजीको नाएज करना और प्रभाका अपमथ लेना—यह बहुत कठोर हृदयके चौकीदारके बिना नहीं हो सकता था । उसकी तबदर सम्भावना पर ली । मुन्होंने यह विस्मेशादी हर्षसे स्वीकार की ।

घामको में कुछ पत्र बापुजीको पढ़कर सुना रही ली । मुसी समय सम्भावना मायी । अपने सामयिक डगसे बेहरे पर हाम्य लकर कहने लगी जब में कोबी जिस डोडरीकी सम्भावना ही नहीं हूँ कापडी चौकीदार भी बनी हूँ । कोबी भी बजा नाम क्रिया लो फिर देखिबे मया ।। बापुजी जिससिंसाकर हंस पडे ।

मुन्होने सबको चितना काबुमें रना और अपने कर्तव्यका जिस हद तक पावन किना कि बहा ठहरी हुयी पंडित विजयालक्ष्मीकी मा

कुर पचावतीबहनको भी जाना हो तो अम्माजानकी बिजाबतके बिना बापुजीके पास नहीं जा सकती थी। वे कुर भी बिना कामके नहीं जाती थी। जिन्हे अम्माजानकी चिट्ठी मिले वे ही अन्तर जा सकते थे।

सारे दिनमें बापुजील क्या क्या काम किया क्या खुपक ली बकरा गारे दिनकी आदरी देने में रातको मुनके पास जाती। और रातको बहा जाती तब मुझ लिलामे बिना वे कभी बापल नहीं आने देती। बिजानका मुन बडा सीक था। बाल्दस्व भाव भी असा ही था। पोसकी तल जब भाव रातको में बहा पडी तो मैंने कहा "मै यही कुछ न कुछ जा लेता हू। पर बापुजी कभी मुझे कुर फटकारेंगे।"

अम्माजान बोली बुइडेरी यदि तुझे डांटे ली तू साफ कह देना कि मैं नम आपको अम पडना। और जब तक नया अम करनकी लिखित अनुमति अम्माजान न हें तब तक अम न करनरा आपना बचप हूँ। जिसलिजे मुझे डांटमा हो ली पहले अम्माजानमे बिजाबत के धामिये।

जीवन में समाजी दुरु की तबस पात्री-पात्रीका हिसाब नुनसे मीना जो नुन्होंने सुकसे बाहर तक भेजा ।

ता १५-१-४४ को कपचीमें भरे पिताजीको बापूजीका पत्र मिला । बुकि नून पत्रमें यह भेतावनी थी कि नुन्हें कितनी बापीकीसे भरी देखरेख रखनेकी जरूरत है भिसकिये नुसे बसरख वहां देती हूँ

१२-१-४४

बि. अपसुखकाल

नुन्हें यह पत्र मनुके बादके बाद तुरंत सिखता था परंतु सिख न सका । मनुने पाठ-पाठ ही मुझ बहुत लिप्यक्ष किया । मरा खयाल था कि यह सब समय मजी हूँ और बचनके अन्तकार काम करेगी । पर मने मूल की । नुसन पाठ पाठ प्यारेभाऊके भात्रीकी कडककि किज दिखीला और बापीका पाला खरीव कर भेजा । मुझ बड़ा दुख हुआ । भाग दुख नुन किने हुने पत्रमें नुंकल दिया और बीजे लीग रो । यह सब नुमन जान किया होया । नुन्हें साबबाल पटना बाहर । नुके महान नुनोंका बधिक विषय ही और नार हूर तो बिब बागाम मनुकी भेद वरं राजकी-पुनेका

हो तो मैं बचस्प बेचना चाहूँगा। मेरे मनमें जो सन्देह पडा ही गया है मुझे तुमसे कुछ छुपाऊँ? जब मैं बिपदा तक आगिष्ठुमार मीचूँ ब। मुझसे पूछा तो मुझोंन कहा चिन्चिमासे तो बितनी बचत ही नहीं सचठी और अपनुबसाक पर पकका कोत्री कारण ही नहीं।

अब मुझ अबाव लिखना। सुस्तिके^१ बारेम सुधीबाने लिखा होगा। मुझकी चिन्ता रखना। मनुकी बातें बहुत बराब है। साबधानी रखनसे ही बच सचठी है, नहीं तो बोड़े बपमें लगी ही आसमी कि वह लिख-पढ़ भी न रुकैगी।

बापूके आशीर्वाद

मेरे पिताजीन साथे हिसाब भन्न ही दिया था। अब बापूजीकी लयाल हो गया कि जिननी पूजोमें १०-१२ रुपया खर्च आसानीसे किया जा सकता है तमी बिस नाइका अन्त हुआ।

बिस नारे नाइसे मेरे मा पर भी बिजना अबरस्त आपात क्या कि मे करायी जाठ ही बीमार हो यमी और बापूजीको बितना संतोप हो गया कि जो कुछ हुआ वह बचपन और नाममर्तके कारण हुआ। बिमबिन्न मेरे माईके पत्रके अबावमें मुझोंन पुरन्त ही पत्र लिखा

२२-१-४४

बि मनुड़ी

तू जाठ ही बीमार पड़ यमी जिनत मुझ हिका दिया। मेरी नहीं तुमी बानोका अबरस्त पालन करे तो बीमार पड़ ही नहीं करनी। पालन निरक्षय ठीक है। परनु परीधा पाग करनके जोबसे हरपिन्न नहीं। आसोंको बचाकर जिनता पड़ा जा रुके पड़ना। तू अमार है। समी बचसे बीमे होते हैं। परनु तुमसे बीरजकी आया रगना ह। तुममें जो गुण हैन है वे सब

१ मरा नहीं बटन।

इसका किसका कि बहावके उल्लेखी छीटी हो चुकी थी। मुझे मुझे क्या बापुजीतक यह कहकर मना है। बापुजी आते से कि मेरे मते मुझे छायाएँ मरना हुआ था। किसका मुझे क्या हुआ कि कोश्री अंगे की भरी होगी जिससे मैं सुख हो पाऊँ। इसी कल्पना को होती है किने ? परन्तु यह तो भी सोना मुझे इतर ही निकला। और वह या जीवनका पाठ।

इसका बचपनका जग्न होत पर पहलनेका कोश्री कपड़ा या इसी कोश्री काज सेनेका रिवाज है। जिस रिवाजसे केनेवाले और बचपना किता अहित है यह कल्पना मिस बचपनके साथ बापुजीने मुझे या पत्र किता बचने हुबो। यह मत्र बचपनका बहा देती है

८-१-४६

पि मत्र

मुझे अब मन रहनेके बजाय मुझकाबहुत रहना चाहिये। सभी का मुझे बचपनी भी नहीं छोडा और काजामन कर दिया। भिम तरह नू मनी किताअँ कितानी मानगी ? तुने स्वयं अक कोश्री कमाधी थी। अहाय किता किता गये ह किसका मुझे मुनका रपना बचपना ? बचपनका नू किताइता चाहनी है ? परन्तु मेरे केने

नरक भुपचाळ किया और मेरे अपनको समझाया कि भिन्नम बुद्धी होनेकी काशी पाठ नहीं यह ता जीवनका अर्थ पाठ ह।

कदाचिते बदर पर पहुँचते ही मन मन विचारके हाथाम बाहुबीजा पर रग दिया। ब हस दिवे। मुझ समा कि बुद्धी बापुके राम राम और अपर कि मनुके अर्थ मनु कितनेसे माय मरे पिताजी मुझ पठत मुक्तता बस। परन्तु यहा भी मरी धारणा भुष्टी निरली और मरे पिताजी बहन लम मून पार्थ किया ता मो मा बहुत अच्छा लया और बापुके पाठपर हम यह भी अच्छा लया क्योंकि ब बडे बार नू भेगा काम नहीं करनी।

परन्तु बापुके राम राम पद्यामे तो यह पत्र भविष्यमे बन गया। पर जान ही मेरे बापुकीको पर लिया। मुझकी माथे माथे आपदा भनी गली न करनेका बचन दिया और गीत मेरे पिताजीन भी वो पकिया किया कि मनु अर्था मिथी गन्नादार बहा हो पकी है कि अर्था मूल न बने? मुझ मूल की मिथी मे गुण हुआ क्योंकि क्रिपणीकरण मुझ हो गया।

मात्र भी अर्थको अर्थकारी निगारके तीर पर अपरोक्त बाना बापुके मेरे नाम है। जो बापु गलन पाग भी न हो अगे पर जान बरामे होना कि बह बापु पीदनी है? अर्था गल्प हम बहा बुद्धम पिताके बनकर अनासक्त गर्भ करके पदमकी अर्थ अर्थ है। एसाय देय गरीब है। जोकी दासक गरीब शान या अविश्वक समा होना बह कीका नहीं जानता। फिर भी हम अर्थमे है अर्था बापुके देवर और माह गन्नापर अर्थ वगु बना देते है।

जान व अर्थमे नैदार की अर्था अर्थ अर्थ देन पर बापुकीको बारी बापुके नहीं पा। अर्था जोर अर्थ गन्नाक बन गनी एसा तो अर्थकार बहा पर अच्छा अर्थ अर्थ उर बंका है अर्थक वोग। ए ए अर्थ तो जान व के अर्थमे नैदार अर्थक नहीं देते है। पर अर्थ अर्थका अर्थक है। और अर्थक तो है ही। बापु बापुके अर्थक व बापुके अर्थक है। गरीब की दास अर्थ अर्थके अर्थक मेरे पिताकीको बह लिया और अर्थ अर्थ अर्थ अर्थ

तो मैं वहीं (धियाग्राम) पहुँच जाऊँगा। मुझे ब्यारैवार सिखा
नाम। जिसे भुमय हो वह सिखे।

बापूके आशीर्वाद

पठित महतमोहन माळवीयजी महाराजकी सिखा की कि
बापूजी एवाके किनारे आराम लेकर भोकेचन हो जायें। मुझे
बापूजीने (हिन्दीमें) सिखा

पुन्य माळीसाहब

जैसे सत निखनकी समति डॉक्टरोंने की है। आपके
प्रेमका पात्र में रहा हूँ? मैं जानता हूँ कि आपकी सिखाकी
पुति में नहीं कर पाता।

डॉक्टरोंकी समति लंबी मुसाफिरी करनेकी नहीं दिख
सकती है। बात यह भी है कि जल्द बाहर हूँ जैसी प्रतीति मुझ
नहीं डाली है। बीमारीके कारण छूटना ही रहा है? ऐसे
अच्छा हाल पर आदर मुझ क्या कार्य बढावेगा?

बापका छोटा माळी

पुह

२२-५-४४

आजका बापूजी मुझ दहका जाते समय समुझमें कुरसी
पर एक लकड़के समक सिम बैठे है। मुझ समते समय दूर
दूर ही आग लकड़के समक जाति करते है।

मैं ३५ बारी जैनागक निधि है। सवेरीकी तरह
प्राचन के समक । आगका पा लकड़के सिम । मीराबहन रामपुत्र
की Wind & Co. माग।

१ ३ ३ माळी निधिमाय यह बहनूत नहीं डाला बा कि
निधिमाय प्रान्त ५ बाकी थ ५ लकड़के निधिमाय हा रही है
वारा ३ माग ३५ ५ बाकी बहनूत क होने पर भी बागाबल

बा-मय था। फिर मात्र यह बात खीर भी बटक रहा थी कि बीतों पबिब सबाधियो पर मस्तक टेक कर प्रथम कगनवा बरधन नहीं मिया। खीर अब तो खीर जाने जब यह याबा कगनवा सीमाभ्य प्राण्ड होया।

४०

धुंधलसे शिक्षा

मुठ

८-९-४६

अितन कामोर्भे भी बापुजीको मेरी पिताके विषयम बड़ी चिन्ता रहती थी। कर्णार्भे के भी पारखा मरिदके लचालनरीका पत्र मेरे नाम भाया। मुझे वटापी भावका लक्षणाया था। अिसानिजे अन्तम गजकोटके बदन मेरे कटापी जामेही स्वीरुति पू बापुजीम हे बी।

मुझे बम्बईम बरापीके लिजे जहाजमे रवाना हुआ था। मे मुमीलाबहन प्यारेमातृजी डॉक्टर साहय मीरापहन सब माय माय जब परिबारकी भाति जेदों रहे य। मुमीलाबहन और प्यारेमातृजीके हुन्दरे बाभीके महा पहरी ही पुनी हुमी थी अिस बापका मेरे हुम्बवाधानो बना था। हमन यह लजता कि अिस बर्षको हम कोजी भेंट देनी चाहिये और बबजीमें भूलेदबर्भे यर्षक लिजे कोजी बीज लीजने लिजने। भूलेदबर्भे अरुष्ट अरुष्ट लीज मुलाबम पद जाने हे। य भी मुमका गिपार हुजे। खीर भेद बादीरा प्याला खीर बधक लरीर ब पीर करके मेरे बदन न लीजेके भेद रिमीक गाव जहु मुमीलाबहनका भेद रिजे।

मुमीलाबहनने ये बापुजी पू बापुजीका बापजी। बापुजी लज मागय हुजे। मुमन घाति मुमवारभाभेय। बापकाया खीर भेद बबके लज बरक और प्याला जहाज बर बड़े बगल देनके लिजे बरकन बीटर्भे भेजा।

जीवनमें कमाजी धुस की सबसे पानी-पानीका हिस्सा बनसै मागा जो मुन्होंने धुसके भागिर तक भेजा ।

ता १५-१-४४ को कराचीमें मेरे पिताजीको बाबूजीका पत्र मिला। बुद्धि बुस पत्रमें यह बैठाबनी थी कि मुन्हें कितनी बारीकीसे मेरी देखरेख रखनकी जरूरत है जिससिसे मुँह बहारप यज्ञ रैती हू

१२-१-४४

बि अयमुसकाल

मुम्ह यह पत्र मनुके बातके बाद तुरंत लिखना या परंतु लिख न सका। मनुन चाते जाठे ही मुस बहुत निरास किया। मरा खयाल था कि वह सब समझ गयी है और बचनके तसार बाम करेयो। पर भेजे भूक की। मुसने पाठे पाठे प्यारेभासके बाबीकी लइकोके लिख लिखीना और चादीका पाला खरीद कर भेजा। मुस बड़ा दुख हुआ। मागा दुख मुन लिखे हुए पत्रमें भुँसक दिया और पीन लीन हो। रस गब तुमन जान किया होमा। मुम्हें साबबाल रहना चातिव। बसके महान पुनोका अधिक विकास हो और बागू गी बिन आगाम मरकी बेड बरं रात्रकी रहनेका मेन गमाव दिया था। पत्रु बन बहा जानेको परंतु अमुसक

हा तो मे जलस्य देसना चाहूँगा। मेरे मनमें भी सुन्देह पदा हो गया है कुछ तुमसे कैसे हुआ? जब मैं बिगाड़ा तब शान्तिकुमार मौजूद था। मुझे पूछा तो मुन्होंने कहा सिन्धियासि तो जितनी बचत हो नहीं सकती और जयमुखसाल पर एकका कोमी कारण ही नहीं।

जय मुख जवाब लिखना। मुक्तिके बारेम मुसीकाने किया होगा। मुक्तकी चिन्ता रखना। मनकी आज्ञे बहुत लराव है। सावधानी रखनसे ही बच सकती है नहीं तो बोड़े बर्षमें बपी हो जायगी कि वह लिख-सक भी न सकिमी।

बापुके आशीर्वाद

मेरे पिताजीन द्वारा हिस्सा भत्र ही दिया था। जब बापुजीको गयाज हो गया कि जितनी पूँजीमें १०-१२ रुपयेका वर्ष आसानीसे किया जा सकता है सभी जित्त काबला भन्त हुआ।

मिठ छारे काबल मेरे मा पर भी जितना जबरदस्त आभात ह्या कि मैं कराही जाते ही बीमार हो गयी और बापुजीको बिगना संतीय हो गया कि जो कुछ हुआ वह बचपन और नासमर्थके कारण हुआ। मिठकिज मेरे माईके पत्रके जवाबन मुन्होंने सुरत ही पत्र किया

२१-६-८८

बि मनदी

तू जाठे ही बीमार पड़ पया बिमन मुम हिला दिया। मेरी बपी हुई आशीर्वा भ्रमरप काबल बने ना बीमार पड ही नहीं सकती। पड़ना निश्चय टोक है। पन्नु परीधा पाठ करनके भीबसे हर्षित नहो। आशीर्को बचावर जितना पड़ा जा नके पड़ना। तू जबाब है। लर्बा बचन भमे हांठे है। पन्नु मुगसे पीरकी आमा रणगा ह। तुममें जो भग देल है के धर * मरा बड़ी बहन।

सहकर्मियोंमें नहीं देख। बिना मुर्कोंको ध्यानमें रखकर तुझमें
 कराना भी बीर देखता हूँ। तौ यह पहाड़ जसा लम्बा है
 और सहन नहीं होगा।

बापुके बापीबाँर

मेरे पिताजीको लिखा

२३-६-४४

जि जयमुक्तमाल

मुझको दो पत्र मिले हैं। तुमने छारा धीरा लिख भेजा
 यह अच्छा किया। परंतु भिस्के बारेमें फिर कभी लिखना।
 मनसा राजकोट बहनका कोठी पकड़ते नहीं। वहाँ भी यह
 मरी अनर्मान्त ही आती है। अच्छी डीकर पढ़ना शुरू करो।
 स पाग हाथका जख्मो न करे। परका नाम करना तो कुछ
 मना है। निरालिप्त जगमें बोझ समय दे। नीकरकी तंगीके
 राज्य कुछ न कुछ तो करना ही पड़गा। जपर वहाँ बीमार
 । रहा पत्र तो अनन्त स्थान में विवाधाम लभमूया। परंतु मेरे
 पर अनन्त न करगा तो बीमार हरगिज नहीं पड़गी। वहाँके
 बरका का पालना अनन्त का जाय और मनुको है कोठी
 बना। ना ना नक ही वह न। अनन्त धीर अच्छा
 न गग न पर मर रहा बाँरप। आगाकी मनाल कर
 प। न न

बापुके बापीबाँर

फिरसे सेबाग्राम

बापूजी जिन स्वास्थ्य मुबारकें विद्य पंचयती पत्र व और में कराची। मेरे और मेरी माताके समान बापूजीके साथ सैनिकों मीलना कामका था। मा बेटेसे कितनी ही दूर हो तो मो पुत्रीकी चिन्ता नवबोधकी जगता कमा कर्मी दूरसे क भक्त महत्त्वकी और पहरो बन जाती ह। अतः जितनी दूर होत पर मा कुम्होंने बहासे मेरी पढ़ाओका सुख ध्यान करना बीमारी और बेचके विउन अथिक कामोंमें भी रखा। बापूजीन मेरे नाम लिख नीचेके पत्रके साथ मेरे पिताकको मो जिन हाथसे जो पत्र लिखा प्रुसम अिष प्रकारका आग्रह किया कि अक्षयके अनुचरण हिम्ब सस्कुत व्याकरणके रूप और सधि नजरती अक्षरों और बापा पर अक्षरकार तथा यत्ना बोधवन्तित भूमिति विज्ञान आदि सब विषयोंकी में तोतेही तरह रटकर नहा परन्तु समसूचक भीनू। और मेरा नासिब प्रय न-पत्रक जो मयाया। माताके रूपमें के मेरा कितना ध्यान रखने क जिसके नमूनके तौर पर मेरे पास बापूजीके कुछ पत्र ह। जन्म में जो अक्षरका यहा देनी हू।

पंचयती

१-३-४४

वि मनुषी

तेरा पत्र अन्धा हू। जो काम तुक किया हू वह अज्ञान हू। परन्तु जिनसे तेरी पढ़ाओका विध्य पढ़ना। मने ही पढ़ केजिन जिनने तेरी आर्षे बच जायेगा। माताको विमान जिन जिनना पडा जा मके अतना पढ़ना। सेबाग्रामित तो तुम भीस्वरन ही हू अिनलिख बहु काम तुम मिल जाना हू। डिब्रुकपची छोड़ देना। हरकक जोन बीय गर्दब नम-सवर रणता हू बसे संमानकर रणना और नाममें जाना।

बापूके माताजी

बचपन बचपन और भरी सारी आपरबाही बापूजीकी सिप ही।
 भिसल्लिजे बूमरा म्भन डाटवा वार्ड मेरे नाम जाया।

पंचपत्नी

२७-७-६६

बि मनुड़ी

तेरा बचन ८० तइ पर जाय वह तो धर्मकी बात है।
 (आगागी महकम १ ६ पीठ बा।) रातके दो बज तक पढ़ना
 बाप है। पाम हीनकी यह बात ही नी मम अगी पढ़ात्री नहीं
 चाहिये। यदि तू नियमना पालन कर ही न करे तो तुने मेरे
 पाम आना पड़या। भैनी पढ़ात्र के बजाय तू भरत रह जाय तो
 मुझ बर्दांत हो जायगा। दबा केतम भी तू अनियमित रूही
 है या नरा बनाता है ?

बापूके भन्धीबाद

अगले अफसके बूमरे गजाहम मेरी बडी बहनाई तपीया
 अफत निर जानमे असाअर बम्बजा जाता पदा। बापूजी भी अग
 मनन बम्बरी मानवाए बा। म अर निर ठाही। मुन ऐगने ही
 बुगोंने दगा अर दगाही नही जाना है मेरे माप भेवाहाअ बम्बा
 है। भिन प्रवार मे बापूज के माप भेवाहाअ नही।

भेवाहाअ जानके बापू बूमर बापूजी और मुनीआदतनकी ऐग
 ऐगने अर अहाअप दिअ भग्ना ही पदा। ए तू अर अगाई जानमे
 बिअर ही अर दिअ और भेवाहाअमे मुनीआदतनकी ऐगनेअम
 अर नई अ बम्बम अमन एर अगले अगी ही नही।

भेवाहाअम अर दवाहाअम बम्बा है दिग। आना के बाबादि
 नीग बूअ नाअ अगी है। ६ अगादवा अमन बापूजम
 अर अर अगाअ मे बना दिग और मुन नई अर अगी बापूजी
 बिअर दिगवा है।

जो प्रथम कार्यक्रम बापुजीमें हमारे लिये बनाया वह बसरध-
विष प्रकार है

यह कि मनुड़ी या सुधोलाहकके लिये है।

१ सन्नाहठा प्रथम धिया-सूभुपाका कार्यक्रम।

१ धरा के भायोका साधारण वर्जन। जितमें पेटके
भीतरी भाग मुख्य मुख्य इच्छिया और रसे (ब्लैन्ड) का जाती है।

२ साधारण धाव जो रक्तस्रावमें होता है कुनका वर्जन
कुनके सबबकी अनेक प्रकारकी दृष्टियाँ — खोपड़ी पर, पेट पर,
अगलिपों पर पैरो पर अित्यादि।

३ बहुत पून बंद करमेंके लिये टॉनिकेट धिसाक्रमका
जोर धिसाने बाहरना कामचलायू ज्ञान पैठ पैठ द्वारा।

४ अस्पतासका सामान न मिले तो काम चलानेका उप
वैध कि कुनके लुभे पानीके बजाय परम राख बनाया हुआ
नागात्र बभाजी हुयी खनी सूखे कपड़े या फलामेनके बजाय
पहनेका विधा हुआ बखवार पनेरा।

५ दूर दूरे मनुष्यके लिये धाप दिखूके लिये
अगली अपचार — जहा डाक्टर न मिले।

६ बाधनी और बामारोको लं जानेके लिये स्टेवर
द्विध अस्पतासका स्टेवर न मिले बहुत अगुनक या लम्बी
ता बासेना ता कालिन स्टेवर।

सामुका डमका इबागोकी बाकायबा कुनके लिये
रनमार रुच करता।

७ बाधनी हुळ अित्यादि लड तासन और पानी काममें
८ नियम पावान अर ख्याजीपर बनेंग बंमे और बर

लगता है कि जिनसे अपेक्षा नहीं बना करता था। अतिमित्रों
गुमने बहुत लीया नहा।

-१ - ८४

बापू

मित्र प्रसार पहले डेढ़ नहींतम क्या मित्रोंका काम मित्रों का
कनाया गया। और हमको परीक्षा भी बनाया भी जानबाला थी।

अनके बादका काम तो गुनीलाबहन ही तैयार किया था।
यह प्रार्थनाक मूल कारण बापूजीका मीमसार हाथका कारण स्थिति
काम मेरे पास रहे गया।

जैसे मूचीम पाठपत्र तैयार किया जाता है जमी प्रसार
एकम्बापूइक मित्र नहीं पढ़ातीता पाठपत्र तैयार करनेका बापूजीका
गिनी किया है मित्रों अगोका कारण प्रत्य प्रयास है।

४२

बापूजी अहिंसा

म राज गुरुह नीने प्यास कर कर दगापानक काम करनी
है। गांध ही बीबागीकी देगकाकि मित्र भी बना करना पटना है।
दोपारकी कडे नीत कर बापूजी का पना करन जारी है अग समय
कालकारी दिने भाने है। मित्रोंका मा बाबा जानकी
दिना है।

बापू ही भेदक काम गांध (दिनाक नीतम मित्रों और
दगापान कर) बापू। व बीबाग है दिनाक बापूजीने कडे
भापकी पनाका काम। उनके दिनाक मित्रों हीनाक दिनाक
कडे नीतम काम दिनाक भी था। बापू पनाक काम मे निना
काम दिनाक ही पनाक गांधक दिनाक हीनाक दिनाक
दिनाक कर ही है व गु दगाका अगोका काम कर करनी।

है। ही। बापूजी का अहिंसाक काम है अहिंसा
कडे है व बापूजी पनाक काम है अहिंसाक दिनाक हीनाक

बाबे जिसका मे प्रबंध करा हुआ। जिसके सिवा किसी लड़कीसे कह
 दूगा। वह आपको ख़ूबी तरह ठेकार करके दे बेनी। (मेरी तरह
 देखकर) अिध लड़कीको धोरबा बनाना नहीं जाता परन्तु अेक बंभाळी
 लड़की ई असे कहूवा। म आपकी अेक सी बात नहीं सुगूपा।
 (बिनोदमें) मे हुनम जो दे रहा हू। मे भी कुशल डॉक्टर हू और
 आपको मेरी देखभालमें रहना है। बैचिने तो सही आपकी ठबीयतमें
 कितना फर्क पड जाता है!

जिस तरह बाँ महमूरके सही रहनेका और पकरी सुराफ
 देनेका भिन्नजाम बापूजीने कर दिया।

मुझे यह बात सुनकर अरमन्त आश्चर्य हुआ और मेने अेक
 नबा ही पाठ सीजा। कहा खुशाका हुआ सात्त्विक मौजल और कहा
 बापममें भिक्कन-मून ! बापूजीसे पूजा तो हंसते हंसते कहने सने
 बापमम सही तो सीखना है।

[बिहारके बबोके भिन्नविधमें बापूजी पटनामें बाँ महमूरके
 मेहमान बन थे। वे बार बार मुझे अपनी पुर्नके समाप्त बागकर
 मेरी सबा सने रहते थे। मुन्हाने मुझ अपने पत्रमें अपरोष्ठ बदनाकी
 बाद दिनामी जो। वह जिस प्रसमके भिन्नविधमें होनेके कारण मुन्हीके
 ससोम सबा बदल करती हू

I need hardly tell you how much I love
 everything connected with Bapu, much more his
 flesh & blood. You also know well how much he
 loved me. He was not only a friend but a father
 to me. I feel I am left alone in this world after
 he has gon

I wonder if you will remember that while I was
 in the Ashram and was ill, doctors prescribed to give
 me chicken soup and Bapu ordered that I may be
 supplied chicken soup. It was perhaps entirely a
 new thing for Sevagram Ashram and naturally there
 was a flutter in the Ashram. I protested strongly

with Bapu that I should not have it, but he refused to listen to me and said that when doctor prescribes you must have it and the Ashram people may not themselves have meat but they must learn how to feed others if and when it was absolutely essential. I considered it as a great privilege. He simply captivated my heart *]

अपने-अपने काठिमाबाइके कार्यकर्ता भारे। माइनरकी हानन बयान कर रहे थे। बी को मानोपकीकी बात ही रही थी। मेक भागीन कहा महाराज साहब तो बहुत अच्छे हैं। मुठे सब कुछ ह परतु कुछ हो नहीं गयता। तब हम क्या करे?

बापू — बप का कहो है वह सब सब ही हो तो सत्याग्रही पर्यसि बिद्रोह कीयिय।

* मर लम्बे तुमन यह कहता थापर ही बरूरी हा कि बापूत सबर एबनेबाकी हर बीबसे मे किजना प्यार करया ह तब मुनके पन्नासे ता किजना अधिक नहीं करया? तुम यह भी जानती हो कि बापू मने किजना क्यादा प्यार करये थे। वे भर शांत ही नहीं वे बरिज रिता भी थे। मुझे मगता ह कि मुनके बने जानके बाद मे किम बुनियात अनेना पड़ गया ह।

शाबर तुम्हें यह होया रि जब मे आधममे बीमार था तब डॉक्टरोंने मुझे बिस्कि-नूर पानेकी सलाह दी थी। बीर बापूने मुझ बिस्कि-नूर बिबानेका हुनम दे दिया था। वर मेबापाम आधमके बिब पायर बिबकुद नहीं बात थी। बिमन स्वभावत आधमम पोही लकनो मची थी। मेन बिमरा जोरदार बिरोध करने हुमे बापून कहा था कि मे बिस्कि-नूर नहीं लया। अरिज अग्रान मरी बाग मुननेसे बिगार कर दिया बीर कहा रि जब डॉक्टर कहत है तो तुम्हें रिता ही चाहिये आधमके बीर मुद मर मांग न शारं सेबिज जगह यह लोचना चाहिय कि निरापन बरूरी होन पर हुमराको कैम रिगारा जाय। बिने मे अरना बड़ा बीबाय नामता हूँ। अरने किम अरहरने जगोंने मेरे रिदकी बिबकुद माद किया था।

बापूजीके कुछ पत्र

तेवाघाम २९-१-४५

अंक बीसवाग मोतीसिरेस पं कृत वे। असिन्दिने मुसकी माताको
बापूजीके पत्र लिखा

वि

बसंतके बने जानेका कौसी भी कारण नहीं है। मोतीसिरेस
मयनर रोय नहीं है। सेबा-हूमुबास बीमार करर बन्ना हो
जाता है। तुम हिम्मत रखना और बसंतको भी दिखाना।

बापूजीका सीबीबि

मह पत्र बीमारके हावमें पहुंचनेसे पहले ही मुसकी मृत्यु हो
सकी। असिन्दिने बापूजीने मुसकी माताको कुछ पत्र लिखा। मृत्यु
या जगके बारेमें बापूजी जैसे विचार रखते थे मह निम्नलिखित
पत्र बतावना।

१-२-४५

वि

तुम्हारा ताग मिला। बसंत बना क्या मह तो उपना ही
ह न? फिर भी मझ पर बिसका कुछ अछर नहीं होता।
मत बहुत मीन देखी है अमन अमन ऐस है। वे बोक सिन्दिने
को पहल है। अंक ताग मीन है ता हुमरो तरफ अमन। बीनी
पहल अंकसे मुम्बक है। बिस प्रकार अमनका हुमरा पहल मृत्यु
और मृत्युका हुमरा पहल अ न है। बिसमें हर्ष-सोक क्या?
और फिर पं मरीके सिन्दिने है। बीसम हम बिबाह करते है नाचते

हैं कूबटै हैं। ये सब खेत हैं। तुम फिरसे ये खेत खेल्ती रहो। क्या विवाह एक आमया ? मेरा बस बके तो मैं विवाह न रोऊँ, बर्नबिधि होने दूँ। श्रुयार मात्र छोड़ दूँ। परतु व्यवहारकी जानकारी तुम्हें क्यादा होगी। हिम्मत रखना।

बापूके आधीबाँद

सेवाश्रम १५-२-४५

बि

तुम्हाय पत्र मिला। हम यदि बीरवरको याद करें तो बण्णा श्रुय कुच-मुच सब भूमना ही पड़ेगा। और जिस आम रास्ते पर हैर खेरे हम समीको जाना है। अंग्रेजी कहाबतके अनुसार बहुमत तो नहीं है। यहाँ तो भार दिनकी आदनी है। अन्तमें तो सबको मिट्टीमें ही मिच जाना है।

बापूके आधीबाँद

बेक बहनने बूसरी आतिमें विवाह कर फिवा जिसकिजे बुसने पत्र हाय बापूजीका आधीबाँद मिला। बापूजीने भज दिया। बापमें पठा जला कि जिस बहनने बूसरी आतिमें घाबी की मुसके पतिकी बेक पत्नी मीमुर है। परंतु बालविवाह होनेके कारण और पत्नी बहुत आधुनिक युवनी न होनेके कारण खबवा किसी भी कारणसे पतिने मुझे छोड़ दिया और यह गया विवाह कर भिया। यह बात आधीबाँद पाँचनेबामी बहनने किसी कारणसे लिखी नहीं थी। तथा अन्तमें यह बेक पहेली है। अंशे सासारिक अन्तर्कोके समय बापूजीका मागस किस तरह काम करता था यह नीचेके पत्रोंसे मात्म हो जायेगा।

बि

तुम्हाय पत्र मिला। का जी मिला। मुझे अन्त नहीं लिख रहा है। अर्हें बीरवार नहीं पढ़ना चाहिये। तुम्हायी बात समझ गया। तुम बीनों विवाह कर लो। धैरे आधीबाँद है ही।

बह भावी — क्या मैं मकेसा बिहोह करूँ ?

बापू — बह मनुष्यको भी समता हो कि राज्यका ठरीका जोरोंकी बिलकुल कुछ सेनका है और बह ही मनुष्यको जोड़ बा जाव तो मैं जान तो बिः मामलेमें बहुत कहा हूँ। बहि बापकी बातमें कहीं भी निजा स्वार्थको स्थान न हो और बह भीरौपरीगो ही होयो तो मानवरक तमाम प्रजा अवरम बापके छाव होगो। मानवरकी प्रजा पिरित्त है। बहपि मैं मानता हूँ कि पट्टीकी बकर समस जायन क्योंकि अन्होन मसस बिस बारेमें बहुत बातें की हैं। और मैं मानता हूँ कि वे मेरा कहा कुछ मानतें भी हैं। बह मुझ स्वीकार सब बात सिध सेन। मैं अन्हु सिद्धूया।

मजमाका काका चिमूरस कुछ लड़कियोंको बाभममें लावे ब। वे लड़किया कुछ दिनन आओ हुयी वो और मनुकी देखरेखका काम बाभमम रखवाका कुछ बड़ी महिमाओंको सीपा गया बा। परंतु वे लगभग हमारे बबालानम ही रहती और मजमाकी नाका ब प्रमादरका बलका प्यार करते ब।

बापूमान महामे पूछा चिमूरकी लड़किया कहा रहती हैं ? कीन बलकी मभाक रचना ? ? बगना। मुझ और कोभी जानकारी नही थी। परंतु स्वाभाविक रूपम ब्रेगा बा बेगा बना दिया।

मेवाघाम भाभम बर्बा

२५-१२-४४

मात्र ओसाधियोंका ग्यौहार होनाके कारण बापूजाने अेक सुन्दर सन्देश दृष्टीमें लिखा। बापूजाका सासी होनेके कारण वह संदेश पढ़कर गुनाया गया

“मेरी सम्मीह थी कि न आज हो सम्म बोल सकूया मेरिज जीवनेकेडा कुछ और ही थी। आजका दिन क्रिस्ममका है। हम जो सब बर्बोंको समान मानत हूँ मुनके लिजे अेजे अल्पक मनन करने कामक हूँ आत्म-निरीक्षणके लिजे हूँ। अंसे मीके पर हम अपने दिक्के भीतरमे और सब पैर निकालत हूँ। हम जानें कि अेद्वर या लुवा अेक ही है। मुनके असली हुषम भी अेक ह। जिसको हम सत्य या हक पाने अन्दके लिजे बूमरोंका मारें नहीं। हम मुस सत्यके लिजे भरनेकी तैयारी रख और पीवा जान पर भर और अपन बूनकी मुहर अवन सत्य पर लपाव। यही मेरी दृष्टिम निवाहमें सब बन्नहवाका निचोड़ है। हम जिस अवन पर विचार कर बाह रख कि बीसा मनीह, जिसे वह सत्य मानत ये अूमके लिजे मूर्ती पर चडे।

पूज्य बापूजी रोज अवनै दैनिक विचार लिखत थे। अेमि बुध्य सबबानने बीताके रखाक हमें मगन करनेके लिजे रिय बीते ही ये मुवावय मबन करने योग्य ह। मूल निष्ठावटकी मबन मेरे पान होनेके कारण यहा दे रहीं ह *

* न मुवाक्य अन्ना गुप्ताके अयमें दिव्य मगन के मागन मबर्अन प्रहासन मंदिरमें तन्कने प्रवापिन हो गय ह। (बीमड १-२-४४-५-०) अिलनिजे यहा अह नहीं निपा गया है।

बापूजीके कुछ पत्र

देवाघाम २९-१-४९

अंक नौबत्तान मोतीभिरैरेके पंशित से। अिससिद्धे मुनकी मल्लाकी
बापूजीके पत्र लिखा

वि

बसंतके चके आनका कोभी भी कारण नहीं है। मोतीभिरैरेके
पत्रकर रोष नहीं है। देवा-सुमुवाधि बीमार बकर बन्धन हो
जाता है। तुम हिम्मत रखता और बसंतको भी दिखावा।

बापूके बाचीबाचि

मह पत्र बीमारके हाथम पहुचनसं पहुसे ही मुसकी मृत्यु हो
गयी। अिससिद्धे बापूजीके मुसकी मल्लाकी बसंत पत्र लिखा। मृत्यु
या बन्धनके बारेमे बापूजी कौछ विचार रखते से यह निम्नलिखित
पत्र बतायंथा।

१-२-४९

वि

तुम्हाण ताण मिखा। बसंत चला गया वह तो सपना ही
है न किण भी मज पर मिखा कुछ बसर नहीं होता।
मन बहुत मीन रंकी ह बसंत बन्धन देल है। सं भेक सिक्केके
वा पत्रक ह। भक नरक मीन है तो हुसरी तरत बन्धन। बीनों
पत्रक भास मस्यक है। अिन प्रकार बन्धनका हुसरा पहुकू मृत्यु
की मल्लाकी हुसरा पत्रक बन्धन है। अिसम हर्ष-शोक क्या ?
तो किण न मभाके विर है। बाचम हम विचार करने है नाचते

हैं, कूबटै हैं। मं सब बोल हैं। तुम फिरसे ये बोल बोलती
रहो। क्या विवाह एक कामगा ? मेरा बस बसे तो मैं विवाह
न रोऊँ, बर्नबिधि होने दूँ। श्रुमार मात्र छोड़ दूँ। परतु ब्यब
हारकी जानकारी तुम्हें ब्यादा होगी। हिम्मत रखना।

बापूक मासीबाँद

सबापत्राग १५-२-१९५

बि

तुम्हारा पत्र मिला। हम यदि जीरखरको याद कर तो
बण्डा-मुठ कुछ-मुठ सब मूळना ही पड़मा। और जिस काम
रास्त पर देर मनेर हम समीको जाना हैं। बपंजी नहावतके
अनुसार बहुमत तो बहीं हैं। यहाँ तो चार दिगकी चाहती
है। अन्तमें तो सबको मिट्टीमें ही मिल जाना है।

बापूके मासीबाँद

बेक बहाने बूधरी बापिमें विवाह कर किया जिसकिने मुझे
पत्र द्वारा बापूजीका मासीबाँद मारा। बापूजीने भेज दिया। बादमें
पता बना कि जिस बहाने बूधरी बापिम शारी की बूधके पठिकी
बेक पली मीमूद है। परतु बालविवाह होनेके कारण और पली बहुत
बाधुनिक बुरती न होनेके कारण बबबा किनी भी कारणसं पठिने
बूध छोड़ दिया और यह नया विवाह कर किया। यह बात मासीबाँद
पांपनेबाजी बहाने किनी कारणसं किनी नहीं थी। स्त्री-जगतमें
यह बेक पहेली है। बैसे सांसारिक जनकोंके समय बापूजीका मानस
जिस तरह काम करछा था यह नीबके पत्रोंसि मालूम हो जायेगा।

बि

तुम्हारा पत्र मिला। का भी मिला। मुझे बकप नहीं
मिल रहा हूँ। मुझे बीमार नहीं पड़ना चाहिये। तुम्हारी बात
बस सब पया। तुम बीनों विवाह कर लो। मेरे मासीबाँद हूँ ही।

जि (बहुतके पति) को भ्रमण पत्र नहीं लिख रहा है। किसीको बोनोके लिखे समझ केना।

बापूके आधीपार

बापूके पत्रके साथ जिस लड़कीका आन्तर-जातीय विवाह हुआ था उसकी माताजीको लिखा

जि

आजका पत्र को भेज केना। दूसरी बातमें विवाह करनेके बारेमें तुम्हें कुछी न होना चाहिये। साथ ही मेरे विरोधसे भी तुम्हें कुछी नहीं होना चाहिये। मेरे विरोधको बरार समझना। बिचने पर भी मुझे जिस बारेमें कुछ कहना होता तो मैं भी यह विवाह न रोकता। दोनों बड़ी बुद्धके हैं जिसलिखे तुम्हें बिच्छानुसार चलनका अधिकार था। मेरा विरोध सञ्जासिद्ध कहा जायेगा। और वह कायम है। परन्तु वे सुधी हैं। जिस प्रकार आबनाकी लहरमें बहनेवाले बदनक ओड़े हैं। तुम चिन्ता न करना।

बापूके आधीपार

सैबाबामम में लक्ष्मिजी पढ़ाती कर रही थी। परन्तु सैबाबामकी सहाय्य यथैवे मेरी लक्ष्मिजी बहुत विपद् नसी। मन्वीर सुनना सुक हो गया। नाकमें से रक्तकी बारा कभी-कभी तो भेती चलती थी कि रक्तनेवासेकी भी कष्ट होता था। दिनमें साथ साथ घटस बसा होता था। जिससे मुझे कष्टजी बहुत आ पत्री। मेरी पढ़ाती बन्द दिन भी बन्द जानी तो मुझे बहार बुख होता था। मनमें यही लनास बना रहता कि नहीं मेरे गाव पढ़नेवासी बहुत भाग न निवृत्त पायें।

मे बहुत ही बस्ती गा मेरी और मुझे छोटे बच्चोंकी तरह हाथ-पाँव लभेकर मोनेकी आरन पर पत्री थी। जिसने वे मांस बच्छी गच्छ नहीं वे लक्ष्मिजी था। मैं मुनीकाबहनकी आगाजीकी सैबामें थी। जिसलिखे आबाने बन्देमें मुनके पास ही लोपी थी। परन्तु

तबीयत बिगड़ जानके कारण बापुजीने हुजम दिया कि मुझे बचना
रहना सीना खाना पीना सब कुछ बापुजीके ही पाठ करना है।

बापुजीन डॉक्टरोंके बरिष्ठ आग्रह पर अपने स्वास्थ्यके लिये
महाबलेश्वर जानका निश्चय किया। कुछ समय मैठ स्वास्थ्य बीर भी
बिचड़ गया था बिच कारण मुझ भी साथ के गये। बहुत काम होनेके
कारण पिछडे कुछ समयसे मुन्होंने मेरे पिताजीकी पत्र गहीं लिखा
था परंतु महाबलेश्वर पहुंचते ही मेरे बिपयने पत्र लिखा

महाबलेश्वर,

२१-४-१९५५

बि. जयमुखाळ

मुन्हें यहा आकर ही लिख सका हूं। बि. मनुको कुछ
तो काफो भुगतना पड़ा। दिनमें नकसीर छूटती ही रहती थी।
बुखार भी आता रहा। सब जान पड़ता है कि नकसीर नहीं छूटेगी
बीर खर भी नहीं आया। मनुकी यहा के आया हूं। बवा
बीर परिश्रम मुझीसाबहनके से। मैं कमी कमी कनर मुकाफर
नमगिक उपचार करता। बीर ही दिन तक अेक होमिपौर्निक
आया था मुसका बिलकाय किया। बिलताकी बीजी बात
नहीं। बसता हूँ अर बिच ठंडसे मुसकी तबीयतमें क्या फर्क
पड़ता है।

बिबर ही माम रहनकी आशा है।

तो बन्धु मेरे लिखे जो मिलनी तकलीफ मुठानी पडती है मुझसे
बापुर् मुझे कुछ राहत मिल जायगी। भिक्षुलिखे अन्तमें यह तय किया
कि मैं सम्बन्धो बाबू। सबकी राय होतसे मैं बहासे करावी चली गयी।
मैं पहुँची मुझे दिन मुझे तथा मेरे पिताजीको बापूजीके पत्र मिले।

महाबल्लभरवर,

२२-५-४५

पि अयमुबलात्

अन्तमें मनुड़ी अचठी होकर नहीं गयी भाभी परंतु हार
कर—मनसे और सटीरसे। भिक्षुका अर्थ परस्पर है। दोनोंके
लिखे नहीं विम्भवार है। बातावरण भी हो सकता है।
परंतु बातावरण पर काबू पानम ही मनुष्यकी मनुष्यता है।
मनुको यह बात मैं पूरी तरह नहीं सिखा सका। मुझका भय
मुझे सा जाना है। भयका कारण यह स्वयं ही है। बूझरौकी
बातें मुझकर भुनसे विद्वाना बचराना और रोना। यही बाबुका
मुझका काम है। जिनसे अचलाय मिले तब पडती है। ऐशामात्र
मुझमें मुत्तम है। सीलनेका मुझे बहुत ही शौक है। बड़ी प्रेमका
है। मुझे अमीबा और हुक्ममेंकी शिक्षायत है जो मुत्त भी
है। मैं जिन्हें जानूँ रजता हू। मनु नहीं रजनी। अब कुछ
सूम तो मुझके लिखे करना। मेरे पास तो यह है ही। मैं
मुझे नहीं छोडूंगा यह खुद एट गयी है। मुन अचउ हीग।
पि मनुईका पत्र सामने है।

बापूके आशीर्वाद

महाबल्लभरवर,

२२-५-४५

पि मनुड़ी

नू बापुकी गयी अचठा दिया। अमीबा और हुक्ममें निवास ही
देने चाहिये। यदि पू ४ तारीखको लौट जायगी तो बहा कदे

निकासे वा सङ्घे? खुस बेचकी दबा हरपिय न करता। वहाँ रहनेकी भिन्ना करे तो रोग मिटानके बुद्ध निरुपयसे ही करता। परीक्षा देनेवा सोभ न करता। छहक ही पढ़ना हो आम तो भले ही जाय। तैरे पत्र परसे देखता हूँ कि भासपासका डर तुम का जाता है। जो डरता हूँ मुझे संसार बधिक डराता है। भय मानको तू समुद्रमें फेंक दे तो अच्छा। दिनकी रामबाण बीपणि तो रामनाम ही है। जो रामसे डरे वह और किसीसे क्यों डरे? जब जाता जाहे वा सक्ती है। यह तुम बसममान है।

बापुके बापीवर्ति

मुझके जन्मम तनिककी बापेकी पढ़ाईके बिजे नागपुर जानेकी मेरी पीछ भिन्ना थी जिसलिज बमजोर तडीयत होने पर भी नें हठ करके बमजरी ना पठुच बरी। तडीयतके बिजे पूरा छाल करार हो यह मझे महत नहीं हो रहा था। परणु मनमें यह विचार भी जाता कि पडन मरू ना साबर तडीयत मुपर भी जाय। नागपुरका प्रबन्धन भर दिवा वा मजूर भी हो गया था। परणु मनाकरानन और बापुजीकी जिज्ञासतके बिना जाना नहीं हो सम्दा था। मा बापुजी न पठताया पण मेरे पत्रसे मजुरी नहीं मिली। और मना करन तथा बापु न ना पत्र भिन्ना दि

तबीयत बताने तो पत्नी। मुझको मूस पर पिताकी-सी ममता थी। जब प्रेमसे मुझोंने मेरी तबीयतकी जांच की और बचन भी दिया कि "मैं कहीं बीसा करे तो तेरा साज सराब होने पर भी मैं तुझे कुछरी लफ्फियोंके साथ कर दूँगा। मुनीलामहाने भी बचन दिया — किमिन्न धर्म यह भी कि मागपुर जानेका विचार मैं समझपूर्वक छोड़ दूँ। मे जानते थे कि मेरी पसन्दकी बात नहीं होगी तो मैं मरनें कुतूबी। किसीसे कहनी तो नहीं परंतु स्वास्थ्य पर मुझका प्रभाव पड़ेगा। मुसी दिन बुझार बड़ा बिसलिये मुझोंने तो मेरे लिये अपना निश्चित मत दे दिया कि मुझे पहाड़की हवामें ही रहना चाहिये। बापूजीको यह मालूम होने पर मुझोंने मुझे पत्र लिखा

महाबलेश्वर,

३-१-१८९५

पि मनुषी

तू फिर बीमार हो पत्नी? बय तो बेट। तू धीरज रखेगी तो बड़िया गर्व हो जायगी। बुझार मठरते ही बजी न जाना। मुनीलामहान कहनी है कि तुझे दिनरातीके आरोग्य-मंदिरमें रहना चाहिये। तुझे बार बार बुझार भाय यह मूस बिलकुल बच्छा नहीं लगता। तू बड़ने स्वास्थ्यकी रखा करना सीग लयी और लोहे कीटी बजकून बन जायगी (1) सब टीन हो जायगा। जल्दी करनेसे कुछ नहीं होया। यहाँ आना हो तो जा जा। मागपुर जानेका मोह छोड़ दे।

बापूके आधीर्षाद

दिन दिन कैय स्वास्थ्य मुलटा ज्यारा बिलाने लया। बापूजीको मालूम हुआ तो मुनहा हुबब देनबाला बय मूस ठारकी तरह पतुचाया गया :

महामहोदय

४-६-४५

श्री मनुजी

तेरे बंसी मूर्ख लड़की मेंने दूसरी नहीं देखी। जिससे सुतरसे तुझे यहाँ का ही बाना है। बाबका (महादेवनाथीका पुत्र) तेरे साथ बकर खावे। जिससे रास्तेमें जोभी कठिनायी नहीं होगी।

बापूजी की कथा

मेरे बहा पठनेसे पहले ही रेडियो द्वारा खबर मिली कि कापेस कार्यसमितिके सदस्योंकी बैठके मुक्ति होनेके कारण बापूजी जीर उमास सदस्य बन्ययी आपे है। बापूजीके बिरुदा भवन पठनेके बाद मुझ संग मोटर आयी। हम दोनों बहने बापूजीके पास गयी। बहा पठने पर मुझ लूब लकी हुयी देखकर मुझसे कुछ भी बातें किसे बिना बिस्तर ल्याकर मुझ सुखा दियाया।

दुम्ने दिन में घर गयी जीर १२-६-४५को बापूजीका बिमला जाना हुआ। मुझ पूना आरोग्य-भवनमें ही रहनेके किसे ही रितागीका नौव दिया गया। मैं भी बहुत मुकता गयी थी सिमलिके अिम लय प्रयत्नको मेंने स्वीकार कर लिया।

म पूना गी गयी। परन्तु बहा पठने बिस् बीच ब्रेक लगी बात हा गया। मर रितागीन मेरे नाम पर अफ पास एकम रखकर बमला लूब जाना । निष्ठा दिया। अिम बागना पता मुझे बड़ी दया द। म न बापूजी जी अनेके बीच अिम मरबम पत्रम्यबहाए हा गता बा मम । परन्तु मं बलान होनी कि बापूजी मेरे दुस्ती बनग मात । पता जीर बार के हुकाके बजावा या भाजों-करीकों दयावा ल्या गी म मेरे र्दनी लड़कीकी छोटीसी खबकि दुस्ती म

सकते हैं यह मेरे जिम्मे आश्चर्यकी बात थी। परंतु अपार प्रेमके सामने वा पूर्वजन्मके शुभ नुर्बन्धके कारण एक कुछ संभव हो जाता है, यह भिन पत्नी परशु समझमें आया।

मनोर विद्या

सिमला

२५-९-४५

वि जयमुक्ताकाल

ट्रस्टका इस्ताबेज मैंने बनाया है जो भेजता हूँ। वहाँ गुजरती चण्डी है जिसजिम्मे गुजरती बनाया है। गुजरती इस्ताबेजकी एजिस्ट्री न होती हो तो जिसका सिमी या हिन्दुन्दाओ बनवा केगा। अवेजीकी कोभी जरूरत नहीं। घर्जों फेरबदल कर सकी हो। मैंने तो तुम्हारे विचारोंकी जिस प्रकार समझा है उस प्रकार रख दिया है।

जब तक मनुका रोक मिट न जाय तब तक मुझे चिन्ता रहेगी। जब तो यह विनयाजीके आरोग्य-अवसर्गमें चली गयी होगी। यह आशा रखें कि वहाँ अच्छी हो जायगी।

बापूके बाबीर्षर

वहाँ में लम्बे समय तक रहना नहीं चाहता। फिटना रहना पड़ेगा यह धायर आज तक हो जायगा।

मूल इस्ताबेजकी तफ़्ज़ जो पू बापूजीने अपने हावसे लिखा है नीचे भी जाती है

१ मैं जयमुक्ताकाल जयमुक्ताकाल गांधी मूल निवासी गोरखन्दरका हाल निवासी करानी बन्दरका यह इस्ताबेज नीचेकी घर्तकि अनुसार लिखता हू

२ भिन इस्ताबेजकी ठापीलकी मूल पर विधीका कई नहीं है।

३ मेरी बीबी बड़की कुमारी मनु (जो बागे मनुबहनके नामसे जानी जायगी) कुछ बपोंके मेरे बुबुर्ग श्री मोहनराज करमबंद य बी (जो बाग महारमा गाँबीके नामसे जाने जायमे) के संरक्षणमें सेवापाम वाधममें अपनी सन्तिके अनुसार सेवाधर्मका पावन कर रही है और मुझे जिसे अबपरक ज्ञान प्राप्त कर रही है। बुसकी सेवादृष्टि पर मैंने बड़ी बड़ी बाधाओं लगा रखी हैं। मनुबहनका किसी भी कारणसे किसी पर कोनी दोस न पड़े जिसके जिसे मैंने दठ हठार अपने मुझे नाम अमानत रख दिये है। बिच वन्तावेक द्वारा वह एकम में स्वान पर बाबिक के हिदायते ब्याज पर रख देता हूँ। मुझे एकमकी रसीद जिसके साथमें है। मुझे एकमका अधिकार बाधीजीके हाथमें मनुबहनके संरक्षणके रूपमें रहेगा और वे अपनी विज्ञानुसार मनुबहनके जिसे मुझका उपयोग करेंगे। यदि किसी समय ब्याजकी रकम काफी न हो तो अनागत एकमकी काममें न लेते हूँगे वे मुझे अतिरिक्त रकम बसूल कर लें। मैं वह रकम न जुटा सकूँ तो मूल रकमका उपयोग न करना बाधीजीको या जिसे वे नियुक्त कर व मुझे ब भत्ता देना होगा।

यह मेरे बीबी व बीबीकी मृत्यु हो जाय जबका किसी कारणसे वे मरनाय न रह पाय न रहे सके तो मुझे ब्याज में न लेना हो जयगा और जो अधिकार बिच वन्तावेकके अन्तर्गत ग बीबीको दिय गय है व मुझे निष्क पावेंगे।

मरी मृत्युके बाद व मरी अन्तम हासलमें मेरा अधिकार प्रुमे भिन्न जायगा जिन सेवापाम व धमके संरक्षण चुन लेंगे।

म दान व मरनाय करी सेवाधर्ममें ही लग जाय जमे ज न कुछ या मित्रानकी अकल्य न रहे और वह पैतीठ बरती अन्तम मनुष्य जाय मुझे समय यदि बाधीजी या मे जिन्हा

न हीनूं तो मनुबहन युक्त रकमका उपयोग अपनी विच्छानुसार कर सकैनी और सबाधाम बाधमके संरक्षकोंकी तरफसे जो ट्रस्टी नियुक्त होंक बुनका धर्म मनुबहन चाहे ती मूल रकम ब्याज सहित बुस सौंप देनेका हीगा। यदि मनुबहन बिबाह करै ती बुस समय बची हुमी रकम चारों बहनोंम समान रूपसे बांट बी जायगी।

बि जयमुबलाल

बिबमें कोबी फेरबदल करना चाही या बिनके नाम बिबे पप है बन्हे तुम बने बदले नियुक्त करना चाही ती कर देना। मेरी सलाह ह कि बे नाम मेरे और तुम्हारे बाब कमस हों ती बज्जा।

बापूके बापीबाब

मुझे बापूजीन विनयाजीके आरोग्य-अवनमें रण ती दिया परंतु बहा मुज कुछ प्रबाही पचासों पर रना बया। प्राकृतिक बिबित्तामें बह माना जाता ह कि बिन प्रकार रहनके शरीर पर प्रतिक्रिया (reaction) होनी है और अन्तमें रीप बड़स बला जाता है। मुज पर भी प्रति क्रिया हुमी और बमेना ब्रेक गया रोम मुक हो गन। बिनसे मैं कुछ बबपबी। मेरे बारेमें डॉक्टरोंको साप्ताहिक सलाचार ती बापूजीके पास बेबने ही पढ़ने ब बुस मिलमिळमें बापूजीन मुज सिखा

सबाधाम

२०-३-१५

बि मनुड़ी

तरी बगुटी बनीटी हो रही है। डॉ विनया पर मेरा बहा बिबबाम है। बि-नित्तन नेटी बिगला गही बरना। बिन समय सचमे बगुटी अपह तप बिनात्र हो र्हा है। और ठेरे सिगने बरसे देन सगा है कि मुज बीनो बरने बहा पकर कुछ

छरवार पाँच दिनोंके लिये बन्दगी गये हैं। वे जहाँ रहते हैं वहाँसे बल जायं तो मूना लगता है। मुनका स्वभाव कितना चिन्तोषी और मिथ्यमार है।

बापूके मातीबाँर

जैसे हमारे समाजमें हर शहरमें लड़कियोंको छड़नेकी श्रेष्ठ कुत्र है वैसे यहाँ महुषाय भी है। १९४६ में हमारे यहाँ भागक बाबू संस्थाके संभालनेके आग्रहसे मैं स्त्रियोंकी एक सम्मान बर्धनिक काम करती थी और इन स्त्रियोंका बातावरण काफी अच्छा हो गया था। मैं हमारे घरकी नौकरानीको भी जो पत्रह बरगी कोनीकी छड़की पी बालना पुमिना बनाना और बहुरजान करणके अुरूपमे रीत बनवाइइत मुदीपगालामें भेजानी थी। बिन लड़कीकी पिबापत की छि पत्र बह केबिन बीरमें भेज गुजरती हू तब बहा होटलन ईग्नेबांसि लड़के मुमस छड़ानी करण हें। यही पिबापत कपोल पाठिरी लड़कियोंकी भी थी। परन्तु बाद वे लड़किया कभी पिबापत करनी है तो इसके माँ राय मुन पर नापान ही है और वे सबही सन्तोमें बड़ जाती हैं। कुछन तो मुस यह भी कहा कि हम या हमारी लड़किया कुछ करे तो मुनका बिबाह-अंबप न हो। बिन कारण कोनी मुन दीगामी टीनीमे जो सबके बीबायीष भी कुछ मही रहना था। माता बिन बापता पना जवन पर ये सबतो नौकराने के साथ बाजारत हीतर निवनी। एक लड़कैने जाही जाति अरनी सराजन मुन की। तब मुसमा आपा बिबनिम सैन ती बापत निबालकर अस लड़कैतो दी जना थी। बिनन मेरे साथ ती कोनीकी लड़की रं मुसने थी हिम्मत भाभी और मुनन भी लड़केका गानी करखत थी। यिः मुसुगती देगन लीग बिबदूने ही गये। का बगारिगीन लड़कामी री कि बहन अन्ना बिबा। इव ती लड़कैरीकी भी बगन गन । व इम्मान देगलन करने से। बिबमे मुसं बगारिगी कर और भी जीव अन्ना और मुन लड़केकी पुन ६ मुसुई करणकी बिबि अरन निगारी वर छोडकर ये जांने काम कर जाती गरी। बहनमें बापत दर बात करी ११ अर

भी मुझे बँसा तो क्या कि जिस प्रश्नके साथ ग्याम हो सके तो बन्ना। और वहाँ तक मैं बालती हूँ मैं जिस प्रश्नकी हल करनेकी कोशिशमें ही बे। परंतु राजनैतिक परिवर्तन जितनी ठीकीसे हुये कि महाराष्ट्री महानगर गान्धीजीका समाज बोक तरफ रह गया और आज एक बहू बँसा ही पड़ा हुआ है। आज तो हमारे जिस छोटेसे शहरमें बाबों के बीसे गारे कम रहे हैं कि जिस महाराष्ट्री किन्ने पूर्य बापूजीने जितने अक्षय्य कामोंके बीच भी सतत पिठा रबी थी मुझे किन्ने आज बहू बोक बड़ा प्रश्न हो गया है कि बाबों के गारेको छोडकर शहरकी यह सर्म मिटाबी बायपी या नहीं ?



हमारे हिन्दी प्रकाशन

बापूके पत्र-१	आत्ममयी बहुल्लोकी	१-४-०
बापूके पत्र-२	सरदार बल्लभभाजीके नाम	१-८-०
बापूके पत्र मीराके नाम		४- -
सच्ची शिक्षा		२-८-०
बुनियादी शिक्षा		१-८-०
शिक्षाकी समस्या		१-०-०
विद्याविपत्ति		२-०-०
हमारे गाँवोंका पुनर्निर्माण		१-८-०
गोसेवा		१-८-०
रिस्की-बायरी		१-०-
वाणीजीकी संक्षिप्त आत्मकथा		१-८-
राष्ट्रभाषा हिन्दुस्तानी		१-८-
वर्धव्यवस्था-		१-८-०
सूर्याग्रह आत्ममया ब्रिजिह्वस		१-४-
रचनात्मक कार्यक्रम		०-१-०
वास्तवोष्ठी		०-१-०
रामनाम		०-१-०
आरोग्यकी कुंजी		-७-०
जुराकटी कमी और खेती		२-८-०
बापाभार प्राप्त		-४-०
विद्याका माध्यम		०-४-०
राष्ट्रभाषाका उच्चार		-१-०
विवेक और साधना		४-०-
मेरा धर्मग्रन्थ		०-१२-०
बहादेरभाजीकी डायरी-१		५-०-०
बहादेरभाजीकी डायरी-२		५-०-०
बहादेरभाजीकी डायरी-३		१-०-
सरदार बल्लभभाजी-१		१- -
सरदार पटलके भाषण		५-०-०

है। जहाँ ममता ने कहा है "मुठर बाबे ठेप तुं र्हे बेम ठेन करीने हरिने सहे।" * बिशमिजे वहाँ बँठकर मी घुड़ सप बाँर बहिँसा सीखकर मुँसे बमझमें का सकेगी ठो मेरे पाँस या मेरे बचोन सीखनसे बधिक सीसी हुमी मानी बाबमी।

तुम दोनोंको बापूके भायीबाँर

बिच दिन बिच सडकेही पीटा बा मुसी दिन बह डडका पतकी साँसे ग्यारह बड बर बाकर यह कहते हुअ मेरे पैरोंमें पड़ा कि मुँसे बहुत बया काम हो गया। और मुँसन बिच बाठका बिबास बिबाबा कि बबसा कमो बिच प्रकारकी डडखाती मही करेगा। मुँसे बाए पू बापूकोका मुपरोक्त पत्र तो ब ही पया बा फिर भी मेन बाए और सज्जेकरब बाहा बा। मुँसे मुँतरमें बापूजीने बिता

दिल्ली

२९-९-४९

बि मनुगी

मेरा १२ तारीखका पत्र कोभी तीन दिन पहुँचे बिना बा। मुँन अज ही बिच पा रहा हू। तुने को साहस बिबाबा मुँकी बर्बा करके तुने पूछा कि बिसे मे हिँसा कई बा ब हुन ? लेकिन तेरा बिच बिबाबमें न पड़ना ही बच्छा है।

अ हुँका मनन करनसे समय बाने पर हमारे हाथों बहिँसक कार्य ही होन। बूसर जीव मुँसे बेसा समझ मा न समझें बिछकी बिन्ता मही करनी बाहिब। मुँसे बतरका बाबाए बिच बान पर मही होना कि बूसर बया सनसने परंतु हमारे मन पर होता है। ममकी गो हम भी मही बान सकेते। परंतु मन को कि बान सकेते है तो यदि किनीक मन बहै कि पाकी बेग या सपक मारना बहसक कार्य है तो मुँसे बिच तो बह ब हुन ही खीम। बह बास्तबमें बहिँसक है या मही

* तू केना मो सरल बीबन बिठा लेकिन हरिको प्राप्य कर।

वह जो समयान् ही जाने । सामनेवाले मनुष्य पर बुझका जो अछर पड़ा हो बुझ परसे वह खुद और प्रेक्षक निर्णय कर सकते हैं। भिन्न सारी लक्ष्मणमें से तुमसे क्यों जानूँ ? तू लगनसे यह प्रयत्न करती रहेगी तो तुमसे मैं तेरी प्रिया ही समझूया ।

तुम दोनोंको बापूके आशीर्वाद

महूबाकी मंशगी ता मध्यह्न है । शुक्रमें मेने बहनोंसे बहाका साथ मातापत्य जान लिया । जब तकका मंश पाप्मन-शोषण पौरवम्बर, बम्बजी और कटाची जैसे शहरोंमें हुआ था । अतः भितनी भूमिक गरी गलियाँ देखकर मुझे आश्चर्य ही होता था । जयह जयह बुरेके डर पड़ हुमे से । परंतु बादमें मुझे माझूम हुआ कि काठियावाड़में यह सब स्वाभाविक है । जहाँ तहाँ शिवया बूचट निर्याप्यकर सवेरे-सवेरे या लक्ष्याक समय पाखाने बैठ जाती है । यह सब तो मेने पहले पहल मही देखा । महूबा निवासियोंके लिने और खास तौर पर शिवयोके लिने यह अत्यंत सज्जाजनक बात है । घायर पूज्य बापूजीके प्रयत्नसे म्युनिसिपैलिटी द्वारा ही कुछ हो सकता है क्योंकि शहर छोटा है । साथ ही दिन-बढ़ाई और भर बाजारमें जब बहनोंके साथ छेड़छाली की जाती हा तो दिन बहनोंके घर पाखाने न हों वे देर-अदेर गावके बाहर दौंस जा सकती हैं ? यह समस्या म्युनिसिपैलिटी ही हल कर सकती है । अिनलिज मेन बापूजीकी प्रिया । बापूजीने प्रिया मेन मझुया देना है । परंतु तैय करने तो तुम और भी गरब बनाता है । मुझ बहा अफ ही दिन रहनेकी पार है । मेरा पत्र श्रीमान् बीवान लाहूरके पान भजा गया । बुठके बाद जब तितम्बरमें मेरा बापूजीके पान लिपनी बना हुआ तब और मुनक बार जब जब श्रीमान् बीवान साहबन मिलना जाना तब मेरा यह प्रश्न मुनके सामन लड़ा ही रहता था । बापूजीने मुनक कहा था कि महूबामें रहनेवाली बानी ही लक्ष्मीकी बात मुनकर मुने लक्ष्मीकी शीर्षिके । और आज मुझ अिनता रबीवार करजा चाहिये कि यद्यपि महूबाकी म्युनिसिपैलिटी बढ़ाने मापरिकोंके हाथमें होनेसे वे बहने से वि अब तो मापरिकोंके हाथमें गया है फिर

भी मुझे वैसे तो लगा कि जिस प्रश्नके साथ न्याय हो उसके तो सम्झ। और बाबा तक मैं जानती हूँ वे जिस प्रश्नको हल करनेकी कोशिशमें ही थे। परंतु राजनैतिक परिवर्तन बितनी ठीकीसे हूँ कि महुबाकी मसहूर नम्बरीका सवाल ब्रेक करण रह गया और आज तक वह वैसे ही पड़ा हुआ है। आज तो हमारे जिस छोटेसे सहरमें बाबों के वैसे नारे कम रहे हैं कि जिस महुबाके लिये पूज्य बापूजीने बितने बसंत्य कामोंके बीच भी सतत चिंता रखी थी मुझे लिये आज वह ब्रेक बड़ा प्रश्न ही गया है कि बाबों के नारोंको छोड़कर सहरकी यह धर्म मिटावी बायबी या नहीं?



हमारे हिन्दी प्रकाशम

बापूके पत्र - १	आभमकी बहनोंको	१-४-०
बापूके पत्र - २	सरदार बल्लभभाभीके नाम	३-८-०
बापूके पत्र मीराके नाम		४-०-०
सञ्जी भिला		२-८-०
बुनियादी शिक्षा		१-८-०
शिक्षाकी समस्या		१-०-०
विद्याविद्योसे		२-०-०
हमारे बाँधोंका पुनर्निर्माण		१-८-
गोमेवा		१-८-०
दिल्ली-हायरी		३-०-०
गांधीजीकी सलियत आरमकवा		१-८-०
राष्ट्रभाषा हिन्दुस्तानी		१-८-०
बर्षभ्यवस्था-		१-८-
मर्यादह आभमका विविहास		१-६-
रचनात्मक कार्यक्रम		-१-०
बाळपीठी		०-३-
रामनाम		०-१०-०
आरीम्यकी कुञ्जी		-७-०
गुणावकी कमी और लती		२-८-०
भाषाकार प्राप्त		-४-०
गिरावा भाष्यक		०-४-०
राष्ट्रभाषाका नबान		-१-०
विशेष और साधना		४-०-०
अंक बर्षयड		०-१२-०
महादेवभाभीकी हायरी - १		५-०-
महादेवभाभीकी हायरी - २		५-०-
महादेवभाभीकी हायरी - ३		१-०-
सरदार बल्लभभाभी - १		१-०-०
सरदार बटैलके भाषक		५-०-०

सयाजी काव्यासे	१-०-०
महादेवमाजीका पूर्वचरित	०-१४-०
स्मरण-यात्रा	३-८-
हिमाश्रमकी यात्रा	२- ०-
जीवनका काव्य	२-०-
बापूकी छांकिनी	१-०-०
मृत्तरकी बीबारे	१४
मुस पारके पडोसी	३-८-
मृदान-बद्ध	१-४-०
माजी भारतकी अेक तसवीर	१-०-०
अडमूझसे अशक्ति	१-८-०
जीवनबोधन	३-०-
एभी-पुरुष-सर्पाचा	१ १२-०
गांधी और साम्यवाद	१-४-०
बीसू किरत	०-१४-०
निर्मयता	०-३-
सर्वांसयका सिद्धांत	०-१०-
रागावबन्धी कसो ?	०-१०-
जीवनका मद्ध्यम	१-०-०
हमारी वा	२-०-०
हिन्दुत्मान और हिन्दुता काविक लेन-देन	०-८-०
बापू - मरी वा	०-१०-०
मरुतुत्र	१-४-
मार्चाजी	०-१२-०
शामनेबाके अम काव्यम	१-४-०
बलकलका बलकार	१-४-
पापा-नाशित्य मृषा	३-४-
प्रथमत्व -	०-४-०
मार्चाचारणमानस	-१-

दादासाहेब जलज

नवजीवन प्रकाशन मणिर महामहाराष्ट-१४

